अथ सत्यार्थप्रकाश

———०००———

श्रीस्वामीदयानंदरचित

राजा जयकृष्णदास बहादुर सी एस आई

आज्ञानुसार

ग्रन्थकार के अधिकार से स्टार

यन्त्रः राजापुर में छापी गई ॥

निवेदन १

यहपुस्तकश्रीस्वामीदयानंद सरस्वती नेमेरे व्ययसेरचीहै और मेरे ही व्ययसे यह मुद्रित हुईहै उक्त स्वामी जीने इसका रचना धिकारमुझकोदेदियाहै औरउसकामैंअधिष्ठाताहूं औरमैंनेधैर्यसे इसपुस्तककी रजिष्टरीकानून २० सन १८४७ ई०केअनुसारकरदी है सिवायमेरेवामेरीआज्ञाके इसपुस्तकके छापने काकिसीको अधिकारनहींहै

द० श्रीराजाजयकृष्णदासबहादुर सी एस आई

निवेदन २

जिसपुस्तकके आदिऔरअंतमें मेरेहस्ताक्षर और मो[हर] नहीं वह चोरीकीहै औरउसका क्रयविक्रयनहींहोसकता

द० श्रीराजाजयकृष्णदासबहादुर सी एस आई

निवेदन ३

इसपुस्तकके पाठकोंसेमेरीयह विनयपूर्वकप्रार्थनाहै किइसग्रंथके छपवानेसेमेरा अभिप्राय किसीविशेषमतके खंडनमंडन करनेकानहीं किन्तुइसका मुख्यप्रयोजनयहहै कि सज्जनऔर विद्वानलोगइसकोप क्षपातरहित होकरपढें और विचारें औरजिनविषयोंपरउनकोद- यानन्द स्वामीके सिद्धांतोंसेसम्मतिनहोउनविषयोंपरअपनीअनुम तिप्रबल प्रमाणपूर्वकलिखेंजिससेधर्मकानिर्णय औरसत्या सत्यकी विवेचना होगी क्योंकिशास्त्रार्थकरनेमें किसीबातकानिर्णय नहींहोता परन्तु लिखने सेदोनोंपक्षोंके सिद्धांतज्ञातहोजातेहैं औरसत्यविषय कानिर्णयहोजाताहै इसलिये आशाहै किसज्जन औरमहात्मा पुरुषइसकोयथावत समालोचनाकरैंगे औरयहसमझेंगे किमुझ कोकिसी विशेषमतकी निन्दा अभिप्रेतनहीं छापनेमें शीघ्रता केका रण इसग्रंथमेंबहुत अशुद्धता रहगईहैं आशाहै पाठक गण इस अपराधकोक्षमा करेंगे

अथसत्यार्थ प्रकाशकासूचीपत्र प्रारंभः प्रथमसमुल्लास

उल्लासः	पृष्ठ	पृष्ठ२६
१	१	ओंकारादि १०० सौपरमेश्वरकेनामोकेअर्थ और वेदोंकेप्रकरण विचार
१	२३	अथमंगलाचरणविचारप्रथमःसमुल्लासःसमाप्तः
२	२६	बालकोंकी शिक्षाविचारद्वितीयःसमुल्लासः समाप्तः पृष्ठ१०
३	३६	पढनेपढानेकीविधिगायत्र्यर्थतृतीयसमुल्लास पृष्ठ५७
३	४०	वेदीयज्ञपात्र रचनाविधिः
३	५०	ब्रह्मचर्याश्रम काविचार
३	६१	प्रत्यक्षादिकआठ पदार्थों काबिचार
३	७५	वेदआदिसत्यशास्त्रकापठनपाठन क्रमवि-
३	८२	गुरु और शिष्यों का व्यवहार
३	८५	विद्या पठन की परीक्षा
३	९१	शिक्षा विचार
३	९२	परीक्षापूर्वकपठनपाठन विचार विद्या प- कीप्रशंसा तृतीयः समुल्लासः समाप्तः
४	९४	विवाह गृहाश्रम विधिः विवाह समयेगुणप- रीक्षा चतुर्थ समुल्लास पृष्ठ ६०
४	९७	ब्राह्मणादि वर्ण व्यवस्था
४	९९	विवाह व्यवस्था
४	१०२	ब्राह्मयादिकआठविवाहोंकेलक्षणऔररी कथन
४	११२	स्त्रीपुरुष कापरस्पर नियम विचार
४	११७	गृहाश्रम मेंकर्त्तव्य विचारः चतुर्थः समाप्तः

५	१५४	दान प्रस्थ विधिः पंचम समुल्लास इष्ट
५	१५८	सन्यास विधिः
५	१६६	ग्यारह प्रकार का धर्म धर्म का लक्षण पंचमः समुल्लासः समाप्तः
६	१७४	राजा प्रजा का धर्म वर्णन षष्ठ समुल्लास इष्ट ४६
६	१८०	राजा की शिक्षा और प्रजा की शिक्षा राजा का लक्षण राजा को अवश्यकर्त्तव्यता तथा अकर्त्तव्यता राजा की परम सिद्धिलाभ का विचार
६	२१५	प्रतिमा पूजन निषेध षष्ठः समुल्लासः समाप्तः
७	२२१	अथ ईश्वर वेद विषय व्याख्या ईश्वर विषय में खंडन का मंडन और वेदों के कांडों का वर्णन सप्तमः समुल्लासः समाप्तः इष्ट ३२
८	२५३	जगत की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय विषयों का वर्णन अष्टमः समुल्लासः समाप्तः इष्ट १४
९	२६६	विद्या अविद्या बंध और मोक्ष इन चार पदार्थों का वर्णन नवमः समुल्लासः समाप्तः इष्ट ३२
१०	२९८	आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य इन चार पदार्थों का वर्णन दशमः समुल्लासः समाप्तः इष्ट १४
		यह पूर्वार्ध का सूचीपत्र समाप्त हुआ इसके आगे उत्तरार्द्ध का सूचीपत्र किया जाता है
११	३०८	इस अध्याय में आर्यावर्त्त देश के विषय का वर्णन है एकादश समुल्लासः समाप्तः
१२	३२६	इस अध्याय में जैन और बौद्ध का जो संप्रदाय के विषय का वर्णन है द्वादश समुल्लासः समाप्तः इष्ट ८७

शुद्धपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१२	मिदं	मिदञ्च
४	२७	साम	नाम
२६	१६	श्रेष्ट	श्रेष्ठ
५२	२४	धर्मान्नप्रम दितव्यं	धर्मान्नप्रमदितव्यं भूत्यै नप्रमदितव्यं
७९	१५	जगदीपी	जागदीपी
९७	६	यजुर्षो	यजुर्षोमे
११६	०	वेष्या	वेश्या
१३५	७	गृस्थ	गृहस्थ
१५३	५	गार्मी	गार्गी
१५५	२१	अपध्येय	अपने
१६५	१७	अल्पान्नव्य वइसकाश्र यैकूटगय सो शुद्धवालोपं क्तोमे लोखा है	अल्पान्नभोजनएकान्तस्थानमे बास इन्द्रोंसे विषयोमे प्रवर्त्त भई इन्द्रियोंका निवृत्त करदे
१६७	२	अहिंससे	अहिंसये
१७०	१४	अहिंस	हिंसा
१७९	१९	बीच्वयव	बीच्य
२१९	१७	विद्याकि कोका	विद्यादिकोंक
२२४	१३	अणनामा	अप्रमाणनाम
२२३	२	होभीजातहै	पृथक्‌भीवहोजातेहैं
२३?	१५	परमेश्वरके	सदापरमेश्वरके
२३५	१५	कृतसमा	कृतञ्चसमा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३६	३	अभिमा	अणिमा
२३६	२७	दोषण	दोष
२३९	२७	सरीरसे	सरीरीसे
२४४	२	हतं	दक्षं
२४४	२	एसे	विशेष
२४८	२४	पिस्या	यस्या
२५०	२[illegible]	नवित्त	नवनीत
२५१	२[illegible]	तुपर	तूप
२७२	१५	नहीं	नहींहोता
२७३	२३	लिंगके	लिंगकी
२७४	२०	भयसा	भयकसा
२८०	१०	अवेगा	आवेगा
२८०	२७	सुख	सुखका
२८५	१४	साक्लिय	साकल्ये
२८५	२६	प्रतिघन	प्रतिस
२८६	१३	होवै उत्तम	होवैउत्तमसेउत्तम
२८८	२१	कुस्तु	कुस्ती
२८८	२६	रा	राजा
२८८	२७	हतेहै	होतेहै
२८९	३	चयो	अश्वये
२९१	७	पागा	पायो
२९२	२७	अकाश	आकाश
२९३	२१	पाल	पहिले
२९४	१०	जवमे	जीवमे
२९४	१९	मरणका	मरणकाजो
३०३	१	होतीहै	होसक्तीहै

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०३	८	वैसा	वैसादिक
३०३	१९	कोतीमे	कीर्तिमंडी
३०४	१०	मलि	मेलि
३०५	८	कान्या	कान्य
३०५	२५	आचारण	आचरण
३०८	१२	विध्येस्याय	विभास्यामः
३१२	१२	करणेणगे	करनेलगे
३१४	२०	वेदादियौक	वेदादिकोंके
३२२	७	दशमे	देशमे
३२२	८	दरिद्रमे	दरिद्रसे
३२२	८	वरतप्रता	भर्त्तकेप्रताप
३३२	१	घातककन्या	घातकन्या
३३६	५	भयकोरजनवे	भयकोकरणेमे
३३६	२०	खंडनहो	क्याखण्डननहो
३३७	१०	निलगा	निकलेगा
३४२	८	ऐकचक्र	एकचक्र
३४२	११	संस्तार :	संस्कारा:
३४४	१३	यागी	योगी
३४६	१३	यावत्पातति	यावत्पतति
३४६	१८	लंप्रा	फलंप्रा
३४८	२२	मुद्राटीक	मुद्रादिक
३५२	२५	दर्श	दर्शन
३५५	२६	हिलनेका	फलनेका
३६२	२७	किरीकी	किसीकी
३६३	६	पुराणादिक केआगेछूटगया	

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		जो लिखा है शुद्ध	
		पंक्तीमे	औरसबतंत्रग्रंथ
३६४	४	फरऐसा	फेरऐसा
३६४	२५	पुषना	पूछना
३७०	१४	लिख	लिखेगो
३७३	८	देशलोक	देवलोक
३८५	२५	और	औरबुमायाकहै
३८५	२६	यरदिन	योरदिन
३९२	१०	सबगएथे	सबक्षोगयेथे
०	१८	सासदा	सोमदा
३९४	१६	मरयासे	मनसे
४०१	११	पसी	ऐसी
४०२	१७	अन्याजहै	अन्यायहै
०	१८	मनलके	मनवक्षे
४०३	६	ममः	ततः

अथ सत्यार्थप्रकाश ॥

ओ३म्० शन्नोमित्रः शम्वरुणः शन्नोभव त्वर्यमा शन्नइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुरु क्रमः नमोब्रह्मणे नमस्ते वायोत्वमेव प्रत्यक्ष म्ब्रह्मासित्वामेवप्रत्यक्षम्ब्रह्मवदिष्यामि ऋत म्वदिष्यामि सत्यम्वदिष्यामि तन्मामवतु त द्वक्तारमवत्ववतुमामवतु वक्तारम् ओ३म् शान्ति श्शान्तिश्शान्तिः ॥ १ ॥

ओ३म्। यह जो ओंकार सो बहुत उत्तम परमेश्वर का नाम है क्योंकि तीन जे अ उ और म् अक्षर इसमें हैं वे सब मिलके एक ओम् अक्षर हुआ है इस एक अक्षर से बहुत परमेश्वर के नाम आते हैं जैसे अकार से विराट् अग्नि और विश्व इत्यादिकों का ग्रहण किया है उकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजसादिकों का ग्रहण किया है। मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादिकों का वेदादिक शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है वे सब नाम परमेश्वरही के हैं जो कोई ऐसा कहै कि परमेश्वर से भिन्न अर्थों का ग्रहण क्यों नहीं होता है उससे पूछना चाहिए कि विराट् और अग्नि इत्यादिक जितने नाम हैं वे सब मनुष्य पृथिव्यादिक भूत देवलोक में रहने वाले जे देव और वैद्यकशास्त्र

में शुंठ्यादिकों के भी लिखे हैं और वे परमेश्वर के भी नाम हैं इन सभों में आप किन का ग्रहण करते हैं जो आप कहैं कि हमतो देवों का ग्रहण करते हैं अच्छा तो आप के ग्रहण करने में क्या प्रमाण है देव सब प्रसिद्ध हैं और वे उत्तम भी हैं इससे में उन का ग्रहण कर्ता हूं मैं आप से पूछता हूं कि परमेश्वर क्या अप्रसिद्ध है और परमेश्वर से कोई उत्तम भी है जो आप इस प्रमाण से उन का ग्रहण कर्ते हैं और परमेश्वर तो कभी अप्रसिद्ध नहीं होता है उस के तुल्य कोई नहीं है तो उत्तम कैसे कोई होगा इससे यह आप का कहना मिथ्याही है आपके कहने में बहुत से दोष भी आवेंगे जैसे कि भोजन के लिये भोजन करने का पदार्थ किसी ने किसी के पास प्रीति से रखके कहा कि आप भोजन करैं और वह उसको त्याग के अप्राप्त भोजन के लिए जहां तहां भ्रमण करै उसको बुद्धिमान न जानना चाहिए क्योंकि वह उपस्थित नाम समीप आया जो पदार्थ उसको छोड़ के अनुपस्थित नाम अप्राप्त जो पदार्थ उसकी प्राप्ति के लिए श्रम कर्ता है इसी से वह पुरुष बुद्धिमान नहीं है ॥ किञ्च । उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितं याचतइति बाधितन्यायः । वैसाही आप का कथन हुआ क्योंकि उन नामों के जे उपस्थित अर्थ मनुष्य शुंठ्यादिक औषधियों का परित्याग आप कर्ते हैं और अनुपस्थित जे देव उनके ग्रहण में आप श्रम कर्ते हैं इसमें कुछ भी प्रमाण वा युक्ति नहीं है और जो आप ऐसा कहैं कि जहां जिसका प्रकरण है वहां उसी का ग्रहण करना योग्य है जैसे किसी को कहा कि सैन्धवमानय सैन्धव को तू ले आ तब उसको समय का विचार करना अवश्य है क्योंकि सैंधव तो दो अर्थों का नाम है घोड़े का और लवण का भी है गमन समय में सैन्धव शब्द सुनके घोड़े को ले आवेगा और भोजन समय में लवण कोही ले आवेगा तब तो ठीक ठीक होगा और

जो गमन समय में लवण को लेआवै और भोजन समय में घोड़े को ले आवै तब उसका स्वामी उसपर क्रुद्ध होके कहेगा कि तूं निर्बुद्धि पुरुष है क्यों कि गमन समय में लवण का क्या प्रयोजन है और भोजन समय में घोड़े का क्या प्रयोजन है जहां जिसको लेआना चाहिये वहां उसको क्यों तूं नहीं ले आया इससे तूं मूर्ख है मेरे पास से चला जा इससे क्या आया कि जहां जिस का ग्रहण [illegible] उचित होवे वहां उसी का ग्रहण करना योग्य है [illegible] वित तो आपने अच्छी कही कि ऐसाही जानना चाहिए और करना भी चाहिए हम लोगों को जहां जिसका ग्रहण करना उचित है वहां उसी का ग्रहण करना चाहिए कि ॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथ ॥ मुपासीत ॥ यह छान्दोग्य उपनिषद का बचन है और ॥ ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वन्तस्योपव्याख्यानम् ॥ यह मांडूक्य उपनिषद का ब[illegible] ॥ [illegible] ओ३म् खम्ब्रह्म ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का बचन है ॥ [illegible] मेतत् ॥ यह कठोपनिषद का बचन है ॥ प्रशासितारं [illegible] णीयांसमणोरपि ॥ रुक्माभंस्वप्नधीगम्यं विद्यात्तंपुरुषम्परम् ॥ [illegible] ग्निमवदन्त्येके मनुमन्येप्रजापतिम् ॥ इन्द्रमेकेपरे प्राणमपरे ब्र[illegible] शाश्वतम् ॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं ॥ सब्रह्मासविष्णुः सरुद्रस्सशिवस्सोऽक्षरस्सपरमस्स्वराट् सइन्द्रस्सकालाग्निस्सचन्द्रमाः इत्यादिक कैवल्योपनिषद के बचन हैं ॥ अग्निमीडेपुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम् ॥ होतारंरत्नधातमम् ॥ यह ऋग्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ भूरसिभूमिरस्यदितिरसिविश्वधायाविश्वस्य भुवनस्यधर्त्री ॥ पृथिवीं यच्छपृथिवीं दृंहपृथिवीं मा[illegible] पुरुषंजगत् यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ अग्नआयाहिवीतये गृणानोहव्यदातये ॥ निहोतासत्सिबर्हिषि ॥ यह [illegible] वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ यह अथर्ववेद की [illegible]

मन्त्र है इत्यादिक प्रकरणों में इन वचनों से और इन के ठीक ठीक अर्थों के जानने से परमेश्वर ही का ग्रहण होता है क्योंकि ओंकार और अग्न्यादिक नामों के मुख्य अर्थ से परमेश्वर काही ग्रहण होता है, निरुक्त व्याकरण और कल्प सूत्रादिक ऋषि मुनियों के किये व्याख्यानों से वैसेही ब्रह्मादिकों के किए संहिताओं के, शतपथादिक ब्राह्मण वेदों के व्याख्यान से भी और छः शास्त्रों में भी परमेश्वर का ग्रहण देखने में आता है उन नामों के अर्थों से और उसी तरह के [illegible]करणों से भी परमेश्वर का ग्रहण होता है और का नहीं होता इस से क्या आया कि जहां जहां प्रार्थना स्तुति सर्वज्ञादि विशेषण और उपासना लिखी है वहां वहां परमेश्वर काही ग्रहण होता है यह सिद्ध हुआ [illegible]र जहां २ ऐसे प्रकरण हैं कि॥ ततोविराडजायत विराजो [illegible]भो[illegible]ष: श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्निरजायत। तस्माद्दवा[illegible] [illegible]चा[illegible] पश्चाद्भूमिमथोपुर: ॥ ये सब बचन यजुर्वेद को संहिता [illegible]उसके [illegible]स्माद्वा एतस्मादात्मनआकाशस्संभूत:। आकाशाद्वायु: [illegible]वायोरग्नि: अग्नेराप: अद्भ्य:पृथिवी पृथिव्याओषधय: ओषधिभ्यो [illegible]न्नम् अन्नात् रेत: सवाएषपुरुषोऽन्नरसमय:। यह तैत्तिरीयो[illegible]निषद् का बचन है॥ इत्यादिक प्रकरणों में विराट् इत्यादिक नामों से परमेश्वर का ग्रहण किसी प्रकार से भी नहीं होता क्योंकि परमेश्वर का जन्म और मरण कभी नहीं होता है। [illegible]स्से इसी प्रकार के प्रकरणों में विराट् इत्यादिक नामों से [illegible]ौर जन्मादिक विशेषणों से भी परमेश्वर का ग्रहण शिष्टलोगों [illegible]को कभी न करना चाहिये विराट् इत्यादिक नामों का अर्थ [illegible]तो है जिस्से इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण हो॥ रा-[illegible] [illegible]सने इस धातु से विराट् शब्द सिद्ध होता है। विविधन्नाम [illegible]समय जगत् राजते नाम प्रकाशते सविराट् विविध अर्थात् [illegible]के जगत् को जो प्रकाश करै उसका नाम विराट् है

अञ्चुगतिपूजनयोः । इस धातु से अग्नि शब्द सिद्ध होता है ॥ गतेस्त्रयोऽर्थाः ज्ञानंगमनम्प्राप्तिश्चेति पूजनन्नामसत्कारः अञ्चति अच्यतेवासोऽयमग्निः । जो ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ जानने प्राप्ति होने और पूजा के योग्य है उसका नाम अग्नि है ॥ विशप्रवेशने इस धातु से विश्व शब्द सिद्ध होता है ॥ विशंतिसर्वाणिभूतानि आकाशादीनियस्मिन्सविश्वः । प्रवेश करते हैं सब आकाशादिक भूत जिसमें उसका नाम विश्व है इत्यादिक नाम ओंकार से लिये जाते हैं ॥ हिरण्यन्तेजसो नाम हिरण्यानि सूर्यादीनितेजांसि गर्भेयस्य सहिरण्यगर्भः । अथवा हिरण्यानां सूर्यादीनान्तेजसाङ्गर्भः हिरण्यगर्भः । हिरण्यगर्भ शब्द का यह अर्थ है जिस्से सूर्यादिक तेज वाले पदार्थ उत्पन्न होके जिसके आश्रय रहते हैं उसका नाम हिरण्यगर्भ है अथवा सूर्यादिक तेजों का जो गर्भ नाम निवास स्थान उसका नाम हिरण्यगर्भ है इसमें यह यजुर्वेद का मन्त्र प्रमाण है ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषाविधेम ॥ इत्यादिक मन्त्रों से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है ॥ वागतिगन्धनयोः । इस धातु से वायु शब्द सिद्ध होता है ॥ गन्धनंहिंसनं वातिसोऽयंवायुः चराचरञ्जगद्धारयतिवासवायुः । जो चराचर जगत् का प्रलय करै अथवा धारण करै और सब बलवानों से बलवान होय उसी का नाम वायु है ॥ तिजनिशाने इस धातु से तैजस शब्द सिद्ध होता है जो अपने से आपही प्रकाशित होय और सूर्यादिक तेजों का प्रकाश करने वाला होय उसका नाम तैजस है इत्यादिक नामों का उकार से ग्रहण होता है । ईशऐश्वर्ये इस धातु से ईश्वर शब्द सिद्ध होता है ईष्टेअसौईश्वरः सर्वैश्वर्यवान योभवेत सईश्वरः । जो ... चारशील नाम सत्य जिसका ज्ञान है अनन्त जिसका ... उसीका नाम ईश्वर है ॥ दोऽवखण्डने । इस धातु से जिसधातु

नष्ट

सिद्ध होता है अवखण्डनन्नामविनाशः । उससे क्तिन् प्रत्यय करने से दिति शब्द सिद्ध होता है दिति जिसका नाम है कि जिसका विनाश होता है उससे नञ्तत्पुरुष समास हुआ तब अदिति शब्द हुआ अदिति नाम जिसका कभी नाश न होय । जो अदिति है वही आदित्य है। ज्ञा अवबोधने धातु है उससे प्राज्ञ शब्द सिद्ध हुआ प्रकृष्टश्चासौज्ञश्चप्रज्ञः प्रज्ञएवप्राज्ञः जो ज्ञानी और सब ज्ञानियों से उत्तम ज्ञानवान् है उसका नाम प्राज्ञ है प्रजानाति वा चराचरञ्जगत् सप्रज्ञः प्रज्ञएवप्राज्ञः सब पदार्थों को यथावत् जानता है उसका नाम प्राज्ञ है जैसा कि परमेश्वर का [illegible]कार उत्तम नाम है वैसा कोई भी नहीं इसका बहुत थोड़ा किया गया है क्योंकि ओंकार की व्याख्या से और बहुत लिये जाते हैं यह ओंकार का (नव) नामों से अर्थ तो[illegible] या ये नव नाम परमेश्वर के ही हैं और इस मन्त्र में मित्रादिक नाम हैं उन का अर्थ अब आगे किया जाता [illegible] जो प्रार्थना स्तुति और उपासना होती है सो श्रेष्ठ ही की होती है श्रेष्ठ जो अपने से गुणों में और सत्य सत्य व्यवहारों में अधिक है सोई श्रेष्ठ होता है उन सब श्रेष्ठों में भी परमेश्वर अत्यन्त श्रेष्ठ है क्योंकि परमेश्वर के तुल्य कोई भी न हुआ न है और न होगा जो तुल्य नहीं तो अधिक कैसे होगा कभी न होगा क्योंकि परमेश्वर के न्याय दया सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञान इत्यादिक अनन्त गुण हैं और वे सर्वदा सत्य ही [illegible] इससे सब मनुष्य लोगों को प्रार्थना स्तुति और उपासना [illegible]श्वर ही की करनी चाहिये परमेश्वर से भिन्न किसी की न करनी चाहिये ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक देव और दैत्य [illegible]दिक भी परमेश्वर ही में विश्वास करते हैं उसी की प्रा[illegible]ति और उपासना करते हैं और किसी की भी नहीं [illegible] विचार अच्छी रीति से उपासना और स्तुति के

विषय में लिखा जायगा।पूर्वपक्ष-मित्रादिक नामों से सखा और इन्द्रादिक देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन का ग्रहण करना चाहिये।उत्तरपक्ष-उन का ग्रहण करना योग्य नहीं क्योंकि जो किसी का मित्र है वही और का शत्रु भी है और किसी से उदासीन भी वह देखने में आता है परमेश्वर तो सब जगत् का मित्रही है और कोई से उदासीन भी नहीं इस से जो व्यवहार में किसी का मित्रहोने किसी का शत्रुहोने और किसी से उदासीन होने से उसका ग्रहण करना योग्य नहीं इस में महाभाष्य के वचन का प्रमाण भी है। प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः गौणमुख्ययोर्मुख्यकार्यसम्प्रत्ययः॥ इसका अ[र्थ] है कि प्रधान और अप्रधान गौण और मुख्य के बीच [में प्र-] धान और मुख्यही का ग्रहण होता है जैसे कि किसी से कि[सी] ने पूछा कि यह कौन जाता है उसने उस से कहा कि राजा जाता है इसमें विचार करना चाहिये कि राजा के साथ बहुत पर भृत्य हाथी घोड़े और रथ भी जाते थे परन्तु राजा के सामने उनका ग्रहण नहीं भया न होता है न होगा किंतु राजाही का हुआ क्योंकि प्रधान और मुख्य के सामने अप्रधान और गौणों का ग्रहण नहीं होता है वैसेही जो परमेश्वर सभों में प्रधान और सभों में मुख्यही है मित्र शत्रु और उदासीन किसी का भी नहीं इसी से परमेश्वरही का मित्रादिक शब्दों से ग्रहण करना उचित है। वृञ्वरणे वरईप्सायाम्॥ इन दो धातुओं से वरुण शब्द सिद्ध होता है वृणोतिसर्वान्शिष्टान्मुमुक्षून्मुक्तान्धर्मात्म नोयस्सवरुणः। अथवा व्रियतेशिष्टैः मुमुक्षुभिः मुक्तैः धर्मात्म-भिः यः सवरुणः परमेश्वरः अथवा वरयतिशिष्टादीन् व्रियते [वा] शिष्टादिभिः सवरुणः परमेश्वरः जो वृणोति नाम स्वीकार [करता] है शिष्ट मुमुक्षु और धर्मात्माओं को उसका नाम वरुण है स्व[यं] वरुण नाम परमेश्वर का है। व्रियते नाम शिष्टादिक जिस[का]

(निय

स्वीकार कर्ते हैं उसका नाम वरुण है अथवा वरयति नाम जो सब को प्राप्त हो रहा है उसका नाम वरुण है वर्यते नाम और जो सब श्रेष्ठ लोगों को प्राप्त होने के योग्य होय उसका नाम वरुण है और येह भी अर्थ होता है कि वरुणो नाम वरः वरो नाम श्रेष्ठः जो सभों से श्रेष्ठ होय उसका नाम वरुण है वैसा परमेश्वरही है और दूसरा कोई भी नहीं। ऋगतिप्रापणयोः इस धातु से अर्यमा शब्द सिद्ध होता है जो सभों के कर्मों की यथावत् व्यवस्था को जाने और पाप पुण्य करने वालों को यथावत् पाप और पुण्यों की प्राप्ति का सत्य सत्य नियम करै उसी का नाम अर्यमा है इदि परमैश्वर्ये इस धातु से इन्द्र शब्द की द्धि होती है इन्दति परमैश्वर्यवान् योभवति सइन्द्रः जिसका ऐश्वर्य होय उस्से अधिक किसी का भी ऐश्वर्य न होवै का नाम इन्द्र है बृहत् शब्द है इसके आगे पति शब्द का पड़े। बृहतांमहतामाकाशादीनांपतिःसबृहस्पतिः। जो बड़ों से भी बड़ा और सब आकाशादिक और ब्रह्मादिकों का जो स्वामी है उसका नाम बृहस्पति है। विष्लृव्याप्तौ॥ इस धातु से विष्णु शब्द सिद्ध हुआ है। विवेष्टिनामव्याप्नोतिचराचरञ्जगत्सविष्णुः उरु नाम महान् क्रमः पराक्रमोयस्यसउरुक्रमः जो सब जगत् में व्यापक होय उरुक्रम नाम अनन्त पराक्रम जिसका है उसका नाम उरुक्रम वही विष्णु है बृहबृहिवृद्धौ। इन धातुओं से ब्रह्म शब्द सिद्ध होता है जो सबके ऊपर विराजमान होय और सब से बड़ा होय उसका नाम ब्रह्म है वायु का अर्थ जो ओंकार के अर्थ से किया है वहीं जान लेना चाहिये शम् म है सुखका और कल्याण का भी नः यह पद से हम सब ों का ग्रहण होता है हे परमेश्वर ओंकारादिक जितने म हैं वे आपही के हैं आप प्रत्यक्षही ब्रह्म हैं। त्वामेवप्रत्यक्ष ब्रह्मवदिष्यामि॥ आपही को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगा प्रत्यक्ष नाम

सर्व जगत् में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्वदिष्यामि । आप की जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी कोही मैं करूंगा (सत्यम्वदिष्यामि । और सत्यही कहूंगा और करूंगा भी तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु । ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को कहने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करें और उस आज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय । उसी आज्ञा को मैं जो कहने वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न करूं क्योंकि जो आप की आज्ञा है धर्म रूपोही है जो उससे विरुद्ध सो अधर्म है उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करें जब मैं उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस का मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना। अवतुमामवतुवक्तारम् । यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह आदर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामंगच्छगच्छ । यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम प्र- शीघ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा करें और ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः । यह जो तीन बार पाठ है उसका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगादिकों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता है उसका नाम आधिभौतिक है तीसरा ताप वह है कि वृष्टि का अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत वा उष्णता का होना उसका नाम आधिदैविक ताप है हम लोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति आप की कृपा से होजाय भवान्नश्शन्नोभवतु । आप हम लोगों के अर्थात् सब संसार के कल्याण करने वाले हो आप से भिन्न कोई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इस आप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही प्रकाशित होवें इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया

आगे अन्य नामों के भी अर्थ लिखे जाते हैं ॥ सूर्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च । यह वचन यजुर्वेद का है जगत नाम प्राणियों का जो कि चलते फिरते हैं तस्थुष अप्राणि नाम स्थावर जो कि पर्वत वृक्षादिक हैं उन सभों का जो आत्मा होय उसका नाम सूर्य है अतसातत्यगमने । धातु है इस से आत्म शब्द सिद्ध हुआ अततिसर्वत्रव्याप्नोतीत्यात्मा । जो सब जगत में व्यापक होय उसका नाम आत्मा है और परश्चासावात्माचपरमात्मा । जो सब जीवात्माओं से श्रेष्ठ होय उसका नाम परमात्मा है ईश्वर नाम सामर्थ्य वाले का है जो सब ईश्वरों में परम श्रेष्ठ होय उसका नाम परमेश्वर है ब्रह्मादिक देवों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है जैसा कि मनुष्यों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है वैसेही ब्रह्मादिक देवों में जो सब से श्रेष्ठ होय और चक्रवर्त्यादिक [illegible]ओं से परम नाम श्रेष्ठ होय उसका नाम परमेश्वर है [illegible] ईश्वरों का ईश्वर होय और जिसके तुल्य ऐश्वर्यवाला [illegible] न होय उसी का नाम परमेश्वर है षुञ्अभिषवे षूङ्प्राणिगर्भविमोचने । इन दो धातुओं से सविता शब्द सिद्ध होता [illegible] ॥ अभिषवःउत्पादनम् प्राणिगर्भविमोचनञ्च । सुनोति सूते [illegible] उत्पादयति चराचरञ्जगत्ससविता । जो सब जगत् को उत्पत्ति [illegible]रै उसका नाम सविता है ॥ दिवुक्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु ॥ इस धातु से देव शब्द की [illegible]द्धि होती है । दीव्यतिसदेवः । दीव्यति नाम स्वयं जो प्रकाशस्वरूप होय और जो सब जगत को प्रकाश कर्ता है इस से परमेश्वर का नाम देव है ॥ क्रीडतेसदेवः क्रीडते नाम अपने [illegible]नन्द से अपने स्वरूप में आपही जो क्रीडा को करै अथवा [illegible]ड़ा मात्र से अन्य की सहायता के बिना जगत् की क्रीडा को [illegible] जो रचै वा सब जगत के क्रीडाओं का आधार जो होय [illegible] परमेश्वर का नाम देव है ॥

नाम सब का जीतनेवाला और आपतो सदा अजेय है जिसको कोई भी न जीतसकै इस्से परमेश्वर का नाम देव है व्यवहारयति सदेवः व्यवहारयति नाम न्याय और अन्याय व्यवहारों का जो ज्ञापकनाम उपदेष्टा और सब व्यवहारों का जो आधार भी है इस्से परमेश्वर का नाम देव है द्योतयतिनाम । सब प्रकाशों का आधार जो अधिकरण है इस्से परमेश्वर का नाम देव है॥ स्तूयतेसदेवः। स्तूयते नाम सब लोगों को स्तुति करने के योग्य होय और निन्दा के योग्य कभी न होय इस्से परमेश्वर का नामदेव है॥ मोदयतिसदेवः। मोदयति नाम आपतो आनन्द स्वरूपही है औरों को भी आनन्द करावै जिसको दुःख का लेश कभी न होय इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है॥ माद्यतिसदेवः। माद्यति नाम आप तो हर्ष स्वरूप होय जिसको शोक का लेश कभी न होय औरों को भी हर्ष करावै इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है॥ स्वापयतिसदेवः। स्वापयति नाम प्रलय में सभों को शयन अव्यक्त में जो करावै इस्से परमेश्वर का नाम देव है॥ कामयते काम्यतेवासदेवः। कामयते काम्यते नाम जिसके सब काम सिद्ध होयँ और जिसको प्राप्ति की कामना सब शिष्ट लोग करैं इस्से भी परमेश्वर का नाम देव है॥ गच्छतिगम्यतेवासदेवः। गच्छति गम्यते नाम जो सभों में गत नाम प्राप्त होय जानने के योग्य होय उसको कहते हैं देव।देव नाम परमेश्वर का है।देव शब्द के एकादश अर्थ हैं॥ कुविआच्छादने। इस धातु से कुवेर शब्द सिद्ध होता है जो आकाशादिकों का आच्छादक है उसका नाम कुवेर है इस्से परमेश्वर का नाम कुवेर है॥ पृथुविस्तारे॥ इस धातु से पृथिवी शब्द सिद्ध हुआ जो सब आकाशादिकों से विस्तृत है उसका नाम पृथिवी है इस्से परमेश्वर का नाम पृथिवी है॥ जलप्रतिघाते। इस धातु से जल शब्द सिद्ध होता है॥ प्रतिहन्तिअव्यक्तपरमाण्वादीनिप-

रस्पारं तज्जलम् । जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और बियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इस्से परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में बियोग का करनेवाला वैसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं ॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ जन्म ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द से सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काशृदीप्तौ । इस्से आकाश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाशतेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इस्से परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इस्से अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिचराचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् । अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद में है ॥ अन्नमत्तीत्यन्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उसका नाम अन्नाद है यह बचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंही अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छगच्छ । इस्से क्या लिया जाता है कि शीघ्रही तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस विषय में व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात् । अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में क्रमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इससे परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है॥ वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानियस्मिन्सवसुः । अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः । सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो वास करता है उसका नाम वसु है इससे वसु परमेश्वर का नाम है ॥ रुदिर्अश्रुविमोचने । रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयत्यन्यायकारिणोजनान्सरुद्रः । रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्यायति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते । यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से विचारता है वही वचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिसको करता है उसी को ही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा के कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इससे जो जैसा करता है सो वैसाही प्राप्त होता है इससे क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं व सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदनहीं करते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

क्का आपोवैनरसूनव: । तायदस्यायनंपूर्वन्तेननारायण: स्मृत: ॥ यह स्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नार संज्ञा भी जलकी है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका अयन नाम निवासस्थान है इससे परमेश्वर का नाम नारायण है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है ॥ चदिआल्हादे । इस धातु से चन्द्र शब्द सिद्ध होता है ॥ चन्दतिसोयञ्चन्द्र: । जो आल्हाद नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो के सदा आनन्द स्वरूपही रहै उसको दु:खका क्लेश कभी न होय इससे परमेश्वर का नाम चन्द्र है ॥ मगिधातुर्गत्यर्थ: । मङ्गेरलच् इससे मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गल: । जो आपतो मङ्गल स्वरूपहो हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है इससे परमेश्वर का नाम मङ्गल है ॥ बुधअवगमने । इस धातु से बुध शब्द सिद्ध होता है ॥ बुध्यतेसोयंबुध: । जो आप तो बोध स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम बुध है । बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है ॥ ईशुचिरपूतीभावे । इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचिर् नाम । अत्यन्त पवित्र का जो आपतो अत्यन्त पवित्र होय औरों के पवित्रता का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शुक्र है चरगतिभक्षणयो: । इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पद से शनैश्चर शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार के धैर्य का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शनैश्चर है रहत्यागे । इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब त्यागियों के त्याग का हेतु होय इससे परमेश्वर का नाम राहु है ॥ कित निवासेरोगापनयनेच । इससे केतु शब्द सिद्ध होता है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगों से रहित होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाश का हेतु होय

इसे परमेश्वर का नाम केतु है ॥ यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्जनैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा कर्त्ते हैं उसका नाम यज्ञ है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़ निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तम दान वा ग्रहण नहीं है इसे परमेश्वर का नाम होम है ॥ वन्धबन्धने इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोक लोकान्तर अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपने २ परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करें इस प्रबन्ध के करने से किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहायकारी होता है वैसे ही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और सब पदार्थों का रक्षण करना इसे परमेश्वर का नाम बन्धु है ॥ पा(पाने)पारक्षणे इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को कर्त्ता होता है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और प्रीति कर्त्ता है इसे परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है पितॄणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पितामहानांपिताप्रपितामहः । जगत में जितने पिताओं के पिता हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह है ॥ मां माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान कर्ती है और लाड़न कर्ती है तैसेही सब जगत का मान और लाड़न अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः । चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्याऽस्माल्लोकादमृताभवन्ति॥ यह केनोपनिषद का बचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ बिषय को ग्रहण कर्ते हैं तथा सब श्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक बिषयों की उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इससे परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन वाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इससे परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणी प्राण और चक्षु ये सब हैं। बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति। नाम सब को चेताने वाले हैं इससे परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है ॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति । नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् को मैंहीं कर्ता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इससे परमेश्वर का नाम अहङ्कार है ॥ जीवप्राणधारणे । इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है ॥ जीवयेतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः । जो सब जीव और प्राणों का जीवन धारण करने वाला है इससे परमेश्वर का नाम जीव है ॥ आप्लृ व्याप्तौ । इस धातु से आप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है ॥ जनीप्रादुर्भावे इससे अज शब्द सिद्ध होता है ॥ नजायतइत्यजः । जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम अज है॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म । यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम् । जो सब दिन रहे जिसका नाश कभी न होय ॥ इससे परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात्

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा ब्रह्मही है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एकरस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न लेसके इस्से परमेश्वर का नाम अनन्त है ॥ टुनदिसमृद्धौ । इस्से आनन्द शब्द सिद्ध होता है जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्दस्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है ॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान से चित् शब्द का अर्थ जान लेना इस्से परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं ॥ शुन्धशुद्धौ । इस्से शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्ध होय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है ॥ बुध अवगमने । इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है ॥ मुच्लृमोचने । इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है ॥ सदकारणवन्नित्यम् ॥ जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इस्से परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा ॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः । जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है ॥ डुकृञ्करणे । इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है ॥ निर्गतः आकारो यस्मात् स-

जिसका पहले आकार था कि जिससे आकार निकल गया।

निराकारः। जिसका आकार कोई भी नहीं इस से परमेश्वर का नाम निराकार है॥ अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनं यस्मात् स निरञ्जनः। माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इस से क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इस से परमेश्वर का नाम निरञ्जन है॥ गण संख्याने। इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इस के आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है॥ गणानां समूहानां जगतामीशः स गणेशः। जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है॥ विश्वस्येश्वरः विश्वेश्वरः। विश्व नाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है॥ कूटे तिष्ठतीति कूटस्थः। जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिसके स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होने से परमेश्वर का नाम कूटस्थ है। जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वेही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये॥ शक्लृ शक्तौ शक्नोति यया सा शक्तिः। जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इस से परमेश्वर का नाम शक्ति है॥ लक्ष दर्शनाङ्कनयोः। इस से लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सा लक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके देखावे उसका नाम लक्ष्मी है॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सा लक्ष्मीः। जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है॥ लक्ष्यते वेदादिभिः शास्त्रैर्ज्ञानिभिश्च सापि लक्ष्मीः। वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लक्ष्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ सृगतौ । इस से सरस् शब्द से मतुप् और ङीप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयतज्ज्ञानम् ततविज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उसका नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वर ही है इस से सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥ सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय नहीं लेवै और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इस से परमेश्वर का नाम सर्व शक्तिमान् है ॥ धर्म, न्याय, और पक्षपात का त्याग, ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ॥ प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का वचन है जो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उसका नाम न्याय है ॥ न्यायंकर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वर ही है इस से परमेश्वर का नाम न्यायकारी है ॥ दय दान गति रक्षण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दय्यतेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिनाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रक्षण नाम है सब जगत को रक्षा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है ॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम दयालु है ॥ एकमेवाद्वितीयम् ॥ सदेव सोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयम् । यह छान्दोग्योपनिषद् का वचन है इसका अभिप्राय यह है कि हे सोम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक वे उससे कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोई भी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिसका नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इस श्रुति में सदेव यह वचन का पाठ है ॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजातीयस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसेही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इससे परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्यायकारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अन्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्धस्वभाव परमेश्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसके जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान ऐसा कभी नहीं इससे परमेश्वर में विजातीय परिच्छेद नहीं परमेश्वर निराकार और निरवयव है वैसेही कोई प्रकार का भेद नहीं है इससे परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इससे परमेश्वर का नाम अद्वितीय है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्विताद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मि न्यस्स्वातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उसका नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिसमें जिसको वा उसको नाम अद्वैत है अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वर ही का नाम है ॥ निर्गताः जन्मादयः अविद्यादयः सत्वादयः गुणाः यस्मात् स निर्गुणः परमेश्वरः । जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इससे परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिदानन्दादिगुणैः सहवर्तमानत्वात् सगुणः अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होने से परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों का योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसे ही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होने से परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना॥ सर्वजगतोऽन्तर्यन्तुं शीलमस्य सोऽन्तर्यामी । जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है। न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उसे जान लेना। धर्मेण राजते स धर्मराजः अथवा धर्मं राजयति प्रकाशयति स धर्मराजः। धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशक करने से परमेश्वर का नाम धर्मराज है ॥ सर्वञ्जगत् करोतीति सर्वजगत् कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्त्ता है ॥ निर्गतं भयं यस्मात् स निर्भयः । जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इससे परमेश्वर का नाम

निर्भय है ॥ नविद्यतेआदिःकारणंयस्यसःअनादिः । जिसका कारण कोई भी नहीं और अपने तो सब जगत का आदि कारण है इस्से परमेश्वर का नाम अनादि है ॥ अणोरणीयान्महतोमहीयान् । यह मण्डकोपनिषद् का बचन है जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इस्से परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥ भगोविद्यतेयस्यसभगवान । जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है ॥ मानयतिचराचरञ्जगत् । अथवा सर्ववेदादिभिश्शास्त्रैः शिष्टैश्चमन्यतेयः समनुः । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इस्से परमेश्वर का नाम मनु है ॥ चिन्तितुंयोग्यश्चिन्त्यःनचिन्त्योऽचिन्त्यः । जो विषयासक्त पुरुषों से चिन्तन में नाम सम्यक् जानने में नहीं आते इस्से परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर सो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उस्का ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक विन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसेही परमेश्वर का दृढ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥ प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः नप्रमेयः अप्रमेयः । जो परिमाणों से जिस्का परिमाण तोलन नहीं होता इतनाही परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सक्ता और न जान सक्ता है इस्से परमेश्वर का नाम अप्रमेय है ॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलम्यस्यसप्रमादी नप्रमादीअप्रमादी । जिस्का प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इस से परमेश्वर का नाम अप्रमादी है॥ विश्वंबिभर्तीतिविश्वम्भरः। जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है कलसंख्याने। इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है॥ कलयतिसर्वञ्जगत् सकालः जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है॥ प्रीञ्तर्पणेकान्तौच। इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है॥ प्रीणातिसर्वान्प्रीतिमतः। अथवा प्रीयतेधर्मात्मभिःसप्रियः। जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इससे परमेश्वर का नाम प्रिय है शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इस से परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर है इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिखे दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के विचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गलाचरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इस्से यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है ॥ मङ्गलाचरणंशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम सत्य सत्य धर्म जो ईश्वर की आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये ॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठहीका है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इस्से क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो श्रीगणेशायनमः शिवायनमः सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवैं क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

ऋषि लोग अथ शब्द का और ओंकार शब्द का पाठ आदि में कर्ते हैं सो अधिकारार्थ (अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है) वा (आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना) अथवा (एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना) इस वास्ते ओंकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग कर्ते हैं ओंकारं वेदेषु अथकारं भाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का वचन है वैसही मैं दिखाता हूं अथ शब्दानुशासनम् अथेत्ययं शब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का वचन है ॥ अथातो धर्मजिज्ञासा । यह भी मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का वचन है ॥ अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः । यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है ॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि ॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का वचन है ॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का वचन है ॥ अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः । यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का वचन है ॥ अथातो ब्रह्मजिज्ञासा । यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का वचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत । यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का वचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वन्तस्योपव्याख्यानम् । यह माण्डूक्यउपनिषद का वचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगोंने और वेदों मेंभी अथ और ओंकार अग्न्यादिक भी चारों वेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु श्रीगणेशायनमः इत्यादिक वचन किसी वेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इससे क्या जाना जाता है कि वेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरिःओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं यह सत्य है वा नहीं। यह भी मिथ्याही है क्योंकि ॐकारका तो ऋषि ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इससे हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ॐकार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इसके आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १ ॥

अथशिक्षांवक्ष्यामः । मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः । प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उचितहै जन्म से लेके तीनवर्ष अथवा पांचवर्षपर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में औषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावै अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिससे कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिससे बालकों के भी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी

अथवा गाय वा भैंसों के दूध से बालकों का पोषण करें जहां कुरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करें और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी पुष्टिसे रोग निवारणार्थ करें परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हों को दूध कभी न देवै स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और क्षीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाईं उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत् संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवै जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल क्षीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से व बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक की जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के बिना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावै जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्को भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्ध्वादिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीड़ासक्त भी वे न होवैं बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से वीर्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावैं स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चौर वा अपने शरीर की छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उसके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य कर्ता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड कर्ते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवें फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नाचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नाचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवें सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ पैं गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नाचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवै तब शीघ्रही उसको देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल भूत धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड कर्ता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान करके कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इससे यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों की शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावै तो ग्रहों की शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इस्से उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तू नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में लेआते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उसका फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा ३० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इस्से इस पत्र का नाम शोकपत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर बिश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानें रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करें इस रीति से बालकों को प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक विषय में सत्यत्व प्रतिपादन कहते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना कर्ता है

पारे को चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि बीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इस्से बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि बिषयों की कथा और बिषयी लोगों का सङ्ग बिषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से बिषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और बिवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात बर्ष वा ८ आठबर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम माता शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचबर्ष के पीछे वा ८ आठबर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जो हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और विद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषोक्षितैः ; लाडनाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हाथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो वे ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति-नाम सदा गुरु लोक ताड़ना करते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न करते हैं क्योंकि लाड़ना श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजायगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजायगे और दूसरे के आधीन रहेंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयिणोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के विना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुणका जो आभूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभूषणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसकी गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्ग भङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इससे सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसकी आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इससे मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पाप कर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो विचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त मैं आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं दऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसाही प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इससे प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इससे क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्योंकि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

भी कभी न करना क्रोध से अपने अपनीही हानि करदेवे और को भी हानि करले इस्से क्रोध भी न करना चाहिये किसी से कटुक वचन न कहै किन्तु मधुर वचनही सदा कहै बिना बोलाये किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना कहना चाहिये इतनाही कहै जिस्से कहना वा सुनना सो नम्रता सेही करै अभिमान से कभी नहीं किसी से वाद विवाद न करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभी न करै जहां किसी के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच आसन में बैठे न किसी को आड़ होय न किसी को दुःख होय न कोई उसको उठावै जिस्से गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नमस्कार करै उस्से विरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को माने जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभी न करै किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी का विश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और जो धर्म विरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवें उस्को अपने सामर्थ्य के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी श्लोकों को अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवें परन्तु सत्य सत्य धर्म के विषय में और परमेश्वर के विषय में दृढ़ निश्चय करा देवें जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के विषय में लिखा है वैसा उसी की उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवें और वस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवें जैसा कि धारना चाहिये भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इस्से कुछ न्यून भोजन करैं जिस्से कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभी

स्नान के लिये प्रवेश न करैं क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है ॥ नाविज्ञातेजलाशये । इसका यह अभिप्राय है कि जिस जल को परीक्षा यथावत् जो न जाने सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलैं क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और बचन को विचार के सत्यही बोलै जो कुछ कर्म करै उसको पहिले विचारही के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के बचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतन्न्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत् । सत्यपूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत् ॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में कण अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूतांवदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब विचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि बचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह विचारशून्य पुरुष है इस्से विचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे विचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो विचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चातापही होगा और सुख न होगा इससे जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्षतक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावेंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य को शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः॥२॥

अथाध्ययनाध्यापानविधिंव्याख्यास्यामः। आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवैं अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवैं घरमें कभी न रक्खैं परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करै पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करै गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवै गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ओंकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना॥ भूरितिवैप्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः। यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः। जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इससे परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है॥ अपानयति सर्वदुःखंसोपानः। जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खै इससे परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः। जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इस्से परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है ॥ भर्गः २ का एक बचन है ॥ देवस्य ६ का एक बचन है धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना ॥ वर्तुमर्हंवरेण्यं। नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वर्तुनाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों की प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हेसर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हे सर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने के योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करैं उसका धारण ज्ञान उसके ऊपर विश्वास और दृढ निश्चय हमलोग करैं ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करैं जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय जो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य अर्थात अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ है नाम सर्वशक्तिमान् सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करें कि बुद्धि सहित हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करें यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का वेद में इस प्रकार का पाठ है ॥ ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करादेवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र की रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करें सो यह योगशास्त्र का सूत्र है ॥ प्रच्छर्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य । इसका यह अर्थ है कि छर्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने से उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकृष्टञ्चतच्छर्दनञ्च प्रच्छर्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्दन है ॥ विधारणंनाम विरुद्धञ्चतद्धारणञ्च विधारणम् । जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में लेआना नाभि से अपान को और समान को हृदय में लेआना हृदय में दोनों व और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसको मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पीछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करै जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहरही वायु को रोक रक्खै जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इसी यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करदे फिर उसको आचमन का उपदेश करै हाथ में जल लेके गायत्री मन्त्र मन से पढ़के तीनवार आचमन करै ॥ अंगुष्ठमूलस्यतले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवंपित्र्यं तयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तल नाम हथेली का जो मध्य है उसका नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देव तीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करै इतने जल से आचमन करै कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उससे क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इससे क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती है और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपां समीपे नियतो नैत्यकं विधिमास्थितः । सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यं समाहितः ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके वन के शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थ चिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसे ही नित्य दो बार द्विज लोक प्रातःकाल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्य ही करै इससे बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी को वा तांबे की बेदि रच ले ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस बेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर लेवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस बेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच में अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले । उससे ड्योढ़ा प्रणीता पात्र रचले एक घृत पात्र रचले ○ प्रणीता में तो जल रक्खै पीछे उसमें से जब जब कार्य होय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवे तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावे फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े होंय तो उनको कुशाग्र से निकाल देवे पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ओं भूरग्नये स्वाहा इदमग्नये इदन्नमम। इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवे॥ ओं भुवर्वायवे स्वाहा इदं वायवे इदन्नमम। इससे दूसरी आहुति देवे। ओं स्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम। इससे तीसरी आहुति देवे॥ ओं भूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम। इससे चौथी आहुति देनी॥ ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा। इससे पांचवी आहुति देवे॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करदे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्निहोत्र सब करें ओंकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो अग्नये स्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

उसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम स्वकीया वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्यही है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्व देव और अतिथि सेवा पंच महायज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं ॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम् । यह मनुस्मृति का बचन है ॥ अथदेवतर्पणम् ॐ ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम् ॥ १ ॥ ॐ ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम् । अथर्षितर्पणम् । ॐ मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ इत्यृषितर्पणम् । अथ पितृतर्पणम् । ॐ सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ वर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ॐ पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ॐ पितामहायस्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामहायस्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ॐ मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ॐ पितामह्यैस्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ अस्मत्पत्न्यैस्वधानमः अस्मत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ॐ सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धीन्मृतांस्तर्पयामि ३ ॐ सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सगोत्रान्मृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः । पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये होंय उनका तो अवश्य करै ॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते

द्विजः । सव्ये प्राचीनआवीति निवीतिः कण्ठसज्जने ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हाथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करै पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करै और देवतीर्थ से कण्ठ में जब यज्ञोपवीत रक्खै और दोनों हाथ के अंगुष्ठा मे यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्राह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिण स्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खै और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवैं ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवैं- दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै ॥ अथ बलिवैश्वदेवम् । वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्येऽग्नौ विधिपूर्वकम् । आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम् ॥ ओं अग्नये स्वाहा ओं सोमाय स्वाहा ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ओं धन्वन्तरये स्वाहा ओं कुह्वै स्वाहा । ओं अनुमत्यै स्वाहा ओं प्रजापतये स्वाहा ओं सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा । मृत्तिका की चतुष्कोण वेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उससे उसमें दशाहुति देवै पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथाक्रमसे उस २ दिशाओं में भागों को रक्खे अपनी २ जगह में ओं सानुगायेन्द्राय नमः इससे पूर्वदिशा में भाग देना ओं सानुगाय यमाय नमः । दक्षिण

दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगाय वरुणाय नमः। इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगाय सोमाय नमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं मरुद्भ्यो नमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खै ओं अद्भ्यो नमः। इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खै ओं वनस्पतिभ्यो नमः। इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खै ओं श्रियै नमः। इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खै ओं भद्रकाल्यै नमः। इस मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में भाग रक्खै ओं ब्रह्मपतये नमः। ओं वास्तुपतये नमः॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खै ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः। ओं नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः। इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोष्ठ के बीच में तीनों भाग रख देवे ओं सर्वात्मभूतये नमः। इस मन्त्र से कोष्ठ के पीछे भाग रक्खै अपसव्य करके ओं पितृभ्यः स्वधा नमः इस मन्त्र से कोष्ठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खै इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्यो नमः पतितेभ्यो नमः श्वपग्भ्यो नमः पापरोगिभ्यो नमः वायसेभ्यो नमः कृमिभ्यो नमः। इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रख के कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै॥ इति बलिवैश्वदेवम्।

इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करनेवाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम त्यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान सत्यवादी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करें वा साथ में भोजन करावें अथवा भोजन के पीछे भी आवै तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र में किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इससे परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इससे क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करैं सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः करते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट कर देता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां२ मेला होता है जिस२ स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायु से जिसको रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इससे क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

सब लोगों के मल से जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करेंगे उस दुर्गन्ध को निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उससे मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० कोश तक वायु अधिक है इससे ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों के सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उससे नीचे भी कुछ रहते हैं जब की सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त कर देते हैं इससे कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करे कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जलको वे शुद्ध करेंगे उसका यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सी दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी कर छुच्छु में वा पात्र में रख के अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छौंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिल जाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल को पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की वृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवेगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवने से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करनेवाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उससे फूर्त्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इस्से उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इस्से सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करैं तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि ॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः । तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है मरे भये पित्रादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है उस्से क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्त में ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के स्मरण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी,

तीसरा गुण यह है कि दायभाग बांटने में सन्देह न होगा क्योंकि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहेगा वैसेही इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इससे दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि विद्वानों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होको निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इससे क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावेंगे और विचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों को तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उससे उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खेंगे इससे उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का विचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उससे मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांश्चादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसु जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इससे परमेश्वर होकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृकर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपनेही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपनेहीं पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ से पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग विचार से जान लेवें और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करेंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जायंगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जायंगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों की प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं इस्से अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति। राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का वचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और वैश्य इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ैं शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के विना सब शास्त्रों को पढ़ैं परन्तु वेद की संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करैं॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यं गुरौत्रैवेदिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्याश्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ वर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नववर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखो है॥ वृद्धिर्यौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोड़श वर्ष से २५ वर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ वर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें वर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उपनिषद् में ४४ वा ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इससे न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इससे न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्याहीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और विषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा और कन्याओं का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक ....
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ वर्ष से न्यून ब्र-ह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्या-दिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा दुःखीही रहेगी इस्से ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशेततोवर्षे पुमान्नारीतु षोडशे। समत्वागतवीर्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत का वचन है इसका यह अर्थ है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का विवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का विवाह करै और २५ वर्ष से पहिले पुत्रों का विवाह करै उसको राजा दंड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार की व्यवस्था राजा हीके अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस व्यवस्था को प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य यह प्रथम तो उक्त नियम को करावे आगे और नियमों कोभी। ऋतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वा-ध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्यायप्रवचने-च अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है ऋत नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और अध्यापक लोग सत्य २ बात की प्रतिज्ञा करें कि सत्य २ ही को मानेंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ेंगे

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्निहोत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करें। वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति सत्यंवद धर्मंचर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचार्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुंमाव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदितव्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचनाभ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवोभव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयां सोब्राह्मणास्ते-षांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादे-यम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचि-कित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः समदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्र वर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करें हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्महीको कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको बिद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब बिद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन भ्रममें न रक्खैं कृपा करके बिद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको बिवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्महीसे सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से बिरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़नेपढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ानेका पुरु-

पार्थ ही करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनकी सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उनों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करैं अथवा पाप कर्म करावैं उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करैं कि हमलोग जो सुकर्म करैं उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करैं उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके वचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवैं अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवैं दारिद्र्य होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से विवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभी न करैं वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश कहना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ओं सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरु की आज्ञा पालन और गुरु की सेवा से रक्षा करैं सदैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरु को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करैं सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ की विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनको भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत् परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनको भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करैं कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरु है उसी की निन्दा होती है बहुत से एक गुरु के पास पढ़ते हैं उनमें

से कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरु तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इसे इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य २ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय॥ कामात्मतानः प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहिवेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥ मनुष्यों की विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि॥ काम्योहिवेदाऽधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इससे श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से वाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने व्रत हैं वे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी बैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही बचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग बिना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करनाब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम की यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

यमात्मनः। एतच्चतुर्विधम्प्राहुः साक्षाद्धर्मस्यलक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इससे जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चोरजारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मंजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थों में नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं करते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फंसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने की इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ैं और विचारैं उनको बिना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इससे जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्त होके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरै न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खै

यही सुखका स्थान है ॥ ब्रह्माऽरम्भेऽवसानेच पादौग्राह्योगुरोः सदा। संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः ॥ जब शिष्य गुरू के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरू को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढ़ैं तथा गुरू के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरू उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरू आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरू को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूंछे अथवा सुनै ॥ नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूयान्नचान्यायेनपृच्छतः। जानन्नपिहिमेधावी जडवल्लोकआचरेत ॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उस्से कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इस्से उनसे कहना व्यर्थही है ॥ अधर्मेणचयःप्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति। तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति ॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इस्से गुरू शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत करेगा उसको बड़ा सुख होगा ॥ आचार्यपुत्रःशुश्रूषुर्ज्ञानदोधार्मिकःशुचिः। आप्तःशक्तोऽर्थदःसाधुः स्वोध्याप्यादशधर्मतः ॥ आचार्य का पुत्र शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र आप्त नाम पूर्णकाम और शक्त नाम समर्थ अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिस्से कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों की खो वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवेंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो बेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इससे पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इससे कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इससे सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्यावर्त्त देश बासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनकी बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्यावान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके सङ्गी सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इससे सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्यावर्त्त बासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इससे क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार से नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित करकेही पढ़ना और पढ़ाना भी॥ इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम्। अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी बाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोवृत्तिर्ज्ञानं वा। यह वात्स्यायन भाष्य का बचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परन्तु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि॥ व्यवस्थितः पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः। ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यों-

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः। यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उससे भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी का भी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक् और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव को प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तूं घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्त्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं, परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इससे क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भी भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवै इससे आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है ॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च ॥ यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश करते हैं तत्पूर्वकं नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के बिना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के बिना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह बेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बहे जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई हैं इस संसार की रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलकेही स्थान से स्था-
नान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा
देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा
देखा इससे देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे
चलकेही आया है क्योंकि विना गमन स्थान से स्थानान्तर में
कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्र-
कार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने
देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्वत्
नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में
मिलाहुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाथा उसने
जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है
तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान
में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि
अवश्य है इस प्रकार का अनेकविधि पूर्ववत् अनुमान होता है
सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धिसे विचार करके कहा
कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इससे क्या आया कि अन्य ऐसा
कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में
विना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का
शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य
के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर
में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इसका
नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इससे आगे तीसरा उपमान
प्रमाण है ॥ प्रसिद्ध साधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम् ॥ यह गौतम
मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता
एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम
जिससे जनावै जिसकी उपमा जिससे की जाय उसका नाम उप-
मान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तू देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उस्से पूछा कि देवदत्त कैसा है उसने उस्से कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है॥ आप्तोपदेशः शब्दः। यह गौतममुनि का सूत्र है॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्ततइत्याप्तः ऋष्यार्य-म्लेच्छानां समानंलक्षणम्॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय वैर किसी से न होय पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम्। ऋषि नाम यथार्थ मंत्रद्रष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु म्लेच्छ-अव्यक्तशब्दे। इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्ष्या से रक्खा है उसका अर्थ है दुष्ट, नीच, कपटी, कुली और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु आर्य्यों का नाम हिन्दू कभी न रखना चाहिये॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्। तयोरेवान्तरंगिर्य्योरार्य्यावर्त्तंविदुर्बुधाः॥ आर्य्यै रावर्त्तः स आर्य्यावर्त्तः जो-

देश आर्यों से नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखने में नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिस से अर्थ को यथावत् जाने उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसकी प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार की विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और भी ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्त्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसकी जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनो तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मान मात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसकी दृढ़स्थिति हृदय

में हो जाती कि हृदय और आचरण से धर्म का नाश कभी न होय चौथा तस्योपायोऽधिगन्तव्यः । हेय जो अधर्म उसके त्याग के उपाय को प्राप्त होना और धर्म के ग्रहण के उपाय को प्राप्त होना वह उपाय सत्पुरुषों का सङ्ग, श्रेष्ठबुद्धि और सद्विद्या के होने से प्राप्त होता है इतने ४ अर्थपद होते हैं इनका सम्यक् जानने से निःश्रेयस जो मोक्ष नाम नित्यानन्द परमेश्वर की प्राप्ति और जन्म मरणादिक दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति हो जाती है इससे इस ४ प्रकार की विद्या को भी सज्जनों को अवश्य जानना चाहिये ४ प्रकार के जो प्रमाण हैं उनका विषय लिखा गया और इनकी परीक्षा भी संक्षेप से इससे आगे लिखी जाती है सो जान लेना ॥ प्रत्यक्षादीनामप्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः । इत्यादिक परीक्षा में गोतममुनि प्रणीत सूत्रों ही को लिखेंगे सो आप लोग जान लेवें प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं है क्योंकि तीन कालों की असिद्धि के होने से पूर्वापर सहभाव नियम के भङ्ग होने से कि पहिले प्रमाण होता है वा प्रमेय देखना चाहिये कि पहिले जो प्रमाण सिद्ध होय और पीछे प्रमेय तो बिना प्रमेय के प्रमाण किसका होगा वा पहिले प्रमेय होय प्रमाण पीछे होय तो बिना प्रमाण के प्रमेय कैसे जाना जायगा और जो सङ्ग में दोनों का ज्ञान होय तो बिना प्रमेय से प्रमाण की उत्पत्ति ही नहीं इससे किसी प्रकार से भी प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं हो सक्ता तथा हि पूर्वं हि प्रमाणसिद्धौ नेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्प्रत्यक्षोत्पत्तिः । यह गोतममुनि का सूत्र है जैसे कि गन्धादि विषय का जो प्रत्यक्ष ज्ञान सो गन्धादिकों का और नासिकादिक इन्द्रियों का सम्बन्ध होने से प्रत्यक्ष की उत्पत्ति होती है अन्यथा नहीं और जो कोई कहै कि पहिले प्रमाण की उत्पत्ति होती है पीछे प्रमेय की अच्छा तो गन्धादिकों का तो सम्बन्ध भी उत्पन्न नहीं भया उनके सम्बन्ध के

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्नि-कर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इस्से आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र॥ पश्चात्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थ-नियतत्त्वात्क्रमवृत्तित्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जानकर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनों को एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्तु को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह वस्तु भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन बिचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं॥ सूत्र। युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञान को न ग्रहण करै किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे को ग्रहण करै उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि॥ सूत्र। उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविष-यस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनम्विभागवचनम्॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इससे पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इससे जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पीछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है इससे घटादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिले प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र । त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः । आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों की सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्काल में होने वाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो इन्हीं का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र । सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः । किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इससे आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र । त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः ।

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि बीण अथवा बांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह बीण का शब्द है और जब बीणा देखी तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि बीण आगे बजाने से शब्द होगा और जब सन्मुख बीण को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब बीण और बीण के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तौलने के लिये प्रमाण की नाई है तुलासेही घृता-दिक द्रव्यों को तौल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तौली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसको होती है वैसेही जबे प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से, रूपादिक विषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जांयगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्या-दिक सब जान लेना तोन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश इसका नाम हैं कि नाम मात्र से पदार्थ को गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण इसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जल में रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि वे निवर्तक और ज्ञापक हो जाते हैं इसी गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों के लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्मा ही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिका ही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इसी नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है, मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्मा ही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन को ही जान के कहता है इसी मन आत्मा का लक्ष्य है आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही के लक्ष्य और लक्षण भी हैं इसी आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ही का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इसी सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोषप्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण, २ ऐसा बाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्षण २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मतमें आवेगी इस्से बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के विषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवै इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्। यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से वृष्टि होती है इस्से क्या आया कि बिना बादल से वृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो विचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उसका ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा विचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह जाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इस्से अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र। शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः। चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तों ही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनुमान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इससे चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गोतममुनि का अभिप्राय है एवं मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योगशास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानै तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़े वा पढ़ावे और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़े और न पढ़ावे इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये ॥ अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः। प्रथम तो अष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावै सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों की वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी को जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्यादिक तिङन्त रूपों को और भावः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्ही सूत्रों से साध २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाहरण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयावृत्ति नाम दूसरी बार पढ़ै उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितने पद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवेगा और सर्वादि गणों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवै सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसको हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ बर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ बर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़ै और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इसमे जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

व्याकरण के नाम से जो जाल रूप कौमुद्यादिक ग्रन्थ चन्द्रिका सारस्वतादिक और मुग्धबोधादिकों के ५० बर्ष तक पढ़ने से भी जैसा बोध नहीं होता है उस्से हजारगुणा अष्टाध्याय्यादिक सत्य ग्रन्थों के पढ़ने से तीन वर्ष मेंही बोध हो जाता है इसमें विचार करना चाहिये कि सत्य ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ा लाभ होता है वा मिथ्या जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने में जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ भी लाभ नहीं होगा क्योंकि जाल रूप ग्रन्थों में इस प्रकार का व्यर्थ बिवाद लिखा है उसको पढ़ाने और पढ़ने वाले भी वैसेही हठी, दुराग्रही और विरुद्ध वादी होंगे ऐसेही देख भी पड़ते हैं क्योंकि जैसा ग्रन्थ पढ़ेगा वैसीही बुद्धि उसकी होगी इस प्रकार का बड़ा एक जाल बनाया है कि मरण तक एक शास्त्र भी पूर्ण नहीं होता उसको अन्य शास्त्र पढ़ने का अवकाश कैसे होगा कभी न होगा एक शास्त्र के पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि संकुचितही रहती है विस्तृत कभी नहीं होती सब दिन उसको शंकाही बनी रहती है सब पदार्थों का निश्चय कभी नहीं होता और जो व्याकरण का पढ़ना है सो तो बेदादिक अन्यशास्त्रों के पढ़ने केही लिये है जब वह एक व्याकरणही में बाद बिवाद करता २ मर जायगा तब हांथ में उसके कुछ भी न आवेगा इस्से सब सज्जन लोगों को ऋषि मुनियों की पठन पाठन की जो रीति है उसी में चलना चाहिये जाली लोगों की रीति में कभी नहीं क्योंकि आर्य्यावर्त्त मनुष्यों के बीच में कपिलादिक ऋषि मुनि जितने भये हैं वे बड़े बिद्वान् और बड़े धर्मात्मा पुरुष भये हैं उनके सहस्रांश में भी इस समय जो आर्य्यावर्त्त में मनुष्य हैं वे बुद्धि, बिद्या और धर्माचरण में नहीं देख पड़ते इस लिये उनका आचरण हम लोगों को करना उचित है कि उसी से आर्य्यावर्त्त के लोगों की उन्नति होगी अन्यथा कभी नहीं व्याकरण को तीन

वर्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनिकृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़े और पढ़ावै उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध है डेढ़ वर्ष के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि के किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़े पीछे यास्कमुनि के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़े उससे गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवैगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश बर्ष में पढ़ने से जो बोध नहीं होता सो उक्त निघण्ट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो बर्ष में होगा इससे इनकाही पढ़ना और पढ़ाना उचित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़े जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी को अधिकरणमाला व्याख्या के सहित पढ़े चार मास के बीच में पढ़ लेगा और इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़े सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि कणादमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जी का किया जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की वृत्ति के सहित को पढ़े उसके पढ़ने में दो मास जायंगे उसके पीछे न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़े इसके पढ़ने में चार मास जायंगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र जो कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी का किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे सांख्यदर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़ लेगा इसके पीछे ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे वेदान्तदर्शन को पढ़े जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़े जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़े इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायगा दोवर्ष के बीच में सब पदार्थ विद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके विषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के विषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के विषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के विषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के विषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और वेदान्तशास्त्र के विषय में पञ्चदशी, वेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और अल्लोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद जाल रूप लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का विषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ है जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही वह है

किन्तु पिसान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़जायगी और जो सत्यशास्त्रों से विरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इससे इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इससे कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इससे सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जालग्रन्थों का कभी नहीं पूर्व पक्ष छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के विषय में बहुत सी परस्पर विरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही विरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया फिर सत्यशास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है उत्तर कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी विरोध और परस्पर खण्डन है, यह बात आप लोगों की मिथ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्याबाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का बिचार कभी नहीं कर्त्ता उसको तो यही प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन करके अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उस्से प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आजकाल के पण्डितों की क्षुद्रबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उस्से विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इस्से वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ हैं और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथ्वी होती है क्योंकि पृथ्वी में चार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय को विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथ्वी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथ्वी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

संध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका बिचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य/ गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का बिचार करना इस बात तक लिखा उस्से आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष बिचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखी है जो देखना चाहे सो उसमें देख लेवै सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य और परम कारण का बिचार बेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सक्ते हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी को सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत का रचने वाला कोई नहीं है सो वेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लेके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इससे विचारना चाहिये कि षटशास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थ विद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उन्ना जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल विरोध ही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थ ही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पठन न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इससे सज्जन लोगों का ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इससे आगे हम लोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और वेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़ने ही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़ै उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बह्वृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़े और स्वर को भी पढ़ै सो दो वर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ैं डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़ै गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्यसूत्र के साथ २ पढ़ै दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़ै शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ को एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़ें सब विचार मात्र से आजायंगी तथा आरण्यक बृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी विचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़ै जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तीनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक विषयों को यथावत् पढ़ै सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और वैद्यकशास्त्र के विषय में शार्ङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़ै उसमें शस्त्र विद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र विद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना अस्त्रादिक अस्त्रों के विषयों का विस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवै जैसे कि सूची व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पहिले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

को रचके शत्रु की सेना वा दुर्ग वा नगर में प्रवेश करें तब उसके विजय को सम्भव होता है ऐसेही शकटव्यूह, मकरव्यूह और गरुड़व्यूहादिकों को जान लेवे उसको दो वा तीन वर्ष में पढ़लेगा उसके आगे सामवेद का जो उपवेद गान्धर्व वेद उसको पढ़ै उसमें वादित्ररागरागिणी, काल-ताल स्वरपूर्वक गान विद्या का अभ्यास करै दोवर्ष में उसको पढ़लेगा इसके आगे अथर्ववेद का जो उपवेद अर्थवेद नाम शिल्पशास्त्र उसमें नाना प्रकार कला यन्त्र और नाना प्रकार के द्रव्यों को मिलाने से नाना प्रकार व्यवहारों के यानों को और दूरवीक्षण, अणुवीक्षण, नाम दूरस्थित पदार्थों को निकट देखे और अणुवीक्षण नाम सूक्ष्म पदार्थ भी स्थूल देख पड़ै इत्यादिक पदार्थों को रचले जैसे कि अग्नि का ऊर्द्ध गमन स्व-भाव है और जल का नीचे जाने का स्वभाव है सो किसी पात्र में जल को करके चूल्हे के ऊपर रक्खैं और उसके नीचे अग्नि करै फिर उतनेही भार वाले पात्र से उस पात्र का मुख बन्ध करै जब अग्नि से जल ऊपर उड़ेगा तब इतना बल होजायगा कि ऊपर का पात्र नाचने लगेगा वा गिर पड़ेगा इसी प्रकार से पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथिवीयान, जलयान और आकाश यानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचरवसुराजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरि-चरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे तथा जैसे कि आज काल अङ्गरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प-शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं उसको भी तीनवर्ष में पढ़लेगा पढ़के पीछे अपनी बुद्धि से बहुत सी शिल्प विद्या की उन्नति करलेगा पीछे ज्योतिश्शास्त्र को पढ़ै उसमें

गणित विद्या यथावत् जाने उससे बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ै मुहूर्त्त चिन्तामण्यादिक जालग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहेगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से संसार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसेही पढ़ावेगा इससे जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सके कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इससे राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो

वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्य्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग इसरीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख दृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे सर्वदा दीन रहेंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे इससे वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहेंगे व मूर्ख होंगे इससे कभी सुख न पावेंगे इससे सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इससे मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इससे बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उसमें हो जायगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान् जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इससे ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, ऊर्द्ध्वपुंड्र, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में विश्वास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामोंसे पाप नाश होने का विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना, मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकोंही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पीछे वे सम्प्रदायी लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों को मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय होजाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वैसे हैं जैसे कि पशु हैं वे ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्ध परंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि बाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करैं और तिलक माला धारण करैं काश्यादिक तीर्थों में जाके वास करैं और नाम स्मरण करैं एकादश्यादिक व्रत करैं और पुष्प ले आवैं चन्दन घसैं धूप दीप करैं नैवेद्य धरैं परिक्रमा करैं पाषाणा-

का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करैं और कूदैं नाचैं

कूदैं और बाजे बजावैं रथ यात्रादिकों का मेला करैं और परस्पर व्यभिचार करैं मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारों ही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमात्र भी न आवैगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाश ही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्य्यादिक पुत्र और कन्याओं को लाडन में ही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इस से भी विद्या का नाश ही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर वे हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्ख ही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जायंगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इससे हम लोगों की आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्न ही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फस जाते हैं इससे वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुत्र पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुत्र वा बन्धुपुत्र भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट हो जायगी इससे जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गपान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उस्से भी बिद्या का नाश होता है छठवां बिघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, चेलों में सदावर्त, बिवाह, त्रयोदशाह, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचें निर्वाह मात्र बिद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और बिचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डोंहीकी होती है इस्से मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम बिघ्न यह है कि पांचवें बर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी बिद्या का नाश होता है और बिषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इस्से भी बिद्या नहीं होती यह आठवां बिघ्न बिद्या का नाशक है इत्यादिक और भी बिद्या नाश करने के बिघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग बिचार करलेवें जब सोलह बर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवे तबतक व्यायाम करे बहुत न करे किन्तु ४० बैठक करे और ३० वा ४० दण्ड करे कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करे फिर लोट करे उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करे सब अभ्यास जब कर चुके उससे एक घण्टा पीछे भोजन करे परन्तु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवे इस्से शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और रूक्ष होजाते हैं उस्से बुद्धि भी वैसी रूक्ष होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इस्से अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देख लेवे उन बालकों के हृदय में वीर्य्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त दे दे के कह देवें जैसे कि वीर्य्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाहीं पशुवत होजायगा॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवा-स्यात्साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठोदृढिष्ठोबलिष्ठः तस्येयंपृथिवीसर्वा-वित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दाः सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः श्रो त्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्ध-र्वाणामानन्दाः सएकः पितॄणांचिरलोक लोकानामानन्दः श्रो-त्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितॄणां चिरलोकलोकानामान न्दाः सएकः आजानजानान्देवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामह तस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दाः सएकः कर्मदेवाना-मानन्दः येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेश तंकर्मदेवानामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाका

मकामहतस्य तेयेशतन्देवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरानन्दाः सएकोब्रह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरुषेयश्चासावादित्येसएकः॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् की श्रुति है सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढिष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और जिसको वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते हैं और जो कोई केवल विद्यावान्ही है और किसी प्रकार की कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न होवै ऐसा जो श्रोत्रिय॥ श्रोत्रियंछन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्रवर्त्ती को उस्से भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्ती राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इस्से चित्त की एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्त्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृलोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोग वासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द बृहस्पति को है और बृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्त्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द विद्यावाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है किन्तु एक ही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्वान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख को कोई गणना अथवा तोलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द विद्या के विना किसी को कभी नहीं होसक्ता इससे सब मनुष्यों को विद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इसके आगे चौथे प्रकरण में विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ३ ॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिव्याख्यास्यामः ॥

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनकी परीक्षा यथावत् करें जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्ष्या, इत्यादिक दोष न होवें पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहै उसको ब्राह्मण का अधिकार देवें और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या कुछ न्यून होय शूर, वीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उससे अधिक हो उसको क्षत्रिय करें और जिसको थोड़ी सी विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवै परन्तु अत्यन्त भीरु होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्पन्न भया उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै ब्राह्मण वैश्य और शूद्र के गुण होनेसे ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी होजांय तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उक्त गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का करना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धर्मात्माओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने में ब्राह्मणों को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फंस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवें ॥ पशूनांपालनं दान मिज्याध्ययनमेवच। वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यकृषिमेवच॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और कृषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना ॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभुःकर्मसमादिशत्। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनसूयया ॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करनी इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों को यथावत् सेवा करै ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः । ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देश में व्यापक नहीं होसक्ता, उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहू, ऊरु और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवे मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के बिना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में होय वह क्षत्रिय होवे तथा ऊरु नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के वेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवें वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवें सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करना चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने में बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानें तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था का

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों को जन्ममात्रही से मानें तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजायंगे क्योंकि जन्ममात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इससे सब विद्यादिक गुण नष्ट हो जायंगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस कुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे उत्तम कर्मही करेंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इससे उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का करेंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करेंगे सदा नीचही कर्म करेंगे इससे ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उससे ब्राह्मण कुल दूषित हो जायगा इससे उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग लेलेंगे चोर और डाकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को पीड़ा देंगे इससे उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य नष्ट होजायगा इससे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त विद्यादिक गुण से युक्त होवे उसी को वैश्य होना उचित है जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जायंगे अर्थात् शूद्र होजायंगे और शूद्रादिकों को विद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जायंगे इस से उत्तमों को तो भय होगा और नीचों को उत्साह होगा इस से ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ व्रियन्तेये-तेवर्णाः । कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भया और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जाबाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी विवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्र का शूद्रा से विवाह होना चाहिये क्योंकि विद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का विवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से विवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का विवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष सोई शूद्र है उससे मूर्ख स्त्री का विवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों की

अर्थात् वर और कन्या की प्रसन्नता से विवाह का होना उचित है कन्या वर की परीक्षा करे और वर कन्या की दोनों की परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु विवाह कर देवें अथवा आपही दोनों परस्पर विवाह करलेवें पशुवत् विवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से विवाह करना चाहिये बाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि वेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करे। महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होय गाय, छेरी, अवि नाम भेड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवें तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करे वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम् । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं है और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवें स्त्री २ होवें २ निश्छन्द नाम जिस कुल में वेदादिक विद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नाईं देह के ऊपर लोम होवें ४ अर्शस नाम जिस कुल में ववासिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयाविनाम जिस कुल में आंव का विकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्वित्रि नाम जिस कुल में श्वेत कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में गलित कुष्ठ होय १० इन दश कुलों की कन्याओं को विवाह के लिये ग्रहण न करैं क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवेगा इस्से उनका ग्रहण करना उचित नहीं ॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गीन्नरोगिणीम् । नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम् ॥ नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीन्नान्त्यपर्वतनामिकाम् । नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम् ॥ कपिला नाम बिलाई की नांई जिस कन्या के नेत्र होवैं उसके साथ विवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेत्र होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग वर से अधिक होवैं अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा वर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर विवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर कृषित होवैं तब विवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उस्से अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और वंशच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटा ही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष की परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से विवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवैं उस्से भी विवाह न करै वाचाटा नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ विवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नांई

होय उस स्त्री के साथ विवाह न करै और जिसका नक्षत्र के ऊपर नाम होय जैसा कि अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के ऊपर जैसा कि आम्रा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों को न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम् । तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अङ्ग न होवैं अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवैं सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारणगामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नांई चलै तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवैं ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करै ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः । गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म को कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना आदि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म बिवाह है मास वा दोमास पर्यन्त होम होता रहै और जामाता जो ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव बिवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष बिवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे बिधि पूर्वक बिवाह होना उसका नाम प्राजापत्य बिवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर को भी थोड़ा २ धन देना होमादिक बिधि से बिवाह करना उसका नाम आसुर बिवाह अर्थात् दैत्यों का बिवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से बिवाह का होना उसको गान्धर्व बिवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बन्ध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके ब बिधि कर लेवैं इसी का नाम गान्धर्व बिवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या को ले लेना है उसको राक्षस बिवाह कहते हैं फिर होमादिक बिधि कर के बिवाह कर लेवैं अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परप-दार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह बिवाह है अष्टम बिवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

भांग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से पागल भई होय उस्से समागम करै विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब विवाहों से नीच विवाह है इन आठ विवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उस्से नीच आसुर, उस्से नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है उसको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैः स्त्रीविवाहै रनिन्द्या भवति प्रजा । निन्दितैर्निन्दिता नॄणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसी परीक्षा और जो काल लिखा है उस्से विरुद्ध विवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट विवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उस्से जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के विना विवाह का करना उस्से बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजांयगे उनके धनादिकों का नाश भी हो जायगा इस्से निन्दित विवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम विवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो विवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ विवाह हैं उन विवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनकी प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने विवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से विवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी,

कुन्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, कात्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये थे तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने । पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतन्त्रताम् ॥ बाल्यावस्था न्यून से न्यून षोडश वर्ष पर्यन्त होती है तब तक पिता के वश में कन्या रहै और षोडश वर्ष से लेके २४ वर्ष पर्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै जब पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै क्योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इससे आप कुमार्ग में चलेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इससे स्त्री को स्वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि पिता के घर में कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का धर्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जायगे यह बात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के रजस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जायगे और नरक में जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो सदा होहोगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द करदेवें सो यह बात प्रमाणशून्य है बुद्धिमान् इस बात को कभी न मानें इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती । ऊर्द्ध्वन्तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशम्पतिम् ॥ पिता के घर में कन्या जब रजस्वला होय तब से लेके तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै तीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण पति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक रोग न होवें तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले नहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्दरहवें वा १४

चौदहवें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला होजाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करैं तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित है और जब सोलहवें वर्ष रजस्वला होय तो १९ वा २० बीसवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज निकलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है इससे रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है जो जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या यह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा उनको क्लेशही होता है इसलिये यह बात मिथ्याही है जन्मपत्र मिलाने का बुद्धिमान लोग सत्य कभी न जानैं इसमें प्रमाण भी है ॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांतस्मै कन्यान्दद्याद्यथाविधि ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा वर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट सम्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों तुल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है ॥ काममामरणात्तिष्ठेद्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि । नचैवैनाम्प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् ॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवै अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करै तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करै यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या तत ऊर्द्ध्वं रजस्वला १। माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच। त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम्॥ २ ॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौरवर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उससे विवाह कैसे हो सकेगा वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड़ पदार्थ है उससे विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है यह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जायगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इससे उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको विवाह का फल न होता होगा इससे उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इससे इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इससे इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इससे इसका नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार के श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं ॥ ब्रह्मोवाच । एकवर्षाभवेद्गौरी द्विवर्षाचैवरोहिणी । त्रिवर्षातुभवेत्कन्या ततऊर्द्ध रजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्रातातथार्जुनः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानें वही श्रेष्ठ होय तो जैन यसुमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं उनी को मानना चाहिये वे हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इस्से हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों के मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्तही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इस्से विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इस्से क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरुवाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, वसिष्ठउवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठिरउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्यनारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायी लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरवउवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो दृष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इनों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवै उस्से विना परिश्रम से धन आवै और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना इथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना व्यर्थही है और जैसे मेरे स्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानें इससे क्या आया कि मरण तक भी कन्या विवाह के बिना घरमें बैठो रहै तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का विवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर विवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का विवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इससे दोनों का परस्पर बिचार करके वर और कन्या का विवाह करैं क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हों को सुख और दुष्ट विवाह से उन्हों को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के विचार और प्रसन्नताहो से विवाह होना चाहिये विवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितहो है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इससे बहुत राज्य नष्ट होगये और वैश्य लोगों का भी बिवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों को मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इससे धन का नाश विवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से विवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ विवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत विवाह करना उचित नहीं क्योंकि विवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इससे एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इस से विवाहिता स्त्री के साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तानही की इच्छा करै अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं॥ संतुष्टोभार्ययाभर्त्ता भर्त्रा भार्यातथैवच। यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम्॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहेंगे तो यह दोष आवेगा॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत्। अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंनप्रवर्त्तते॥ १॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम्। तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते॥ २॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष की अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनन नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥ १॥ यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः। यत्रैतास्तु नपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः॥ २॥ शोचन्तिजामयोयत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्। नशोचन्तितुयत्र

त्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥ ३ ॥ जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मादेतास्सदापूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झाल्लरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवेद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों की ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस्से पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जाने इस्से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य विवाहिता स्त्री को तो कैद की नाईं

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनको तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके शाप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई विषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इससे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५ पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा । पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक की पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अनृ-तावृतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः । सुखस्यनित्यंदातेह परलो

केचयोषितः ॥ २ ॥ वेद मन्त्रों से जिस पुरुष से विवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इसे विवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै। सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उनको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नोकर इत्यादिकों पर सब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवे उसके पास पाक करने समय बैठ के शिक्षा करै जैसी पाक की रीति वैद्यकशास्त्र में लिखी है उस रीति से पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना होय उस को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति से अर्थात् जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै उस में जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति को समझा देवै और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरुष के आधीन रहै परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं घर इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्मही से धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नहीं अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढ़ी होवे उसको सदा पढ़ावैं और

बिचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा बिद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ेंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब बिद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से ब्यभिचार भी न करेंगी बिना ब्यभिचार से वे स्त्री धन भी न देंगी फिर हम लोगों का ब्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन को ब्यभिचार और स्त्रीही लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः । पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ४ ॥ बिवाह की जितनी बिधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का बिवाह वेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और बिवाह के पहिले गुरौ वास नाम स्त्री लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करैं और गृह कार्य जानने के लिये अवश्य बिद्या पढ़ैं अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य बेदों को पढ़ैं अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करैं अन्य यज्ञों को भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो बिद्या न पढ़ी वा आप न जानती होंगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य को कैसे करेंगी बिद्या अन्य के पास होय तो उस बिद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुणग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम् । वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः ॥ ५ ॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं स्त्री हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और शिल्प अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवैं उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि ॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूया न्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनानृतंब्रूयादेषधर्मःसनातनः ॥ १ ॥ भद्रम्भद्रमितिब्रूयाद्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह ॥ २ ॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगै वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्री गामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनो बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इस्से ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियवचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चलै उसको उसकी माता कहै कि तू अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हाथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उस्से बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखही होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही बचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस बचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियवचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है सो मैं और माता पिता को उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवें और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवें उनसे वे पुरुष कहैं कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसी ही है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इससे इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै ॥ प्रियंचनानृतंब्रूयात और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से बने रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे शुश्रूषु लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

चाट ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों को मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित वैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नांई कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलगीं रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नांई परमेश्वर ने बनाया है इससे बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बने फिर जब उस शाक ने बादी की तब रात भर नींद भी न आई और ८

दश बार शौच भी गया उससे राजा बड़ा शोषित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारो ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइले के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलँगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव वर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी, कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानें कि जो कल शाम को कही थी उसको मानें वा आज के कहे को मानें वाहवा महाराज किस प्रकार के विवेकी हैं कि विरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहेंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूठी वा सच्ची बात कहेंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करें हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहें तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करे और मूर्खही बना रहे फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी के

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसकी निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं की और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों की सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को श्रेष्ठही पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष को सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि ॥ गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वद्या ॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणञ्चतद्विरोधत्वात् ॥ गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्थात्

यथावत् सत्यभाषण करना स्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों को सदा स्तुति ही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्यबात कहने और सत्याचरण के करने में निन्दा करें तो भी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नताही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों को भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग विरोध भी अत्यन्त करें यहां तक कि मरण की भी अवस्था आजाय तोभी सत्यवचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्ट ही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नहीं इसमें यह मनु भगवान् का प्रमाण है । नलोकवृत्तंवर्त्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन । इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्तलोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका करते हैं वैसे आचरण कभी न करै वृत्ति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्यही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या वही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषणही करै दूसरा मनु भगवान का श्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि । भद्र है कल्याण का नाम सोतीन बार श्लोक में पाठ किया है इसी हेतु कि कल्याण कारक वचनसदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ठ होयऔर अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आज काल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से बाद विवाद करते२ लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इस से जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्वक विवाद छोड़ कर पूछने आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातां धर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवैं तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़े । संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंयतोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः । इत्यादिक सब मनु स्मृति के श्लोक लिखेंगे सो जान लेना । संतोष इसका नाम है कि सर्व्वथा प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खैं आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिन पुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवे कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ ही से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्येत कामतः अतिप्रसक्तिंचैतेषां मनसासन्निवर्तयेत् ॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवै किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवै और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय ॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्यानिचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान् ॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्रही बुद्धि धन और हित को बढ़ाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। किञ्चयथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार करता है तैसे२ उसका विज्ञान बढ़ता जाताहै फिर विज्ञान हीसे उसको प्रीति होती है और में नहीं ॥४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाशक्तिनहापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन १ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होत्रादिक २ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव ३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा ४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हें कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं। योगाभ्यास करै सब शास्त्रों को विचारै ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करै इसमें मनु भगवान का प्रमाण है एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोजनाः अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया ही से करते हैं बाह्य चेष्टा से नहीं क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा का परमेश्वर से योग करते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नहीं ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम करते हैं कितने प्राण में वाणी का होम करते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नहीं होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्तिही हो जाती है फिर कभी उनको दुःख का संग नहीं होता है इससे उन को बाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ जो

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान ही से ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को करते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है सब क्रिया उन की ज्ञानमूलक ही है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य अडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नहीं वे अग्नि होत्रादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करें क्योंकि उनके करने बिना हृदय शुद्ध नहीं होगा उन ज्ञानियों की सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवें जिससे कि कर्मियों की भी बुद्धि बढ़े ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेनवा नकस्यचिद्वसेद्गेहे शक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवै तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहै जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य सत्कार करै ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करै ।

पाखण्डिनोविकर्मस्थान्वैडालव्रतिकाञ्छठान् हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाषंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये गोसांई आदिकों का वचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करैं वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करैं वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का वचनसे भी गृहस्थ लोग सत्कार न करैं शठ नाम मूर्खों का भी सत्कार न करैं शठ वे होते हैं कि उन्हें बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करैं हैतुक नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी वचन से सत्कार न करैं

बकवृत्ति अर्थात् जैसे वैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवें और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रसाद में विष भी देदेते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग वचन से भी सत्कार न करैं ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं वैरागी और साधू इत्यादिक उनको साधू न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और कितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और क्षेत्र करते हैं वे अनुचित करते हैं क्योंकि बड़े धूर्त्त गांजा और भांग पीनेवाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदावर्तों से अन्न लेते और क्षेत्रों में भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्मही करते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और क्षेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर सेंतका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म करते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदावर्त्त क्षेत्र करता है उसमें सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहैं तो पाठशाला रचलेवें उसी में सब दान करैं अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवें उन को अन्नादिक देवें और यत्न करैं तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेदविद्याव्रतस्नानात् श्रोत्रियानगृहमेधिनः। पूजयेद्धव्यकव्ये नविपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिन्हों ने ब्रह्म चर्य्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य औ कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करें उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करें। ११ ॥ शक्तितोऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना। संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्योऽनुपरोधतः॥ १२ ॥ जो सन्यासीश्रमस्थ विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन की भी गृहस्थ लोग सेवा करें और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवे उनका भी गृहस्थ लोग पालन करें ॥ १३ ॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयने चैवनशयोततयासह ॥ १३ ॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेके चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करे और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवे ॥ १३ ॥ रजसाभिलुप्तांनारींनरस्यह्युपगच्छतः।प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रहीयते ॥ १४ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम कर्ता है उसकी बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उस्से पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुध्यादिक नष्ट हो जाते हैं॥ १४ ॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभिलुप्ताम् प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रवर्द्धते ॥ १५ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं ॥ १५ ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्तेबुध्येतधर्मार्थौचानुचिन्तयेत् कायक्लेशांश्चतन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेवच ॥ १६ ॥ एक पहर रात जब रहै तब सब मनुष्य उठें उठके प्रथम धर्म का विचार करें कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करें कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हो उनको औषध पथ्य और निदान का इस से यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर को प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करै फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करैं अथवा खैर के चूर्ण वा सूंठिनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मलै और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घर में आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़ै तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभ में तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करैं ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोने से रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उस्से सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इस्से ग्रीष्म ऋतुमें सोने से रोग नहीं होता है अन्यऋतु में सोनेसे होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सब कार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होच करै जब २ अग्निहोत्र करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा भ्रमण करै निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दोप्रहर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसेही नित्य क्रिया करै सो मध्यरात्रि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने २ शय्या में पृथक् २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जांयगे क्योंकि उस्से बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इस्से उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के वचन का प्रमाण है। भोजनंहि गृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिनःस्मृतम्॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातःकाल जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिःअहरहःसंध्यामुपासीतअहरहरग्निहोत्रंजुहुयात्। इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातःकाल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोत्र करै दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कभी नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायंकाल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इस्से मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सक्ती। संध्यायन्तिपरंतत्त्वंनामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या। इस समय परमेश्वर का ध्यान कर्ते हैं इस्से इसका नाम संध्या है अथवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दोई हैं। तस्मादहोरात्रस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत॥ यह

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है । उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यम-
भिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण
की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात
रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करैं जब जीवात्मा बाहर
व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और
इन्द्रियों को भी बहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट
और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्यउदय
होकर ऊपर २ विहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता
है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि की
नांई अन्धकार हो जाता है विना अपने स्वरूप के किसी
पदार्थ को नही देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब
अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पडता है ऐसही जीव के
ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों
संध्याकाल में करैं इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का
कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी
नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ
हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः
सकलंभद्रमश्नुते । इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या नि-
कलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं । नति-
ष्ठतितुयःपूर्वाम् नोपास्ते यश्चपश्चिमाम् । सशाधुभिर्वहिष्कार्यः स-
र्वस्माद्विजकर्मणः ॥ १ ॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शना-
त् । पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात् ॥ २ ॥ जो प्रातः
और सायम् काल की संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज
लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवैं अर्थात् यज्ञो-
पवीत को तोड के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवाही करै
जो कि शूद्र का कर्म है ॥ १ ॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं
दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या के काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से लेके जब तक तारा न निकलें तब तक सायं सन्ध्या के काल का नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका कहा है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्यान संध्या क्यों न होय तो उनसे पूछना चाहिये कि मध्य रात्रि में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो युग में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या हो जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इससे उसका कहना मिथ्याही है॥ २॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यनृतंधनम्। हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते॥ ३॥ जो नर अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका धन भी अनृत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसारत अर्थात परपीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार में सुख को कभी नहीं प्राप्त होता॥ ३॥ नसीदन्नापिधर्मेण मनोऽधर्मेनिवेशयेत्। अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम॥ ४॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से भी बहुत दुःख पावे तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्योंकि अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश हो जाता है ऐसा देखने में भी आता है इससे मनुष्य अधर्म करने की इच्छा कभी न करै॥ ४॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलतिगौरिव। शनैरावर्त्तमानस्तु कर्तुर्मूलानिकृन्तति॥ ५॥ जो पुरुष अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो शीघ्र न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उसको सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में देती है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ जब अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात सुख

के कारणों को छेदन कर देगा इससे वे दुःख सागर में गिरेंगे॥५॥ अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति। ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति॥६॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है॥६॥ इससे किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु। सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत्सदा। शिष्यांश्च शिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः॥७॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करैं तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत् धर्म से शिक्षा करैं और वाणी बाहु उदर इनका संयम करैं अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खें॥७॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः। नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः॥८॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करै अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्ष्या कभी न करै और कर्मही परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी बुद्धि सदा रक्खै॥८॥ येनास्य पितरो याताः येन याताः पितामहाः। तेन यायात्सतां मार्ग-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ६ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पितामह गये हों उसी मार्ग से आप भी जावें उस मार्ग पर जाने से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभी नहीं पाता पूर्वपक्ष यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय तो भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं उत्तर नहीं क्यों कि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है कि यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात धर्मात्मा होवें तो उन की रीति से चलना और यदि अधर्मी होवें तो उनकी रीति से कभी न चलना चाहिये ॥ ६ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः॥ १० ॥ मातापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विवादंनसमाचरेत् ॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थात मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतुर, नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबधी अर्थात श्वसुरादिक, बान्धव अर्थात कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थात स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इनसे विवाद कभी न करै और औरों से भी विवाद न करै विवाद का करना दुःख मूलही है इस्से सज्जनों को किसी से विरुद्ध वाद करना न चाहिये ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रवर्जयेत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशुब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्रह लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग देते भी होंय तो भी किसी से दान न लेवै किंतु अध्यापन नाम पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परीश्रम से आजीविका को करै और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उसका ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशामदी होजायगा इस्से दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज-

ति ॥ १३ ॥ जो पुरुष तपस्वि और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसी दान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी ॥ १३ ॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम् । दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच ॥ १४ ॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा वकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवै और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवै जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक में उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा ॥ १४ ॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन् । तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ ॥ १५ ॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ के उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के बिना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इससे परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और वकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है ॥ १५ ॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः । वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ॥ १६ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः । शठोमिथ्याविनीतश्चवकव्रतचरोद्विजः ॥ १७ ॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात् धर्म तो कुछ न करै अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़ै खाने में भी लोभ करै और बड़ा कपटी छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करै अर्थात् जैसे कि संप्रदायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण करने से वैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है तथा रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और सब पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादिक नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती है इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों को गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इस्से दुःख और बन्धन तो होहोगा और मुक्ति कभी न होगी किंतु धर्माचरण विद्या और ज्ञान इनके विना मुक्ति कभी नहीं होसकी हिंस्रः नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने में नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थात् अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खै सो मेल धर्म से नहीं किन्तु अधर्महो से धनादिक हरण करने के लिये प्रीति करै उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक का लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टि नाम नीचे देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान् है नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उसके बदले में दस कठिन बचन भी उसको कहै तो भी उसकी शान्ति न होय उस्को नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थात अपने स्वार्थ साधन में हो तत्पर अर्थात् किसी को पोड़ा तथा हानि होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थात मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उपदेश न मानै उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय तथा नम्रता करै सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे लक्षण वाले को वकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे बक नाम बकुला जल

के समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को देखता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस को उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं वे दूसरे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिसपर उनको कभी दया नहीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक संप्रदाय वाले हैं इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और सब वैसेही होते हैं इससे गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करैं १७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते। वार्यन्नगोमहीवा-सस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इससे सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥ धर्मंशनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः। परलोकसहायार्थं सर्व-भूतान्यपीडयन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती हैं वैसेही मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्मही के सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः। नपुत्र दारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते। एकोऽनु-भुंक्ते सुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता है तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है तो एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एकही करता है इसमें संग किसी का नहीं इससे सब मनुष्यों को यह उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पालन धर्मही से जितना धनादिक मिले उतनेही से व्यवहार और पालन करें अधर्म से कभी नहीं क्योंकि ॥ एकःपापानिकुरुते-फलंभुङ्क्ते महाजनः । भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्त्तादोषेणलिप्यते ॥ यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पितादिक सुख के भोग करने वाले तो हो जायेंगे परंतु दुःख जो पाप का फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया वही पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं ॥ २१ ॥ मृतंशरीरमुत्सृ-ज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ । विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छ-ति ॥ २२ ॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है तब काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक के चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवी में डाल के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बी लोग चले आते हैं कुछ सहायता नहीं करते ॥ २२ ॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसंचिनु-याच्छनैः । धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम् ॥ २३ ॥ तिससे नित्यही सहाय के लिये धीरे २ धर्मही का संचय करें क्योंकि धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणादिक दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् पर-मेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से होती है अन्यथा नहीं ॥ २३ ॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्विषम् । परलोकंनयत्याशुभास्वन्तंखशरीरिणम् ॥ २४ ॥ जिस पुरुष को धर्मही प्रधान है अधर्म में लेशमात्र भी जिसको प्रवृत्ति नहीं

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इसे श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः । दुःखभागीचसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८ ॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीही रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादिक शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इसे दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत् । यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन होंय उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखसर्वमात्मवशंसुखम् । एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपही हैं और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है सो जान लेवें ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंननियमान्केवलान्बुधः । यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन करैं वे नियम ये हैं । शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानियमाः । यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलस्य से दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ्र चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठा अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै ये अर्थ व्यवहारों की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की रीति

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर को शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त की शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है चुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंदों को सहै और कृच्छ्र, चांद्रायणादिक ब्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ओंकार के अर्थ का विचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर को प्राप्ति के फल को इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उनके साथ गौण नियमों का भी करनाहीं उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् विवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करैं यह जितनी विद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करैं विवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदें उनका परस्पर यथायोग्य बिवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करैं और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवैं और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से विवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर बिवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी जाने जांयगे वस्त्रादिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस्से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस्से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती हैं तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक इड्डा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस्से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस्से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और वर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आज

होगा तब सब पुरुषों के सामने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रहण करले उससे एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इसमें ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है ॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विना-कुहाभिपित्वङ्करतः कुहोषतुः कोवांशयुचाविधवेवदेवरंमर्य्यनयो-षाकृणुतेसधस्थऽआ । इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरुष ये दोनों के प्रति प्रश्न की नांई कहा है आप दोनों दोषा अर्थात रात्रि कुह नाम कौन स्थान में बास करते भये और किस स्थान में अश्वि नाम दिवस में बास किया था किस स्थान में इन दोनों ने अभिपित्व अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की थी इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुचा नाम शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त भया और इससे यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष का वियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और सब देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे विधवा देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश में बास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर को सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके रमण और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वेदमन्त्र से पूंछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिखा है कि ॥ देवरःकस्माद्द्वितीयोवरउच्यते । देवर अर्थात विधवा को जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को देवर कहते हैं इस निरुक्त से वर का बड़ा भाई अथवा छोटा भाई वा और कोई भी विधवा का जो दूसरा बर होय उसी का नाम देवर आया इस मन्त्र से विधवा का नियोग अवश्य करना चाहिये यह अर्थ आया और मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया । प्रजेप्सिताधिगन्तव्या-सन्तानस्यपरिक्षये ॥ १ ॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर वा

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उससे विधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करै परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि। एक-मुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्ते-स्त्रीषुतद्विदः। अनिर्वृत्तंनियोगार्थम्पश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीडासक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है उससे नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि। गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेया-तांपरस्परम् ॥ ४ ॥ विधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो विधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नांई मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवें तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुंबियों के साम्हने दोनों कह देवें कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियु-क्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः। तावुभौपतितौस्यातांस्नु-षागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों विधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करैं तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करैं ॥५॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ विधवा का नियोग कभी न करैं अपने कुटुम्बही में करैं जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करैंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करैं क्योंकि इसके विना विधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे ॥५॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के बिना अर्थात दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करैं तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का विधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥७॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ विवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों विधान करैं ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाविधि विधवा से देवर विवाह करके

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करें तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करें ॥५॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ विधवा का नियोग कभी न करें अपने कुटुम्बही में करें जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करेंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करें क्योंकि इसके विना विधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे ॥५॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के विना अर्थात दो पुत्र होने के पोछे जो गमन करें तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का विधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्याया वाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥७॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ विवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों विधान करें ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाविधि विधवा से देवर विवाह करके

आज्ञाकोनमानैव्याधिनामरोगयुक्तहोजायवाविषादिकदेकेकोई मनुष्यकोमारडाले औरघरकेपदार्थोंकोसदानाशकर्तीहोय तो उसस्त्रीकोछोड़केदूसराविवाहकरलेवे॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेद्याऽब्देदशमेतुमृतप्रजा। एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रियवादिनी॥१३॥ विवाहकेपीछे८आठवर्षतकगर्भनरहे, औरवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे परीक्षाभीकरले फिरअष्टमेवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्याका यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरै औरजिसकेसंतानहोकेमर जांय औरएकभीनजीयेतो१०मेवर्षदूसराविवाहकरलेवे औरउसको अन्नवस्त्रादिकदेवे औरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवें पुत्रएकभीनहो यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविवाहकरले औरउसस्त्रीकापालनकरै जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोले तोउसकोशीघ्रहीछोड़केदूसराविवाहकरलेवे १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउसको छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरले औरएकयहभीव्यवहार है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थातरोग सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगयाहोय तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्यलेकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवे, परन्तुधर्मसे व्यभिचारसेनहीं इसीप्रकारसे१२पुत्रमनुस्मृतिमेंलिखेहैं जिसकोदेखनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवेनियोगमेंऔरक्षेत्रजादिकपुत्रोंकेहोनेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगदऔरविचित्रवीर्य दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपुत्रउत्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीनपुत्र सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुलऔरसहदेवयेपांचऔरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसिद्धहै, इस्सेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकीरीति और युक्तिसेठीकहै इसमेसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं पूर्वपक्ष औरस्मृतिकेश्लोकक्योंनहीलिखे उत्तरपक्षअन्यस्मृतियोंका वेदोंसे विरोध औरवेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकीकिई

भीकोई स्मृति नहीं सिवाय मनुस्मृतिके ॥ यद्वै किञ्च मनुरवदत्त-
द्भेषजं भेषजतायाः । यह छांदोग्य उपनिषद्की श्रुति है इसका यह
अभिप्राय है कि जो कुछ मनुजीने उपदेश किया है सो यथावत वेदोक्त
है और सत्य ही है जैसे कि रोगके नाश करनेका औषध वैसा ही है यह
एक मनुस्मृति ही का वेदमें प्रमाण मिलता है और किसी स्मृतिका नहीं
और सबलोगोंको भी यह बात सम्मत है ॥ किवेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्रा-
धान्यं हि मनोस्मृतम् । मन्वर्थविपरीता या सा स्मृतिर्न प्रशस्यते ॥
इस श्लोकके सब पंडितलोग कहते हैं कि मनुस्मृतिके अनुकूल जो स्मृति
उसको मानना चाहिये और उससे विरुद्ध किसी स्मृतिका नहीं सो एक
बातमें तो पंडितोंकी और मेरी सम्मत हो गई परन्तु एक बातमें विरो-
ध होता है कि मनुके अनुकूल स्मृतियोंको वे मानते हैं और मैं नहीं
मानता क्योंकि मनुस्मृतिके अनुकूल तो तब कोई स्मृति होगी जब मनु-
स्मृतिके अर्थ ही को कहै फिर मनुजीने तो वह अर्थ कह दिया है उसका
कहना दूसरी बार व्यर्थ है, क्योंकि पीसे भये पिसानका जो पीसना सो
व्यर्थ ही होता है और मनुस्मृतिमें जो उपदेश करना था सो सब कर
दिया है कुछ बाकी नहीं रक्खा इससे भी अन्य स्मृतिका होना व्यर्थ ही है
इस बातको पंडितलोग विचार कर लेवैं तो बहुत अच्छी बात है और
महाभारतमें भी जहां२ प्रमाण लिखा तहां२ मनुस्मृति ही का लिखा
और किसी स्मृतिका नहीं इससे जाना जाता है कि मनुष्योंने ऋ-
षियोंके नाम प्रमाणके वास्ते लिख २ के जाल अपने प्रयोजनके वास्ते
बना लिया है और जो यह बात कहते हैं कि कलौ पाराशरी स्मृतिः ।
सो तो अत्यन्त अयुक्त है क्योंकि द्वापरके अन्तमें व्यासजीने मनुस्मृति
का ही प्रमाण लिखा सो क्यों लिखा शङ्कराचार्यजीने भी मनुस्मृतिका
ही प्रमाण लिखा है और जो सत्य बात है उसका सब दिन प्रमाण होता
है इसमें कुछ शङ्का नहीं इससे जो पुरुष कहते हैं कि कलौमें पाराशरी
स्मृतिका प्रमाण है सो मिथ्या बात है और पाराशरी स्मृतिके आरंभमें
यह बात लिखी है कि ऋषिलोगोंने व्यासजीके पास जाके पूछा आप हम

सेवर्णाश्रमयथावत्कहैं तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्वर्णा-
श्रमधर्मोंकोनहींजानता इस्से मेरेपिताजोपाराशरउनसेचलके
पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्कहैंगे फिरउनकेपासजाके उनलोगोंने
प्रश्नकिया औरपाराशरजोउनसेकहनेलगे उसमेंहोपाराशरजोने
कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्यास
जीवेदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहोंजानतेथे
किन्तु अवश्यहीजानतेथे औरपाराशरअपनेमुखसेकैसेकहेंगे कि
कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐसे२
अयुक्तस्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभोनकरै जैसे
कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौः-
पूज्यानचदुग्धवतोखरी॥ १॥ अश्वालम्भङ्गवालम्भसन्यासंपलपैट-
कम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत्॥ नष्टेमृतेप्रव्रजिते-
क्लीवेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ३॥
इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रेष्ठ
कैसेहोगाकभोनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्श्रेष्ठकर्मकरनेवाला
पुरुषहै सोअश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तु कभोनहोगा औरगायतोपशु
है, सोपशुकोक्यापूजाकरनाउचितहै कभोनहीं किन्तुउसकोतो
यहोपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभोदु-
ग्धादिकप्रयोजनकेवास्तेअन्यथानहीं औरगधीकीभीपूजावैसीहो
होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्ते कतीहीहै॥
१॥ औरदूसरास्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेध गवालम्भनामगोमेध
औरसन्यासग्रहण औरमासकापिण्डदान औरविधवासेदेवरके
नियोगसेपुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनकात्याग
कभोनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इसके
कहनेसेअजामेधादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेधका
जोकरनाउस्से बड़ासंसारकाउपकारहै सोपहिलेकहदिया और
संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदिक

उस्से तौसंसारकीबड़ीहानिहोतो इस्से संन्यासकाहोनाअवश्यहै, औरमांसकेपिण्डदेनेमेंतोकुछपापनही क्योंकि यदन्ना:पुरुषालोकेतदन्ना:पितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै। मधुपर्केतथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्म्मणि। अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्मनु:। २ ॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थातपितृदेवपूजाभीउसीसेकरै अर्थातश्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्कविवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांसकोजोखाताहोय तोउसकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका बिधान है इस्से मांसकेपिण्ड देनेमेंभोकुछपापनहीं देवरवाज्ये इसे नियोगकाविधिलिखदिया सोवहोजानलेना कलिमेंपाचोंकानकरनासो यहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्रीदूसरापतिकरले फिरजोपूर्वबिवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ाबखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्याबआधी २ स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाकहनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालरूकटहीआपतआवेगोतोवहस्त्रीक्याकरैगीइस्सेयतीनोंश्लोकमिथ्याहीहैंवैसेहीपाराशरीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतश्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसामनुस्मृतिहीकाहै इस्से पाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहै इस्से मनुस्मृतिकोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया जबजिसदिनस्त्रीरजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उनमेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवांदिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थातसोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहे उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवांऔर१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीकेशरीरकोधातु स्वस्थभावसेतुल्यवर्तमानरहतीहैं और५वां,७वां

और१६ वां येतीनदिनमध्यमहैं क्योंकिउसदिनस्त्रीकेधातुओंकाअधिकबलहोताहै सोपहिले ४ चार दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय:पुत्रहीहोगा अथवा कन्या होगी तो अश्रेष्ठही होगी औरजो तीन दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय: कन्या होगी औरनपुंसकभीहोजायतोआश्चर्यनहीं इससे ४चारदिनअथवा७सातदिन वीर्य्यदानके उत्तमऔरमध्यमहैं, अन्यदिनमेंसमागमंकरेगा तो क्षीणबलसन्तानहोगा इससे ११ग्यारहवांवा१३तेरहवांअमावस्या औरपौर्णमासीदिनमें वीर्यदानकरेगातोवीर्यनष्टहोजायगा और जोसन्तानहोगासोभीनष्टहोगा रोगकेहोनेसे क्योंकिउनदिनोंमें स्त्रीकीधातुविषमहोजातीहैं एक २ मासमेंस्त्रीस्वभावसेरजस्वला होतीहै, सोउक्तप्रकारकेसोलहदिनकेपीछेस्त्रीकासमागमकभीन करे क्योंकिमिथ्यावीर्यनष्टहोगा औरगर्भकभीनरहेगा इससे मिथ्यावीर्यकानाशकभीनकरनाचाहिये जिसदिनसेगर्भहोवैउसदिन सेलेके एकवर्षतकस्त्रीकात्यागकरनाअवश्यचाहिये क्योंकिगर्भका नाश औरपुरुषकाबलभीनष्टहोजाताहै इससे एकवर्षतकत्यागअवश्यकरनाचाहिये जोपुरुषपरस्त्री अथवावेश्या गमनसे वीर्यनाश करतेहैं वेबड़ेमूर्खहैं क्योंकिउनकावीर्यमिथ्याहीजायगा औरबड़े रोगहोंगेजोकभीगर्भरहेगातोभीउसकोकुछफलनहीं क्योंकिजिसकीस्त्रीहै उसीकासन्तानहोगा औरवीर्यदेनेवालेकानहीं और वेश्यासेजोपुत्रहोगा सोभडुवाहीहोगा औरजोकन्याहोगी तो वहवेश्याहीहोगी इससेवीर्यदेनेवालेकोकुछलाभनहीं सिवायहानि केऔररोगभीउनकोबड़े २होतेहैं जिससेवोबड़ादु:खपातेहैंक्योंकि जबपरस्त्री गमनकीइच्छाकरतीहै अथवाजिसवक्तसमागमकरतीहै, तबउसके हृदयमेंभय,शंका औरलज्जापूर्णहोतीहै किइसकर्मको कोईनजानें जोकोईजानेगातोमेरीदुर्दशाहोजायगी एकतोयहअग्नि दूसरामैथुनकाअग्निऔरतीसराचिन्ताग्नि किरातदिनउसी चिन्तासेजलताजायगा येतीनोंअग्निसेउसकीधातुसबदग्धहोजा-

संदूषणानिषट् ॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किपानं अर्थातमद्यऔरभंगादिकनशाकाकरना दुर्जनसंसर्गअर्थातदुष्टपुरुषोंकासंगहोना पत्याविरहअर्थातपति औरस्त्रीका वियोगनाम स्त्री अन्यदेश में और पुरुषअन्यदेश में रहै अटन अर्थातपतिको छोड़केजहांतहांस्त्रीभ्रमणकरै जैसेकिनानाप्रकारकेमंदिरोंमेंतथा तीर्थोंमेंस्नानकेवास्ते औरबहुतपाखण्डियोंकेदर्शनकेवास्तेस्त्रीका भ्रमणकरना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थातअत्यन्तनिद्राअन्यकेघरमें स्त्रीकासोनाऔरअन्यकेघरमेंवासकरै पतिकेबिनाऔरअन्यपुरुषों केसंगकाहोना येछः अत्यन्तदूषणस्त्रियोंकेभ्रष्टहोनेकेवास्तेहैं किइन छःकर्मोंहीसेस्त्रीअवश्यभ्रष्टहोजायगी इसमेंकुछसंदेहनहीं और पुरुषोंकेवास्ते भीऐसेबहुतदूषणहैं ॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानविविक्तासनोभवेत्। बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपिकर्षति ॥ १ ॥ माताऔरस्वसा अर्थातभगिनी दुहितानामकन्या इनकेसाथभी एकान्तमें निवासकभीनकरै औरअत्यन्तसंभाषणभीनकरै और नेत्रसेउनकास्वरूपऔरउनकीचेष्टानदेखै जोकुछउनसेकहनावा सुननाहोय सोनीचेदृष्टिकरकेकहैवासुनै इसक्याआयाकिजितनो व्यभिचारणीस्त्रीवावेश्या औरजितनेवेश्यागामीवापरस्त्रीगामीपुरुषहैं उनमेंप्रीतिवासंभाषणअथवाउनकासंगकभीनकरै इसप्रकार केदूषणोंसेहीपुरुषभ्रष्टहोजाताहै क्योंकियहजोइन्द्रियग्राम अर्थात मनऔरइन्द्रियांयेबड़ेप्रचलहैं जोकोईविद्वानअथवाजितेन्द्रियवा योगीवेभीइसप्रकारकेसंगोंसेभ्रष्टहोजातेहैं तोसाधारणजोगृहस्थ वामूर्ख वहतोअवश्यभ्रष्टहीहोजायगा इसवास्ते स्त्री वा पुरुषसदा इनदुष्टसङ्गोंसेबचेरहैं औरजोस्त्रियोंकोअत्यन्तबन्धनमेंरखतेहैं यह भीबड़ाभ्रष्टकामहै क्योंकिस्त्रियोंकोबड़ादुःखहोताहै श्रेष्ठपुरुषों कातोदर्शनभीनहीहोता औरनीचपुरुषोंसेभ्रष्टहोजातीहैं देखना चाहिये किपरमेश्वरनेतो सबजीवोंकोस्वतन्त्ररचेहैं औरउनको मनुष्यलोग बिनाअपराधसेपरतन्त्र अर्थातबन्धनमेंरखदेतेहैं। वे

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवच्यामः। ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृही
भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहवृहदारण्यकउप-
निषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्य-
थावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहोय
औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमें जितनेश्लोक
लिखेंगेवेसबमनुस्मृतिहीकेजानलेउसकेआगेम०ऐसाचिन्हलिख
देंगे। एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः। वनेवसेतुनिय-
तोयथावद्विजितेन्द्रियः॥ १ ॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंरह
केस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण, क्षत्रियऔरवैश्य, येतीनों
वानप्रस्थहोवैं सोवनमेंजाकेवासकरै यथावत्निश्चयकरकेऔरजि-
तेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥ गृहस्थस्तुयदापश्येत-
वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत् २
म० जबगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढोलाहोजाय पलितनाम
केशश्वेतहोजांयऔरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसबविद्याओंकोपढ़केबि-
वाहकरलेवै फिरजबपुत्रकाभीपुत्रहोय तबवहगृहस्थवनकोचला
जाय ॥ २ ॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम्। पुत्रेषुभार्यां-
निक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा ॥ ३ ॥ म० ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उन
सभोंकोछोड़देऔरअच्छेवस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमात्र
लेजाय उसकोभीछोड़दे बनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरखदे
अथवास्त्रीजोकहेकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगमेलेकेबनकोदोनों
जाय जोस्त्रीकहेकिमैंपुत्रोंकेपासरहूंगी तोउनकोछोड़के एकाकी
जाय॥ ३॥ अग्निहोत्रंसमादाय गृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्रामा-
दरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः ॥ ४ ॥ म० अग्निहोत्रकीसब
सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेके ग्रामसेनिकलकेजिते-
न्द्रियहोकेवनमेंवासकरै ॥ ४ ॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफले
नवा। एतानेवमहायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम् ॥ ५ ॥ म० मुन्यन्न
नाममुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंविनाबोए

होतेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धिकरनेवालेहैं उनसेशाकजो कि पत्रऔरपुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल इनसेपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ वसीतचर्म चीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा। जटाश्चविभृयान्नित्यं श्मश्रुलोमन- खानिच ॥ ६ ॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातः कालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधा- रणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोडशेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते। आद्विंशात्क्ष- त्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्ष मेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछऔरनखकभीनरक्खें इसेयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा॥ ७ ॥ यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्या- त्बलिंभिक्षांचशक्तितः। अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागता- न् ॥ ८ ॥ भ० जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनु- कूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें कोईअतिथिआवै उनकाभीसत्कारकरै ॥ ८ ॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तः- स्याद्दान्तोमैत्रःसमाहितः। दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्प- कः॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसब सेमित्रतारक्खै समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खै अपधेयकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन लेवै औरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्ष्यादिकभीयथावतकरै॥ ९॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित्। नग्रामजातान्यार्तो- पिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे क्षेत्रमेंजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखरि- हानमेंछूटाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूल वाफलउनकोग्रहणकभीनकरै ॥१० ॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्व-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ भ० अग्निपक्वाशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावे कालपक्वभुगअर्थातजोआप सेदृचोंमेंफलपकेजांय उनकोखावे अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूटर के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूसलकीनांई औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहोहाथसे फलादिकलेके मुखऔर दांतोसेखालेवे ११॥ सद्यःप्रक्षालकोवास्यात्मासंसंचयिकोपिवा। षण्मासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२ ॥ भ० एकतोयह दीक्षाहैकिजितनेसेअपनानिर्वाहहोयउतनाहीलेआवे दूसरेदिन केवास्ते नरक्खे दूसरीयहदिक्षाहैकिमासभरकेवास्ते फलादिकों कासंचयकरलेवे अथवाछःमासपर्यन्तकासंचयकरलेवे यहतीसरी दीक्षाहै चौथीदीक्षायहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक बहुतवानप्रस्थकेवास्ते व्रतलिखेहैं १२ ॥ ग्रीष्मेपंचतपास्तुस्याद्वर्षास्वभ्रा-वकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमशोवर्द्धयंस्तपः॥ १३ ॥ भ० ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यदशघंटाकेऊपरआवेतबचारोदि-शाओंमेअग्निकरदे आपवीचमेंबैठे जबतकतीननवजैतबतकऔर बर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतकाल मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्योंकि विनातपअन्तःकरण शुद्धनहीहोता और इन्द्रियोंकाजय भीनहीं होता इससेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैतानान्-समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥ २४॥ भ० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसबवशीभूतहोजांय तबअग्नि आहवनीडगार्हपत्यदाक्षिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रकार का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री और अग्निहोत्र की सामग्री उनकी वाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकिजि तनीवाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोजाय तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रिया अर्थातयोगाभ्यासऔरविचारइन्होकोकरै॥ १४ ॥ अप्रयत्नःसुखा-

थैषुब्रह्मचारीधराशयः । शरणेष्वममश्चैवृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥
म॰ शरीरवाइन्द्रियोंकेसुखकीकुछइच्छानकरै किन्तुउनकात्याग
होकरै औरब्रह्मचारीरहै अर्थातअपनीस्त्रीसंगमेभीहोयतोभीउस्से
संगकभीनकरै किन्तु स्त्रीतोबनमेंसेवाकेवास्ते होहै औरभूमिमेंश-
यनकरै शरणअर्थातजहां२रहै अथवाबैठेउसमेंममताकियहमेरा
होहै ऐसाअभिमान कभीनकरै किन्त्वहांसेकोईउठादे तो उठ
केचलाजाय दूसरीजगहजाकेबैठे क्रोधादिककुछभीनकरै, किन्तु
प्रसन्नहीरहै॥ १५ ॥ तापसेष्वेवविप्रेषुयात्रिकंभैक्षमाहरेत् । गृह-
मेधिषुचान्येषुद्विजेषुवनवासिषु॥ १६ ॥ बनमेंअन्यजितनेवानप्रस्थ
लोगहोवैं उनसेअपनेनिर्वाहमात्र भिक्षाकरलेअधिकनहीं अथ-
वाब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्ययेतीनोंगृहाश्रमीवनमेंरहतेहोवें उनसे
अपनेनिर्वाहमात्रभिक्षाकरले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ-
ग्रामान्वनेवसन् । प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा ॥ १७ ॥ म॰
जबदृढजितेन्द्रियहोजाय तोभीवनमेंरहे परंतुकभी२ग्राममेंचला
आवैभिक्षाकरनेकेवास्ते अपनेदोहाथ वाएकहाथमें जोगृहस्थों
कोघरमेंअन्नभयाहोय उसकोप्रीतिसेजितनाकोईदेवैउतनालेलवै
परन्तुआठग्रासमात्रले फिरउसकोलेके बनमेंचलाजाय जहांकि
जलहोय वहांबैठकेआठग्रासखालेअधिकनहीं ॥ १७ ॥ एताश्चा-
न्याश्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन् । विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्ध-
येश्रुती॥ १८ ॥ म॰ ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैवगृहस्थैरेवसेविताः । वि-
द्यातपोविवृद्ध्यर्थंशरीरस्यचशुद्धये ॥ १९ ॥ म॰ इनदीक्षाओंकोऔर
अन्यदीक्षाओंकोभीवनमेंरहनाभया वहवानप्रस्थसेवनकरै नाना
प्रकारकीजोउपनिषदोंकीश्रुति उनकोआत्मज्ञानअर्थातब्रह्मविद्या
केवास्तेनित्यविचारै ॥ १८ ॥ ऋषियोंनेअर्थातयथावत्वेदकेमन्त्रों
केअर्थजाननेवाले औरब्राह्मणोंनेअर्थातब्रह्मविद्याके जाननेवालों
ने औरगृहस्थोंनेअर्थातपूर्णविद्यावाले धर्मात्माओंने जिनश्रुति-
योंका सेवनकियाहोय उनकोनित्ययोगाभ्यास औरज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात योग
सिद्धिइनकोदृद्धिके औरशरीरको शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रियां
पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९-सतत्त्वोंके मिल
नेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसांमह-
र्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम् । वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेम-
हीयते ॥ २० ॥ भ० इनमहर्षियोंकोक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रियाको
करकेशरीरछूटजाय तोभोवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे छूटके
ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकोप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकोप्राप्तिउसे
होतोहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषोभागं
त्यक्त्वासंगान्परिव्रजेत् ॥२१ ॥भ० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रमकोय-
थावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त वनोंमेंविहारकरकेजब
आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७०सत्तरवर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थभाग
मेंसबसंगोंका अर्थातस्त्रीयज्ञोपवीत शिखादिककोछोड़के परिव्राट्
अर्थातसबदेशान्तरमेंभ्रमणकरैकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपातकभी
नकरै वहस्त्री अपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवावनमेंतपश्चर्याकरै
॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछोड़नेसे
क्याहोताहै अर्थातइनकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छायज्ञोप-
वीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादिकोंसे
द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकोपरीक्षाभीहोतीहै
उत्तर किजबसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक बाह्यक्रियां
जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रियाक-
रनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र बाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया और
कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकीनहीं फिरयज्ञोपवीतादिकका
रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै । प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं
तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रव्रजेत् ॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकोश्रुति
है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें सर्ववेद
सवेदसविहलाभे जो२यज्ञोपवीतादिक बाह्यचिन्हप्राप्तहुयेथे उन

व्रजेत् ॥ २२ ॥ भ० आश्रमसेआश्रमकोजाके अर्थातक्रमसेब्रह्मचर्याश्रमादिकतीनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंकोकरके जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदे औरबलीअर्थातबलीवैश्वदेवकरके परिश्रान्तअत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका सन्यास यथावतबढ़ताजाय खंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेत्। अनपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोव्रजत्यधः॥ २३ ॥ भ० तीनऋणअर्थातऋषिपितृऔरदेवऋण इनकोकरके मोक्षके वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरै औरइनतीनोंकोनकरके जोसन्यास कोइच्छाकरताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्तहोता २३ ॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रांश्चोत्पाद्यधर्मतः। इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत् ॥ २४॥ भ० विधिवत्अर्थातउक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थसहित औरअङ्गउपवेद औरछ:शास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावत्पढ़ावै, क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋषिऋण है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकेऊपरयह परमेश्वरकीआज्ञाहै किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़नाऔरपढ़ाना इसकेबिनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्षनष्टहोजाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोशिक्षा धर्मकीविद्यापढ़नेऔरपढ़ाने कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनरहै सब श्रेष्ठगुणवालेहोवेंऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै औरजो अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापिताओंनेबालककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तुमूर्खरखना अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभीजानलेना यह दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावत्अग्निहोत्रादिकोंकाअनुष्ठानकरै जिस्सेकिसबसंसारकाउपकारहोय इस्से उसकाभीबड़ा उपकारहै अर्थातपुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंकोउतारके मोक्षअर्थातसन्यासकरनेमेंचित्तदेवैं अन्यथानहीं ॥ २४ ॥ अनधी-

त्यद्विजोवेदाननुत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्-
व्रजत्यधः ॥ २५ ॥ म० द्विजअर्थातब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्यवेदोंकोन
पढ़के, यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरैं अग्निहोत्रादिक
यज्ञभीनकरैं फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकीइच्छाकरै सन्यासतो
उसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा ॥ २५ ॥ एकबाततोस-
न्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंस-
र्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥
२६ ॥ म० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावतनिरूपणकरके उसमेंसर्व-
वेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणा
मेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्म-
णअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यास
लेलेवै ॥ २६ ॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोम-
यालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः ॥ २७ ॥ म० जोसबभूतोंकोअभयदान
अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजो-
मयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरकभीज-
न्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्त
होकेरहताहै ॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः।
समयोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत् ॥ २८ ॥ म० आगारअर्थात
ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परन्तुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तर्मुखमन
होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे
अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि
अर्थात मनन शील सत्य२ विचार वाला होय और सब कामों
कोजीतले कोईकामउसकेमनको अधर्ममेंनलगासके स्थिरचित्त
होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिके
अपेक्षानहो यतब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं
२८ ॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रा-
व्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा१ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २ ॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कोश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उसी दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे और जब पूर्णविद्या और पूर्णवैराग्य और पूर्णज्ञान, और विषयभोगकीइच्छा कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलेवैतोभीकुछदोषन- नीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्वर काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजानाजाताहै औरप्रजाकीहानिमें नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोविवाहनकरेगा इस्से संसारकीवृद्धि नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतबतक गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पविद्याओंकोउन्नति करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसेवि- द्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउचि तनहीं क्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोविद्याकीउन्नतिनहोगी और गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारयेसब नष्टहोजायंगे औरवानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा और सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहोगी पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारको उन्नतिका नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै अ- न्यथानहीं इसमेंदेखनाचाहिये ब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदिनअ- वकाशहीनहीरहता औरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसेचित्त फसाहीरहताहै औरवानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै औरकुछ बिचारभीकरताहै जोसन्यासीहोगा वह बिचारकेबिना अन्यव्यव- हारहोनरहेगा इस्से पृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकायथा- र्थविचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणकरेगा इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुननेसेब- ड़ालाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २ घरहै वहां २ प्रायः रहेगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचितहै परमेश्वरन्यायकारीहै औरविद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जिसको

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें किंतू विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उससे वैद्यकहैकिंतू कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी इच्छानहोय उसकोकोईबलसे कहेकिंतू अवश्यभोजनकर तोवह विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगा किन्तु कभीनकरेगा ऐसेहीजिसको विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंसेकुछप्रयोजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने जैसा राजा वैसीही प्रजा को समुझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे किआजकालआर्य्यावर्त्तदेशमेंबहुतसेसंप्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल धूर्त्ततासेपरायाधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों कीबुद्धिनष्टकरदेतेहैं औरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइससेइनकातोबन्दहीहोनाउचितहै क्योंकिइनकेहोनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार होताहै ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता। समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥ २८ ॥ म० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके जडमेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीसे प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण है ॥ २९ ॥ नाभिनन्देतमरणं नाभिनन्देतजीवितम्। कालमेवप्रतीक्षेतनिदेशंभृतकोयथा ॥ ३० ॥ म० जोसन्यासीहोय सोमरने औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरै किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरै जब मरणसमयआवैतबशरीरछोडदे शरीरसेमोहकुछनकरै जैसाकि छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता है जहांकहैवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरै ॥ ३० ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिवेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत॥ ३१॥ भ० इसका अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकरणमें लिखनेका यहप्रयोजनहैकिवहुतलोगकहतेहैं किसन्यासीकिसीकोउपदेशन करै इससेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाक्यं सत्यअर्थातप्रमाण औरविचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सवविद्यासे जोपूर्ण विद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने पाखण्डो मूर्खलोग हैंवे उपदेश करैं तभीतो संसार का सत्यानाश होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिए कि वेउपदेशहीनकरनेपावें औरजितने विद्वानसन्यासी लोगहैं वे सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंकेउपदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्त देशकीअवस्थाभईहै॥ ३१॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुशलंवदेत्। सप्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२॥ भ० जोकोईक्रोधकरै उस्से सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरैउसकोभीकल्याणका उपदेशनकरै किञ्चसप्तद्वारसुखनाशिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआंखके औरकानकेइनसातद्वारोंमेंजोवाणीविखररहीहै उस्सेमिथ्याकभी नकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोले॥ ३२॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्रीदण्डीकुसुम्भवान्। विचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीडयन् ॥ ३३॥ भ० केशसिरकेसववालनख औरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछइनकोकभीनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै और एकही दंड रक्खै इस्से तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है जैसाकिचक्रांकितोंका कुसुंवा रंगसेरंगेवस्त्रपहिरैं औरगेरूवामृत्तिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतवस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेसवभूतोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंविचरै॥ ३३॥ एककालंचरेद्भैक्ष्यंनप्रसज्जेतविस्तरे। भैक्ष्ये प्रसक्तोहियतिर्विषयेष्वपिसज्जति॥ ३४॥ एकवेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकिजो भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा॥ ३४॥ विधूमे-

सन्नमुसलेव्यङ्गारेभुक्तवज्जने। वृत्ते शरावसंपाते भिक्षांनित्यंय-
तिश्चरेत्॥ ३५॥ म० जबगांवमेंधूमनदेखपड़े मूसलवाचक्कीकाश-
ब्दनसुनपड़े किसीकेघरमेंअंगारनदेखपड़े सबगृहस्थलोगभोजन
करचुकें औरभोजनकरके पत्तोंऔरसकोरेबाहरकोफेंकदेवें उस
समयसन्यासीगृहस्थलोगोंकेघरमें भिक्षाकेवास्ते नित्यजांय और
जोऐसाकहतेहैंकिहमपहिलेहीभिक्षाकरेंगे यहउनकापाखंडही
जानना क्योंकिगृहस्थलोगोंकोपीड़ाहोतीहै औरजोविरक्तहोके
वैरागीआदिकअपनेहाथसेलेकेकरतेहैं वेबड़ेपाखण्डीहैं॥ ३५॥
अलाभेनविषादीस्याल्लाभेचैवनहर्षयेत्। प्राणयात्रिकमात्रःस्या-
न्मात्रासंगाद्विनिर्गतः॥ ३६॥ म० जबभिक्षाकालाभनहोयतबवि-
षादनकरै औरलाभमेंहर्षनकरै प्राणरक्षणमात्र प्रयोजनरक्खै
भिक्षामेंप्रसक्तनहोय औरविषयोंकेसंगोंसेपृथकरहै॥ ३६॥ अभि-
पूजितलाभांस्तुजुगुप्सेतैवसर्वशः। अभिपूजितलाभैश्चयतिर्मुक्तो-
पिबध्यते॥ ३७॥ म० अत्यन्तश्रेष्ठपदार्थ स्तुत्यादिकउनकी निंदा
हीकरै क्योंकिस्तुत्यादिक बन्धनहीकरनेवाले हैं मुक्तभीहै।यतो
भी इससेबद्धहीहोजाताहै॥ ३७॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्था-
नासनेनच। ह्रियमाणानिविषयैरिन्द्रियाणिनिवर्तयेत्॥ ३८॥ इ-
न्द्रियाणांनिरोधेनरागद्वेषक्षयेणच। अहिंसयाचभूतानाम् मृत-
त्वायकल्पते॥ ३९॥ म० इन्द्रियोंकानिरोधरागद्वेषऔर अहिंसा
इनचारोंकाजोत्यागकर्ताहै सोईमोक्षकाअधिकारीहोताहै अन्य
कोईनहीं॥ ३९॥ दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्राश्रमेरतः। समस-
र्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्मकारणम्॥ ४०॥ म० जिसकिसीआश्रममेंदोष
युक्तपुरुषभीहोय परन्तु धर्मही कोकरै औरसबभूतोंमेंसमबुद्धि अ-
र्थातरागद्वेषरहितहोय सोईपुरुषश्रेष्ठहै जितनेबाह्यचिन्हहैं य-
ज्ञोपवीतदंड दोनोंकोधारणकरै औरधर्मनकरैतो धारणमात्रही
सेकुछनहीहै।सक्ता औरतिलक,छापा,मालायेतो सबपाखण्डोंही
केचिन्हहैं इनकोतोकभीनधारनाचाहिये॥ ४०॥ फलंकतकवृक्ष-

स्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम्। न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति ४१।
म० यद्यपि कतक नाम निर्मली वृक्ष का फल जल को शुद्ध करनेवाला है
सो जब उसको पीसके जल में डाले तब तो जल शुद्ध होजाता है और जो
पीसके न डाले कतकवृक्षस्य फलाय नमः ऐसा माला लेके जप क्रि
या करै वा उसका नाम जल के पास लिया करै, उससे जल कभी न शुद्ध
होगा वैसे ही नाममात्र से कुछ नहीं होता जब तक धर्म नहीं करता ४१
प्राणायामा ब्राह्मणस्य त्रयोपि विधिवत्कृताः। व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता
विज्ञेयं परमं तपः ॥४२॥ म० ओम् भूः, ओम् भुवः, ओम् स्वः, ओम्
महः, ओम् जनः, ओम् तपः, ओम् सत्यं इस मन्त्र का हृदय में उच्चारण
करै पूर्वोक्त रीति से तीन बार भी प्राणों का निग्रह करै तो भी उस सं-
न्यासी का परम तप जानना ॥ ४२ ॥ दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां
हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ४३॥
म० जैसे सुवर्णादिक धातुओं को अग्नि में तपाने से मैल नष्ट होजाता है
वैसे ही प्राण के निग्रह से इन्द्रियों के मल भस्म होजाते हैं। ४४ ॥ प्राणा-
यामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्च किल्बिषम्। प्रत्याहारेण संसर्गान्ध्या-
नेनानीश्वरान्गुणान् ॥ ४५ ॥ म० प्राणायामों से सब इन्द्रिय और श-
रीर के दोषों को भस्म करदे और धारणायोगशास्त्र की रीति से करै उस
विराग और द्वेष जो हृदय में पाप उसको छोड़ादे प्रत्याहार से इन्द्रियों
का विषयों से निरोध कर के सब दोषों को जीत ले और ध्यान से अल्पज्ञा-
दिक अनीश्वर के जितने गुण उनको छोड़ादे अर्थात् सर्वज्ञादिक गुण
सम्पादन करै ॥ ४५ ॥ उच्चावचेषु भूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः। ध्यान
योगेन संपश्येद्गतिमस्यान्तरात्मनः ॥ ४६ ॥ म० स्थूल और सूक्ष्म उ-
नमें जो परमेश्वर व्याप्त है और अपने शरीर में जो अपना आत्मा और
पर परमात्मा उनको जो गति नाम ज्ञान उसको समाधि से सम्यक् देख
ले जो दुष्ट लोगों को देखने में कभी नहीं आती ॥ ४६ ॥ सम्यक्दर्शनस-
म्पन्नः कर्मभिर्न निबध्यते। दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते ॥
४७ ॥ म० जब सन्यासी सम्यक्ज्ञान से सम्पन्न होता है तब कर्मों से बद्ध

नहींहोता औरजोज्ञानसेहीनसन्यासीहैसोमोक्षकोतोनहींप्राप्त
होता किन्तु संसारहीमेंगिरपड़ताहै ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासं-
गैर्वैदिकैश्चैवकर्मभिः तपसश्चरणैश्चोग्रैःसाधयन्तीहतत्पदम् ॥ ४८ ॥
म० वैरइन्द्रियोंसेविषयोंकाअसंगवैदिककर्मकाकरना अत्यन्तउग्र
तपइन्होंसेमोक्षपदकोसिद्धलोगप्राप्तहोतेहैंअन्यथानहीं ॥ ४८ ॥ अ-
स्थिस्थूणंस्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम् । चर्मावनद्धंदुर्गन्धिपूर्णं-
मूत्रपुरीषयोः ॥ ४९ ॥ म० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुर-
म् । रजस्वलमनित्यंचभूतावासमिमंत्यजेत् ॥ ५० ॥ म० हाड़जिस-
काखंभाहै नाड़ियोंसेबांधाभयामांस, औररुधिरका ऊपरलेपन
चामसेढंपाहुआदुर्गन्धमूत्रऔरविष्टासेपूर्ण ॥ ४९ ॥ जराऔरशोक
सेयुक्तरोगकाघरक्षुधातृषादिकपीड़ाओंसे नित्यआतुरऔरनित्य-
हीरजस्वलअर्थातजैसीरजस्वलास्त्रीनित्यजिसकीस्थितिनहीं और
सबभूतोंकानिवास ऐसाजोयहदेह इसकोसन्यासी योगाभ्याससे
छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलंयथावृक्षो वृक्षंवाशकुनिर्यथा । तथात्यज-
न्निमंदेहं कृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते ॥ ५१ ॥ म० जैसेवृक्षजबनदीकेतट
सेजलमेंगिरकेचलाजाय वैसेहीसमाधियोगसेइसकोछोड़े तबब-
ड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख से छूटके मुक्त हो
जाय ॥ ५१ ॥ प्रियेषुस्वेषुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम् । विसृज्यध्यान-
योगेनब्रह्माभ्येतिपरंपदम् ॥ ५२ ॥ म० जितनेअपनीसेवाकरने
वालेउनमेंध्यानयोगसेसबपुण्यकोछोड़दे औरदुःखदेनेवालेपुरुषों
मेंसबपापोंकोछोड़दे इससे पापपुण्यरहितजबशुद्धहोताहै तबसना-
तनपरमोत्कृष्टब्रह्मउसकोप्राप्तहोताहै फिरकभीदुःखसागरमेंनहीं
आता ॥ ५२ ॥ यदाभावेननभवतिसर्वभावेषुनिस्पृहः । तदासुखम-
वाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥ ५३ ॥ म० जबसबप्रकारसेसन्यासी
काअन्तःकरण औरआत्मशुद्धहोजाताहै, उसकायहलक्षणहै कि
किसीपदार्थमेंमोहनहींहोता तबवहपुरुषजीताभयाऔरमृत्यु हो
केनिरन्तरब्रह्म सुखउसकोप्राप्तहोताहै अन्यथानहीं ॥ ५३ ॥ अ-

नेनविधिनासर्वांस्त्यक्त्वासंगानशनैःशनैः । सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्म-
ण्येवावतिष्ठते ॥ ५४ ॥ भा० इसविधिसेजितनेदेहादिक अनित्यप-
दार्थहैं इनकोधीरे २ छोड़ औरहर्ष, शोक, सुख, दुःख, शीत, उष्ण
रागद्वेष, जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेनिर्भय अथवाशरीर
छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिरता
क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भाग्य
औरअत्यन्तपरिश्रमसेपरमेश्वरकोप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै किपर-
मानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरेकभीनगिरेगा ॥ ५४ ॥ ध्यानिकं
सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम् । नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमु-
पाश्नुते ॥ ५५ । भा० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानावस्थित
होके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रकरण
मेंसबध्याननाममात्रसेकहदिया परन्तुइसकायथावतविधानपा-
तञ्जलदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवें. अन्यथासिद्धकभीनहोगा
क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उसको
सन्यासग्रहणका कुछफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीव्यर्थ
है ॥ ५५ ॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदधिदैविकमेवच । अध्यात्मिकञ्चस-
ततंवेदान्ताभिहितंचयत् ॥ ५६ ॥ भा० अधियज्ञब्रह्मजोओंकारउ-
सकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावै औरअधि
दैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिकदेवताओंचादिकों
केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगमेंसाक्षात्करै औरअध्यात्मिक
जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंकानि-
ग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्यथान-
हीं ॥ ५६ ॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम् । वेदस-
न्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत ॥ ५७ ॥ भा० मुख्य सन्यासीनिय-
तात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मऋषिलोग
सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थातगौण
सन्यासीउसकाकर्मयोगमुझसेआपसुनलेवें ॥ ५७ ॥ ब्रह्मचारीए-

हस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा॥ एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः
॥५८॥ भ० ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थऔरसन्यासी येचारोंगृह-
स्थाश्रमसेउत्पन्नहोतेहैं, पृथक२क्योंकिगृहाश्रमनहोय तोमनुष्य
कीउत्पत्तिहीनहोय फिरब्रह्मचर्यादिक आश्रमकभीनहोंगे इसी
उत्पत्तितथासबआश्रमोंकाअन्नवस्त्रस्थान औरधनादिकदानोंसेगृ-
हस्थलोगहीपालनकरतेहैं इनदोबातोंमेंगृहस्थहीमुख्यहै विद्याग्र-
हणमेंब्रह्मचारीतपमेंवानप्रस्थविचारयोगऔरज्ञानमेंसन्यासीश्रे-
ष्ठहै॥५८॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविता। यथोक्तका-
रिणंविप्रंनयन्तिपरमाङ्गतिम्॥५९॥ भ० सबआश्रमीयथावत्
शास्त्रोक्तक्रमजोधर्माचरणउसमेंचलनेवालेपुरुषोंकोवेआश्रमोंकेजि-
तनेव्यवहारश्रेष्ठहैं उनसेसबआश्रमीलोगमोक्षपासकतेहैं परन्तु
बाहरदेखनेमात्रभेदरहैगा उनकाभीतरव्यवहारसन्यासवत एक
हीहोगा॥५९॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः। दशल-
क्षणकोधर्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः॥६०॥ भ० ब्रह्मचारीआदिकसब
आश्रमीलक्षणहैंजिसधर्मकेउसधर्मकानित्यसेवनकरैं वे लक्षणये
हैं॥६०॥ धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या-
सत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम्॥६१॥ भ०धर्महैनामन्यायकान्या
यहैनामपक्षपातकाछोड़ना उसकापहिलालक्षणअहिंसाकिसीसे
वैरनकरना दूसरालक्षणधृतिकिअधर्मसेचक्रवर्तीराज्यभीमिलता
होय तोभीधर्मकोछोड़केचक्रवर्तीराज्यकाग्रहणनकरना तीसरा
लक्षणक्षमाकोईस्तुतिवानिन्दाअथवावैरकरैतोभीसबकोसहलेप-
रन्तुधर्मकोनछोड़ै तथासुखदुःखादिकभीसबसहले परन्तुअधर्म
कभीनकरैदमनामचित्तसेअधर्मकरनेकीइच्छानकरै इसकानाम
है दमअस्तेयअर्थातचोरीकात्याग किसीकापदार्थआज्ञाकेबिनाले
लेनाइसकानामचोरीहै इसकाजोसदात्यागउसकानामहैअस्तेय
शौचनामपवित्रतासदाशरीरवस्त्रस्थानअन्नपान औरजलतथाघृ-
तादिकशुद्धदेशमेंनिवासरागद्वेषादिककात्यागइसकानामशौचहै

इन्द्रियनिग्रह श्रोत्रादिकइन्द्रियवे अधर्ममेंकभीनजावैं औरइन्द्रियों कोसदाधर्ममेंस्थिररक्खैं तथापूर्वोक्त जितेन्द्रियताकाकरना इसका नामइन्द्रियनिग्रहहै शास्त्रपठन, सत्पुरुषोंकासंगयोगाभ्यास सुविचारएकान्तसेवनपरमेश्वरमेंविश्वास औरपरमेश्वरकीप्रार्थना स्तुतिऔरउपासनाशीलसंतोषकाधारणइनसेसदाबुद्धिबढ़ीकरनी इसकानामधीहै विद्यानामपृथिवीसेलेके परमेश्वरपर्यन्त पदार्थोंकाज्ञानहोना जोजैसापदार्थहैउसकोवैसाहीजाननाउसकानाम विद्याहै सत्यसदाभाषणकरनापूर्वोक्तनियमसे अक्रोधनाम क्रोध काम लोभमोहशोकभयादिकोंकात्यागउसकानामअक्रोधकात्यागहै इतनेसंक्षेपसेधर्मके ग्यारहलक्षणलिखदिये परन्तु वेदादिक सत्य शास्त्रोंमेंधर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षणलिखेहैं जिसकोइच्छाहोय उनशास्त्रोंमेंदेखलेवैअबइसकेआगेअधर्मकेलक्षणलिखेजातेहैं अधर्मनामअन्यायका अन्यायनामपक्षपातकानछोड़ना इसकेभीएकादशलक्षणहैं पहिलालक्षणअहिंसा अर्थातवैरबुद्धिकाकरना॥ ६२॥ परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्चत्रिविधंकर्ममानसम्॥ ६२॥ म० पारुष्यमनृतंचैवपैशुन्यमपिसर्वशः। असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम्॥ ६३॥ म० अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः। परदारोपसेवाचशारीरंत्रिविधंस्मृतम्॥ ६४॥ म० परद्रव्यहरणकरनेकीछलकपटऔरअन्याय सेइच्छायहदूसरालक्षणअधर्मकाहै औरतीसरालक्षण परकाअनिष्टचिन्तनअन्यजीवोंकोदुःखदेनाअपनासुखचाहना चौथावितथाभिनिवेशअर्थातमिथ्यानिश्चयजोजैसापदार्थहै, उसकोवैसानजाननना किन्तु विपरीतहीजानना जैसेकिविद्याको अविद्याऔरअविद्याकोविद्याजानना सत्यअचौरश्रेष्ठसाधु इनकोअसत्यचोरअश्रेष्ठअसाधुजानना औरपाषाणादिकमूर्त्तिऔरउनकेपूजनेसेदेव बुद्धिऔरमुक्तिकाहोना इत्यादिकमिथ्यानिश्चयसेजानलेना येतीन मनसेअधर्मके लक्षणउत्पन्न होतेहैं पारुष्यनाम कठोरबचनबो-

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयसेविरुद्धबोलना उसकानामअसत्यभाषणहैपैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने धनदेनेकोकहावादिया उससे राजाके वाअन्यकेसमीपजाकेउसकी कार्यकोहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात अन्यपुरुषकीप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपूर्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकीहानि जैसेकिभागवतादिकऔर कौमुद्यादिकग्रन्थोंमें पूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकानामअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं विनाआज्ञासेपरपदार्थका ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाहननकरना अपनीइन्द्रियोंकोपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशुओंकामारना यहराक्षसंविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंकी हिंसाहैसोविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपकारहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमारनेसे आगेपशुदूधऔर घीकी उत्पत्तिहो मारीजातीहै औरइन्होंसेसंसारका पालनहोताहै इससेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारताहै इसकानामअविधानसे हिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्या वा अन्य किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै यएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेसेकभीज्ञान नहीहोसक्ता धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद नही जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै इससे उसकी आज्ञाभीसबकेवास्ते एकरसहीं निश्चित होनीचाहिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने बुद्धिमान लोगजानतेहैं वेकिसी जालवा बन्धनमें नहींगिरते किन्तु धर्महीकरतेहैं औरअधर्मको छोड़देतेहैं यही बुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्डहैं वेमूर्खोंहीकेहैं चारोंआश्रमवालेपुरुषधर्महीकासेवनकरैं अधर्मकाकभी नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्रुत्वासन्यासेदनृणोद्विजः॥ ६५॥ भ० दशलक्षणऔरएकयोगशास्त्रकीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसधर्मका अनुष्ठानयथावत्करैं समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधिवत् सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतीनविद्वानहें के यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ६५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्मदोषानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत्॥ ६६॥ भ० बाह्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादिकजितनेकर्मउनकोयथावतकरै इससे सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकरणकी मलिनतारागद्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादे निश्चितहोकेवेदकाअभ्यासदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेलेवे नगरकेसमीपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छादन करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदेकिसीकाजन्मवामरणहोय घरमें तोभीकुछउसमेंमोहवाइच्छानकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदातत्पररहै॥ ६६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्यासेनापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ६७॥ भ० इसप्रकारसेसबबाह्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखोंसेछूटकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इससे भिन्नपदार्थकीइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्यासस सबपापोंकानाशकरदे औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधातुओंकास्पर्शकरैवानहीं उत्तर अवश्यधातुओंकेस्पर्शकेविनाकिसीकानिर्वाहनहीहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पर्शभाषावासंस्कृतबोलनेमेंनिश्चितहीकरेगा औरविर्यादिक७सातधातुओंकाभीस्प-

शंनिश्चितहोगा औरसुवर्णादिकजितनीधातुहैं उनकाभीस्पर्शहो-
गापूर्वपक्ष ॥ यतीनांकांचनंदद्यात्ताम्बूलंब्रह्मचारिणाम् । चौराणा-
मभयंदद्यात्सनरोनरकंव्रजेत् ॥ इसश्लोकसेयहआपकाकथनविरुद्ध
हुआ सन्यासीकोसुवर्णब्रह्मचारीकोतांबूल चोरोंकोअभयकादेने
वालापुरुषनरकमेंजाताहै ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच ऐहीणांकाञ्चनं
दद्याद्ववैब्रह्मचारिणाम् । चौराणांमासनन्दद्यात्सनरोनरकंव्रजे-
त् ॥ इससे आपकाकहनाविरुद्धहुवा जैसाकिमेरावचनउसश्लोकसे
यहकौनशास्त्रकाश्लोकहै अच्छावहकौनशास्त्रकाहै यहतोपद्धतिका
है अच्छातोयहहमारीपद्धतिकाहै औरब्रह्माकाकहाहै ऐसाश्लोक
ब्रह्माजीकभीनरचेंगे अच्छातोयहमैंनेरचाहै जैसाकिवहकिसीने
रचलियाहैयेदोनोंश्लोकअर्थविचारनेसेमिथ्याहीहैं क्योंकिसन्यासी
कोकाञ्चननामसुवर्णकेदेनेसेइननेनरकलिखा इससेपूछनाचाहिए
किचांदीहीरादिकरत्नभूमिराज्यऔरस्थानदेनेसेतोनरकनहीं
जायगाऔरब्रह्मचारीकेविषयमेंभीजानलेना चोरकेविषयमेंजोइ
सनेलिखासोतोठीकहीहैऔरसबमिथ्याकथनहै अच्छातोश्लोकका
ऐसापाठहै ॥ यतिहस्तेधनन्दद्यात्ताम्बूलंब्रह्मचारिणाम् । अन्यत्पूर्ववत्
यहभीमिथ्याश्लोकहै क्योंकियतीकेपाद औरआगेवावस्त्रसेबांधके
धनदेनेमेंतो पापनहोगा इससे ऐसीजोबातकहना सोमिथ्याहीहै
औरजोधनमेंदोषअथवागुणहै सोसर्वत्रतुल्यहीहै जैसाउपद्रवधन
केरखनेमेंगृहस्थोंकोहोताहै इससे सन्यासीकोधनकेरखनेमेंकुछअ-
धिकउपद्रवहोगा क्योंकिगृहस्थोंकेस्त्रीपुत्रऔरभृत्यादिकरक्षाकर-
नेवालेहैं उसकोकोईनहीं शरीरकेनिर्वाहमात्रधनरखले तबतो
विरक्तकोभीकुछदोषनहीं औरजोअधिकरक्खेगा सोतोमोक्षपद
कोप्राप्तहोकेसंसारमेंगिरपड़ेगा जैसेकिवैरागी,गुसांईबहुतसम-
हन्तऔरमठधारीहोगयेहैंजैसेकिगृहस्थोंसेभीनीचहोजातेहैंऔर
सांईधनकोपाके अमीरहोजाताहै इससे क्याआयाकिपहिलेतोअ-
धिकारकेविना सन्यासग्रहणहीनहींकरनाचाहिए जबतकविद्या

ज्ञान,वैराग्य,औरजितेन्द्रियता,पूर्णनहोजाय तबतकगृहाश्रमही में रहनाउचितहै इससे धातुस्पर्श धनदेने औरलेनेमेंदोष करतेहैं यहबातमिथ्याहीहै उनकोकोईदेऔरविरक्तलेवै अथवानलेवैअपनी२ इच्छाकेआधीनव्यवहारहै एकबातदेखनाचाहिएकिजोविद्वानसोसबपदार्थोंकागुणऔरदोषजानताहै उसकोदेनेवालास्वर्ग जायसोतोठीकबातहै परन्तु नरकको वहजाताहै यहबातअत्यन्त नष्टहै वहविद्वानजोसन्यासीसत्कार औरउत्तमपदार्थोंकीप्राप्ति मेंहर्षकभीनकरेगा असत्कारऔरअनिष्टपदार्थोंकीप्राप्तिमेंशोक नकरेगा सोदेनेलेनेवाले दोनोंधर्मात्मा औरविद्यावानहोंगे तब तोउभयचसुखहोसक्ताहै औरजोदोनोंकुकर्मीहैं तोपापहीहैजैसे किचक्रांकितादिक वैरागीऔरगोकुलिये,गुसांईऔरनानक,कबिरादिकोंकेसम्प्रदायीलोगहैं औरमूर्खब्रह्मचारी गृहस्थवानप्रस्थ औरसन्यासीइनकोदेनेमेंपापहीहोगा पुण्यकुछनहीं क्योंकिपुण्य तोविद्वान औरधर्मात्माओंकोदेनेमेंहै अन्यथानहीं चारवर्णऔर चारआश्रम इनकीशिक्षासंक्षेपमेंलिखदिया औरविस्तारसेजो देखनाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोंमेंदेखलेवै इससेआगेराजाऔर प्रजा केविषयमें लिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचमसमुल्लासः संपूर्णः ॥ ५ ॥

अथराजाप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः ॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामियथावृत्तोभवेन्नृपः । सम्भवश्चयथातस्य सिद्धिश्चपरमोयथा ॥ १ ॥ म० राजधर्मोंकोमनुभगवानकहतेहैं किमैंकहूंगा जिसप्रकारसेराजाकोवर्तमानकरनाचाहिए जिनगुणोंसेराजाहोताहै औरजिन

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरै औरसङ्गतिभीउसकोहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मंप्राप्तेनसंस्काररं क्षत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यंपरिरक्षणम् ॥ २ ॥ भ० जैसाब्राह्मणोंकासंस्कारहोताहै वैसाहीसबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबलबुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताऔरशूरवीरता जिसमनुष्यमेंइसप्रकार केगुणहोवैं औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमेंउससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरना चाहिए तबवहदेशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाकामुख्ययहीधर्महैकिअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराजकेहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्यराजानमसृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ भ० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उसदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्तेराजाकोपरमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कीरक्षाकरै औरजगतमेंअधर्मनहोनेपावै ॥ ३ ॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्रवित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ भ० इन्द्रअनिलनामवायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुवेर इनआठराजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोताहै तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकीरक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा;वायुकागुण,बल औरदूतद्वारासबप्रजाकोवर्तमानकाजानना जैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्तहोकेधारणकरताहै औरसबममोंकोजानताहै यमकागुणपक्षपातकोछोड़ना सदान्यायहीकरना अन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजानेअपनेपुत्रजोअन्यायकारी १ नवउनकास्वहस्तसेशिरछेदनकरदिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेवनमेंनिकालदिया यहबातमहाभारतमेंविस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्रकाजबपक्षपातनकिया तोऔरकाकैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

किसबपदार्थोंकोतुल्यप्रकाशकरताहैऔर अन्धकार का नाशकर देताहै ऐसेहीराजासबराज्यमें प्रजाकेऊपरतुल्यप्रकाशकरै और अधर्मकरनेवालेजितनेदुष्ट अन्धकाररूप उनकानाशकरदे और जैसेअग्निमेंप्राप्तभयापदार्थदग्धहोजाताहै वैसेहीधर्मनीतिसेविरु-करनेवालेपुरुषोंकोदग्धअर्थातयथावतदण्डदेवै जैसाकिअग्निसूखे वागोलेपदार्थोंकाभस्मकरदेताहै औरमित्रवाशत्रुजब२अधर्मकरैं तब२कभीदण्डकेविनानछोड़ै वरुणकागुणऐसेपाशअर्थातबन्धनोंसे दुष्टोंकोबांधेकिफिरछूटनेनपावैं औरकभीछूटैंतोऐसादुःखपावैं कि उसदुःखकाविस्मरणकभीनहोय जिस्से अधर्ममें उनकाचित्तकभी नजाय चन्द्रकागुणजैसेकिचन्द्रमासबप्राणियोंकोतथास्थावरऔष-धियोंको शीतलप्रकाश औरपुष्टिसे आनन्दयुक्त करदेताहै और राजाअपनीप्रजाकेऊपरकृपादृष्टिरक्खै औरप्रजाकीपुष्टिकिकिसी प्रकारसेप्रजादुखितनहोवै सदाप्रसन्नहोरहै कुवेरकागुणजैसेकि कुवेरबड़ाधनाढ्यहै धनकोवृद्धि औरधनकीरक्षा यथावतकरताहै वैसेराजाभीधनकीरक्षासदाकरै जिस्सेकिराजाकेऊपरऋणवादरिद्र कभीन होवै अपने वा प्रजाकेऊपर जवआपत्कालआवै तब उसधनसेअपनीवाप्रजाकोरक्षाकरलेवैं इनआठगुणोंसेराजाहोताहै अन्यथानहीं ॥ ४ ॥ सोग्निर्भवतिवायुश्चसोऽर्कःसोमःसधर्मराट्। सकुवेरःसवरुणःसमहेन्द्रःप्रभावतः॥ ५ ॥ म० प्रभावअर्थात गुणोंहीसे अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, धर्मराज, कुवेर, वरुण और महेन्द्रनामइन्द्रराजाहोइनगुणोंसेजबयुक्तहोताहै तबवहीराजाये आठनामवालाहोताहै ॥ ५ ॥ कार्यंसोऽवेक्ष्यशक्तिञ्चदेशकालौच-तत्त्वतः। कुरुतेधर्मसिद्ध्यर्थंविश्वरूपंपुनःपुनः॥ ६ ॥ म० सोराजा कार्यऔरशक्तिनामसामर्थ्य देशऔरकालतत्त्वअर्थातयथावतइनकोविचारकेकरै किसकेवास्ते किधर्मसिद्धिकेवास्ते वारंवारविश्वरूपधारणकरताहै ॥ ६ ॥ यस्यप्रसादेपद्माश्रीर्विजयश्चपराक्रमे मृत्युश्चवसितक्रोधे सर्वतेजोमयोहिसः ॥ ७ ॥ म० जिसकोकृपासे

दरिद्र जो है सो धनाढ्य होजाय और अल्प के पास से दुष्ट दरिद्र होजाय और पराक्रम में निश्चय करके विजय होय इससे राजा सब तेजोमय होता है और जिसके क्रोध में दुष्टों का मृत्यु विनाश करता होय अर्थात सब प्रकार के गुण बल पराक्रम जिसमें होवें वही राजा होसक्ता है अन्यथा नहीं ७। तस्माद्धर्मं यमिष्टेषु स व्यवस्येन्नराधिपः। अनिष्टं चाप्यनिष्टेषु तं धर्मं न विचालयेत्॥ ८॥ म॰ जो राजा धर्म को इष्ट अर्थात धर्मात्मा और विद्वानों के ऊपर निश्चित करै तथा अनिष्ट अर्थात मूर्ख और दुष्टों के बीच में दण्ड की व्यवस्था करै उस धर्म को कोई मनुष्य न छोड़ै किन्तु सब लोग करैं जिससे धर्मात्मा और विद्वानों को बढ़ती होय और मूर्ख और दुष्टों की घटी इस हेतु अवश्य इस व्यवस्था को करै॥ ८॥ तस्यार्थे सर्वभूतानां गोप्तारं धर्ममात्मजम्। ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत्पूर्वमीश्वरः॥ ९॥ म॰ उस राजा के लिये दण्ड को परमेश्वर ने पूर्व ही से उत्पन्न किया वह दण्ड कैसा है कि ब्रह्मतेजोमय ब्रह्म परमेश्वर और विद्या का नाम है उनका जो तेज अर्थात सत्य व्यवस्था वही दण्ड कहलाता है फिर वह दण्ड कैसा है कि परमेश्वर ही से उत्पन्न भया क्योंकि परमेश्वर न्यायकारी है उसकी आज्ञा न्याय ही करने की है उसी का नाम दण्ड है और जो न्याय है कि पक्षपात का छोड़ना सोई धर्म है जो धर्म है सोई सब भूतों की रक्षा करनेवाला है अन्य कोई नहीं और वह दण्ड राजा के आधीन रक्खा गया है क्योंकि वही राजा समर्थ है इस दण्ड के धारण करने में अन्य कोई नहीं जो कोई राजा कहै कि धर्म की बात हम नहीं सुनते तो उसका कहना मिथ्या है क्योंकि धर्म न करैगा तो राजा और धर्म का स्थापन तथा पालन भी न करैगा वह राजा ही नहीं राजा तो वह होता है कि धर्म का यथावत् स्थापन और अधर्म का खण्डन करै यही राजा का मुख्य पुरुषार्थ है ९॥ तस्य सर्वाणि भूतानि स्थावराणि चराणि च। भयाद्भोगाय कल्पन्ते स्वधर्मान्न चलन्ति च॥ १०॥ म॰ उस दण्ड के भय से जो जितने जड़ और चेतन भूत हैं दंड के नियम से वे सब भोग में आते हैं अपना २ जो पुरुषार्थ अर्थात अधिकार उसमें यथावत चलते

हैं अपनेस्वधर्ममें अर्थात जो२ जिसकाव्यवहारकरनेकाअधिकारउससे
भिन्नमार्गमेंकभीनहींचलते ॥ १० ॥ तंदेशकालौशक्तिंचविद्यांचा-
वेक्ष्यतत्वतः । यथार्हतःसंप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु ॥ ११ ॥ म० उस
दण्डकोअन्यायकरनेवालेजोमनुष्यहैं उनमेंयथावतस्थापनकरें अ-
र्थातयथावतदण्डदेवे परन्तु देशकालसामर्थ्य औरविद्यासेयः-
थावततत्वका विचारकरकेदण्डदे क्योंकिअदण्ड्यपुरुष अर्थातध-
र्मात्माको कभीनदण्डदियाजाय औरअधर्मात्मा पुरुषदण्डकेवि-
नात्यागकभीनकियाजाय ॥ ११ ॥ सराजापुरुषोदण्डःसनेताशासि-
ताचसः । चतुर्णामाश्रमाणांचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः ॥ १२ ॥ राजा
पुरुषनेताअर्थात व्यवस्थामें सबजगत्कोचलानेवालाशासिताअ-
र्थातयथावतशिक्षकदण्डहीहै किन्तुराजाऔरप्रजाये मनुष्यसब
तुल्यहीहैं जैसाराजामनुष्यहैवैसाहीऔरसबमनुष्यहैं इसवास्ते
मनुभगवाननेलिखा किदण्डहीराजा;दण्डहीपुरुष;दण्डहीनेता;
औरदण्डहीशासिता;जिसमेंयथावतविद्यादिकगुण औरदण्डकी
व्यवस्थाहोयसोईराजाहै;अन्यकोईनहीं औरब्रह्मचर्याश्रमादिक
चारआश्रमऔरचारोवर्णोंकायथावतस्थापनतथाउनकारक्षणक-
रनेवालादण्डहीहै किन्तु प्रतिभूः अर्थात जामिनहै इसकेविनाधर्म-
यावर्णाश्रमव्यवस्थानष्टहोजातीहै कभीनहींचलती उसव्यवस्थाके
विनाजितनेउत्तमव्यवहारहैं वेतोनष्टहीहोजातेहैं किन्तुभ्रष्टव्यवहा-
रभीहोजातेहैं जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकीव्यवस्थाहै ॥ १२ ॥
दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वादण्डएवाभिरक्षति । दण्डःसुप्तेषुजागर्त्ति
दण्डंधर्मंविदुर्बुधाः ॥ १३ ॥ म० सबप्रजाकोदण्डहीशिक्षाकरताहै
औरदण्डहीसबजगत्कारक्षकहै जबप्राणीसोजातेहैं तबप्रायःमृतक
होजातेहैं परन्तुदण्डहीनहींसोताइससे सबआनन्दसेसोकेउठतेहैं
उठकेअपना२ कामकाजऔरआनन्दकरतेहैं औरजोदण्डसोजाय
तोजगत्कानाशहीहोजाय इससे जोदण्डहैसोईधर्महैऐसाबुद्धिमान
लोगोंकादृढ़निश्चयहै ॥ १३ ॥ समीक्ष्यसधृतःसम्यक्सर्वारञ्जयतिप्र-

जाः। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयतिसर्वतः॥१४॥ भ० उसदण्ड
कोसम्यक्विचारकरकेजोधारणकरताहै वहराजासबप्रजाकोप्रस-
न्नकरदेताहैऔरजोविचारकेविनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता
सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता
है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका
है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्म मात्रकानाश करै उसका
नामराजाहै औरजोऐसानहींहै उसकानामराजातोनहीरखना
चाहिए किन्तुउसकानामडाकूऔरअन्यकाररखनाचाहिये।१४।
दुष्येयुःसर्ववर्णाश्चभिद्येरन्सर्वसेतवः। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्ड-
स्यविभ्रमात्।१५॥ भ० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं
तथाधर्मकीजितनीमर्यादाहैंवेभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें
प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचा-
हिए॥१५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्त-
त्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥१६॥ भ० जिसदेशमेंश्यामवर्ण
रक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाशकरनेवालादण्डविचरताहै उसे
देशमेंप्रजामोहवादुःखकोनहींप्राप्तहोती परन्तु,दण्डकाधारणक-
रनेवालाराजाविद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा
होयकि॥१६॥ तस्याहुःसंप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समी-
क्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥१७॥ भ० इसदण्डका
सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछक-
रैसोविचारहोसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णविद्या
औरपूर्णबुद्धिजिसकोहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजान-
ताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको
नहीं॥१७॥ तंराजाप्रणयनसम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा
विषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥१८॥ भ० उसदण्डअर्थातधर्म
कोराजायथावतनिश्चयसेकरैगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजा
केसिद्धहोजायगेऔरजोकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडेइत्या-

दिकों के साथ फंसा रहता है तथा लम्पट अर्थात् जितेन्द्रियता, विद्या, धैर्य, बुद्धि, बल, पराक्रम तथा सत्पुरुषों का संग इनको छोड़ के विषम नाम कुटिल अर्थात् अभिमान ईर्ष्या, हर्ष, मात्सर्य और क्रोध इन से युक्त है के कर्म विपरीत करने से वह राजा विषमयुक्त होजाता है तो वह बुद्धिनीच संगनीच कर्म और नीच स्वभाव इत्यादिक दोषों से युक्त होगा तब वह पुरुष नाम राजा क्षुद्र हो जायगा जब धर्म नीति से दण्ड यथावत् न कर सकेगा तब उसी के ऊपर दण्ड आके गिरेगा, सो दण्ड से हत हो जायगा जैसे कि आजकाल आर्यावर्त्त देश के राजाओं की दशा नित्य देखने में आती है ॥ १८ ॥ दण्डो हि सुमहत्तेजो दुर्धरश्चाकृतात्मभिः। धर्माद्विचलितं हन्ति नृपमेव सबान्धवम्॥ १९ ॥ ततो दुर्गं च राष्ट्रं च लोकं च सचराचरम्। अन्तरिक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्च पीडयेत्॥ २० ॥ म० दंड जो है सो बड़ा भारी तेज है उसका धारण करना मूर्ख लोगों को कठिन है, जब वे दण्ड अर्थात् धर्म से विचल जाते हैं तब कुटुम्ब सहित राजा का वह दण्ड नाश कर देता है ॥ १९ ॥ तदनन्तर दुर्ग जो किला राष्ट्र नाम राज्य चर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहने वाले अर्थात् सूर्य चन्द्रादिक लोगों में रहने वाले अथवा मुनि नाम विचार करने वाले देव नाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश और अत्यन्त पीड़ा करता है इससे क्या आया कि पक्षपात को छोड़ के यथावत् दण्ड करना चाहिए तभी सुख की उन्नति होगी और जो दण्ड को यथावत् न्याय से न करेंगे तो उनका ही नाश हो जायगा ॥ २० ॥ सोऽसहायेन मूढेन लुब्धेनाकृतबुद्धिना। न शक्यो न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च ॥ २१ ॥ म० सो श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से रहित मूढ़ नाम मूर्ख, लुब्ध नाम बड़ा लोभी, अकृतबुद्धि जिसको बुद्धि न हो है सो राजा मूर्ख है वह न्याय से दंड कभी न दे सकेगा क्योंकि जो जितेन्द्रिय होता है वही राज्य करने का अधिकारी होता है, और जो विषयासक्त तथा मूढ़ सो कभी दण्ड देने वा राज्य करने को समर्थ नहीं होता ॥ २१ ॥ राजा कैसा होना चाहिए कि ॥ शुचिना सत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारि-

न्द्रिय इनको अधर्म से रोकता है सो ही राजा प्रजा को वश में कर सकता है अ-
न्यथा कभी प्रजा वश में राजा के नहीं होती जब तक प्रजा वश में न-
होगी तब तक निश्चल राज्य कभी न होगा इससे जितेन्द्रिय होय उ-
सको ही राजा करना चाहिए अन्य को नहीं ॥ २६ ॥ दश कामसमु-
त्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च । व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्ज-
येत् ॥ २७ ॥ म० जो राजा कामी होता है उसमें दश दुष्ट व्यसन अवश्य
होंगे और जो राजा क्रोधी है उसमें आठ दुष्ट व्यसन अवश्य होंगे
उनको अत्यन्त प्रयत्न से छोड़ दे अन्यथा राजा ही राज्य सहित नष्ट हो
जाता है ॥ २७ ॥ फिर क्या होगा कि । कामजेषु प्रसक्तो हि व्यसनेषु म-
हीपतिः । वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैव तु ॥ २८ ॥ म०
जो राजा काम से उत्पन्न भये जो दश दुष्ट व्यसन उनमें जब फस जायगा
तब उसका अर्थ नाम द्रव्य और राज्यादिक सब पदार्थ तथा धर्म इनसे
रहित हो जायगा अर्थात् दरिद्र और पापी हो जायगा और क्रोध से
उत्पन्न होते हैं जो आठ दुष्ट व्यसन उनमें फस जाने से वह आप राजा ही
मर जाता है इससे इन अठारह दुष्ट व्यसनों को राजा छोड़ दे जो अपने
कल्याण की इच्छा हो वे कौन से १८ अठारह दुष्ट व्यसन हैं ॥ २८ ॥ मृ-
गयाक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः । तौर्यत्रिकं वृथाट्या च काम
जो दशको गणः ॥ २९ ॥ म० मृगया नाम शिकार का खेलना अक्ष
नाम फांसा औ से क्रीड़ा वा द्यूत का करना दिवास्वप्न दिवस में सोना
परिवाद नाम वृथा वा सीधा किसी की निन्दा करना स्त्री नाम वेश्या औ-
र परस्त्री गमन तो अत्यन्त भ्रष्ट है किन्तु अपनी जो विवाहित स्त्री उसमें
भी काम से आसक्त होके अत्यन्त फस जाना वा स्त्री में अत्यन्त वीर्य का
नाश करना मद नाम भांग, गांजा, अफीम और मद्य इनका सेवन क-
रना तौर्यत्रिक नृत्य का देखना और करना वादित्रों का बजाना वा सु-
नना गान का सुनना वा करना वृथाट्या नाम वृथा जहां तहां भ्रमण
करना अथवा वृथा वार्त्ता वा हास्य करना यह काम से दश व्यसन समू-
ह गण उत्पन्न होते हैं इसको प्रयत्न से राजा छोड़ दे इसको जान छोड़े

कं सदा ॥ ३२ ॥ भ० दण्डका निपातन वाक्पारुष्य और अर्थदूषण ये तीन क्रोधके गणमें अत्यन्त दुष्ट हैं १८ अठारहमें से ये सात अत्यन्त दुष्ट हैं ॥ ३३ ॥ सप्तकस्यास्य वर्गस्य सर्वत्रैवानुषङ्गिणः । पूर्वं पूर्वं गुरुतरं विद्याद्व्यसनमात्मवान् ॥ ३४ ॥ भ० चार कामके गणमें और तीन क्रोधके गणमें सब परस्पर अनुसंगी हैं कि एक होवे तो दूसरा भी होजाय इन सातोंमें पूर्व २ अत्यन्त दुष्ट हैं ऐसा विचारवान्को जानना चाहिये जैसे कि अर्थदूषणसे वाक्पारुष्य दुष्ट है वाक्पारुष्यसे दण्डका निपातन दण्डके निपातनसे शिकार शिकारसे स्त्रियोंका सेवन इससे अक्षक्रीड़ा और उससे मद्यादिकपान दुष्ट है ऐसा निश्चित सब सज्जनोंको जानना चाहिए ॥ ३४ ॥ व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते । व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः ॥ ३५ ॥ भ० व्यसन और मृत्यु इन दोनोंमें जो व्यसन है सो मृत्युसे भी बुरा है क्योंकि जो व्यसनी पुरुष है सो पापोंमें फसके नीच २ गतिको चला जाता है और जो व्यसनरहित पुरुष है सो मर जाय तो भी स्वर्ग अर्थात् सुखको प्राप्त होता है इससे जिसका बड़ा दुष्ट भाग्य होता है वही दुष्ट व्यसनमें फसजाता है और जिसका भाग्य अच्छा होता है वह दुष्ट व्यसनोंसे दूर रहता है ॥ ३५ ॥ मौलान् शास्त्रविदः शूरान् लब्धलक्ष्यान् कुलोद्गतान् । सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान् ॥ ३६ ॥ भ० फिर राजा सात वा आठ पुरुषोंको अपने पास रक्खे वे कैसे हों कि बड़े उदार सब शास्त्रके जाननेवाले शूर वीर, जिन्होंने प्रमाणोंसे पदार्थविद्या पढ़ लिये हैं धीमानोंके उत्तम कुलमें जिनका जन्म हो उनकी यथावत् परीक्षा करके राजा रक्खे क्योंकि राज्यके कार्य एकसे कभी नहीं हो सकते इससे जितने पुरुषोंसे अपना काम हो सके उतने पुरुषोंकी परीक्षा कर २ के रक्खे उनसे यथावत् काम लेवै परन्तु बिना परीक्षा मूर्खको कभी न रक्खै और बिना उन सभासदोंकी सम्मतिसे किसी छोटे कामको भी राजा स्वतन्त्र होके न करै और जो स्वाधीन होके कुकर्म राजा करै तो वे सभासद् पुरुष राजाको दण्ड दें फिर दण्डसे भी न मानै तो उसको निकालके

दूसरेजिसराजाउसीवक्तबैठादें॥३६॥ सेनापत्यंचराज्यंचदण्डनेतृत्व-
मेवच। सर्वलोकाधिपत्यंच वेदशास्त्रविदर्हति॥३७॥ म० सेना-
पतिराज्यकरनेके योग्यराजाऔरदण्डदेनेवाला सर्वलोकाधिपतिअ-
र्थात्राजाकीनीचेमुख्यसर्वोपरिजिसकानामदीवानकहतेहैंयेचार
अधिकारवेदऔरसबसत्यशास्त्रइनमेंपूर्णविद्वानहोवें उनहीकोदेवें
अन्यकोनहीं क्योंकियेचारअधिकारमुख्यहैं बिनाविद्वानोंकेयेचार
अधिकारयथावतनहींहोते औरजोमूर्खकाम,क्रोधादिक,दोषयुक्त
इनकोदेनेसेयेचारअधिकारनष्टहोजांयगे इसवास्तेअत्यन्तपरीक्षा
करकेचारपुरुषविद्वानोंकोचारअधिकारदेनाचाहिए जिससेकित्रि-
जयराज्यवृद्धिधर्मन्याय औरसबव्यवहारोंकी यथावतव्यवस्थाहोय
अन्यथासबराज्यऔरऐश्वर्यनष्टहोजातेहैं॥३७॥ तेषामर्थेनियुञ्जी-
तशूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्। शुचीनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने॥
३८॥ म० उनअमात्योंकेसमीपराज्यकार्यकरनेकेवास्ते राजाशूर
चतुर,कुलीनपवित्रजोहोवें उनकोराजारक्खेवें अमात्यउनसेसब
राज्यकार्योंकोसिद्धकरें उनमेंसेजितनेशूरहोवें उनकोजहांजहांशंका
वायुद्धवहांवहांरक्खदे औरजितनेभीरुहोंयउनकोभीतरगृहकेअधिका-
रमेंरक्खे जहांकिसोनाऔरकोशवहांडरनेवालोंकोरक्खे और
जहांशूरवीरलोगोंकाकामहोयवहांशूरवीरोंकोरक्खे॥३८॥ दूतं-
चैवप्रकुर्वीतसर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञंशुचिन्दक्षंकु-
लोद्गतम्॥३९॥ म० फिरराजादूतकोरक्खेवहदूतकैसाहोयकिसबशा
स्त्रविद्यासंपूर्णहोयमनुष्यकोहृदयकीबातगुमनशरीरकीआकृतिऔ
रचेष्टाइनसेजानलेना जोकिउसकेहृदयमेंहोय पवित्रचतुर और
बड़ेकुलकाजोउत्पन्नहोयऐसेपुरुषकोराजादूतकाअधिकारदेवे३९॥
अनुरक्तःशुचिर्दक्षःस्मृतिमान्देशकालवित्। वपुष्मानभीर्वाग्मी
दूतोराज्ञःप्रशस्यते॥४०॥ म० फिरवैसेकोदूतकरैकिराजामेंबड़ी
प्रीतिजिसकीहोय,दक्षनामबड़ाचतुर,एकवक्तकहीबातकोकभीन
भूले,औरजैसादेशऔरकाल,वैसीबातकोजाने,वपुष्माननामरूप

बलऔरशूरवीरता जिसमेंहोय वीतभीनामकिसीसेजिसकोभयन
होय वाग्मीबड़ावक्ताधृष्टऔरप्रगल्भहोवै ऐसाजोदूतराजाकाहोय
सोश्रेष्ठहोताहै ॥४०॥ अमात्येदण्डआयत्तोदण्डेवैनयिकीक्रिया।
नृपतौकोशराष्ट्रेचदूतेसन्धिविपर्ययौ॥ ४१॥ म० दण्डदेनेकाजि-
तनाव्यवहारवहसबधार्मिकधर्मात्मापुरुषोंकेआधीनरक्खै और
दण्डअन्यायसेनहोनेपावै किन्तुविनयपूर्वकहोवै कोशऔररा-
ज्ययहदोनोंराजाकेअधिकारमेंरहैं सन्धिनाममिलापविपर्ययनाम
विरोधयेदोनोंदूतकेआधीनराजारक्खै ॥४१॥ तत्स्यादायुधसम्प-
न्नंधनधान्येनवाहनैः। ब्राह्मणैःशिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेनच॥
४२॥ म० तत्नामदुर्गकिलासबप्रकारकेआयुध धनधान्यनामअ-
न्नवाहनसवारीब्राह्मणविद्वान शिल्पीनामकारीगरलोग नानाप्र-
कारकेयन्त्रतथाघासआदिकचारा औरउदकनामजलइनसेपूर्ण
सदारहैकमतीकिसीबातकीनहोय॥४२॥ तस्यमध्येसुपर्याप्तंका-
रयेद्गृहमात्मनः। गुप्तंसर्वर्तुकंशुभ्रंजलवृक्षसमन्वितम्॥४३॥ म०
उसश्रेष्ठदेशमेंसबप्रकारसेश्रेष्ठअपनाघरराजारहनेकोबनवावैसब
प्रकारसेउसस्थानकीरक्षाकरैऔरसबऋतुओंमेंजिसघरमेंसुखहोवै
शुभ्रतामसुफेदवहघरहोवै चारोंओरघरकेजलऔरश्रेष्ठ२वृक्ष
हरे२पेड़रहैं उसमेंआपरहैसबराज्यकोदेखभालकरै औरसब
केऊपरसदादृष्टिरक्खै जिससेकोईअन्यायनकरनेपावै॥४३॥ त-
दध्यास्योद्वहेद्भार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्। कुलेमहतिसम्भूतांहृ-
द्यांरूपगुणान्विताम्॥४४॥ म० उसस्थानमेंरहकेअपनेवर्णकीसब
श्रेष्ठलक्षणोंसेयुक्तऔरबड़ेकुलमेंउत्पन्नभई अत्यन्तहृदयकोप्रसन्न
करनेवाली उत्तमजिसकारूपऔरसबविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंसेसम्प-
न्नस्त्रीकेसाथराजाविवाहकरै परन्तुचाहिएकिब्रह्मचर्याश्रमसेसब
विद्याकापढ़ना सबराज्यकार्यकाप्रबन्धकरना औरसबव्यवहारों
कोयथावतजानना पीछेराजाकाविवाहमनुभगवाननेलिखाहै इससे
क्याआयाकि ४८ वा४४ वा४० चालीसवा३६ सवर्षमें राजाकोवि-

बालकका उचित है इससे पहिले कभी नहीं और स्त्रीभी २० वर्ष से ऊपर २५ वर्ष तक की होनी चाहिए तब राजा की सन्तान सर्वोत्तम होय अन्यथा नष्ट भ्रष्ट होहो जाता है ॥ ४४ ॥ पुरोहितं च कुर्वीत वृणुयादेव चर्त्विजम् । तेऽस्य गृह्याणि कर्माणि कुर्युर्वैतानिकानि च ॥ ४५ ॥ म० सब शास्त्रों में विशारद नाम निपुण धर्मात्मा जितेन्द्रिय और सत्यवादी जो कि पूर्वोक्त लक्षणवाला ब्राह्मण उसको पुरोहित करै और ऋत्विज भी वैसे ही को करै एराजा के जितने अग्निहोत्रादिक गृह्यकर्म और इष्टियां उनको नित्य करैं ॥ ४५ ॥ यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः । धर्मार्थं चैव विप्रेभ्यो दद्याद्भोगान्धनानि च ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोम से ले के जितने अश्वमेध तक यज्ञ हैं उनमें से कोई यज्ञ को राजा करै सो पूर्ण क्रिया और पूर्ण दक्षिणा से करै, जितने विद्वान और धर्मात्मा होवें उनको नाना प्रकार के भोजन करावै और दक्षिणा भी देवै ॥ ४६ ॥ सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम् । स्याच्चाम्नायपरो लोके वर्तेत पितृवन्नृषु ॥ ४७ ॥ म० श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा वर्ष २ का प्रजा से कर को राजा लिया करै केवल वेदविहित और धर्मशास्त्रोक्त आचार में तत्पर होवै जितनी प्रजा में कन्या युवती और वृद्ध होवें इनको कन्या भगिनी और माता की नाईं राजा जाने जितने बालक युवा और वृद्ध उनको पुत्र भाई और पिता की नाईं राजा जानै अधिक क्या कि सब प्रजा को पुत्र की नाईं जानै और अपने पिता की नाईं वर्तमान करै ॥ ४७ ॥ अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्र तत्र विपश्चितः । तेऽस्य सर्वाण्यवेक्षेरन्नृणां कार्याणि कुर्वताम् ॥ ४८ ॥ म० जहां २ जैसा २ काम होय वहां २ नाना प्रकार के मन्त्रियों को रख देवै सब प्रजा के सुख के वास्ते सब कार्यों को देखते रहैं और व्यवस्था कर्त्तार रहैं जिससे कि अधर्म न होने पावै परन्तु वे मूर्ख न होवैं किन्तु सब विद्वान ही होवैं ॥ ४८ ॥ आवृत्तानां गुरुकुलाद्विप्राणां पूजको भवेत् । नृपाणामक्षयो ह्येष निधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते ॥ ४९ ॥ म० न तं स्तेना न चामित्रा हरन्ति न च नश्यति । तस्माद्राज्ञा निधातव्यो ब्राह्मणेष्वक्षयो निधिः ॥ ५० ॥ म० न स्कन्दते न व्यथते न वि-

नश्यतिकर्हिचित्। वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्योब्राह्मणस्यमुखेहुतम् ५१॥
भ० जोब्रह्मचर्याश्रमसेगुरुकुलमेंगुरूकेपाससेविद्यापढ़केपूर्णविद्वान
होकेआवैं उनकोराजायथायोग्यसत्कारकरै औरयथायोग्यउन-
कोअधिकारभीदेवै जिस्सेकिसत्यविद्याकालोपकभीनहोय किन्तु
सबविद्यासबमनुष्योंकेबीचमें सदाप्रकाशितरहै अर्थात्पुरुषवास्त्री
विद्यारहितनरहनेपावै येहीराजाओंकाअक्षयनिधिअर्थात्अक्षय
पुण्यहैजोकिब्रह्मनामवेदकायथावत्पढ़नाओरयथावत्वेदोक्तकर्मों
काकरना इस्से आगेकोईपुण्यनहीहैक्योंकि॥ ४९ ॥जितनेधनहैं
सुवर्णरजतादिकपुत्रदाराओरशरीरउनकोचोरलेसक्तेहैं शत्रुभी
हरणकरसक्ते हैं औरउनकानाश भीहोजाताहै परन्तुजोविद्या
निधिहैउसकोनचोरनशत्रु हरसक्ते हैं औरनकभीउसकानाशहो
ताहै इस्से राजालोगोंको विद्याकाप्रकाशरूपजोनिधि उसकोवि-
द्वानोंकेबीचमेंस्थापनकरनाचाहिए औरनित्यउसकाप्रचारकरना
चाहिए ॥ ५० ॥ जोविद्यानिधिहैउसकोकोईउठाईगिराउठानहीं
सक्ता नउसकोव्यथाअर्थात्कभीपीड़ाहोतीहै अग्निहोत्रादिकजि-
तनेयज्ञहैं उनसेयहजोविद्यारूपयज्ञओरमुखमेंब्रह्मकेजाननेवाले
अथवापढ़नेवाले केमुखरूपवेदिमेंहोम अर्थात्विद्याकाजो स्थापन
करनाहै सोविरिष्टअर्थात्श्रेष्ठहै इस्से राजालोगोंकोअवश्य२ चा-
हिए किशरीर,मन औरधनसेअत्यन्तप्रयत्न विद्याकेप्रचारमेंकरैं
इसीसेराजालोगोंकाऐश्वर्यपूर्ण आयु,बल,बुद्धिओरपराक्रमसदा
अधिकहोतेहैं ॥ ५१॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम्।
शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम्॥ ५२॥ भ० संग्रामों
सेकभीनिवृत्तनहोना किजबतकउसशत्रुकोनजीतले तबतकउपाय
मेंहीरहै किन्तुभागनेकेसमयमेंभागभीजाना औरपराक्रमकेस-
मयमेंपराक्रमकरना इसकानामशूरवीरपनाहै जोकिपशुकीनांईं
मारखानावामरजाना इसकानामशूरवीरतानहीं किन्तुबुद्धिही
सेविजयहोताहै अन्यथाकभीनहीं प्रजाओंकापालनकरना जितने

निश्चयसत्यवादी धर्मात्मा आप्त अर्थात् ब्रह्मचर्य से सब विद्याओं में पूर्ण उनका यथावत सत्कार करना यही राजा लोगों का कल्याण कर नेका परम श्रेष्ठ कर्म है सब कोई करें ॥ ५२ ॥ आहवेषु मिथोऽन्योऽन्यं जिघांसन्तो महीक्षितः ॥ युध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखाः ॥ ५३ ॥ भ० प्रजा को पालन करने के वास्ते श्रेष्ठ धर्मात्माओं का यथावत पालन और दुष्टों का ताड़न करने के लिये जितना अपना सामर्थ्य उससे यथावत सब युद्ध मिलके परस्पर जो राजा लोग हनन दुष्टों का करते हैं उसमें अपने भी मरणा से भी शंका नहीं करते हैं और युद्ध में पीठ नहीं दिखाते हैं अर्थात् कभी युद्ध से भागते नहीं परम हर्ष और शूर वीरता से जो युद्ध करते हैं उनका इस लोक में अखण्डित राज्य होता है और मर जांय तो मरने के पीछे परम स्वर्ग को प्राप्त होते हैं क्योंकि उन राजा लोगों का जितना कर्म है सो सब धर्म के वास्ते ही है और शूर वीरता से उत्साह पूर्वक निर्भय समर्थ में देह का जो छोड़ना सोई स्वर्ग जाने का कारण है ॥ ५३ ॥ युद्ध में धर्म से इतने नियम राजा लोगों को अवश्य मानना चाहिए । न कूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानो रणे रिपून् ॥ न कर्णिभिर्नापि दिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः ॥ ५४ ॥ भ० न च हन्यात्स्थलारूढं न क्लीबं न कृताञ्जलिम् । न मुक्तकेशं नासीनं न तवास्मीति वादिनम् ॥ ५५ ॥ न सुप्तं न विसन्नाहं न नग्नं न निरायुधम् । नायुध्यमानं पश्यन्तं न परेण समागतम् ॥ ५६ ॥ भ० नायुधव्यसनप्राप्तं नार्तं नातिपरीक्षतम् । न भीतं न पराङ्वृत्तं सतां धर्ममनुस्मरन् ॥ ५७ ॥ भ० कूट आयुध अर्थात् कपट, छल, से कोई को कभी युद्ध में न मारै रिपु नाम शत्रु ओं को कर्णि नाम कुटिल शस्त्र विष से युक्त शस्त्र से तथा अग्नि से तपाये हुए शस्त्रों से शत्रु को कभी न मारै ॥ ५४ ॥ जो आसन में बैठा होय नपुंसक हाथ को जोड़ले जिसके शिर के बाल खुल जांय मैं आपका हूं मुझ को मत मारो जो ऐसा कहै ॥ ५५ ॥ जो सोता होय जो युद्ध से भाग खड़ा होय विषाद को प्राप्त भय होय वा नग्न होगया होय आयुध से रहित जिस के हाथ में शस्त्र न होय जो युद्ध न करता होय वा देखने को

आयाहोय अथवादूसरेकेसाथआयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्र
केप्रहारसेदुःखितहोगयाहोय औरघावोंकेलगनेसे शरीरमेंछेदन
होगयाहोय भयभीतहोगयाहो। ये भूमिमेंखड़ा क्लीवनाम नपुंसक
औरभयसे भागजाताहो इनकोयुद्धमेंराजाकभीनमारे। क्योंकिसत्पु-
रुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवे शूरवीरतासे उसी
कोमारै अन्यकोनहीं किन्तुपकड़केसुखमेंअपनेवशमें उसीवत्तकर
लेजोस्त्रीऔरबालकहैं। उनकोमारनेकीइच्छाभी राजालोगनकरैं
क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहींकरतेहैं उनकेमारनेमेंबड़ापापहै
इससे कभीइनकोनमारै॥ ५७॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वह युद्ध
नकरैवायुद्धसेभागजाय अथवाछल कपट रक्खे युद्धमेंउसकोबड़ा
भारीपापहोताहै। यस्तुभीतः परावृत्तः संग्रामे हन्यते परैः। भर्त्तुर्य-
द्दुष्कृतं किंचित्तत्सर्वं प्रतिपद्यते॥ ५८॥ भा० जोभृत्यभययुक्तहोके
युद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रुलोगमारडालैं तोबड़ी
कृतघ्नताउसनेकिया। क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकि-
याथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजा
केकियेकोनाशकरनेसे वहकृतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपाप
उसकोवहीप्राप्तहोताहै॥ ५८॥ यच्चास्य सुकृतं किंचिदमुत्रार्थमुपा-
र्जितम्। भर्त्ता तत्सर्वमादत्ते परावृत्तहतस्य तु॥ ५९॥ भा० उसभृत्य
नेंजोकुछपरलोककेवास्तेपुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेले-
ताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहै सुखकभीनहींयहीधर्मस्वा-
मी औरसबसेवकोंकाभीहै कि जोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्य
वेपरस्पर हितकरनेहीमेंसदाप्रवृत्तरहैं छलऔरकपटमनसेभीन
करै अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं॥ ५९॥ रथाश्वं हस्तिनं छत्रं धनं
धान्यं पशून्स्त्रियः। सर्वद्रव्याणि कुप्यं च यो यज्जयति तस्य तत्॥ ६०॥
भा० रथघोड़ाहाथीछाता धनधान्यपशुगायछेरी आदिकस्त्री और
वस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीते
सोईलेलेवै उनमेंसेराजाकुछनले॥ ६०॥ राज्ञश्च दद्युरुद्धारमित्ये-

र्वैदिकी श्रुतिः। राज्ञा च सर्वयोधेभ्यो दातव्यमपृथग्जितम् ॥ ९१ ॥ भा० परन्तु सब भृत्य लोग सोलहवां हिस्सा उन द्रव्यों में से राजा को देवें और राजा और सेना ने मिलके जीता होय द्रव्य मिला भया उसमें से राजा भी सोलहवां हिस्सा भृत्यों को देवै इसमें राग अधिक वा न्यूनता कभी न करै क्योंकि इसके बिना युद्ध में उत्साह कभी कोई न करेगा ॥ ९१ ॥ अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया ॥ रक्षितं वर्द्धयेद्वृद्ध्या वृद्धं दानेन निःक्षिपेत् ॥ ९२ ॥ भा० चार भेद हैं पुरुषार्थ के अलब्ध जो राज्यादिक उनको दण्ड से ग्रहण करै जो प्राप्त भया उसको खूब बुद्धि और प्रीति से रक्षा करै और रक्षित पदार्थों को व्याजादिक उपायों से बढ़ावै और जो बढ़ा भया धन उसको विद्यादान यज्ञ धर्मात्माओं का पालन और अनाथों के पालन में लगावै इनमें से भी वेदादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने और पढ़ाने ही में बहुधा धन खर्च करै अन्य में नहीं ॥ ९२ ॥ बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्च पराक्रमेत् । वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत् ॥ ९३ ॥ भा० राजा सब अर्थों के संग्रह करने में अत्यन्त बुद्धि से विचार करै जैसा कि मत्स्यादिक ग्रहण करने के वास्ते बकुला ध्यानावस्थित हो के विचार करता है वैसे राजा ध्यानावस्थित हो के सब अर्थों का विचार करै युद्ध समय में सिंह की नाईं पराक्रम करै जिससे विजय होवै और पराजय कभी न होय आपत्काल में अथवा दुष्टों के निग्रह करने के वास्ते ऐसा गुप्त रहै जैसा कि चीता वा भेड़िया और खरहा जैसे अपने बिल से निकल के कूदता दौड़ता चला जाता है वैसे ही राजा शत्रु की सेना से निकल के भाग जाय वा छिप जाय अथवा किला तोड़ने में और शत्रु ग्रहण करने में पराक्रम करै ॥ ९३ ॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा ॥ तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात् ॥ ९४ ॥ भा० जैसे शरीर दुर्बल करने से बलादिक जो प्राण वे क्षीण हो जाते हैं वैसे ही राज्य के नाश अर्थात् अरक्षण से राजा लोगों के भी प्राण क्षीण हो जाते हैं अर्थात् राज्य सहित नष्ट हो जाते हैं ॥ ९४ ॥ यथाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः । तथाल्पाऽल्पो ग्रही-

तव्योराष्ट्राद्राजाद्द्विकाकृषि॥ ६४॥ भ० जैसेजोंकवकवाऔरभौंरा
थोड़ा२रुधिरदूध औरसुगन्धकोग्रहणकरतेहैं उनकानाश
कभीनहोकरतेवैसेहीराजाप्रजासेथोड़ा२करग्रहणकरैसाल२में॥
६५॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचसमुपार्जनम्। कन्यानांसंप्रदानांच
कुमाराणांचरक्षणम्॥ ६६॥ भ० जबसबग्रामस्थोंकेसाथवाप्रजा-
स्थपुरुषोंकेसाथकोईव्यवहारकेनिश्चयकेवास्ते राजाविचारकरै उ-
नमें जिसबातमें परस्परविरोधहोय उसमेंसेविरुद्धांशको छोड़ाके
सिद्धान्तमें सबकोजबएकताहोय उसबातकाआरंभकरै अन्यकान-
हीं कन्याओंकासोलहवेंवर्षसेपहिले विवाहकभीनहोनेपावै तथा
चौवीसवर्षकेआगेकन्याविवाहकेविनाकभीनरहनेपावे जिसकोकी
विवाहकीइच्छाहोय तथाकुमारपुरुषोंका२५वर्षकेपहिले विवाह
किसीकानहोनेपावे और४०,४४वा४८,वर्षकेआगेविवाहकेविना
पुरुषभीनरहैंतबतककन्याऔरपुरुषोंकोविद्यादानराजाकरै और
उनसेकरावै तथाउनकीरक्षाभीराजाकरावै जिससेकिकोईभ्रष्टन
होवै औरविद्याहीनभीकोईकन्या वापुरुषनरहै यहीराजालोगों
कापरमधर्म औरपरमपुरुषार्थहै जिससेसबव्यवहारउत्तमहोतेहैं
अन्यथानहीं औरजिसपुरुषवाकन्याको विवाहकीइच्छाहोनहोवै
उसकेऊपरराजावाअन्यकाकुछबलनहीं॥ ६६॥ दूतसंप्रेषणंचैव-
कार्यशेषंतथैवच। अन्तःपुरप्रचारञ्चप्रणिधीनांचचेष्टितम् ६७।
दूतकोभेजना औरउससेसबयथावतव्यवहारोंकाजानना कार्यशेष
नामइतनाकार्यसिद्धहोगया औरइतनाकार्यसिद्धवाकोहै उसको
विचारसेयथावतपूर्णकरै जिसनगरमें वाजिसस्थानमेंरहै उनम-
नुष्योंकायथावतअभिप्रायजानले प्रणिधीनामदूतोंअथवादासोंइ-
नकोभीचेष्टाकोयथावतजानै जिससेकिकोईविघ्ननहोनेपावै ६७॥
कृत्स्नंचाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः। अनुरागापरागौचप्रचारं-
मण्डलस्यच॥ ६८॥ भ० येआठविधजोकर्मराजाअमात्यसेनाकोश
औरराज्ययेपांचवर्गहैं जिसमेंउसकर्मकोतत्त्वसेजानै औरउसकी

रक्षाभीकरै अपनेमेंसबकोप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजा
ओंकाव्यवहार औरउनकेमनकीइच्छाइसकोयथावत्राजाजान-
तारहै जिससे आपत्कालअकस्मात्कभीनआवै ॥ ६८ ॥ मध्यमस्यप्र-
चारञ्च विजिगीषोश्चचेष्टितम् । उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रय-
त्नतः ॥ ६९ ॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजि-
गीषुनामशत्रुकेतरफसेजो जीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रु
के पक्षमेंनहो वैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथा-
वत्राजाजानलेवै अन्यथासुखकभीनहोगा इससेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक
राज्यकेमूलजितनेहैं उनकोकहै औरतत्परहोकेजानेजानकेयथा-
वत्व्यवस्थाकरै ॥ ६९॥ इनकोसामअर्थातमिलाप,दानअर्थातधन
कादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खै औरदण्डयेचार
राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तु उनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उससे
नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इससे तीनउपायसेजबकार्य
सिद्धिनहोवैतबदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिससे बहुतधर्मात्मा
होवैं औरदुष्टनहोवैं ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाक-
रतारहै एकतोउक्तप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोप-
ढ़केविवाहकाहोना औरपांचवेंवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न
भेजैं तोउनकेमातापितादिकोंकेऊपरराजाअवश्यदण्डकरै यथा-
वत्पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै
विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदे-
वै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका
अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,क्षत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख
होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरक्खे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्वअ-
धिकारकेयोग्यहोवैं तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थातद्विज
बनादेवै तबजिसब्राह्मणक्षत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा
जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजागिन२के
देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकोपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउनका
वंशतोछिन्नहीहोगया इस्सेराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये
जांयऔरदियेभीजांयदूसरीबातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअ-
त्यन्तप्रचारकरै औरजोकोईजालपुस्तकरचैवापढैपढावै उसकोरा-
जाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याजालपुस्तकनरचै
तीसरीबातयहहैकिजबकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञान-
वान,सत्यवादीदयालुऔरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना औरविरक्त
होनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेआज्ञादेवै औरकहदे
किआपसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाआकार
स्वभावऔरगुणपत्रमेंलिखेऔरग्राम२नगर२मेंविदितकरदेजिस्से
किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै औरउसके वेषवानामसे कोई
फिरनेनपावै चौथीबातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त्त,अधर्मीऔरमिथ्या
वादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकोबुद्धि
भ्रष्टहोजातीहैजैसीउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगाअ-
च्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनपावैजोविरक्तहोयतो
उसकोपकड़केदण्डदे पांचवीबातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाअ-
धिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना
तन्त्रवापुराणकोएकबातभीनलेनी पूर्वमीमांसाअर्थात्जैमिनिजो
व्यासजीकेशिष्यकेकियेसूत्रोंकेअनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा
नित्यरक्खै संध्योपासन,अग्निहोत्रसेलेकेअश्वमेधतककर्मकाण्डहै
उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै
किविषयभोगऐश्वर्य्यकेवास्ते कर्मकाकरना औरनिष्कामयहहैकि
कर्मोंसेमुक्तिहीकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकीचाहनानहीं उ-
समेंवेदकेजोमन्त्रहैं वेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहीं औरमन्त्रों
के कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसा-
दिकों औरनिरुक्तादिकोंमें कियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी
वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रऔर

उसकेऊपरव्यासमुनिजीकाकियाभाष्य तथादशउपनिषदइन्होंको
रक्खै इनमेंजैसी उपासना की व्यवस्थाहै उसी पूर्वक आप और
अपनीप्रजाकोचलावै पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनादिक उपासनाहो
नहीं इस्से इसकोछोड़नाछोड़ानाहीउचितहै तीसराज्ञानकाण्ड
है उसमेंपृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त पदार्थोंकायथावत्तत्त्वज्ञान
काहोना इसकाविधानवेदशउपनिषदऔरव्यासजीकाकिया शा-
रीरकसूत्रउनकीरीतिसेज्ञानकाण्डकीव्यवस्थाकरै उसमेंआपराजा
चलैऔरप्रजाकोभीचलावैऔरजितनेपूर्वोक्तशैववैष्णवशाक्तादिक
पाखण्डलिखेहैं उनकोकभीनप्रचलितकरै क्योंकियेसबपाखण्डहैं
तीनोंकाण्डमेंनहींहै उनसेविरुद्धहीहैं इनपाखण्डोंकेचलनेमेंराजा
औरराज्यनष्टहोजातेहैं सोअत्यन्तप्रयत्नोंसेइनपाखण्डोंकाअंकुर
मात्रभीनरहनेपावै जैसेकिआजकलआर्यावर्त्तदेशमें मण्डलीको
मण्डलीफिरतीहैं लाखोंपुरुषोंमेंविरक्तताधारणकियाहै यहमि-
थ्याजालहीहै इनलाखोंमेंकोईएकपुरुषविरक्तताकेयोग्यहै और
सब पाखण्डमेंरहतेहैं इनकोराजा यथावत्परीक्षाकरै सत्यवादी,
जितेन्द्रिय,सबविद्याओंमेंनिपुण औरशान्त्यादिकगुणजिसमेंहोय
उसकोतोविरक्तहोरहनेदे इस्से जितनेविपरीतहोंय उनकोयथा-
योग्य हलग्रहणादिककर्मोंमें राजालगादेवै इसव्यवस्थाको अ-
वश्यकरै अन्यथाकभी सुखनहोगा ॥ सन्धिंचविग्रहंचैव यानमा-
सनमेवच । द्वैधीभावंसंश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ ६५ ॥ स-
न्धिनाममिलापविग्रहनामविरोधयाननामयात्रा किशत्रुकेऊपर
चढ़ना आसननामयुद्धकानकरना औरअपनेराज्यकाप्रबन्धकरके
घरमेंबैठरहनाद्वैधीभावनामदोप्रकारकाबलअर्थातसेनारचलेना
इनछःगुणोंका विचारकियाहै सोमनुस्मृतिमें विचारलेना और
भीबहुतप्रकारकेराजकर्मोंकाउसीमेंविचारकियाहैसोदेखलेवैं॥
प्रमाणानिचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान्। रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधा-
नपुरुषैःसह॥ ६६ ॥ म० जिसराजाकोजीतलेउस्से नियमकरदे कि

जबहमतुमकोबोलावैं वाजैसोआज्ञाकरैंउसकोयथावत्करनाऔरमेरेअमात्यकेतुल्यहोके यथोक्तमेरीआज्ञाकरो यथावततुमधर्मसेसबकामकरोअन्यायमतकरोपराजयकेशोकनिवारणकेनिमित्त राजाऔरराजाकेसबपुरुषमित्रके उनकोरत्नादिकदेके उसराजाकोप्रसन्नकरैं जिस्से किउसकोपराजयसेदुःखभयाहोय उसकासत्कारसेनिवारणहोजाय फिरउनकोयथावत्आजीविकाकरदे जिस्से उनके भोजनादिकोंका निर्वाहोसके उतनी जीविका करदे औरजोराजाधर्मसेराज्यकरै विद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम, औरजितेन्द्रियहोय उस्से नयुद्धकरै नउस्से राज्यलेनेकोइच्छाकरै किन्तु उसकोबन्धुऔरमित्रवत्जानै॥ ६६ ॥प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदक्षंदातारमेवच। कृतज्ञंधृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिंबुधाः॥ ६७ ॥ म० पण्डित, कुलीन, शूर,वीर, चतुर, दाता,कृतज्ञ और धैर्यवान पुरुषसेबैरकभीनकरै जोकभीवैरकरैगा तोउसको दुःखहीहोगा ऐसेपुरुषकापराजयकभीनहींहोसक्ता॥ ६७ ॥ एवंसर्वमिदंराजासहसंमन्त्र्यमन्त्रिभिः। व्यायाम्याप्लुत्यमध्यान्हेभोक्तुमन्तःपुरंविशेत्॥ ६८ ॥ म० इसप्रकारसेसर्वराजसम्बन्धीजोकर्मउसकाविचार मन्त्रियोंकेसाथकरकेव्यायामनामदण्डमुद्गरकरकेसिंहकीनांईअथवानटकीनांईअभ्यासकरकेमध्यान्हसमयकेपहिलेभोजनकरैभोजनकरकेन्यायघरमेंजाके सबन्यायोंकोयथावतकरैजितनीराजसम्बन्धीबातेंलिखीहैंये सबमनुस्मृतिसप्तमाध्यायकीहैं यहांतोसंक्षेपसेलिखीहैं बिस्तारसे देखाचाहैतोवहांदेखलैएकयहबातअवश्य होनीचाहिए कि जोमनुष्य राजाहो उसीकी आज्ञामें चलैं यह बातठीकनहीं क्योंकिराजातोप्रतिष्ठा औरमानकेवास्ते सर्वोपरि है परन्तुविचारकरनेकोएकपुरुषसमर्थनहींहोताजितनेदेशवाअन्यदेशमेंबुद्धिमानपुरुषहोवैंउनसबकोराजाएकसभारक्खैउससभामेंआपभीरहैफिरसबपुरुषोंकेबिचारसेजोबातठीक२ठहरेउसबातकोसबकरैं इस्सेक्याआयाकिजोराजाअन्यायकारीहोजाय तोउस-

कोनिकालवाहरकरैंऔरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको
बैठादेवैंक्योंकिराजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा
राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरैतबउसको
यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्यःप्राकृतोजनः। तत्रराजा
भवेद्दण्ड्यःसहस्रमितिधारणा ६९॥ भा० जिसअपराधमेंप्रजास्थ
पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउस-
केऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे
हजारगुनोदंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो
धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइससेदोनोंकेऊपर दण्ड
कीव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥६९॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकि-
ल्विषम् । षोडशैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच ॥ ७० ॥ ब्राह्मण
स्यचतुःषष्टिःपूर्णंवापिशतंभवेत् । द्विगुणवाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणवे-
द्धिसः ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय कि-
न्तु गुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउससे आठ
गुणदण्डले वैश्यसेसोलहगुण,क्षत्रियसे३२गुण,और१००वा१२८
गुणदण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिश्रेष्ठहोकेनीचकर्मकरै उसको
अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्या-
पुत्रःपुरोहितः । नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२ ॥
भा० पिताआचार्यविद्यादातासुहृत्नाममित्रमाताभार्यानामस्त्री
पुत्रऔरपुरोहितजब२अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै
क्योंकिराजाकेसामनेकोई अपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें
स्थितनरहै॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डय-
न्। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥भा० जोराजाअन्याय
करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उस-
कोबड़ीअपकीर्तिहोतीहै।औरनरककोभीवहजाताहै।इससे राजा
कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खै
किसीकापक्षपातकभीनकरै।इससे क्या आयाकि किसीनेंमनुस्मृति

वाअन्यत्रसेऐसेश्लोकप्रच्छिन्नक्रियाहोय किब्राह्मणवासन्यासीआदि-
कादण्डनदेनाउसकासज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ भ० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातवायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मोऔरअधर्मोदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मकाजोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालेंजैसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा-उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोंमुरदाहीजानना तथाजहां२ शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवै फिरजिससभामें सत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढहीहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्बिषी ॥ ७५ ॥ भ० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उससे विरुद्धकहैतोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इससे
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयसेजानताहोय वैसाहीकहै उससे
विरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्धिपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इससे
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ भ० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वत्रसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहीजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

ब्योमानोधर्मोहतोवधीत्॥ ७७॥ म० जोपुरुषधर्मकानाशकरता
है अर्थातधर्मकोछोडके अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार
डालताहै उसअधर्मीकोरक्षाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनही
औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमे-
श्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इस्से जैसीआज्ञाविचारकेयथावतकियाहै
वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो
धर्मका औरजोपुरुषधर्मकीरक्षाकरताहै उसकीधर्मभीसदारक्षा
करताहैउसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इस्से
सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७
वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्ययःकुरुतेह्यलम्। वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्मा-
द्धर्मंनलोपयेत्॥ ७८॥ म० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थातधर्मको
छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंडुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका
है औरभगवान्भीतीनोंलोकमें धर्म हीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै
सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्म
कोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्र वा भंडुवाको
नाईजानतेहैं इस्से धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥ एक
एवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः। शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धि-
गच्छति॥ ७९ ॥ म० देखनाचाहियेकिसबजगतमेंएकधर्महीसब
मनुष्योंकामित्रहै अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकेपीछेभीसाथरह-
ताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही
छूटजातेहैं परन्तु धर्मकासंगसदाबनारहताहै इस्सेधर्मकोकोईक-
भीनछोड़ै ॥ ७९ ॥ पादोधर्मस्यकर्त्तारं पादःसाक्षिणमृच्छति।
पादःसभासदःसर्वान्पादोराजानमृच्छति॥ ८०॥ म० जिससभा
मेंअन्यायहोताहै उससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता
है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी
हैं उनकोअधर्मकाचौथियांशमिलताहै जितनेसभासदहैं किराजा
केअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्मकेचारहिस्से होजातेहैं औरचारोंकोउक्तप्रकारसेएक२ हिस्सामिलजाताहै ॥ ८० ॥ राजाभवत्यनेनास्तु मुच्यन्तेचसभासदः । एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्हो यत्रनिन्द्यते ॥ ८१ ॥ म० जिससभामें धर्मऔरअधर्मकाविवेकयथावतहोताहै कियथावतपक्षपातकोछोड़केसत्य२ हीन्यायहोताहै उससभाकेराजासाक्षी औरअमात्यसब धर्मात्माहोजातेहैं औरजिसनेअधर्मकिया उसीकेऊपरसबअधर्म होताहैकिज्ञवहीअधर्मकाफलभोगताहैराजादिकआनन्दसेपुण्य काफलभोगतेहैं दुःखकभीनहीं इससे राजाअमात्यऔरसाक्षी पक्षपातसेअन्यायकभीनकरैं ॥ ८१ ॥ वाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गैर्भावमन्तर्गतन्नृणाम् । स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषाचेष्टितेनच ॥ ८२ ॥ म० जबकोईवादीप्रतिवादीकान्यायकरनेलगै तबबाहरकेचिन्होंसे भीतरकेभावकोजानलेवै उसकास्वरूप इङ्गितनामसूक्ष्महृदयऔरनाड़ीकीचेष्टाआकृतितथानेत्रकीचेष्टाऔरवाह्यअंगोंकीभीचेष्टा इनसेसत्य२ निश्चयकरले किइननेअपराधकियाहै औरइननेनहीं किया एकबातयहभी परीक्षाकीहै जोहाथकेमूलमें धमनीनाड़ी औरहृदयउनकोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे स्पर्शकरके यथावतपरीक्षा करै फिरयथावतदण्ड औरअदण्डकरै इन१८अठारहस्थानोंमें विचारकीव्यवस्थाहै ॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानंनिःक्षेपोस्वामिविक्रमः । संभूयचसमुत्थानंदत्तस्यानपकर्मच ॥ ८३ ॥ वेतनस्यैवचादानंसंविदश्चव्यतिक्रमः । क्रयविक्रयानुशयो विवादःस्वामिपालयोः ॥ ८४ ॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके । स्तेयंचसाहसंचैवस्त्रीसंग्रहमेवच ॥ ८५ ॥ स्त्रीपुंधर्मोविभागश्चद्यूतमाह्वयएवच । पदान्यष्टादशैतानिव्यवहारस्थिताविह ॥ ८६ ॥ एषुस्थानेषुभूयिष्ठं विवादंचरतान्नृणाम् । धर्मंशाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम् ॥ ८७ ॥ म० ऋणकालेना औरदेना १ निक्षेपकेदोभेदहैं जोगिनकेतौलके वाकिसीकेपासपदार्थरक्खै उसकानामनिक्षेपहै दूसरागुप्तबांधकेकिसीकेपासधरावटरक्खी और

आधेरधनसे व्यवहारकरना २ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकापदार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले ३ संभूयसमुत्थाननाम धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरी कादेनावानदेना अथवालेलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ बेचनाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंविवादकाहोना सीमामेंविवादकाहोना १० कठोरवचन औरविना विचारेदण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकीस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरले लेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकोभंगकरना १५ दायभाग १६ द्यूतनामजूवा १७ औरजोप्राणिअर्थातस्त्रीपुत्रकुटुम्बगाय हस्ती, अश्वादिकपशुओंकोदबाकरद्यूतकाकरना उसकानामसमाह्वय है १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता है इनकाउत्तमलक्षणदूतप्र पक्ष औरपूछनेसेराजायथावत्न्यायकरै इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमाध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यं सर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम् ८८॥ जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थोंकोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसको चोरोंसेलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकडाजाय औरपदार्थनमिलै तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्तेराजा काहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपना पालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेधनलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहींहै किन्तु वहीचोरऔरडाकूहै॥ ८८॥ यादृशाधनिभिःकार्याव्यवहारेषुसाक्षिणः। तादृशान्सम्प्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतैः॥ ८९॥

म० राजा और धनिक लोगों को जिस प्रकार के साक्षी व्यवहारों में करना चाहिए उनको यथावत कहते हैं और साक्षियों को जैसा सत्य २ ही कहना चाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणः पुत्रिणो मौलाः क्षत्रविट्शूद्रयोनयः । अर्थ्युक्ताः साक्ष्यमर्हन्ति न ये केचिदनापदि ॥ ९० ॥ म० गृहस्थ पुत्रवाले और वे उदार होवें फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, शूद्र वर्णों में से कार्य वाला पुरुष जिनको कहे कि ये मेरे साक्षी हैं और कोई आपत् काल के बिना न होय ॥ ९० ॥ आप्ताः सर्वेषु वर्णेषु कार्याः कार्येषु साक्षिणः । सर्वधर्मविदोऽलुब्धा विपरीतांस्तु वर्जयेत् ॥ १०० ॥ म० ब्राह्मणादिक सब वर्णों में जो आप्त बड़ा धर्मात्मा, सत्यवादी और जितेन्द्रिय होवें तथा सब धर्म को जानता होय और काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय शोकादिक दोष जिसमें न होवें सत्य बोलने ही का जिसका नियम होय ऐसे ही को राजा और प्रजा साक्षी करैं इनसे विपरीत मनुष्यों को कभी साक्षी न करैं ॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता न सहाया न वैरिणः । न दृष्टदोषाः कर्तव्या न व्याध्यार्ता न दूषिताः ॥ १०१ ॥ म० जिनका परस्पर व्यवहार से सम्बन्ध रखते होंय अनाप्त नाम जिनमें काम क्रोध, लोभ, मोह, भय मूर्खत्वादि दोष होवैं, सहायकारी होवें वा शत्रु होवें जो वादी प्रतिवादी के दोष वा गुणों को जानता होय रोग से आर्त होय, वा दुष्ट कर्म को करने वाले इस प्रकार के मनुष्यों को राजा वा प्रजा साक्षी कभी न करैं ॥ १०१ ॥ न साक्षी नृपतिः कार्यो न कारुककुशीलवौ । न श्रोत्रियो न लिंगस्थो न संगेभ्यो विनिर्गतः ॥ १०२ ॥ म० राजा कारुक नाम शिल्पी कुशीलव नाम कुम्हारी से आजीविका करने वाले श्रोत्रिय नाम वेद पढ़ाने वाला लिंगस्थ ब्रह्मचारी और वानप्रस्थ संगेभ्यो विनिर्मुक्त नाम सन्यासी इनको भी राजा वा प्रजा साक्षी न करैं क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्याय करने वाला होता है वेदपाठी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी इनको साक्षी करने से पढ़ना पढ़ाना तप और विचार में विघ्न होगा इससे इनको साक्षी न करना चाहिये। १०२ ॥ नाध्यधीनो न वक्तव्यो न दस्युर्न विकर्मकृत् ।

नदृष्टोनशिशुर्नैकोनान्त्योनविकलेन्द्रियः॥ १०२॥ भ० पराधीनव-
न्त्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवै डांकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला वृद्ध
बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजा
वाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं॥ १०३॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णो
पपीड़ितः। नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः॥ १०४॥
भ० दुःखीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल
क्षुधा औरतृषासे जोपीड़ितहोवै श्रमकरकेदुःखीहोवै कामातुर
क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं॥ १०४॥
स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः। शूद्राश्चसन्तःशूद्रा-
णामन्त्यानामन्त्ययोनयः॥ १०५॥ भ० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रि-
यजोस्त्रियांहोवैं वस्त्रियोंकीसाक्षीहोवैं द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज
शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसा-
क्षीहोवैं अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंविस्तार
सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले॥ १०५॥ सा-
हसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच। वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसा-
क्षिणः॥ १०६॥ जितनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा
ग्रहणकठोरवचनवा विनाविचारदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षी
कीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तुयथावत्विचारकरके इनकोदण्ड
देना उचित है॥ १०६॥ सत्येनपूयतेसाक्षीधर्मःसत्येनवर्द्धते।
तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभिः॥ १०७॥ भ० सत्यबोलने
सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म
भीसत्यबोलनेहीसेबढ़ताहै इससे सबमनुष्योंकोसत्यहीसाक्षीदे-
नीचाहिये मिथ्याकभीबोलनानहीं॥ १०७॥ आत्मैवह्यात्मनःसा-
क्षीगतिरात्मातथात्मनः। मावमंस्थाःस्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमु-
त्तमम्॥ १०८॥ भ० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरे आत्माकासा-
क्षीतूं हीहै औरतेरीसद्गतिकाकरनेवालाभीतूं हीहै क्योंकिजोतूं
सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदुःखनहोगा औरमिथ्याबोलनेसेसदातूं

दुःखीहीरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इससे हेमित्रसबसाक्षियोंमें सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतूं मतकर औरजोतूं अपमानस्वात्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेतेरीसद्गतिनहींहोगी किन्तु असद्गतिहीहोगी इससे सत्यहीसाक्षीबोले मिथ्याकभीनहीं ॥१०८॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनः। मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा ॥१०९॥ भा० ब्रह्मघ्न नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री औरबालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भीपाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुमकोसबहोवैंजो तूंसत्यनबोले ॥१०९॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम्। तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥११०॥ हेभद्रहेसाक्षिन् जोतूंमिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरा पुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इससे तूंसत्यबोले ॥११०॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे। नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः ॥१११॥ हेकल्याणतूंजानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूंमतजान क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थितहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोयथावत्जानताहै इससे तूंपरमेश्वर औरअधर्मसेभयकरकेसत्यही बोल ॥१११॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः। तेनचेदविवादस्तेमागंगांमाकुरून्गमः ॥११२॥ भा० जोयमनाम यथावत् न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रकाशकरनेवाला देवनामस्वप्रकाशस्वरूपसोअन्तर्यामीतेरेहृदयमें भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुमकोनकरना होय तोतूंसत्यहीबोल औरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो तुमकोकभीसुखनहोगा औरजोतूंसत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरुक्षेत्रमेंप्रायश्चितकरना वाराजगृहमेंदण्ड अथवापरलोकपरजन्म मेंनरकादिकसबदुःखोंकीप्राप्तितुमकोकभीनहोगी इससे तुमकोअ-

मनुष्यसत्यहीबोलनाचाहियेमिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्यविद्वान्
हिवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशंकते । तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपु-
रुषंविदुः ॥ ११३ ॥ भा० जिसपुरुषकादेहजोहृदयस्थआत्मा क्षे-
त्रज्ञनाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोईअपनाआत्माजिसकर्म
मेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको
कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यवचनहीबोलताहै उससेअ-
धिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चि-
तजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाविस्तारलि-
खाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना
औरउक्तप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहोसक्ताहै अन्यथानहीं॥११३॥
उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम् । चक्षुर्नासाचकर्णौचधनं
देहस्तथैवच ॥ ११४ ॥ भा० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय,उदर,जिह्वा,हस्त
पाद,चक्षु,नासिका,कान,धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहैं इ-
न्हींमेंदण्डकास्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्द-
ण्डंतदनन्तरम् । तृतीयंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥
भा० प्रथमतोवाग्दण्डकरै किऐसाकामकोईदुष्टनकरै दू-
सराधिक्दण्डकितुझकोधिक्कारहै दुष्टतैंनेनीचकर्मकिया तीसरा
धनदण्डकिउससेधनलेलेना चौथावधदण्डकिउसकोमारडालना
॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादानादादेयस्यचवर्जनात् । दौर्बल्यंख्या-
प्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति॥११६॥ राजाजोनलेनेकीवस्तुहै उस-
कोकभीनले औरलेनेकाअर्थात्करउसमेंसेएककौड़ीभीनछोड़ै
क्योंकिइससेराजाकोदुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोक
वापरलोकमेंनाशहीहोताहै इससेक्याआयाकिराजाअपनेअ-
र्थोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअर्थकोकभीग्रहणनहींक-
रता सोईराजाश्रेष्ठहै॥११६॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्या-
न्नराधिपः । अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ भा०
जोराजाअन्यायतथामोहसेकार्योंकोकरताहै उसराजाको

शीघ्रहीनाशहोजाताहै क्योंकिउसकोमनुलोग शीघ्रहीनष्टमें कर
लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्र नदृश्येतागमःक्वचित् । आगमः
कारणंतत्रनसंभोगइतिस्थितिः ॥ ११८ ॥ ग्राममेंजोनानाप्रकार
का देखपड़े उसको राजाविचारकरै किआमदनी इनकोकहां
से होती है जो आमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और
जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाक-
रताहोय उसकोपकड़केराजादण्डदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक
कुकर्मकरताहोगा इसकोधनकहांसेआया भोगकाकारण
आगमहोहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्याद
है इसकोराजाअवश्यपालनकरै ॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्क-
स्मैचिद्याचतेधनम् । पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥
भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेने
केवास्तेवाअपनेभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइ-
तनेकामकेलिये हम आपको धनदेतेहैं सोआपइतनाहीकामइस
करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि
वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरै तोउससेसबधनलेलि-
याजाय जिसनेंकिदियाथावहलेलेऔरजोउसकोवहनदेतोराजा
उसकोपकड़केदण्डमेंदिलादे ॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्य-
स्यात्समन्ततः ॥ शम्यापातास्त्रयोवापित्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥
भ० गांवकेचारोंओर१०० सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खे धनु-
ष्यहोताहै साढ़ेतीनहाथका अथवा कोईजवानपुरुषएकदण्डाको
लेके खूबबलसेफेंकेजहांविहदण्डपड़े उससे फिरफेंके उसस्थानसेसो
तीसरीबारफेंकेजहांविहदण्डाजायवहांतकमैदानरक्खे इसमेंसौ
धनुष्यसेकुछअधिकमैदानरहेगा औरनगरकेचारोंओरत्रिगुणमै-
दानरक्खै क्योंकिग्रामवानगरमेंवायुशुद्धरहेगा इससे रोगथोड़े
होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्ते अवश्यइतनामैदानरख-
नाचाहिये १२० ॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेनृपः ॥ स्तेना-

नांश्चिग्रहाद्यस्य यशोराष्ट्रं च वर्द्धते ॥१२०॥ भ० चोरोंके निग्रहमें राजा
अत्यन्त यत्न करै क्योंकि चोरोंके और दुष्टोंके निग्रहसे राजाकी कीर्त्ति
और राज्य नित्य बढ़ते चले जाते हैं अन्यथा नहीं ॥१२१॥ अभयस्य
हि भूतानि राजा रक्षन्नसावतयन् । यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतद-
क्षिणैः ॥१२२॥ भ० जो राजा धर्मनासत्यायसे सब भूतोंको रक्षा क-
रता है और दुष्टोंको दण्डसे मारता है वह राजा सहस्रों लाखों कड़ोड़ द-
क्षिणोंसे अर्थात लक्ष और कोटि रुपैयोंसे जानो कि नित्य यज्ञ होकरता
है क्योंकि राजाका मुख्य धर्म यही है श्रेष्ठोंका पालन और दुष्टोंका ता-
ड़न करना ॥१२२॥ अरक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिणम् ।
तमाहुः सर्वलोकस्य समग्रमलहारकम् ॥१२३॥ भ० जो राजा धर्म-
से यथावत प्रजाका पालन नहीं करता और प्रजासे धान्यमें षष्ठांशादि
त्यादिक करोंको लेता है वह राजा करवाला लेता है कि सब संसारके म-
लोंको खाता है और सबके जैसे विष्ठादिकोंको शुद्धि करता है चांडाल
वैसा ही वह राजा है ॥१२३॥ निग्रहेण च पापानां साधूनां संग्रहेण च ।
द्विजातयइवेज्याभिः पूयन्ते सततं नृपाः ॥१२४॥ भ० जो राजा पापी
पुरुषोंको अत्यन्त उग्र दण्ड देता है और श्रेष्ठोंको रक्षा तथा सन्मान
करता है वह राजा सदा पवित्र है और उसका भाग है जैसे कि द्विजाति
लोग विद्या तप और यज्ञोंसे पवित्र रहते हैं ॥१२४॥ यः क्षिप्तो मर्षय-
त्यार्त्तैस्तेन स्वर्गे महीयते । यस्त्वैश्वर्यान्न क्षमते नरकं तेन गच्छति ॥
१२५॥ भ० जो राजा आर्त्तनाम दुःखी लोग गाली तक भी दें तो भी स-
हन करता है सो ही राजा स्वर्गमें पूज्य होता है और जो ऐश्वर्यके अभि-
मानसे किसीका सहन नहीं करता है सो वह राजा नरकको जाता
है क्योंकि जो समर्थ है उसीको सहन करना चाहिए और जो निर्बल है
सो तो अपने ही से सहन करेगा ॥१२५॥ राजभिर्धृतदण्डास्तु कृ-
त्वा पापानि मानवाः । निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो यथा
॥१२६॥ भ० जिनको जय अपराध करनेसे राजाओंका दण्ड होता
है फिर वे इस लोकमें आनन्द पाते हैं और मरनेके पीछे उत्तम स्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग॥ १२६ ॥ येनयेनयथां गेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः॥ १२७॥ भ० जिस२ अंगसेजैसा२ कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरैं चोरलोग उसअंगको अर्थातनचसे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरैं उसकोनेत्र निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावै तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगतकेमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै॥ १२७॥ अने नविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम् । यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रे त्यचानुत्तमंसुखम् ॥ १२८ ॥ भ० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअ त्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इस्से चोरोंकानिग्रहअत्यन्तप्रयत्न सेराजाकरै ॥ १२८ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैवदण्डेनैवचहिंसतः। साहसस्यनरःकर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः॥ १२९ ॥ भ० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीकाउपदेशकरताहै और किसीकोमारवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिकपुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़े पापीहैं क्योंकिपापीतोआपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्कोदुष्टकरदेतेहैं इस्से॥ १२९॥ नमित्रका रणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात् । समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूत भयावहान्॥ १३०॥ भ० जितनेपुरुषसाहसिकतासे दुष्टकर्मकराने औरकरानेवालेहोंय अर्थातअधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्या गमनऔरजूवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमि त्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़ै क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं ॥ १३०॥ गुरुंवा बालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवा विचारयन् ॥ १३१ ॥ गुरुवापुत्रअथवापितावालकवावृद्धवाब्राह्म-

य किसबशास्त्रोंको पढ़ाहुवा औरबहुश्रुतनाम सब शास्त्रकोसुनने
वाला वहजो आततायीनाम धर्मकोछोड़के अधर्ममेंप्रवृत्तभयाहोय
तोइनपुरुषोंको मारहीडालनाउचितहै इसमेंकुछविचारनकर
ना क्योंकिदण्डहीसे सबशिष्टहोजातेहैं बिनादण्डकोईनहीं इस्से
सबकेऊपरदण्डकाहोनाउचितहै किकोईअपराधीपुरुषदंडकेबि
नारहनेनपावै ॥ १३१ ॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नॄन्महीपतिः ।
उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्नयित्वाप्रवासयेत् ॥ १३२ ॥ भ० जोपुरुषपर
स्त्रीगमनमेंप्रवृत्तहोवें वाअन्यपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैं उनकेल
लाटमेंचिन्हकरकेदेशबाहरनिकालदे जोपहिलेचोरीकरै उसके
ललाटमें कुत्ते केपंजाकोनांई लोहेकाचिन्ह अग्निमेंतपाकेलगादे
किमरणतकवहचिन्हनबिगड़े फिरजोदूसरीवार वहीपुरुषचोरी
करै तोहाथवापगउसकाराजाकाटडालै औरफिरभीचोरीकरैवा
करावै तोपहिलेदिननाककाटले दूसरेदिनकान तीसरेदिनजीभ
चौथेदिननखनिकालले पांचवेंदिनआंखछठवेंदिनशिरच्छेदनक-
रदे सबमनुष्योंकेसामनेजिस्से किफिरचोरीकोइच्छाभीकोइनक-
रैऔरजोपरस्त्रीवावेश्याकेपासगमनकरैअथवापरपुरुषोंसेस्त्रीलोग
गमनकरैंउनकेललाटमेंपुरुषकेलिंगइन्द्रियकाचिन्हअग्निमेंतपाके
लगादे जिस्से कि मरणतक लज्जाऔरअप्रतिष्ठा उनकोहोवै उ-
नकोदेखकेऔरकोईइनकर्मोंमेंप्रवृत्तनहोयक्योंकि ॥ १३२ ॥ तत्स-
मुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंकरः। येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायक-
ल्पते ॥ १३३ ॥ भ० इन्होंकर्मोंसेप्रजाके मनुष्यवर्णसंकर औरपापी
होजातेहैं जिस्से किमूलसहित धर्मनष्टहोजाताहै इस्से इनकेनि-
ग्रहमेंराजाअत्यन्तयत्नकरै ॥ १३३ ॥ भर्त्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञातिगु-
णदर्पिता। तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते ॥ १३४ ॥ भ०
जोस्त्रीजातिऔरगुणोंकेअभिमान अथवामूर्खतासे बिवाहितपुरुष
कोछोड़के अन्यपुरुषसेव्यभिचारकरतीहै उसकोनगरग्रामवादेश
कीस्त्रियोंऔरपुरुषोंकेसामनेकुत्तोंसेचिथवाडाले इसरीतिसेउस-

कामरणहोजाय जिस्से किअन्यकोई स्त्रीऐसाकामकभीनकरै १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे। अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्रदह्येतपापकृत्॥१३५॥ भ० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरै उसकोलोहेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसेअग्निकरके व्यभिचाररूपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्धहोजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सामनेही होना चाहिए जिस्से कि सबकोभय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरै॥१३५॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदुष्टवाक्। नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक्॥१३६॥ भ० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहनेवाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमानै येसबनहींहैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथानहीं॥१३६॥ एतेषांनिग्रहेराज्ञः पंचानांविषयेस्वके। साम्राज्यकृत्सजात्येषुलोकेचैवयशस्करः॥१३७॥ भ० जिसराजाकेराज्यमें पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें सम्राट्चक्रवर्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबडीकीर्तिकाकरनेवालाहै॥१३७॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान्। अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट्॥१३८॥ भ० जोब्राह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैंउनकोइच्छाकेबिनाउनकोराजाछःसैमुद्रादण्डकरै क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रहीकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यकामबिनासेवाकेक्याकरेगा१३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मांतान्वाहनानिच। आयव्ययौचनियतावाकरान्कोशमेवच॥१३९॥ भ० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टावाकर्मवाहन, हस्ती, अश्व, रथ, औरनौकादिक आयनाम पदार्थोंकाआना, व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहशस्त्रोंकासमूहऔरधनकाकोष इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोईकर्मनष्टवाअन्यथानहोय ॥ १३९ ॥ एवंसर्वानिमान्राजाव्यव-
हारान्समापयन्। व्यपोह्यकिल्बिषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम् १४०॥
भ० इसप्रकारसेसबव्यवहारोंको न्यायपूर्वकजोराजाकरताहै वह
सबपापोंसेछूटके परम गतिजोमोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस
व्यवहारको कियाथाहै उसकोसम्यक् विचारकेकरै जिस्से किवह
कार्यपूर्णहोजाय अपूर्ण कभीनरहै ॥ १४० ॥ अनंशौक्लीवपतितौ-
जात्यंधवधिरौतथा । उन्मत्तजडमूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः ॥
१४१ ॥ भ० क्लीबनामनपुंसकपतितनामपापीजन्मसेअंध तथाव-
धिरउन्मत्तनामपागलजडनाम मूर्ख, मूकऔरजोविद्याहीनवाअ-
जितेन्द्रिय, काम, क्रोधादिकोंमेंये सबदायभागनपावैं क्योंकियेदाय
भागपावेंगे तोसबपदार्थोंकाव्यर्थनाशकरदेंगे इस्से राजाकोयह
बातअवश्यकरनीचाहिए अपनेपुत्र वाप्रजाके सन्तानोंको जितने
पदार्थराज्यऔरधनादिकउनमेंसेकुछनदिलावै औरजोकोईमूर्ख-
तावामोहसेउनकोदायभागदेवै तोउसकोराजादण्डदे औरनपु-
न्सकादिकोंसेदियेहुएपदार्थकोलेकेयथावत्रक्षाकरै क्योंकिमूर्खों
केहाथपदार्थवा अधिकारआवेगा तोशीघ्रसबकानाशकरके आप
होदरिद्रबनजायंगे फिरराजाकेराज्यमें सबदरिद्रताछायजायगी
फिरराजाकोभीकुछप्राप्तिप्रजासेनहोसकेगी इस्से राज्यऔरधना-
दिकजितनेप्रजाओंकेपदार्थहैं उनपदार्थोंकोराजाकभीनदे और
नदिलावै जोसम्यक्विद्या, बुद्धिऔरविचारमें उनपदार्थोंकोरक्षा
मेंयोग्यहोय उसकोसम्यक्परीक्षाकरके उनपदार्थोंकास्वामीउ-
सकोकरदेअन्यथानहीं ॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्याम-
नीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत् ॥ १४२ ॥ परन्तु
उननपुंसकादिकोंकोअपनेसामर्थ्य केयोग्य वहदायभागलेनेवाला
भोजन, वस्त्रऔरउनकास्थानादिकसंयोगक्षेममेंयथावत्करै जोवह
भोजनादिकभीउनकोनदेतोपतितहोजाय औरराजाउसकोदण्ड
भीदे इस्से क्याआयाकिभोजनऔरवस्त्रादिकोंकेविनावेदुःखीनर-

हैं औरजोउनकापुत्रयोग्यहोय तोउसकेपिताकेदायभागकोराजा दिलावै इसबातकोराजाप्रयत्नसेकरै अन्यथाराज्यवृद्धिनहींहोगी राजाअपनीप्रजाकोरक्षा औरहितमें सदाप्रवृत्तरहै औरप्रजाभी राजाकीरक्षातथाहितमेंप्रवृत्तरहै जोप्रजाकोआपत्कालआवै तो राजासवप्रयत्नोंसेप्रजाकीरक्षाकरै अर्थातराजाकोआपत्कालकिसीप्रकारकाआवै तोप्रजास्थसबमनुष्यराजाकासबप्रकारसेसहाय करैं क्योंकिप्रजाराजाकेपुत्रकीनांईहोतीहै पिताकोअवश्यचाहिए किअपनीप्रजाकीसदारक्षाकरै तथाप्रजापुत्रकीनांईजैसेकिपिता कोपुत्ररक्षाकरताहै वैसेराजाकी प्रजारक्षाकरै औरजिसबातसे प्रजाकोपीड़ाहोय उसबातकोराजाकभीनकरै तथाराजाकोजिस बातसे दुःखहोय उसबातको प्रजाकभीनकरै जैसेकिजिनपशुओं वाजिसपदार्थोंसे सबप्रजाकाउपकारहोताहै उसकाराजाकभीविनाशनकरै जैसेकिगाय,भैंस,छेरी,वैलऔरऊंटतथागधादिकइनकोकभीनमारै औरनमरवावै क्योंकिदुग्ध,घृत,अन्नादिकऔर सर्वव्यवहारइन्होंसे सब मनुष्योंकाचलताहै तथा राजाकाभी इनका मारना दोनों को अनुचितही है राजा भृत्य तथा युद्ध से निवृत्तकभीनहोवै क्योंकियुद्धसे निवृत्तहोगा तोउसीवक्तशत्रुलोग सबपदार्थोंकोछीनलेंगे तथामारडालेंगेवाअत्यन्तदुःखदेंगे जब युद्धकासमयआवै तबराजाजल,अन्न,मनुष्य,शस्त्र,यानसबपदार्थों कीपूर्त्तिरक्खै जिससे कि किसीपदार्थकेविना दुःखकिसीकोनहोवै औरयुद्धमेंयुद्धकाआचारविचाररक्खै युद्धकरतेभीजांयऔरखाते पीतेभीजांय कुछ शंका न रक्खै उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धारणकियेरहैं युद्धऔरभोजनभीकर्तेजांय ऐसानकरैंकिशस्त्र,जूतेशस्त्र,इत्यादिक सबछोड़के हाथगोड़धोके भोजन करैं तबतक शत्रु लोगमारडालैं देखनाचाहिएकियुधिष्ठिरजीकेराज्यसूयऔरअश्वमेधयज्ञमें सबसमुद्रपार टापूभूगोलकेसबराजाआयेथे वेसब ब्राह्मण,क्षत्रियोंकेसाथ एकपंक्तिमें भोजनकरतेथे औरविवाहभी

उनका परस्पर होता था जैसे कि काबिल कन्धार की कन्या गान्धारी, धृतराष्ट्र से विवाही गई थी तथा माद्री ईरान देश की राजा की कन्या पांडु से विवाही गई थी अर्जुन के साथ नाग अर्थात् अमेरीका के लोगों की कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारत में लिखे हैं और शूद्र ही सब ब्राह्मण और क्षत्रियादिकों के घर में पाक करनेवाले थे जिनका नाम सूद ऐसा प्रसिद्ध था जो शूद्र पाक करनेवाला होता है उसको सूद ऐसी संज्ञा होती थी क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, वे तो विद्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्पविद्या से पदार्थों का रचन इन्हीं में सदा प्रवृत्त रहैं रसोई आदिक सेवा सब लोगों की शूद्र ही करैं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य इनको भोजन एकता ही होनी चाहिए जिससे कि परस्पर प्रीति होवे और भोजन के बड़े २ बखेड़े हैं वे सब नष्ट हो जांय कोई पर देश को जाता है तब पात्रादिकों का भार गधे की नाईं उठाया करता है तथा मांजना और चौका देना अन्न, काष्ठ, अग्न्यादिक का अपने हाथ से ले आना और बनाना गमन से बड़े पीड़ित हो के आये फिर भी समय के ऊपर भोजन का न होना इससे बड़े दुःख होते हैं इससे ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य इनके एक भोजन होने से किसी को किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा क्योंकि शूद्र ही सब करदेगा और खिलावै पिलावैगा परन्तु ब्राह्मणादिकों ही के पदार्थ सब पात्रादिक होवैं शूद्र के घर के नहीं शुद्ध होके बनावै और ब्राह्मणादिक विद्यादिक श्रेष्ठ पदार्थों की उन्नति करैं जिससे कि सब सुख होवैं इससे इस बात को राजा लोग अवश्य करैं इसके बिना उनको उन्नति नहीं होनी है देखना चाहिए भोजन के पाखंडों से आर्यावर्त्त देश का नाश हो गया ब्राह्मणादिक चौका देने लगे ऐसा चौका दिया कि राज्य, धन और स्वतन्त्रादिक सुखों के ऊपर चौका ही फेर दिया कि सब आर्यावर्त्त देश को सफाचट कर दिया इससे राजा लोगों को चाहिए कि व्यर्थ पाखण्ड प्रजा में न होने देवैं विवाह का जिस काल में जैसा पूर्व नियम लिखा है और परीक्षा उसी प्रकार से

राजाकरवावै ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजबहोजाय तभीविवाहकोआज्ञाराजादे कियहीसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्यनहीं सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीतिरक्खैं प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबविद्याओंमेंपूर्ण इनकीसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकियाकरैं किजिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवैं वहीराजाहोय उसनेशकेसबप्रजा उसराजाको प्रसन्नरक्खै ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगुणोंकीउन्नतिकरैं अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेविना प्रजामें कुछकर्म नहोवे औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्म मेंकरैं किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेविनाकुछराजकार्य होनेपावे क्योंकिइसकेहोनेसे उसदेशमेंकभीदुःखके दिननआवेंगे सदाआनन्दहीरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअप्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किहाटधारोडांकू औरपाखण्डी जैसेकिवैराग्यादिक मन्दिररखके सबमनुष्योंसेफुसलाने वादुष्टउपदेशबुद्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणकरलेतेहैं यहांतककिमनुष्योंकोमूड़केचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिवृत्तकरदे। पूर्वपक्ष इनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवेतोप्रसन्नतासेधन देतेऔर लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनकोदेतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउचितनहीं। उत्तर—इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेकोचीजहाथमेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजाहै फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंविद्या, बुद्धि औरविचारहीनपुरुषहैं वेबालककीनांईहैं उनसेभी प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक महात्म्यसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोंकोंसुनाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

रदण्डकभीनकरनाचाहिए किन्तुअवश्यहीकरनाचाहिए जोराजा
इनकोदण्डनदेगा तोउसकोप्रजासबभ्रष्टहोजायगी औरराज्य
काभीनाशहोजायगा क्योंकिवेअधर्मकरतेहैंऔरकरातेहैं नामर
खतेहैंधर्म और बेदका चलातेहैं पाखण्डको इससे इसशास्त्रको
राजाअवश्यछेदनकरदे किकोईइसकेदेशमेंपाखण्डीनरहैऔरन
होनेपावै वेपाषाणादिकोंकीमूर्त्तियोंकोबनाऔरमन्दिरकोरचके
उनमेंउनमूर्त्तियोंकोबैठाके उनकानामशिवनारायणादिकरखते
हैं कलावत्तू झूठेवा सच्चे आभूषणोंकोपहिराके फिर घड़ी, घंटा,
नगारा, रणसिंघा औरशंखइत्यादिकोंकोबजाके मूर्खोंकोमोहित
करके सबधनादिकपदार्थोंकोहरणकरलेतेहैं जैसेकिडांकूलोग
नगारादिकबजाकेप्रसिद्धधनहरलेतेहैं इनठगोंकोदण्डकेबिनाक
भीनछोड़नाचाहिए क्योंकि ॥ अज्ञोभवतिवैबालः पिताभवतिम
न्त्रदः। अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येवतुमन्त्रदम् ॥ १४३॥ म०
इसमेंमनुभगवान्काप्रमाणहै किजोअज्ञानीहैसोईबालकहैऔर
ज्ञानीअर्थात्सत्यउपदेश औरविचारकाकरनेवालासोईपिताहो
ताहै इससेक्याआया किजोअज्ञानीहै उसकोबालककहनाचाहि
ए ॥ १४३॥ जितनेदुकानदारप्रसिद्धचोरउनकेऊपरभीराजाअत्य
न्तदृष्टिरक्खै किवेप्रसिद्धचोरीकभीनकरनेपावैं ॥ तुलामानंप्रती
मानंसर्वंचस्यात्सुलक्षितम्। षट्सुषट्सुचमासेषुपुनरेवपरीक्षये
त् ॥ १४४ ॥ म० तुलानामतराजूकोदण्डीऔरतराजूकोपरीक्षाक
रे पक्षर मास२ वाछटहे२ मास क्योंकिदुकानदारलोगबीचकासूत
औरदोनोंपल्लेदण्डीकेबीचमेंकेइसप्रकारकेपाराभरदेतेहैं उससेलेते
हैं तबअधिकलेलेतेहैं औरदेतेहैं तबन्यूनदेतेहैं जबबुद्धिमान्आय
तबऔरभाव जबमूर्खआयतबऔरभावसेसाहूकारकेमूड़लेतेहैं प्रती
मानअर्थात्प्रतिमानाम छटांकआदिकउसकोघटाबढ़ालेतेहैं उ
ससेभीअधिकलेतेहैंऔरन्यून देतेहैं फिरमहाजनऔरसाहूकार
बनेरहतेहैं परन्तु वेबड़ेठगहैं जैसेकिव्यासअर्थात्एकादशोभाग

व्रतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय वाले,वैरागी,शैव,वाममार्गी,आदिकपण्डितमहात्मा औरसिद्ध येतोऊपरसेबनेरहतेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेशानना वैश्यऔरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेराजाउपदेशकरदे ऐसा दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावे तभीराजा औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची सदाहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहचोजन- योहै अर्थात्पुरानीनहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो- तेहैं तथा देवालय,देवमन्दिर,देवागार,देवायतन इत्यादिकनाम यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकोपूजाहोय उसीकेएनाम हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र- काशकहै औरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैं इ- ससेइनकानामदेवहैसोईशास्त्रमेंलिखाहै ॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्रतल्लि- ङ्गोमन्त्रः । यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहां२ देवताशब्दआवैवहां२मन्त्रहीकोलेना परन्तु कर्मकांडमेंउपासना और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीलेपुरोहित मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम- न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै,इससे अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस मन्त्रमेंहोगा उससे जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवे उसको लेना जैसाकि अग्निमीलेपुरोहितमित्यादिक यहीबातव्यासजीकेशिष्य जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध- र्माणिप्रथमान्यासन् ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ- नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र- ह्मादिकदेवनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयजमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहैं किब्रह्मादिकोंके
यज्ञमेंजिनकीपूजाकीजाय वामागलेवेंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदे
हधारीनहींहै औरकोईकहेकिउन्हींसेअन्यदेवहैं तोउनसेपूछाजा-
ताहै किवेजबयज्ञकरेंगेतबउनसेआगेभीतोसरेदेवमानेजांयगेती-
सरेजबयज्ञकरैंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेजांयगे ऐसेहीअनव-
स्थाउनकेमतमेंआवेगी इस्सेपरमेश्वरऔरमन्त्रोंहीकोदेवमानना
चाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर
सत्यवचन,गुणवालोंकानिषेध जैमिनीजीनेकिया तोपाषाणादिक
मूर्त्तियोंकीपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्ति
योंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ
सन्देहनहीं औरजोकहेकिवेहैतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे
देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका
भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखका-
अभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअ-
भावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही
है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडालै तोहाथजलजाय-
गा इस्से ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणा-
दिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि
अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इस्से क्याआयाकि जोजै-
सापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना
चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और
उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव
क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं
पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफलक्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं
कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंकाफल
है यहबाततोआपलोगोंकोसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहो-
ताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकि पाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

लताहै यहबातआपलोगोंकीझूठीहोगई पूर्वपक्ष जबतकवेदमन्त्रों
सेप्राणप्रतिष्ठानहींकरते तबतकतोवेपाषाणादिकहीहैं औरप्राण
प्रतिष्ठाकेकरनेसे देवहोजातेहैं उत्तर यहबातभी आपलोगोंकी
मिथ्याहै क्योंकिवेद वाऋषिमुनियोंकेकिये शास्त्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा
कापाषाणादिक मूर्त्तियोंमें एकअक्षरभीनहीं तोमन्त्र कैसेहोंगे
जिस २ मन्त्रसेप्राणप्रतिष्ठाकर्तेकरातेहो उस२मन्त्रकाआपलोग
अर्थभीनहींजानते जैसाकि प्राणदा, अपानदा, उद्व्यानदावर्च्चोदा इत्यादि प्राणदाअग्ने ; इसे
लेकेओम् प्रतिष्ठयहांतकएकमन्त्रहै सहस्रशीर्षापुरुषः यत्नोदेवी-
रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिकअर्थ मन्त्रों
काहै इनपाषाणादिक मूर्त्तियोंमेंप्राण प्रतिष्ठाकरना इसकालेश
मात्रभीसम्बन्धनहीं औरप्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तु स्वा-
हा। यहतोमिथ्यासंस्कृतकिसीनेरचलियाहै औरवेदोंकेमन्त्रमेंभी
आपलोगोंकेकहनेकीरीतिसेदोषआतेहैं किवेदकेमन्त्रोंसेतोप्राण
प्रतिष्ठाकीजाय फिरप्राणोंका मूर्त्ति में लेशभी नहीं देखपड़ताहै
इससेयहबातभीनकरनीचाहिएक्योंकिजोप्राणमूर्त्तिमेंआतेतोमूर्ति
चेतनहोबनजातीसोतोजैसीपूर्वजडथीवैसीहीजडसदारहतीहैपा-
षाणादिकमूर्त्तियोंमेंप्राणकेजानेऔरआनेकाछिद्रभीनहींपरंतुमनु-
ष्यजोमरजाताहैउसकेशरीरमेंसबछिद्रमार्गप्राणकेजानेऔरआने
केयथावतहैं उसमेंप्राणप्रतिष्ठाकरकेक्योंनहींजिलालेतेहैं किकोई
मनुष्यकभी मरनेहीनपावैऐसाकिसीकाभीसामर्थ्य नहीं इससे यह
बातअत्यन्तमिथ्याहै पूजानामसत्कारहै देवपूजाहोमहीसे होती
है अन्यप्रकारसेनहीं क्योंकिमनुआदिकऋषिलोगोंकेग्रन्थोंमेंऔर
वेदमेंयहीबातलिखीहै॥स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि
इसपूर्वोक्तश्लोकसेहोमहीसेदेवपूजायथावत्करनीचाहिएऐसासि-
द्धभयाकिहोमजोहैसोईदेवपूजाहै औरजिनस्थानोंमेंहोमहोवैउ-
न्हींकादेवालयादिकनामजानना॥ यद्वित्तंयज्ञशीलानांदेवस्वंत-
द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जोयज्ञकी

कीनित्यकरताहै उसकाजोधन सोदेवशब्दवाच्यहै जोकोई यज्ञके
वास्ते अन्यपुरुषोंसेधनलेके भोजनछादनादिकउस्से करै औरयज्ञ
कोनकरै उसकानामदेवलहै ॥ कुत्सितोदेवलोदेवलकः कुत्सितइ-
त्यनेनकन्प्रत्ययः । जोयज्ञकेधनकीचोरीकरके भोजन,छादनादिक
करै उस्से परस्त्रीगमनवावेश्यागमनभीकरै उसकोदेवलककहतेहैं
यहदेवलसेभीदुष्टहै इनदोनोंकाश्राद्धकर्मोंमें देवपितृकर्मादिक
यज्ञोंमेंनिषेधहै किइनकोनिमन्त्रणवाअधिकारकभी नदेना ऐसे-
स्त्रीनामस्मरणएकादश्योइत्यादिककालकाश्यादिकदेश, इनकाजो
महात्म्यजिसकिसीनेलिखाहै वहसबमिथ्याहीहै क्योंकिवेदादिक
सत्यशास्त्रोंमेंइनकाकुछभीलेखनहीं देखनेमेंआता औरयुक्तिसेभी
यहप्रतिमापूजनादिकमिथ्याहीहै ऐसेव्यवहारोंमेंराजाऔरप्रजा
कोभ्रमहोसक्ताहै इसनिमित्त लिखागयाकि राजाऔरप्रजाइन
भ्रमोंमेंप्रवर्त्तनहोवैं नकिसीकोहोनेदें जितनीयुद्धकीविद्या उसको
यथावत्जानै औरप्रजाकोजनावैं नानाप्रकारकीपदार्थविद्या तथा
शिल्पविद्याकाभीराजा औरप्रजासदाअत्यन्तप्रकाशरक्खैं युद्धवि-
द्या केदोभेदहैं एकशस्त्रविद्या,दूसरीअस्त्रविद्या शस्त्रविद्यायहकहा-
तीहै कितलवारबंदूकतोपलकड़ीपाषाण औरमल्लविद्याकिकोंका
यथावत्जानना औरचलानादूसरेकेशस्त्रोंकानिवारणकरना औ-
रअपनीरक्षाकरनी तथाशत्रुकोमारना औरअस्त्रविद्यायहकहा-
तीहै किजोपदार्थोंकेपरस्परमेलन औरगुणोंसेहोतीहै जैसाकि
अग्नेयास्त्र ऐसेपदार्थोंकारचनकरैं किवायुकेस्पर्शसे उस्से अग्नि
उत्पन्नहोवै फिरउसकोफेंकनेसेजोपदार्थउसकेसमीपहोय उसको
वहभस्महीकरदेताहै जैसेदीपसलाकाकोघसनेसे अग्निउत्पन्नहो-
ताहै वैसेहीसबअस्त्रविद्याजाननी इसप्रकारकीआर्यावर्तमें पूर्वब-
हुतपदार्थरचनेकीउन्नतिथी जैसेकिविशल्याएकऔषधिराजालो-
गरचलेतेथे कैसाहीघावशस्त्रसेहोजाय परन्तुउसकोघसकेलगा-
या उसीवक्तवहघावपूरजाय औरउसमेंपीड़ाभीकुछनहींहोतीथी

तथाविमानअर्थातआकाशयान बहुतप्रकारोंके औरजहाजसमुद्र पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप,द्वीपान्तरमेंजातेऔरआतेथे यहमहाभारततथावाल्मीकीरामायणमेंलिखाहै आर्यावर्त्तकेराजाओंकीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकोंकेराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तरकेराजाआयेथे यहसभाऔरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखाहै जैनऔरमुसल्मानोंनेबहुतसे इतिहासनष्टकरदिए इससेबहुतबातयथावत् मिलतीभीनहीं बड़े बलवान्तथाविद्यावान्इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें भूगोलमेंविद्यावाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबस्त्रियांभीआर्यावर्त्तमेंविद्यावानहोतींथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकीजैसीमूर्खताऔरदशाहै ऐसीकोई देशकीनहोगी फिरभीवेदादिक सत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ैं औरपढ़ावैं धर्माचरण औरश्रेष्ठआचारराजाऔरप्रजाकीपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरैं तभीमनुष्योंकोआनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४,४०; ३६,३०,२५; वर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यकानिग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केयहीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमऔरनवम अध्यायोंमेंराजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहैमहाभारतऔरवेदादिकोंमेंभीबहुतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्टः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्यामः॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मै-देवायहविषाविधेम॥ १॥ अग्रे नामजबकुछजगत् उत्पन्नहीनहीं भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभा-वहिरण्यगर्भ अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसेलेकेस्वर्गपर्यन्त जगत् कोरचके धारणकरताभया तस्मै एकस्मै परमेश्वरायदेवायहवि-नामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग नित्यकरैं॥ १॥ पूर्वपक्षईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोसक्ती औरईश्वरकेमाननेका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहर्दीचूनाऔर जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहीपृथिव्यादिकस्थू-लभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कु-लालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न जोईश्वर उसके माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगत्होताहै और जगत्नित्यभीहै कभीइसकानाशनहीहोता फिरजगत्रूपकार्यको देखकेकारणजोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया औ-रप्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहींहै इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंन-हींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहीतोउपमानकैसेबनसकेगा किइस-केतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाण नहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाब-नेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेच-लेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र सींगवालादे-खा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंप-रावत्कहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रका-रसेनहींहोसक्ती उत्तरपक्ष ईश्वरकीसिद्धियथावत्होतीहै क्योंकि जोस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्में जितने पदार्थ हैं उनके विलक्षण २ संयोग आकृति तथा गुण
और स्वभाव देखपड़ते हैं जैसे कि मनुष्य और बानर आम का और ब-
बूर का वृक्ष इत्यादिकों में विलक्षण २ गुण और आकृति देखपड़ती है
इन नियमों का कर्त्ता कोई न होगा तो ये नियम कभी न बनेंगे क्योंकि
जड़ पदार्थों में तो मिलने वा जुदा होने की यथावत् समर्थता नहीं कि उ-
नमें ज्ञानगुण ही नहीं जो ज्ञानगुणवाला होता है वही यथावत् निय-
म कर सक्ता है अन्य नहीं जो जीव है सो ज्ञानवाला तो है परन्तु जीव-
का उतना सामर्थ्य ही नहीं इससे कोई पृथिव्यादि व भूत और जीव से भि-
न्न पदार्थ अवश्य है जो सब जगत् का करता और नियमों का नियन्ता
ईश्वर अवश्य है। किन्तु स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति जो मानता है उस-
के मत में ए दोष आवेंगे यह पृथिवी स्वभाव से जो होती तो इसका करता
और नियन्ता न होता इस पृथिवी से भिन्न दशवें कोश अन्तरिक्ष में
दूसरी आप से आप पृथ्वी बन जाती सो आज तक नहीं बनी इससे जाना
जाता है कि जीव और सब भूतों से सर्वशक्तिमान् सब जगत् का कर्त्ता
और नियन्ता परमेश्वर उसी को ईश्वर कहते हैं दूसरा दोष कि जि-
तने परमाणु पृथिव्यादिक भूतों के हैं वे सब मिलगए अथवा इनसे बि-
ना मिले भी हैं जो कहे कि सब मिलगए तो त्रसरेणु आदिक हमको प्रत्य-
क्ष देखपड़ते हैं इससे वह बात मिथ्या होगई और जो कहे कि कुछ मिले
कुछ नहीं मिले भी हैं तो उनसे पूछना चाहिए कि सब क्यों नहीं मिले
अथवा पृथक् २ क्यों न रहे तथा एक प्रकार के रूपवाले सब पदार्थ
क्यों नहीं हुए भिन्न २ संयोग और रूप के होने से सब जगत् का कर्त्ता
और नियन्ता अवश्य सिद्ध होता है तीसरा दोष उसके मत में यह है कि
कोई कर्म कर्त्ता के बिना होता है वा नहीं जो वह कहे कि बनादिकों में
घासादिक पदार्थ आपही से होते हैं उसका कर्त्ता और निमित्त कोई
नहीं देखपड़ता उससे पूछना चाहिए कि पृथिव्यादिक सब भूत निमित्त
हैं और सब बीज बिना कर्त्ता और नियन्ता के कभी नहीं बनसक्ते क्यों
कि आम के बीज में जैसा परमाणुओं का मेलन कर्त्ता ने किया है वैसे ही

अङ्कुर पत्र पुष्प फल काष्ठ और रसादि देखने में आते हैं उनसे भिन्न जो कटली उसके अवयव वा स्वाद आम से कोई नहीं मिलते क्योंकि सब पदार्थों में परमाणु तो वे ही हैं फिर रचनेवाले के बिना भिन्न २ पदार्थ कैसे होंगे इससे जाना जाता है कि सब जगत का रचनेवाला कोई पदार्थ है जो चूना, हल्दी और जल के मिलाने से रोरी होती है उसका मेलन करनेवाला जब मिलाता है तब वे मिलके रोरी होती है वे आपसे आप तो नहीं मिलते इससे वह दृष्टान्त मिथ्या हो गया कुम्हार का जो दृष्टान्त दिया सो कोंहार स्थानी आपने जीव को रक्खा क्योंकि ईश्वर को तो आप मानते हो नहीं सो जीव सर्वशक्तिमान् नहीं क्योंकि परमाणु आदिकों का संयोग वा वियोग जीव कभी नहीं कर सक्ता जो जीव कर सक्ता तो चाहता तो सूर्य, चन्द्रादिक लोकों को रच लेता सो रच सक्ता नहीं इससे जाना जाता है कि सब जगत् का कर्त्ता और नियन्ता कोई अवश्य है जब जगत् रचा गया है तो नित्य कभी नहीं हो सक्ता क्योंकि जब तक नहीं रचा था तब तक नहीं था और जो रचने से भया है सो कभी मिट भी जायगा विना कर्त्ता वा कारक के कर्म वा कार्य नहीं होता तो यह नाना प्रकार की रचना और इतना बड़ा कार्य जगत् कभी नहीं हो सक्ता इससे तीन प्रकार जो अनुमान है सो ईश्वर में यथावत् घटता है कि कारण के विना कार्य कभी नहीं हो सक्ता कार्य से कारण अवश्य जाना जाता है और कर्त्ता के विना कर्म नहीं होता इससे पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट तीन प्रकार का अनुमान ईश्वर को यथावत् सिद्ध करता है ईश्वर के सर्वशक्तिमत्त्व दयालुता और न्यायकारित्वादिक गुण जगत् में प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं, स्वाभाविक गुण और गुणी का नित्य संबंध होता है जैसा कि रूप और अग्नि का सो जैसे अग्नि का रूप देख पड़ता है और अग्नि नेत्र से नहीं देख पड़ता परन्तु हम लोग ज्ञान से अग्नि को प्रत्यक्ष देखते हैं क्योंकि अग्नि को बुद्धि से प्रत्यक्ष हम लोग न देखते तो अग्नि को ले आने और अग्नि से जितने व्यवहार होते हैं उनमें प्रवृत्त कभी न होते इससे जैसा अग्नि हम को प्रत्यक्ष है गुण और गुणी के

ज्ञानसे वैसेज्ञानसेपरमेश्वरभीप्रत्यक्षहै जोधर्मात्माऔरयोगीपु-
रुषहोतेहैं उनकोपरमाणु जीव औरपरमेश्वरभी यथावत्प्रत्यक्ष
होतेहैं जोकोईइसमेंसंदेहकरैसोकरकेदेखले उपमानप्रमाणतो
परमेश्वरमेंनहींहोसक्ता क्योंकिपरमेश्वरकेसदृशकोईपदार्थनही
जिसकीउपमापरमेश्वरमेंहोसकैपरन्तुपरमेश्वरकी उपमापरमेश्व
रहीमेंहोसक्तीहै ऐसाजगतमें व्यवहार देखनेमेंआताहै किआप
केतुल्यआपहीहोवै वैसेहमलोगभीकहसक्ते हैं किपरमेश्वरकेतुल्य
परमेश्वरहीहै औरकोईनहीं जबतीनप्रमाणोंसेईश्वरकीसिद्धिहो
गई तोशब्द प्रमाणभीअवश्यहोगा सोशब्दप्रमाणइसप्रकारकाले-
ना ॥ दिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषःसबाह्याभ्यन्तरोह्यजः । अप्रमाणोह्य-
मनाःशुभ्रोऽक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥ दिव्यनामसबजगत्काप्रकाश-
क अमूर्त्त निराकारऔरसदाअशरीर पुरुषनामसबजगहमें पूर्ण
सोईबाहरऔरभीतरएकरस अजकभीजिसकाजन्मनहीहोता अ-
प्राणनामकिसीप्रकारकीचेष्टावालीलानहीं करता अमनानाम रा-
गद्वेषसंकल्पविकल्पादिकदोषरहित अक्षरजोजीवउससे परेजोप्र-
कृति उससे भीपरमेश्वरश्रेष्ठऔरपरहै ॥ २ ॥ नतत्रसूर्योभातिनच-
न्द्रतारकंनेमाविद्युतोभान्तिकुतोऽयमग्निः तमेवभान्तमनुभाति-
सर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उसपरमेश्वरमेंसूर्य
चन्द्र, तारे, बिजली, औरअग्निएककुछभीप्रकाशनहींकरसक्ते कि-
न्तु सूर्यादिकोंकोपरमेश्वरहीप्रकाशतेहैं सबजितनाजगत्हैउसके
प्रकाशसे प्रकाशितहोताहै परमेश्वरकाप्रकाशककोईनहीं ॥ ३ ॥
अपाणिपादोजवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुःशृणोत्यकर्णः । सवेत्तिवि-
श्वंनचतस्यास्तिवेत्तातमाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र० ।
परमेश्वरनिराकारहै परन्तु उसमें शक्तियांसबहैं हाथ परमेश्वर
कोनहींहै परन्तु हाथकी शक्तिऐसीहै किसबचराचरकोपकड़के
थांभरक्खाहै तथापादनहींहै परन्तु सबसेवेगवालाहै नेत्रनहीहै
परन्तु चराचरकोयथावत्सबकालमेंदेखरहाहै काननहीहै पर-

न्तु चराचरकोजानसुनताहै मन,बुद्धि,चित्तऔरअहङ्कारतोनहीं
हैं परन्तुमननिश्चयऔरस्मरणअपनेस्वरूपकाआपहीजाननेवा-
लाहै औरवहसबकोजानताहै परन्तुउसकोकोई नहींजानसक्ता
किइतनाबड़ावाइसप्रकारका वाइतनासामर्थ्यउसमेंहै ऐसाकोई
नहीजानसक्ताउसपरमेश्वरकोज्ञानीऔरशास्त्रसर्वोत्कृष्टपूर्णऔर
सनातनकहतेहैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्य-
मगन्धवच्चयत् । अनाद्यनन्तंमहतःपरंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्र-
मुच्यते ॥ ५ ॥ मन्त्र० वहपरमेश्वरअशब्दअर्थातकहने औरसुनने
मात्रसेनहींजानाजाता बिनाउसके आज्ञापालन विज्ञान प्रीति
औरयोगाभ्यासकेस्पर्श रूपरसऔरगन्धपरमेश्वरमेंनही इससे प-
रमेश्वरकाज्ञानसहस्रोंपुरुषोंमेंकिसीकोहोताहै सबकोनहींवह
कैसाह अनादिऔरअन्तजिसकाआदिकारण अथवाअन्तकोको
ईनहीदेखसक्ता क्योंकिउसकामरण वाअन्तनहींहैं तोकैसेकोई
देखसकै परमेश्वरबुद्धिसेभीसूक्ष्मऔरपरेहै जोकोईपरमेश्वरको
जानताहै सोजन्ममरणादिकसबदुःखोंसेछूटके परमेश्वरकोप्राप्त
होताहै फिरकभीउसकोदुःखलेशमात्रभीनहीहोता ॥ ५ ॥ समा-
निर्धूत्तमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् । नशक्यतेव-
र्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्तःकरणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ म० जिसपुरुष
काधर्माचरणविद्या औरसमाधियोगसेचित्तशुद्धहोजाताहै उस-
काचित्तपरमेश्वरकेज्ञानमें औरप्राप्तिकेयोग्यहोताहै जबसमाधि
योगमेंचित्त औरपरमेश्वरका योगहोताहै उसवक्तऐसा आनन्द
उसजीवकोहोताहै किकहनेमेंभीनहींआता क्योंकिवहजीवअपने
अन्तःकरण अर्थातबुद्धिहीसेग्रहणकरताहै वहांतीसराकोईनहीं
है किजिससे कहैंकिफिरजाग्रतावस्थाकहनेमेंभीनहींआता क्योंकि
वहपरमेश्वरउसकाआनन्द औरउसकोजाननेवालाजीवतीनोंसू-
क्ष्मतपदार्थहैं इससे वहसबआनन्दकहनेमेंनहींआता ॥ ६ ॥ आ-
श्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा । आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्टः

॥ ७ ॥ भन्त्र० परमेश्वरकावक्ताऔरप्राप्तिहोनेवालादोनोंआश्चर्य पुरुषहैं क्योंकिआश्चर्यजोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभी आश्चर्य होताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशयुक्तआहोय औरअपने भीसबप्रकारसेविद्यावान्शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसका है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७ ॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्तितपांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्ते पदंसंग्रहेणब्रवीम्योमितत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास पुनःपुनः उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते हैं औरउसकेवास्तेहीहै जिसकोप्राप्तिकीइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्मचर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानें उसकी प्राप्तिकेबिना अनन्तसुखऔरसबदुःखकी निवृत्तिनहींहोती यही बातयमराजनचिकेतासेकहतेहैं किहेनचिकेताजो ओङ्कारकाअर्थ हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा । सर्वाध्यक्षःसर्वभूताधिवासःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़ है अर्थात्गुप्तकिसबजगतमेंप्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजानते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही है अध्यक्षनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबमेंश्रेष्ठ सबकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेबिना जानानहींरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकैवल्यअर्थात् उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म,मरण, हर्ष, शोक,क्षुधा,तृषा; तमोरजः औरसत्त्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिमत्वदयालुन्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिक गुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चादृश्यते । परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व-

आकाशउसमेंचलनेऔररहनेवाला जोप्रमाणसोचेष्टादिकसबक-
र्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्वि-
जानतः। तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४॥ मन्त्र जिसप-
रमेश्वरकेजाननेसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकि-
सीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह
एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरध्यानवालाजोपुरुषउनकोकि-
सीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोता
हीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्ता-
त्। तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेयनाय १५॥ मन्त्र
जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्व-
रूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम
उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द
उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीको जानके अतिमृत्यु
जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं
अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईइससे भिन्नमोक्षकामार्ग
नहीं॥ १५ ॥ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापवि-
द्धम्। कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वती-
भ्यःसमाभ्यः ॥ १६ ॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअ-
द्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्तास्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत
और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित
जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त
जिसकाविचारऔरज्ञान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजि-
सकीकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहीसदासनातनहोवै जिन्नेवे-
दरूपसर्वज्ञ विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजा
ओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमे-
कोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेसंहि-
ताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे शब्दप्रमाणलिखदियासोजानलेना पू-

र्वपक्ष परमेश्वररागीहैवाविरक्तवाउदासीनजोरागीहोगातोदुःखी वाअसमर्थहोगा सदाजोविरक्तहोगा तोकुछभीनकरेगा औरसंसारकाधारणभीनहोगा औरजो उदासीनहोगातोअपनेस्वरूपस्थ साक्षीवत्रहैगा अर्थातवह्वजोईश्वरहोगा तोकभी रचसकेगा नहीं मुक्तहोगातोजगत्कोहीरचैगानहीं इस्से ईश्वरकोसिद्धिनहींहोती उत्तर परमेश्वररागीनहीं क्योंकिअपनेसेउत्तमकोईपदार्थनहीहै किजिसमेंरागकरै अपनेस्वरूपमेंअपनारागकभीनहीं बनता सर्वव्यापीकेहोनेसेअप्राप्तपदार्थईश्वरकोकोईनहीं तथासर्वशक्तिमान्केहोनेसेभीरागईश्वरमेंनहींबनसक्ता विरक्तभोईश्वर नहीं क्योंकिपहिलेजोबद्धहोताहै सोईबन्धनकेछूटनेसेविरक्तकहाताहै सोईश्वरकोबन्धनतीनोंकालमेंभीनहींभया फिरउसकोविरक्त कैसेकहसकें उदासीनभीवहहोताहै किपहिले बन्धनमेंहोय पीछेज्ञानकेहोनेसेउदासीनहोजाय ऐसाईश्वरनहीं ईश्वरकोअचिन्त्यशक्तिहै किसबमेंरहै औरकिसीकाभीलेशमात्रसंगदोष न लगे इस्से ऐसीशंकाजीवकेबीचमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनहीं पूर्वपक्ष जितनेपदार्थहैं वेसबसन्देहयुक्तहोहैं निश्चययथावत्एककाभीनहीं होता उत्तर आपनेयह बातकही सोनिश्चितहै वानहीं जोकहो किनिश्चितहै तोसबपदार्थसन्देहयुक्तनहींभये आपकोबातनिश्चित होनेसे औरजोआपकहैं कियहमेरीबातभीनिश्चितनहीं तोआपकीबातका प्रमाणहीनहींहुआ क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यांपदार्थसिद्धिः। लक्षणऔरप्रमाणोंकेविना किसीपदार्थकीनिश्चितसिद्धि नहींहोती आपनेसबपदार्थोंमेंसन्देहसिद्धकहासोकिसप्रमाणसेउसकीसिद्धिहोतीहै किसोप्रमाणसेसन्देहकोआपसिद्धकियाचाहोगे तोउसप्रमाणमेंभी आपकानिश्चय नहींहोगा क्योंकि आपसब पदार्थोंकोसन्देहयुक्तकहचुकेहैं इस्सेआपकासन्देहहीसन्देहनष्ट होगया फिरआपकिसीव्यवहारमेंप्रवृत्त नहोसकोगे जैसेकिगमन भोजन, छादन, देखनासुननाइत्यादिकभी सन्देहयुक्तहोनेसेप्रष्ट-

त्तिभीइनमेंनहोनीचाहिए प्रवृत्तितोआपकर्तेहीहैं इस्से आपनेजो कहाकि सबव्यवहारऔरसबपदार्थ सन्देहयुक्तहीहैं यहबातआप कीमिथ्याहोगई इस्सेक्याआयाकिलक्षणऔरप्रमाणोंसेजोनिश्चित पदार्थहोताहै उसकोनिश्चितहीमाननाचाहिए इसमेंसन्देहकर-नाव्यर्थहीहै सोप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसेईश्वरकोयथावत्सिद्धिहोतीहीहै उसकोमाननाहीचाहिए प्रश्न पृथिवी,जल,अग्नि,वायु, इन चारोंकेमिलनेसे चेतनभीउसमेंहोताहै जबवेपृथक्२होजातेहैं तबसबकलाविगड़जातीहैं फिरउसमेंकुछनहींरहता इस्से जगत् कारचनेवालाकोईनहीं आपसेआपहीजगतऔरजीवहोताहै उ-त्तर आपभीइनचारोंकोमिलाकेजीवऔरजीवकेजितनेगुणउनको देखलादेवैं सोकभीनहींदेखपड़ेगें क्योंकिपहिलेहीसे सबस्थूल भूतोंमेंसबसूक्ष्मभूतमिलरहेहैं फिरउनमेंज्ञानादिकगुणक्योंनहीं देखपड़ते इस्से जीवपदार्थ इनभूतोंसेभिन्नहीहै जिसकेयेगुणहैं इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम् । यहगौतममुनि कासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किइच्छाकिसीप्रकारकाचाहना जिसकेगुणोंकोजानताहै उसकीप्राप्तिकीचाहनाकरताहै जिसमें दोषोंकोजानताहै उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहींकरता प्रयत्न नानाप्रकारकीशिल्पविद्यासे पदार्थोंकारचना शरीरतथाभार काउठानाइसकानामप्रयत्नहै सुखनामअनुकूलकाचाहना और जानना दुःखप्रतिकूलकाजानना औरछोड़नेकीइच्छाकरना ज्ञा-नजैसाजोपदार्थहै उसकातत्त्वपर्यन्त यथावत्विवेककरना इसका नामजीवहै येगुणपृथिव्यादिकजड़ोंकेनहीं किन्तु जीवहीकेहैं लिं-गशरीरबुद्धि जिस्सेजीवनिश्चयकरताहै बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यन-र्थान्तरम् । यहगौतमजीकासूत्रहै बुद्धिउपलब्धिऔरज्ञानयेतीनों नाम एकहीपदार्थ केहैं मनजिस्से एकपदार्थकोविचारकेदूसरेका विचारकरताहै ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिंगम् । यहगौत० जिस्सेएकपदार्थहीकोएककालमेंग्रहणकरताहै एककोग्रहणकरके

दूसरेकादूसरेकालमेंग्रहणकरताहै एककालमेंदोनोंकानहीं इ-
सकानाममनचित्त जिस्से किजीवपूर्वापरकास्मरणकरताहै जोकि
पहिलेदेखाऔरसुनाथा इसकानामचित्तहै अहङ्कारजिस्से अ-
भिमानजीवकरताहै येचारमिलकेअन्तःकरणकहाताहै इस्से जी-
वभीतरमनोराज्यकरताहै येचारोंएकहीहैं परन्तु व्यापारभेदसे
चारभिन्न२नाकहैं वाह्यकरणजिस्से कि बाहरजीवव्यापारकरता
श्रोत्रजिस्से शब्दसुनाताहै त्वचाजिस्से स्पर्शजानताहै नेत्रजिस्सेरूप
कोजानताहै जिह्वाजिस्से रसकोजानताहै नासिकाजिस्सेगन्धको
जानताहै येपांचज्ञानइन्द्रियांहैं इनसेजीववाह्यपदार्थोंकोजान-
ताहै वाक्जिस्से शब्दबोलताहै पादजिस्से गमनकरताहै हस्तजि-
स्से ग्रहणकरताहै वायुजिस्से मलकात्यागकरताहै लिंगजिस्से मूत्र
औरविषयभोगकरताहै येपांचकर्मेन्द्रियहैं इनसेजीववाह्यकर्मक-
रताहै प्राणजिस्से ऊर्द्ध्वचेष्टाकरताहै अपानजिस्से अधोचेष्टाकर-
ताहै व्यानजिस्से सबसन्धियोंमेंचेष्टाकरताहै उदानजिस्सेजलऔ-
रअन्नकोकण्ठसेभीतरआकर्षणकरलेताहै समानजिस्से नाभिद्वा-
रसबरसोंको सबशरीरमेंप्राप्तकरदेताहै येपांचमुख्यप्राणकहाते
हैं नागजिस्से डकारलेताहै कूर्मजिस्से नेत्रकोखोलताऔरमून्दता
है कृकलजिस्से छींकताहै देवदत्तजिस्से जम्भाईलेताहै धनञ्जय
जिस्से शरीरकोपुष्टिकरताहै औरमरेपीछे शरीरकोनहींछोड़ता
जोकिमुरदेकोफुलाताहै येपांचउपप्राणहैं येदशएकहीहैं परन्तु
क्रियाभेदसेदशनामभयेहैं ये२४तत्त्वमिलकेलिंगशरीरकहाताहै
कोईउपप्राणकोनहींमानता उसकेमतमें १९ होतेहैं औरकोई
पांचसूक्ष्मभूतजोकिपरमाणुरूपहैं औरपूर्वोक्तचारभेदअन्तःकर-
णकेइननवतत्त्वोंको लिंगशरीरकहाताहै इसलिंगशरीरमेंजोअ-
धिष्ठाताकर्ता औरभोक्ताउसकोजीवकहतेहैं जोकिएककालमेंसब
बुध्यादिकोंकेकियेकर्मोंकाअनुभवकरताहै चेतनस्वरूपहैउसका
नामजीवहै उसकोअधिकव्याख्यामुक्तिके प्रकर्णमेंकिईजायगी सो

जीवभिन्नपदार्थहोते चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण औरजीवकभी नहींउत्पन्नहोता इससे यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई प्रश्न ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउससे अन्यथा जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञा-ननष्टहोजायगा इससे जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वै-साजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिवृत्तक्यों नहींकरदेता जोनिवृत्त नहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै उत्तर ईश्वरहै अत्यन्तदयालु सबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके सबकोस्वतन्त्र औररखदियेक्योंकिपरतन्त्रकेरखनेसेकिसीकोकभीसु-खनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंर-हताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदुःखनहींमालूमहोता उसकोजो कोईएकघड़ीभरभीपराधीनबैठायरक्खे तोबड़ाउसकोदुःखहोता है इससेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इससे सब स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकीहै किजोजैसाकर्म करेगा वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकीसत्यहीहै इससे क्याआयाकि कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै औरपापों केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवालेऔरभोगनेवाले हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानसेनिश्चय पहिलेही कियाहै-औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं प्रश्न जीवकानिजस्वरू-पक्या॥ उत्तर विशिष्टस्यजीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम् । यहकपिल मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेब-नताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें यथावत्देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

पदार्थभी रहैं तो वहपरमाणुहीनहीं क्योंकि वहुतपदार्थोंकेसंयोग सेविनासंभवापोलउसमेंनहीं होसक्ता सबवियोगकीअन्तावस्था जोहै उसकोपरमाणुकहतेहैं फिरजिसकाविभागहोसके उत्तर ईश्वरव्यापकहै क्योंकिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै जैसेजिसरणुकेआगेसंयोगवावियोगवुद्धिसेहमलोगजानतेऔरकरतेहैं वैसेहीपरमाणुकावियोगभीवुद्धिसेकरसक्तेहैं औरईश्वरकीविभुताभीज्ञानसेजानसक्तेहैं क्योंकिपरमेश्वरविभुनहोतेतोपरमाणुकारचनसंयोगवियोग औरधारणभीनकरसक्ते फिरपरमाणुकाधारणभी कैसेहोता जैसेपुष्पमेंगन्ध दूधमेंघृतघृतमेंस्वाद औरगन्धऔरउनसबपदार्थोंमें आकाशनामपोलयेसबव्यापकहैं उनरपदार्थोंमें वैसेपरमेश्वरभीपरमाणुऔरप्रकृत्यादिकतत्त्वोंमेंव्यापकहोहै प्रश्न अच्छा ईश्वरसिद्ध औरव्यापकभीहै परन्तुउसकी उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकरनीआवश्यकनहीं क्योंकिकोईव्यवहारईश्वरके सम्बन्धकाप्रत्यक्षनहींदेखपड़ता इससे ईश्वरअपनी ईश्वरतामेंरहै औरहमजीवलोगअपनीजीवतामें रहैं उत्तर ईश्वरकीउपासना प्रार्थनाऔरस्तुति अवश्यसबजीवोंकोकरनीचाहिए जैसेकिकोई किसीकाउपकारकरै उसकाप्रत्युपकार उसको अवश्यकरनाचाहिए जोप्रत्युपकारनहीकरता सोअवश्यकृतघ्नहोताहै क्योंकिउसनेउसकेसाथभलाईकिया औरउसनेउसकेसाथबुराईकी जैसा उसनेसुखदियाथा फिरउसनेउसकोसुखकुछनहीं दियावाउसने विरोधहीकरलिया इससे वहपुरुष कृतघ्नहोताहै जैसेमातापिता औरकोईस्वामी जिसकापालनकरतेहैं वेकेवलअपने उपकारके हेतुकरतेहैं कियहभीमेरापालनसमर्थहोकेकरैगा जबवहपुत्रवाभृत्य यथावत्पालननहींकरता संसारमेंसज्जनलोगउसकोकृतघ्नकहते हैं जोमाताऔरपिताअथवास्वामीउनकापालनकरतेहैं जिनपदार्थोंसेवेघृतजलपृथिवी औरअन्नादिकसबपरमेश्वरकेरचेहैं जो जिसकोरचताहै वहीउसकामातापिता औरमुख्यस्वामीहोताहै

उनपदार्थों सेअपनाव पुत्रादिकोंकापालनवेकरतेहैं जैसेकिसीने
अपनेभृत्यसेकहाकितू इसकीसेवाकरवामेरे इस पदार्थकोलेकेउस
कोदेआगववहसेवा वापदार्थकोप्राप्तहोवै तबपदार्थदातास्वामीके
ऊपरवहप्रीतिकरैवाभृत्यके किन्तुपदार्थदातास्वामीहीसेप्रीतिकरै
गाभृत्यसेनहींकिउन्ह जिसकापदार्थहै वैउहीसेप्रीतिकरनाचाहिए
जैसेयुद्धमेंजयवापराजय राज्यकीप्राप्तिअथवाहानिराजाकोहोती
है भृत्योंकोनहीं वैसेहोपरमेश्वरकाजगत्है जगत्मेंजितनेपदार्थ
हैं उनकास्वामीपरमेश्वरहीहै इस्से परमेश्वरकीअत्यन्तप्रीतिसे
स्तुतिप्रार्थनाऔरउपासना अवश्यकरनीहोचाहिए अन्यकिसीकी
नहीं सेवातोमातापिताऔरविद्याकादेनेवाला श्रेष्ठऔरसुपात्र
कीभीकरनीचाहिए औरजोईश्वरकीउपासनानकरेगा वहकृतघ्न
होजायगा क्योंकिईश्वरनेहमलोगोंपरअनेकउपकारकिएहैं जि-
तनेजगत्मेंपदार्थरचेहैं वे सबजीवोंकेसुखकेहेतुरचेहैं औरजीवोंको
स्वतन्त्रकर्मकरनेमें रखदियेहैं इसमेंयहयजुर्वेदकाप्रमाणहै ॥ कु-
र्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतंसमाः। एवंत्वयिनान्यथेतोऽस्ति
नकर्मलिप्यतेनरे ॥ इसकायहअभिप्रायहै किजीवस्वतन्त्रआपही
आपकर्मकरताहै सोइससंसारमेंआपही आपकर्म कर्त्ताहुआ ॥
१०० सौवर्षतकजीनेकीइच्छाकरै परन्तु अधर्मकभीनकरै सदाध-
र्महीकरै जोजीवकहेगाकि मरनामुझकोअवश्यहै इस्से पापको
नकरनाचाहिए ऐसेजोजीव विचारसेकर्मकरेगा सोपापोंमेंलिप्त
कभीनहोगा ॥ यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदतियद्वाचावदतितत्क-
र्मणाकरोति। यत्कर्मणाकरोतितदभिसंपद्यते ॥ इसश्रुतिकाअर्थ
पहिलेकरदियाहै परन्तु इसका यहीअभिप्रायहै किजोजैसाकर्म
करै वहवैसाहीफलपावै ऐसीईश्वरकीआज्ञाहै ॥ यथर्तु लिङ्गा-
न्यृतवः स्वयमेवर्तु पर्यये। स्वानिस्वान्यभिपद्यन्ते तथाकर्माणिदे-
हिनः ॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसेवसन्ता-
दिकऋतुओंकेलिंगअर्थात्शीतोष्णादिकऋतुओंमेंप्राप्तहोतेहैं वैसे

सबजीवअपनेर किएकर्मोंको प्राप्तहोतेहैं १ ॥ जोपुरुषईश्वरकी उपासनानकरेगा वहमहाकृतघ्नहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अणिमादिकसिद्धि-वालाहोताहै उसीकोईश्वरमाननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगतकोउत्पतिस्थिति धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु सा-धनोंसे ईश्वरबहुत होजातेहैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससेकोईजीवसिद्धहोगा जोवे ऐसाकहैंकि जन्महीसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकहो साधनों सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध होवै तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहो गी सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रका-शस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैंऔर ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको क-रताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवक-भी पापनहींकरता सोजीवपुण्यऔरपापकरताहीहै इससे ईश्वर नहींकरता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा-उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरने-वालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इस्सेउसकोअधिकपापहो-ताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर करातातो जीवकाठकीपुतलीकीनाईंहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फिर भीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषणकासोईआजाता इस्से ईश्वरसबज-

गत्‌काकरनेवालाहोताहै परन्तु जीवोंकेकर्मोंकोकरनेवाकराने-
वालानहीं प्रश्न जोईश्वरजीवोंको न रचतातोजीव क्योंपापकरते
औरदुःखभीक्योंभोगते जैसेकिसीनेकूंआखोदा उसमेंकोईमनुष्य
भी गिरपड़ताहै जोवह कूंआ नखोदता तोकोईन गिरता वैसे
ईश्वरजीवोंकोनरचतातोजीवक्योंपापकरते उत्तर ऐसानकहना
चाहिए क्योंकिजोकोईराजाभृत्योंकोरखताहै औरपुत्रोंकोमनुष्य
उत्पादनकरताहै वागुरुशिष्योंकोशिक्षाकरताहै सोसबइसीवास्ते
करतेहैं किसबधर्मकीरक्षाऔरधर्माचरणकरैं पापकरनेकाअभि-
प्रायइनकानहीं औरजैसेबालकवाभृत्यकेहाथमें लकड़ीशिक्षावा
शस्त्रदेतेहैं सोअपनेशरीरकीऔरस्वामीकीआज्ञा तथाधर्मकीर-
क्षाकेवास्ते देतेहैं ऐसाअभिप्राय उनकानहींहै किउनसेआपअ-
पनेहीको मारकेमरजाय वैसेहीपरमेश्वरनेजीवरचेहैं सोकेवल
धर्माचरणऔरमुक्त्यादिकसुखकेवास्ते रचेहैं औरजोजीवपापक-
रताहैसोअपनीमूर्खताहीसेकरताहैवैसाहीदुःखभोगताहै हस्ता-
दिकजीवोंकेवास्ते इन्द्रियरचीहैं सोकेवलजीवोंकेव्यवहारसिद्धहों
वैं औरउनसेसबसुखकार्योंकोकरैं इनमेंसेकोईअपनेहाथसे अ-
पनीआंख निकाललेताहै वाअपनागलाकाटदेताहै सोकेवलअ-
पनीमूढ़तासेकरताहै मातापितादिकोंकावैसाअभिप्रायनहीं इ-
स्सेयहप्रश्नअच्छानहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्‌है वानहीं उत्तर सर्व-
शक्तिमान्‌है प्रश्न जोसर्वशक्तिमान्‌होयतोअपनानाशभीईश्वरकर
सक्ताहैवानहीं उत्तर ईश्वरअविनाशीपदार्थहै अत्यन्तसूक्ष्म जि-
सकाकिसीप्रकारनाशसेनाशनहींहोसक्ता क्योंकिजिसपदार्थका
रूपऔरस्पर्शहोवै उसीकाअग्नि, जल, वायु, अथवाशस्त्रोंसे नाश
होसक्ताहै अन्यथानहीं नाशशब्दकायहअर्थहै किअदर्शनअथवा
कारणमेंमिलजाना सोपरमेश्वरकोईइन्द्रियसेदृश्यनहीं किफिर
अदर्शनउसकोहोय औरइसकाकोईकारणभीनहीं जिसमेंईश्वर
मिलजाय इससेईश्वरकेनाशकीशंकाकरनीभी अनुचितहै औरई-

श्वर सर्वशक्तिमान् है परन्तु उसकी शक्ति न्याययुक्त ही है अन्याययुक्त नहीं इससे ईश्वर सदा न्याय ही करता है कि अविनाशी पदार्थ को अविनाशी जानता है और उसके नाश की इच्छा नहीं करता और जो विनाशवाला पदार्थ है उसका नाश न होवे ऐसी भी इच्छा नहीं करता क्योंकि ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा जानता और वैसा ही करता है प्रश्न जो ईश्वर दयालु है तो न्यायकारी नहीं और जो न्यायकारी है तो दयालु नहीं क्योंकि न्याय उसका नाम है कि धर्म करना और पक्षपात का छोड़ना इससे क्या आया कि दण्ड देने के योग्य को दण्ड देना और अदण्ड को कभी दण्ड न देना सो जो दयालु होगा सो तो कभी दण्ड न दे सकेगा क्योंकि दया नाम है करुणा और कृपा का सो सदा अन्य के सुख और उपकार में रहैगा इससे ईश्वर को दयालु मानो तो न्यायकारी मत मानो उत्तर न्यायकारी का तो बहुत स्थानों में अर्थ कर दिया है और दयालु का भी परन्तु न्याय और दयालु इन दोनों का थोड़ा सा भेद है दण्ड का जो देना और जीवों को स्वतन्त्रता का रखना और सब पदार्थ बुद्ध्यादिकों का देना सर्वज्ञ सर्व पदार्थों को जिसमें यथार्थ पदार्थ विद्या है उस वेदशास्त्र का प्रकाश करना यह बड़ी ईश्वर की दया है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा ही फल पावै अर्थात् यथावत् जो दण्ड का देना है सो उसके और उससे भिन्न सब जीवों के ऊपर ईश्वर दया करता है कि कोई न पाप करै और न दुःख पावै जैसे राजदण्ड है सो केवल सब मनुष्यों के ऊपर दया का प्रकाश ही है क्योंकि राजा का यह अभिप्राय होता है कि कोई अनर्थ में प्रवृत्त न होवै जो हम दण्ड न देंगे तो सब मनुष्य अधर्म में प्रवृत्त हो जायंगे इससे अपराधी पुरुष के ऊपर अत्यन्त कठिन दण्ड देता है कि सब मनुष्य भयमान होने से अधर्म में प्रवृत्त न होवैं वैसा ही ईश्वर की सब जीवों के ऊपर दया है कि एक को दुःखी देख के अन्य पुरुष पाप में प्रवृत्त न होवै और फिर जीव को यहां तक अधिकार दिया है कि अणिमादिक सिद्धि त्रिकालदर्शन और आप जीव ईश्वर संयोग से अनन्त सुख को प्राप्त होता है

किकभीजिसकोफिरदुःखनहोवै इससेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमानऔरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहै पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया और जैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसीहीकियाहै इससेईश्वरन्याय कारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत,वृक्षादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचना हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इससे हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वरविद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्वान्‌होतो तोयथायोग्यजगत्‌कोरचनाकोनजानता जगत्‌कोरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वरमेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं,जोसमर्थनहीं होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसीकेसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्य्यको करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरकेदर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तुसेभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़ेस्थूलपदार्थभी परमेश्वरकेसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरबड़ाहोताहै सो

ईश्वरका शरीर किसपदार्थसे बनसक्ता है किजिसमें ईश्वर निवास करै और जोकिसीमें निवासकरेगा तोअनन्त नरहैगा क्योंकि शरीरसेशरीरछोटाहीहोताहै जबशरीरकेसहायसे रावणकंसादिकोंकोमारै तथाउपदेश भीकरै विनाशरीरसे नकरसकैतो ईश्वरसर्व शक्तिमान्हीनहीं औरजोरावणादिकोंको माराचाहै और उपदेश कराचाहै तोसर्वव्यापी औरअन्तर्यामी होनेसेएक क्षणमें सबजगत्कामारडालै औरउपदेशभीकरदेवै तथाअपने भक्तोंको प्रसन्नभी करदेवै इससे ईश्वरकी ईश्वरतायहीहै किविना सहायसेसबकुछकरसक्ताहै औरजोसहायकेविनानकरसकैतोउसकासर्वशक्तित्वही नष्टहोजाय इससे ईश्वरकाकभी जन्मऔर किसीकासहायलेताहै ऐसीशंकाकरनीव्यर्थहै प्रश्न जैसेसबजगतकी उत्पत्तिहोतीहै ईश्वरसेवैसे ईश्वरकीभीउत्पत्तिकिसीसेहोतीहोगी उत्तर ईश्वरसेकौनबड़ापदार्थहै किजिससे ईश्वरउत्पन्नहोवै पहिलेहीप्रश्नकेउत्तरसेइसका उत्तरहोगया औरजोउत्पन्नहोताहै उसकोईश्वरहमलोगनहींमानते किन्तुजिसकीउत्पत्तिकभीनहोवै औरसबसंसारको जिससे उत्पत्तिहोवै उसीकोवेदादिक सत्यशास्त्र औरसज्जनलोगईश्वरमानतेहैं औरकोनहीं जोकोईईश्वरकीभी उत्पत्तिमानताहै उसकेमतमेंअनवस्थादोषआवैगा किजैसेउसने ईश्वरकी उत्पत्तिमानी फिरईश्वरकेपिताकी भीउत्पत्ति मानना चाहिए औरईश्वरकेपिताके पिताकोभीउत्पत्ति माननीचाहिए ऐसेहीआगे२माननेसे अनवस्थाआजायगी अथवाजिसकीवहउत्पत्तिनमानेगा उसीकोहमलोगईश्वरकहतेहैं अन्यकोनहीं प्रश्न ईश्वर साकारहै वानिराकार उत्तर ईश्वर निराकारहै क्योंकि जोनिराकारनहोता तोसर्वशक्तिमान्सर्वव्यापकसबकाधारनेवालाऔरसर्वान्तर्यामी औरनित्यकभीनहोता इससे ईश्वरनिराकार हीहै प्रश्न ईश्वरचेतनहैअथवाजड़ उत्तर जोजड़होतातोसबजगत् की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इस्से ईश्वरचेतनहै यहथोड़ासाईश्वरकेविषयमेंलिखदिया इस्से
आगेवेदविषयमेंलिखाजायगा॥ उसीईश्वरने सर्वज्ञसर्वविद्यायुक्त
औरसत्यसत्य विचारसहित कृपाकरकेवेदयाज्ञसबजीवोंके ज्ञाना-
दिकउपकारके वास्ते रचाहै प्रश्न ईश्वर निराकारहै उसकोमुख
नहीं फिरवेदकाउच्चारण औररचनाकैसेकिया उत्तर यहशंका
असमर्थोंमें होतीहै किविनामुख मुखकाकामनकरसकै ईश्वर
विनामुखसे मुखकाकाम करसक्ता है क्योंकिवह सर्वशक्तिमान्है
औरजोऐसानमानेगा उसकेमतमेंयहदोषआवेगा किहाथ,पांव
आंख,शरीर औरकान विनाजगत्कैसेरचा जैसेविनाहाथ आ-
दिकेसबजगत्कोरचा तो वेदके रचनेमें कुछशंका नही प्रश्न
ओष्ठादिकस्थानोंकाजिह्वासे वायुकोप्रेरणाहोनेसे अक्षरउच्चार-
णहोसक्तेहैं अन्यथानहीं उत्तर फिरभीवहीदोषआवेगा किईश्व-
रसर्वशक्तिमान नहोगा क्योंकि ओष्ठादिककेस्पर्श औरप्राणवि-
नाईश्वरउच्चारण नहीकरसक्ता तोईश्वरपराधीनहोगया और
हाथादिकों केविना ईश्वरनेजगत्भी नरचाहोगा जैसाकि ओ-
ष्ठादिकस्थान औरप्राणविना उच्चारणनहीकरसक्ता ऐसीशंका
जीवमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनही प्रश्न लिखनीमसीइनसे ककारादि-
कअक्षरवनतेहैं विनाइनकेनही फिरईश्वरनेकहांसेकागदलेख-
नीमसीछुरिकाचाकूऔरपटिया यहसामग्रीपाई जिस्से सबअक्षर
रचे उत्तर यहबड़ीशंकाआपनेकिया किईश्वरकोअनीश्वरहीबना
दिया अच्छामैंआपसेपूछताहूं किनासिका,आंख,ओष्ठ,कान,न-
ख, लोम, नाड़ी, और उनका सन्धान तथा आकारविना सा-
मग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए प्रश्न फिर
यहलिखी लिखाईपुस्तक संसारमेंकैसेआई औरकिसनेपाया आ-
काशसेगिरीवापातालसेआगई उत्तर आपकाशरीर,वृक्ष, पर्वत
औरइतनीबड़ीपृथिवी अन्तरिक्षमेंकैसेआगए जैसेयेआगए वैसे
पुस्तकभीआगई इसमेंक्या आश्चर्य कुछभीनही अग्नि,वायु और

आदित्यऋषिसे आदिमें भयेथे उन्होंवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़े ब्रह्मा
सेविराटने विराटसेमनुने मनुसेदशप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे
प्रजामेंफैलगए प्रश्न अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े उत्तर
इसमें दोषातहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकीनांई सबशब्दसब
मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इससेवेदोंकानामश्रु-
तिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमेंईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउनकेहृ-
दयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर
दिए॥ योब्रह्माणंविदधातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै तंहदेव-
मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये यहवेदकाप्रमाणहै इस-
कायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगत्का र-
चनकर्त्ताभया इससे पहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव
नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव
अन्धेहोतेहैं कुछनहीं जानसक्ते जैसेपशु इससे परमेश्वरने वेदका
प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थविद्याजाननेकेहेतु प्रश्न ई-
श्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंकाकिया सोलो-
गोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगक-
हैंगे तोवेदोंमें सबलोगश्रद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरें-
गे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चितजानाजाताहै किउनअग्न्यादिक
देव विद्वानोंनेही वेद बनालिएहैं उत्तर परमेश्वरने आकाशसे
लेकेक्षुद्र,घास,पर्यन्त जगत्कोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वो-
त्कृष्टसबपदार्थोंका जिससे निश्चयहोताहै उसविद्याकोप्रकाशन
करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालुनहीं
और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अप-
नीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नहीं किया किसबजीव विद्यापढ़नें
मेज्ञानी औरसुखीहोजांयगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्द
युक्तभी होजांयगे यहदोष परमेश्वरमें आवेगा जैसेकोई आजी-
विका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनहीं वहऐसीइच्छाकरताहै

जो कोई पण्डित होगा तो मेरी प्रतिष्ठा और आजीविका न्यून होजाय-
गी ऐसा क्षुद्रबुद्धि वेदक मनुष्य चाहता है और जो सज्जन लोग हैं वे तो
सदा विद्यादिक गुणों का प्रकाश किया करते हैं सो परमेश्वर अपनी अ-
नन्त विद्या का प्रकाश क्या न करेगा किन्तु अवश्य ही करेगा क्योंकि
एक ओर सब जगत् और एक ओर विद्या इन दोनों में से भी विद्या अत्य-
न्त उत्तम है सो ईश्वर क्या आजीविकाधीन और प्रतिष्ठा के लोभ से वि-
द्या का प्रकाश न करेगा किन्तु अवश्य ही करेगा इसमें कुछ सन्देह
नहीं और जो कोई ऐसा कहै कि पण्डितों ने वेद विद्या रच लिया है उ-
नसे पूछा जाता है कि वे बिना शास्त्र के पढ़ने से पण्डित कैसे भए और
जो वे कहैं कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज
काल भी बुद्धि और विचार से हो जांय सो बिना विद्या के पढ़ने से
कोई पण्डित नहीं होता क्योंकि जब सृष्टि रची गई उस समय कोई म-
नुष्य नहीं था बिना परमेश्वर के फिर वह अनुमान से जाना जाता है
वह अनुमान भी यथार्थ कभी न हो सकेगा आज तक बहुत बुद्धिमान प-
दार्थों का विचार करते हैं सो किसी पदार्थ में गुण वा दोष जानते हैं प-
रन्तु इतने इसमें गुण हैं वा इतने दोष हैं ऐसा निश्चय उनको नहीं
होता जितनी अपनी बुद्धि उतना ही जानते हैं अधिक नहीं और प-
रमेश्वर सब पदार्थों को यथावत् जानता है सो अपना ज्ञान और वि-
द्या क्या परमेश्वर गुप्त रक्खैगा ऐसा ईर्ष्यावान परमेश्वर होग-
या कि सब अपनी विद्या का प्रकाश न करै किन्तु दयालु के होने से
और ईर्ष्या, कपट, छलादि दोष रहित होने से अवश्य विद्या का प्रकाश
करैगा इसमें कुछ सन्देह नहीं प्रश्न वेद को आप परमेश्वर से उत्पत्ति
मानते हो वैसे जगत् को, सो जैसा जगत् अनित्य है वैसा वेद भी अनि-
त्य होगा उत्तर वेद के पुस्तक और पठन पाठन जब तक जगत् रहैगा
तब तक वेद की पुस्तक और पठन पाठन भी रहैंगे जब जगत् नष्ट होगा
उसके साथ ये भी नष्ट होंगे परन्तु वेद नष्ट न होंगे क्योंकि वह वि-
द्या परमेश्वर की है जैसे परमेश्वर नित्य है वैसे विद्यादिक गुण भी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं प्रश्न वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ता है
क्योंकि॥ इतशुद्धंसमातनंविज्ञामीहि इतहवान्देवाना देवर्षी-
णाम्पृथिमुनीनामुनिः। ऐसऔरहवाशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसी
संस्कृतवैसीमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत ह-
मनेरचलियाहै फिरआपकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं
किपरमेश्वरबिनावेदकोकोईनहींरचसक्ता उत्तर हमलोगसंस्कृ-
तमात्रसे वेदकानिश्चयनहीकर्ते किपरमेश्वरनेरचाहै क्योंकिसं-
स्कृततोजैसोतैसी पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसं-
स्कृतमें नहीदेखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोअवश्यपक्षपातकिसी
स्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरै-
गा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दऔरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रका-
रसे एकअक्षरमेंभी पक्षपात देखनेमें नहींआता फिरदेखिये
सबविद्याओंमेंयथावतपूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचे-
गा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे
लिखेगा परन्तु जिसविद्याको नहीजानता उसकाविषय जबकुछ
आवेगा तबकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा
औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदों
मेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्य जबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धि-
मानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवैंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्ड-
नऔरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलि-
खनेमें धर्मकाखण्डन वाअधर्मकामण्डन किसीप्रकारसेलेशमा-
त्रभीनआवेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध
इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअ-
पनेग्रन्थमेंलिखेगा जिस्से एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसे
तैसेनिकलसकें औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्ब-
न्धऐसेरक्खे गें किजिनसेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथाव-
त्आजांय सोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अन्यकानहीं सोवैसेवे-

रहीहै किजिनमेंश्रसंख्यात प्रयोजन श्रौरसबविद्या निकलतीहैं क्योंकिपरमेश्वरने सबविद्यायुक्तवेदोंकोरचेहैं इससे सबकार्यवेदोंसे सिद्धहोतेहैं श्रौरवेदोंकेनामलिखके गोपालतापिनी,रामतापिनी, कृष्णतापिनी श्रौर श्रल्लोपनिषदादिक मनुष्योंनेबहुतग्रन्थरचलिएहैं परन्तु विद्वान्यथावत्विचारकरकेदेखे तोउनग्रन्थोंमें जैसीमनुष्योंकी चुद्रबुद्धिवैसीहीचुद्रता देखपड़तीहै सोपरमेश्वर श्रौरउनकेवचनोंमें दिनश्रौररातकाजैसाभेदहै वैसाभेद देखपड़ताहै प्रश्न वेदपौरुषेयहै श्रथवाश्रपौरुषेय श्रर्थातईश्वरकारचाहै वाकिसीदेहधारीका उत्तर वेददेहधारीकारचाकभीनहींहै किन्तु परमेश्वरहीनेरचाहै परन्तु वेदश्रपौरुषेय श्रौरपौरुषेयभीहै क्योंकिपुरुषदेहधारीजीवकानामहै श्रौरपूर्णकेहोनेसेपरमेश्वरकाभी श्रपौरुषेयतोइससे है किकोईदेहधारीजीवकारचानहीं श्रौरपौरुषेयइसवास्ते है किपूर्णपुरुषजोपरमेश्वरउसनेरचाहै इससे पौरुषेयभीहै श्रौरपरमेश्वरकीविद्यासनातनहैसोईवेदहै इससेभीवेदश्रपौरुषेयहै क्योंकिपरमेश्वरकी विद्याजोवेद उसकीउत्पत्तिवानाश कभीनहींहोती परन्तु पुस्तकपठनश्रौरपाठन इनतीनोंकाजगत्के प्रलयमेंप्रलयहोजाताहै वेदईश्वरमेंनित्यरहतेहैं इससे वेदकानाश कभीनहींहोता प्रश्न जैसेवेदईश्वरसेउत्पन्नहोताहै वैसाजगतभीईश्वरसेउत्पन्नहोताहै जैसाजगत् विनश्वरहै वैसावेदभी विनश्वरहै श्रौरजोवेदनित्यहोगा तोजगत्भीनित्यहोगा उत्तर जगत्जोहैसो प्रकृतिपरमाणु श्रौरउनकेपरस्परमिलानेसे परमेश्वरसेउत्पन्नभयाहै सोकभीकारणजोपरमेश्वर उसमेंकार्यरूपजगत्नष्टहोजायगा परन्तु वेदजगत् जैसाकार्यहैवैसानहीं क्योंकिवेदतो परमेश्वर कीविद्याहै सोजोनाशहोजायतोपरमेश्वरविद्याहीनहोनेसे श्रविद्वान्हीहोजाय सोपरमेश्वर श्रविद्वान् कभीनहींहोता सदापूर्णज्ञानश्रौरपूर्णविद्यावान रहताहै सोजैसाक्रम परमेश्वरकी विद्यामेंहै वैसाहीक्रमशब्दश्रर्थसम्बन्धमन्त्र श्रौरसंहिताश्रर्थात्पूर्वा-

परमन्त्रोंका सम्बन्धजोमन्त्र जिस्से पूर्ववापीछेलिखनाचाहिए सो
सबपरमेश्वरहीनेरक्खे हैं इस्से कुछसन्देहनहीं जैसाजगत्कासं-
योगवावियोगहोताहै वैसावेदविद्याकासंयोगवावियोगकभीनही
होता क्योंकिपरमेश्वर औरपरमेश्वरके विद्यादिकसबगुणभीनि-
त्यहैं इस्से वेदविद्यानित्यहीहै जोऐसानमानेगाउसकेमतमें अन-
वस्थादोषआवेगा किकोईविद्यापुस्तकस्वयंभू औरईश्वरकारचान
मानेगा तोसबपुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा
क्योंकिएकपुस्तकस्वतःप्रमाणरहेगा औरउसकेप्रमाणसे वाअप्र-
माणसेसत्यवामिथ्यापुस्तककानिश्चयहोसक्ताहै औरजोकोईपुस्त-
कस्वतः प्रमाणहीनहोगा तोकोईपुस्तकका निश्चयनहीहोसकेगा
क्योंकिएकमनुष्यनेअपनीबुद्धिकीकल्पनासे पुस्तकरचा दूसरेनेउ-
सकाअपनीबुद्धिसे खण्डनकरदिया दूसरेकातीसरेने तीसरेका
चौथेने ऐसहीकिसीपुस्तकका प्रमाणनहोगा फिरअनवस्थाभ्रम
केहोनेसेसदारहैगी इस्सेवेदपुस्तकस्वतः प्रमाणहोनेसे परमेश्वर
हीकारचाहै अन्यथानहीं क्योंकिऐसीसुगमसंस्कृतललितपद स-
त्यार्थयुक्त अनेकप्रयोजनऔरअनेकविद्यासहित स्वल्पअक्षरसुग-
मवेदहीकीपुस्तकहै अन्यनहीऔरजगत्केकिसीपदार्थका कुछनि-
श्चयमनुष्यअपनीबुद्धिसेकरसक्ताहै परन्तुईश्वरस्वरूप औरउनके
न्यायकारित्वादिक अनन्तगुणवेदपुस्तकमें जैसेलिखेहैं वैसालेख
कोईसंस्कृतवाभाषापुस्तकमेंनहीहै क्योंकिकिसीकोवैसी बुद्धिनही
होसक्ती किपरमेश्वरकास्वरूपऔरयथावत्गुणलिखसकै सोऐसा
ही जानना चाहिए किहमलोगोंपर अत्यन्त कृपासे परमेश्वरने
अपनास्वरूप औरअपनेसत्यगुणवेदपुस्तकमेंप्रकाशकरदिएहैं जि-
स्से किहमलोगभीपरमेश्वरकास्वरूप औरगुणवेदपुस्तकसेजानके
अत्यन्तआनन्दयुक्तहोते हैं सोपक्षपातकोछोड़के यथावत्विद्यायुक्त
पुरुष अत्यन्तवेदार्थका विचारकरैगा सोईअनन्तसुखको पावेगा
अन्यथानहीं प्रश्न ऐसेही सबमनुष्यएक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानतेहैं जैसेकि वाबिल,इञ्जील औरकुरान् वैदेशिकलोगोंको जोवेदमेंआग्रहहै जिससेकिअत्यन्त स्तुतिकरतेहैं जोवेदपरमेश्वरका रचाहोगा तोवेपुस्तक परमेश्वरकेरचे क्योंनहीं इसमेंक्याप्रमाण है किवेदही ईश्वरकारचाहै औरअन्यपुस्तकनहीं उत्तर सबमनुष्योंकाप्रमाणनहीहोसक्ता क्योंकिसबमनुष्यपूर्णविद्यावालेआप्त औरपक्षपातरहितनहीहोते जिससेकिसबमनुष्योंके कहनेकाप्रमाणहोजाय जोआप्त औरपक्षपात रहितहोवैं उन्होंका प्रमाण करनायोग्यहै अन्यकानहीं क्योंकिजोमूर्खोंकाहमलोग प्रमाण करैं तोबडाभारीदोषआजायगा वेअन्यथाभाषणकरतेहैं औरअन्यथाकर्मभीकरतेहैं इससे आप्तलोगोंकाप्रमाणकरनाचाहिए और वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणनाही नहीं होसक्ती किन्तुउनमेंविद्याकीबाततोकुछनहीं है । जैसोकिकहानीहोयवैसेवेपुस्तकहैं प्रश्न आप्तकानिश्चयकैसेहोसक्ताहै वेदवाले कहतेहैं किहमारीबातसत्यहै अन्यलोगकहतेहैं किहमलोगोंकी बातसत्यहै इसमेंक्याप्रमाणहै कियहीबातसत्यहै अन्यनहीं उत्तर इसकासमाधान द्वितीयसमुल्लासमेंकहदियाहै किऐसालक्षणवालाआप्तहोताहै औरप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसे सत्यवाअसत्यकायथावत्निश्चयभीहोताहै उनसेनिश्चयकरकेसत्यकोमाननाचाहिए असत्यकोनहीं प्रश्न वेदकिसीदेशविशेषऔरभिन्नदेशमें रहनेवाले मनुष्योंकेहेतुहैं वासबमनुष्योंकेहेतुहैं उत्तर वेदसबमनुष्योंकेवास्तेहैं क्योंकिजोविद्या औरसत्यबातहोतीहै सोसबकेहेतुहोतीहै औरवेदमें कहीं नहींलिखा किइसदेशवाउनमनुष्योंकेहेतुवेदबनायागया औरअधिकारभीइनकाहै औरइनकानहीं जैसेकि बाबिल,मूसा औरइसराईल कुलादिकोंकेवास्तेपुस्तकआई औरमुहम्मदादिकोंकेहेतुकुरान् यहबातमनुष्योंकोहोतीहै अपनेदेशवालेकेऊपरप्रीति औरअन्यकेऊपरनहीं जोईश्वरकावचन सोतो सर्वज्ञऔरसबजगत्कास्वामीहै इससे तुल्यकृपाऔरतुल्यदृष्टिहोर-

रक्खैगा अन्यथा नहीं ऐसोपुस्तक बेदही की है अन्यनहीं क्योंकि अन्यपुस्तकोंमें ऐसीविद्यानहीं औरकहानीकीनांई उनमें कथा है औरपक्षपात बहुतसे हैं इससे वेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं इसमें किसीकोजो सन्देहहोय तोपक्षपातकोछोड़के तीनोंपुस्तकों काविद्याप्रीति औरसज्जनतासे विचारकरैं तनयहीनिश्चयहोगा किवेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं प्रश्न वेदोंकासबमनुष्योंको पढ़नेऔरपढ़ानेका अधिकारहैवानहीं उत्तर इसकाविचार तृत यसमुल्लासमें वर्णव्यवस्थाके कथनमें कियागयाहै वहांजानले ना इसप्रकारसेवहांलिखाहै किजोमूर्खहैवहशूद्रहै उसकापढ़ना वाउसको पढ़ाना व्यर्थहै क्योंकिउसको बुद्धिन होनेसे कुछ वि द्यानआवेगी अन्यव्यवस्थाचतुर्थ समुल्लासमें देखलेनो प्रश्न शूद्रा दिकोंको वेदसुननेकाअधिकारहैवानहीं उत्तर जिसकोकानइन्द्रि यहै औरउसकेसमीपजोशब्दहोगा उसकोअवश्यसुनेगा सोवेद काशब्दअथवाअन्यशब्दहोवैवहसबकोसुनेगापरन्तुशूद्रमूर्खहोनेसे सुनकेभीकुछनकरसकेगा इसहेतुसेहांतहांनिषेधलिखाहै किशूद्र कोवेदनपढ़नाचाहिए किउसकोकुछआतानहीं। प्रश्न वेदव्यासजी नेवेदरचेहैं इससे उनकानाम वेदव्यासपड़ाहै यहबातभागवतमें लिखीहै फिरआपकैसी बातकहतेहैं किवेदईश्वरनेरचेहैं। उत्तर यहबातअत्यन्तमिथ्या है क्योंकिव्यासजीनेभी वेदपढ़ेथे औरअपने पुत्रशुकदेवादिकोंको पढ़ायेथे औरउनकापिता पराशर उसका पितामह शक्ति और प्रपितामह वशिष्ठब्रह्मा औरबृहस्पत्यादिकों नेभीपढ़ेथे जोव्यासकेबनाये वेदहोते तोवेकैसेपढ़ते क्योंकि व्यास जीतो बहुतपोछेभयेहैं औरजो उनकानाम वेदव्यास पड़ाहै सो इसरीतिसेपड़ाहै कि ॥ वेदेषुव्यासोविस्तारोनामविस्तृताबुद्धिर्य-स्यासवेदव्यासः ॥ व्यासजीनेवेदोंकोपढ़के औरपढ़ायेहैं जिससे सब जगत्में वेदकापठनऔरपाठनफैलगया औरउनकीबुद्धि वेदोंमें विशालथी कियथावत्शब्दअर्थऔरसम्बन्धसे वेदोंकोजानतेथे इ-

से इनकानामवेदव्यासरक्खागया पहिले इनकानामजन्मका कृष्णद्वैपायनथा वेदव्यासनाम विद्याकेगुणसेभयाहै इससे भागवतमे जोबातलिखीहै सोवेदोंकीनिन्दाकेहेतुलिखीहै उसकायह अभिप्रायथा वेदोंकीनिन्दामें किजिसनेवेदरचेहैं उसीनेभागवतभीरचा औरवेदोंकेपढ़नेसे व्यासजीकोशान्तिभीनभई किन्तुभागवतकेरचनेसेउनकोशान्तिभई औरभागवत वेदोंकाफलहैं अर्थातवेदोंसेभीउत्तमहै सोयहबातदुर्बुद्धिजीवोपदासउसकीकहीहै क्योंकि व्यासजीकेनामसे उसनेसब भागवतरचाहै इसहेतुकि व्यासजीकेनामलिखनेसे सबलोगप्रमाणकरैं औरवेदोंकीनिन्दासे मेरेग्रन्थकी प्रवृत्तिकेहोनेसे सम्प्रदायकीवृद्धि औरधनका लाभहोय इससे सज्जनलोग इसबातकोमिथ्याहीमानैं। प्रश्न-वेदईश्वरनेसंस्कृतभाषामेंक्योंरचे क्याईश्वरकी भाषासंस्कृतहीहै जोदेशभाषामें रचते तोसबमनुष्यपरिश्रमकेविना वेदोंकोसमझलेते औरसंस्कृतजाननेकेहेतुव्याकरणादिक सामग्रीपढ़नी चाहिए इसकेविना वेदोंकाअर्थ कभीमालूमनहोगा। उत्तर-संस्कृतमें इसहेतुवेदरचेगयेहैं किछोटेपुस्तकमें सबविद्याआजांय औरजोभाषामें रचते तोबड़े२ ग्रन्थहोजाते औरएकदेशहीका उपकारहोता सबदेशोंकानहीं औरजितनीदेशभाषाहैं उनमेंरचतेतबतोपुस्तकोंकापारावारहीनहींहोता इससे ईश्वरनेसर्वज्ञभाषामेंवेदरचेहैं कि किसीदेशकी भाषानरहै औरसबभाषा जिससेनिकलें क्योंकिसंस्कृत किसीदेशकीभाषानहीं जैसेईश्वरकिसीदेशकानहीं किन्तुसबदेशोंकास्वामीहै वैसेहीसंस्कृतभाषाहैकिकिसीएकदेशकीनहीं प्रश्न देवलोग औरआर्यावर्त्त देशकी प्रथमभाषासंस्कृतथी इसीकोमुसल्मानलोग जिन्नभाषाकहतेहैं क्योंकिजैसीप्रवृत्ति संस्कृतकीपहिलेआर्यावर्त्त मेंथी वैसीकिसीदेशमेंनथी जिसदेशमें कुछप्रवृत्तिभईहोगी सोआर्यावर्त्तहीसे भईहोगी अबभीआर्यावर्त्तमें अन्यदेशोंसेसंस्कृतकीअधिकप्रवृत्तिहै इससे यहनिश्चयहोताहै किसंस्कृ

तभाषाआर्य्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी। उत्तर-यहदेवलोगकीभाषानहीं
क्योंकि बृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रश्चाध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै
इन्द्रनेबृहस्पतिसेसंस्कृतपढ़ी औरबृहस्पतिने अङ्गिराप्रजापतिसे,
उन्नेमनुसे, मनुनेविराटसे, विराटनेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भा-
दिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवेक्योंपढ़-
तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इ-
ससेदेवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरजबब्रह्मादिकोंकी भाषान-
हीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनहीं परन्तुऐसा
जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषि
मुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासीलोगोंने परम्परासेसंस्कृ-
तपढ़ी औरपढ़ायाहै इससेआर्य्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं
औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्या
सेकहतेहैं जैसेकिआर्य्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो
यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंही
का नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे
तोलोकलोकान्तरमें होतेहोंगे यहांनहीं फिरउनकीभाषा यहां
कैसेआसकेगी इससे यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीप-
दार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककीबुद्धिहीनहीं फिरयेसंस्कृतवि-
द्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसके वारचसके हैं औररचतेहोतेतोअ-
न्यदेशोंमेंभीरचलेते तथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इससे ऐसीबात
सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए। प्रश्न-देशभाषाभिन्न२ सबकैसे
बनगई औरकिससे बनी। उत्तर-सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृतहै
क्योंकिसंस्कृत जबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंश
सेदेशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्द
सेदूधनवीतशब्दसेनैनू अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिका
शब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयुयंशब्दसेयू वयं
शब्दसेवीगूढशब्दकागोड इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेब-

हुतनाम हैं जैसे कि गौः नाम गाय, ग्मा, ज्मा, क्ष्मा, क्षा, क्षमा, क्षोणी, क्षिति, अवनी, उर्वी, पृथ्वी, मही, रिपः, अदितिः, इडा, निर्ऋतिः, भूः, भूमिः, पूषा, गातुः, गोत्रा, ए २१ नाम पृथिवी के नाम हैं सो भिन्न २ देशों में भिन्न २, २१ नामों में से भिन्न २ का अपभ्रंश होने से भिन्न २ भाषा बनजाती है और एक नाम बहुत अर्थों का होता है जैसे कि सिंह, वानर, घोड़ा, सूर्य्य, मनुष्य, देव और चोर इत्यादिक का नाम हरि है इस्से भी भिन्न २ देशमें भिन्न २ भाषा होती है क्योंकि किसी देशमें सिंह नामसे उस पशु का व्यवहार किया किसी देशमें हरिशब्द से वानर का ग्रहण किया किसी देशमें हरिशब्द से घोड़े को लिया किसी देशमें हरिशब्द से सूर्य्य को लिया किसी देशमें हरिशब्द से चोर को लिया इस हेतु देशभाषा भिन्न २ होगई और मनुष्यों का उच्चारण भेद से भिन्न २ भाषा होजाती है जैसे कि क्ष यह दोनों अकार में मिलने से अक्षर यह क्ष होता है सो आजकाल इसका लेख ऐसा होगया है क्ष इस एक अक्षर के अन्यथा उच्चारण से तीन भेद होगये हैं गुजराती लोग गकार और नकार का उच्चारण करते हैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्य लोग ट और नकार का उच्चारण करते हैं और अन्य लोग गकार और यकार का उच्चारण करते हैं तथा तालव्य श मूर्द्धन्य ष और दन्त्य स इन तीनों के स्थान में बंगाली लोग तालव्य शकार का उच्चारण करते हैं मध्य और पश्चिम देशवाले तीनों के स्थान में दन्त्य सकार का उच्चारण करते हैं तथा किसी की जीभ कठिन होती है वह प्रायः शब्दों को अन्यथा उच्चारण करता है और जिस देश में विद्या का लेश भी न होय उस देश में सङ्केत व्यवहार करने के हेतु शब्दों का कर लेते हैं कि इस शब्द से इसको जानना और इस शब्द से इसको जानना जैसे दाक्षिणात्य लोगों ने घी का नाम तूप रख लिया और उत्तरदेश पर्वतवासियों ने घी का नाम चोखार खलिया और गुजरातियों ने चावल का नाम चोखा रखलिया इस्से भी देश देशान्तर की भाषा भिन्न २ होगई है इसी प्रकार के अन्य कारणों को भी विचार लेना। प्रश्न वेद में अश्वमेधादिक यज्ञों की क्रिया जो

लिखीहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिमानपनेकीनहीदी-
खती क्योंकिघोड़ेको सबजगह फिरातेहैं उसकोकोई नोबांधले
उस्से फिरयुद्धकरतेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रसेभीऐसीबातसेवैर
होजाताहै इत्यादिकऐसीऐसी बुरीबात जिसमेंलिखीहैं वहवेदईश्व-
रकाबनायाकभी नहोगा उत्तर यसबबातमिथ्याहैं वेदमेंएकभीन-
हींलिखीहैं किन्तुलोगोंनेकहानी बनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा
क्योंनहीकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत्
आजाते तबतोईश्वरकी दयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालु-
ता किबड़े परिश्रमसे वेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर
फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणा
सेवेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहीं औरजो
परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उसमेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना
परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकीखानापीना उठनाबैठना
कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अ-
न्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहीहोता औरइतनीबड़ीजोपदा-
र्थविद्यासोकैसेहोगी जीवकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरप्राणक-
हने औरसुननेकासामर्थ्य भीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर
दियाहै इस्से ईश्वरदयारहितकभीनहीहोते औरजीवकोजोस्व-
तन्त्ररखदियाहै यहीबड़ीदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका
करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेखैं ईश्वरऔ-
रवेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे
देखाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउ-
त्पत्तिस्थितिऔरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ७ ॥

अथ जगदुत्पत्ति प्रलयविषयान्व्याख्यास्यामः ब्रह्मविदाप्नोति परं तदेषाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन् प्रतिष्ठितासोऽश्नुतेसर्वान्कामान्ब्रह्मणासहविपश्चितेतितस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतःआकाशाद्वायुःवायोरग्निःअग्नेरापःअद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतःरेतसःपुरुषः सवाएषपुरुषोन्नरसमयः ४ तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहुःस्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउपनिषद्कीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमापरोयत् किमावरीवःकुहकस्यशर्मन्नम्भः किमासीद्गहनंगभीरं यह ऋग्वेदकी श्रुति है आत्मावाइदमग्रआसीन्नान्यत् किंचन्मिषत् सईक्षतलोकान्नुसृजाइति यहऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक वेदादिकोंश्रुतियों से यहनिश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत् लेशमात्रभी नहीथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेख लेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्वरकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजाते हैं वह परमेश्वर एक अद्वितीयथा दूसराकोईनहीथा उन्ने जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिई किबहुतप्रकारकी प्रजाकोमैंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकोप्रजा उत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया किजोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म पदार्थहैजोकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उससे स्थूल द्विगुणवायुउत्पन्नभया उससे अग्नित्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतुर्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेऔषधि औषधियोंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसेलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वर नेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफिर वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकअ

णुरचा दोअणुसे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुको मिलाके यहजो देखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया प्रश्न परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगत्कोरचा उत्तर इस्से पूंछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गोतममुनिजीकासूत्रहै इस्कायहअभिप्राय है किजिसपदार्थको अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवै उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उस्से कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्तहै प्रश्नजगत्केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहीहोसक्ती उत्तर इच्छाकेजगत्मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और वहउत्तमहोवै तथा अपनेसेभिन्नहोवै परमेश्वरमें तीनोंमेंसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहोहोती तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापकके होनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इस्से इच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहोहोसक्ती प्रश्न जगत्रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहोहोसक्ती उत्तर अच्छा इच्छा तोनहोजनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहोबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानो तो जगत्काहोना वहीइच्छा और प्रयोजनमानलेओ इस्से भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानैंकि अपने आनन्दकेवास्ते जगत्को रचा उस्से हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगत्केजीवभक्तिकरैं तोजबतक जगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त्केजीवभक्तिभी नहीकरतेथे तबपरमेश्वर अवश्यदुःखीहोगा इससेऐ-
साप्रश्नव्यर्थहोताहै इसमेंआग्रहनहीकरनाचाहियेरचनासेईश्वरके
सामर्थ्यकासफलहोनाहीरचनाकाप्रयोजनहैप्रश्न ईश्वरनेजगतर
चासोजगतरचनेकी सामग्रीथीअथवाअपनेमेंसेहीजगतरचावाअ
पनेहीसबजगतरूपबनगया उत्तर इसकाविचार अवश्यकरनाचा
हिये किबिनासामग्रीसेकोईपदार्थ नहीबनसक्ता क्योंकि कारणके
बिनाकिसीकार्यकी उत्पत्तिहमलोगनहीदेखते सोकारण तीनप्र
कारकाहोताहै एकउपादानदूसरानिमित्त औरतीसरासाधारण
सोउपादानयहकहाताहैकि किसीसेकुछलेकेकोईपदार्थबनानासो
कार्यऔरकारणका इसमेंकुछभेदनहीहोता दोनोएकहीरूपहोते
हैं जैसेमट्टीकोलेकेघडेकोबनालेतेहैं कपासकोलेकेवस्त्र सोनेकोले
केगहना लोहेकोलेकेशस्त्रऔर काष्ठकोलेकेकिवाडआदिक सोघ
डादिकजितनेहैं वेमृत्तिकादिकोंसेभिन्नवस्तुनहींहैं किन्तुवहीवस्तु
है इसप्रकारकाउपादानकारणजानना दूसरा निमित्तकारण जो
किउनकुलालादिकशिल्पीलोग नानाप्रकारके पदार्थोंकोरचनेवा
लेनिमित्तकारणमेंजानना क्योंकिमृत्तिकादिकोंका ग्रहणकरकेअ
नेकपदार्थोंकोरचतेहैं किन्तुअपनेशरीरसेपदार्थलेकेनहीरचतेइ
ससेऐसानिमित्तकारणहोताहै किजोपदार्थबनावेउससे भिन्नसदा
रहै औरउसपदार्थकोरचले तीसरा साधारणकारणहोताहै जै-
साकिप्राण कालदेशचक्र औरसूत्रादिक क्योंकि येसबकर्त्ताकेआ
धीनऔरहेतुरहतेहैं इससे अवश्यबिचारकरनाचाहिये परमेश्वर
इसजगतका तीनों कारणोंमेंसे कौनकारणहै अर्थात्तीनोंकारन
हैजोउपादानकारणहोवै तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण भ्रम जन्मऔ
र मरणादिक दोष ईश्वरमें आजायेंगे क्योंकि उपादानसे उपादे
य भिन्ननहीहोता अर्थात् ईश्वरसे जगत भिन्ननही होगा इससे
उक्तदोष अवश्यही आवेंगे इसमें जोकोई ऐसाकहै किजैसे स्वप्ना
वस्थामें मिथ्यापदार्थ अनेक देखपडतेहैं और रज्जुमेंसर्प बुद्धिहो

तीहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसे वस्तु में कुछदो-
षनहीआसक्ता स्वप्नसे जीवकी कुछहानि नहीहोती और सर्पसेर-
ज्जुकी उनसे पूछना चाहिये सर्प कीभ्रान्ति रज्जु में और स्वप्नमें
हर्षशोकादिक दुःख किसकोभये जोवह कहैकि ब्रह्मकोहीभयेफि
र वह ब्रह्म शुद्धनही रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहीरहा क्योंकि भ्र
म जो होताहै सो अज्ञानसेही होताहै बिना अज्ञानसेनही फि
र वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखाहै उसको क्या
गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममेंआजायगे जोवहक
हैकि भ्रमसेबन्ध और मोक्षहै वस्तु सेनही फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध
मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमेंलिखाहै सोबात झूठीहोजायगी य
हबडा दोषहोगा और जो बद्धहोगा सो जगतको कैसेरचसकेगा
और जोमुक्तहोगा सोजगतरचनेकोइच्छाहीनकरेगा फिरपरमे
श्वरसे जगतकैसेबनेगा औरजोकोईकेवलनिमित्तकारणमानै तो
जगतकासाक्षातकर्तानहीहोगा किन्तुशिल्पीवत्होगा अथवाउस
को महाशिल्पीकहो और उसकेपास सामग्रीभी अवश्यमाननी
चाहिये फिरजो सामग्री मानेंगे तोजगतभी नित्यहोगा क्योंकि
जिस्से जगतबनाहै वहसामग्रीईश्वरके पाससदारहतीहीहै फिर
एक अद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतलेश
मात्रभीनहीथा यहवेदादिक शास्त्रोंकाप्रमाणोंसे कहनावहव्यर्थ
होगा इस्से उननिमित्त कारण माननेसेभीवह दोषआवेगा और
जोसाधारणकारणमानै तोभीजडपराश्रितरचनेमें असमर्थईश्वर
होगा जैसेकुलालादिककेबिना घटादिकार्य्य पराधीनहोतेहैं क्यों
किजैसेचक्रादिककेबिना कुलालादिक घटादिकनहीरचसक्तेहैं फि
रवहईश्वरपराधीनहोनेसे सर्वशक्तिमान नहीरहेगा क्योंकि कोई
कामसहायकिसीकामेंनले और अपनीशक्तिसे सबकुछकरै उसको
कहतेहैं सर्वशक्तिमान् सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तो सर्व
शक्तिमान्ईश्वरकभीनरहेगा इस्से तीनोंप्रकारमें दोषआतेहैं ।

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवे
इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान्
होताहै उसमेंअनन्तसामर्थ्य सामग्रीहोतीहै सोवहसामग्रीस्वा-
भाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूस-
रापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमे-
श्वरनेबनाया प्रश्न जोगुणकीनाईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे
भिन्नकभीनहींहोती क्योंकिस्वाभाविकजोगुणहै सोगुणीसे भिन्न
कभीनहींहोता इससे क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत्
रूपबनगया उत्तर ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदा-
र्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य
स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहींलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औ-
रस्वाभाविकहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें
वहसामर्थ्य रहताहै उससे सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इससेक्याआ-
या किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेसे उपादान कारणज-
गत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई
पदार्थ नहीं है कि जिसे लेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभा-
विक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इससे सब जगत्का उ-
पादानकारणपरमेश्वरहीहै परन्तुआप जगत्रूपनहीबना तथा
अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचनेसे दूसरेके सहायबिना
इससे जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासा-
धारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थके सहा-
यसेजगत्कोईश्वरनेनहींरचा किन्तुअपनीसामर्थ्य सेजगत्कोर-
चाहै इससे साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं
औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपडते विरुद्धका-
र्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इससे जगत्केतीनों कारणप-
रमेश्वरहीहैं अन्यकोईनहीं प्रश्न परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक
है अथवानहीं उत्तर परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

किनिराकारनहोता तोएकदेशमें रहताऔरकहीं देखभीपड़ता
सोएकदेशमेंनहीहै औरकहींदेखभीनहींपड़ता इस्से निराकार
होईश्वरकोजाननाचाहिए औरजोनिराकारनहोतातोसर्वव्या-
पकनहोता तोसर्वात्मा औरसबजगत्का अन्तर्यामी नहोता सो
सबजगत्का आत्मासर्वान्तर्यामीके होनेसेव्यापकहो ईश्वरहै अ-
न्यथानहीं प्रश्न सबजगत्कारचनऔरधारणईश्वरकिसप्रकारसे
करताहै उत्तर जैसाजगत्मेंहमलोगदेखतेहैं वैसाहीईश्वरनेज-
गत्रचाहै परन्तुइसमें यहप्रकारहै किआकाशतोपरमाणुसेभी
सूक्ष्महै औरवायुकेपरमाणुकायहस्वभावदेखनेमेंआताहै किनी-
चेऊंचेऔरसमदेशमेंगमनकरनेवालेपरमाणुहैं क्योंकिजोत्वचा
इन्द्रियसेप्रत्यक्षस्थूलवायुको हमलोगवैसाहीस्वभाववालादेखते
हैं कभीऊर्द्धकभीनीचेऔरकभीतिरछाचलताहै इस्से हमलोगपर
माणुकाअनुमानकरतेहैं इसमेंअन्यभीबहुतकारणहैं क्योंकिवायुमें
अनेकतत्वमिलेहैं परन्तु हमलोगमुख्यजोगणनासेइसबातकोलि-
खतेहैं तथाअग्निकाऊर्द्ध जलकेतथानीचेऔरपृथिवीकासमताअ-
नेकविधिगतिकोदेखकेपरमसूक्ष्मपरमाणुरूपजोतत्व उनकाभीअ-
नुमानकरतेहैं किवेभीइसीप्रकारकेहैं सोपरमेश्वरनेपृथिवीमेंअ-
नेक तत्वोंकामेलनकियाहै क्योंकिजोमेलनहोता तोतत्वोंकेस्वा-
भाविकगुणपृथिवीमेंनदेखपड़ते जैसेकिवायु नहोतातोपृथिवीमेंस्प-
र्शभीनहोता तथाअग्नि,जल औरआकाशनहोते तोरूपरस और
शब्दभीनदेखपड़ते इस्से क्याजानाजाताहै किसबमें सबतत्वमिले
हैं सोपृथिवीऔरजलकेपरमाणु अधोगामीस्वभावसेहैं अग्निऊ-
र्द्ध गमनऔरवायुतिरछेगमनकरनेवालाहै उनसबकेपरमाणु भी
वाअधिकन्यूनमिलनेसे स्थिरतावागमनपदार्थोंकेहोतेहैं जैसेकि
पृथिवीऔरजलनीचेजातेहैं औरअग्नितथावायुऊपर औरअनेक
विधिचलकरतेहैं फिरमिलाभयापदार्थकहींनहींजासक्ता वाअधि-
कन्यूनतातत्वोंकेमिलानेसगितनीजिसकीगति परमेश्वरनेरचीहै

उतनोहीहै।तोहै अन्यथानहीं औरसबसे बलवान्वायुहै वायुके
आधारसेसबलोगोंकोहमलोगदेखतेहैं जैसेकिइसपृथिवीकेचारो
ओरवायुअधिकहैतथावायुमेंअन्यतत्वभीमिलेहुएदेखपडतेहैंऔ-
रवहवायु४९वा५०कोसतकअधिकहैउसकेऊपरथोड़ाहै सोज्यो-
तिषविद्याकी गणनासेप्रत्यक्षहै उसवायुका आधारआकाशऔर
आकाशादिकसबपदार्थोंका आधारपरमेश्वरहै सोजोसर्वव्याप-
कनहोता तोआकाशादिकोंकासबजगत्मेंधारणकैसेकर्ता इससेप-
रमेश्वरव्यापकहै व्यापककेहोनेसेसबकाधारणबनताहै अन्यथान-
हींऔरजोसाकारएकदेशस्थपरमेश्वरकोमानेगा उसकेमतमेंधा-
रण सबजगत्कानहोवैगा इत्यादिकबहुतदोषआवेंगे फिरदोप्र-
कारकाव्यवहारहमलोगदेखतेहैं किएकतोलघुवेग औरगुरुत्वा-
दिकगुणऔरआकर्षणभीपदार्थोंमेंहै क्योंकिजोहलकापदार्थहो-
ताहै सोऊपरहीचलताहै औरगुरुनीचेकोचलताहै जैसेकिजल
केपात्रमें तेलकोधाराजबदेतेहैं सोलघुकेहोनेसे तैलजलके ऊपर
होआजाताहै कभीनीचेनहीरहता इसकायहकारणहै किजिस-
मेंछिद्रअधिकहोगा उसमेंपोलऔरवायुअधिकहोगा वहलघुहो-
गाऔरजिसमेंपोलऔरवायुथोड़ाहोगा वहगुरुहोगा जोकिसमी-
प२अत्यन्तजुटजायगा वहीगुरुहोगा औरजोमिलेगापरन्तु उसके
भीतरकुछअत्यन्तसूक्ष्मछिद्ररहैंगे जैसे किलोहाऔरकाठ दोनों
काभारतोतुल्यहोताहै परन्तु जलमेंदोनोंकोडारनेसे काठतोऊ-
पररहेगा औरलोहानीचेचलाजायगा तथावस्त्रभीगनेसेनीचेच-
लाजाताहै उसकायहकारणहै किउसकेछिद्रोंसे जलऊपरचला
जाताहै सोऊपरसेजलकाभार औरसूतकाअधिकबटना, औरपृ-
थिवीके आकर्षणसे नीचेचलाजाताहै तथाकोईकाष्ठभी अत्यन्त
भींगने औरचसरेणवादिकके अत्यन्तमिलनेसे वहनीचे चलाजा-
ताहै औरवेगभीपदार्थोंमेंदेखपडताहै जैसेमनुष्य, घोड़ा, हरिण
वायुअन्नादिकमें हैं तथाअग्निऔरसूर्य्य, पदार्थोंके अवयवोंको

भिन्न२करदेतेहैंऔरजलतथापृथिवीयेपदार्थोंसे मिलनेऔरमिलानेवालेहैं सोजहांजिसका अधिकबलहोगा वहांउसकाकार्य्य होगा जैसेकिवायुसूक्ष्मऔरलघुहोकेऊपरजाताहै तबचारोंओरकोपृथिवीजल,त्रसरेणुयुक्त जिसस्थानसेवायुऊपरचढ़ा उसस्थानमेंचारोंओरसेगुरुवायुगिरताहै वहीअधिकचलनऔरआंधीका कारणहै औरवहीवृष्टिकाजलकेऊपरआकर्षणकेहोनेसे कारणहै क्योंकिसूर्य्य औरअग्निसबरसोंकाभेदकतेहैं फिरएजलादिकरस सबऊपरचढ़तेहैं परन्तु उनमेंअग्नि वायुऔरपृथिवीकेभीपरमाणु मिलेहैं औरजलकेपरमाणुअधिकहैं फिरजबअधिकऊपरजलादिकोंकेपरमाणुचढ़तेहैं तबगुरुहोतेहैं अर्थातअधिकभारहोताहै फिरवायुधारणउनकोनहीकरसक्ता वहांकावायुजलके संयोगसे शीतलचलताहै उससे जलादिकोंकेपरमाणुमिलके बादलहोजाते हैं जबवेवायुसेबीचमेंपरस्परचलतेहैं वायुमन्दहोनेसेउष्णताहोती है फिरवेपरस्परभिड़तेहैं औरघिसतेहैं इससे गर्जन औरबीजली उत्पन्नहोतीहै फिरउष्णता औरबिजली केहोनेसे जलपृथिवीके ऊपरगिरताहै तथावायुकेवेग औरठोकरसे बिजलीनीचेगिरती है औरअग्निकाऊपरवेग तथाजलकानीचेहोताहै सोजलकोपात्रमेंरखके ऊपररखने औरअग्निकोनीचेरखनेसे जबउसजलमें अग्निप्रविष्टहोताहै तबउसमेंवेग औरबलहोताहै यहीरेलआदिकपदार्थोंकाकारणहै तथाबिजलीअङ्कविद्याऔरनानाप्रकारके यन्त्रोंसेतारविद्याभीहोतीहै ऐसेहीविद्यासे अनेकप्रकारकी पदार्थविद्याबनसक्तीहै ग्रन्थअधिकहोजाय इसहेतुहमअधिकनहींलिखतेहैं क्योंकि शास्त्रोंमेंलिखाहै सोबुद्धिमान्लोग विचारलेंगे जोथोड़ी२विद्यासेमनुष्यलोगअनेकप्रकारकेपदार्थरचलेते हैं फिरसर्वशक्तिमान्अनन्तविद्यावाला जोईश्वरअनेकप्रकारके पदार्थोंकोरचेइसमें क्या आश्चर्यहै इसप्रकारसेजगत्कोरचताहै ईश्वरकीअपनीनित्यशक्ति औरगुणउनसेआकाशअव्यक्तअव्याह-

तप्रकृति और प्रधान ए सब एकही के नाम हैं इनको रचता है आकाश
से वायु आदि के परमाणु बनाता है उन साठ परमाणु से एक अणु बन-
ता है दो अणु से एक द्व्यणुक बनता है सो वायु द्व्यणुक है इस्से प्रत्यक्षरू-
प नहीं देख पड़ता वायु से त्रिगुण स्थूल अग्नि रचा है इस्से अग्नि में
रूप देख पड़ता है उस्से चतुर्गुण जल और जल से पंचगुण पृथिवी रची
है तथा उस परमाणु के मेलन से इक्ष, घास और वनस्पत्यादिकों के बी-
ज रचे हैं उन में परमाणु के संयोग इस प्रकार के रक्खे हैं कि जिन से
विलक्षण२ स्वाद पुष्प, पत्र, फल और काष्ठादिक होते हैं सो प्रसिद्ध
जगत् के पदार्थों को देखन से हम लोग परमेश्वर की रचना का अनु-
मान कर्ते हैं और साधारण सब जगह में व्यापक होने से सब जगत् का
धारण कर्ते हैं तथा एक२ आधार दूसरा और परस्पर आकर्षण से भी
जगत् का धारण होता है परन्तु सब आकर्षणों का आकर्षण और धा-
रण करनेवालों का धारण करनेवाला परमेश्वर ही है अन्य कोई न-
हीं प्रश्न इसी लोक में इस प्रकार की सृष्टि है वा सब लोकों में ऐसी सृ-
ष्टि है उत्तर सब लोकों में सृष्टि अनेक प्रकार की है जैसी कि इस लोक
में क्योंकि इस लोक में हम लोग पृथिव्यादिक पदार्थ प्रयोजन के हेतु
रचे हुए देखते हैं इन में एक पदार्थ भी व्यर्थ नहीं देखते इस्से हम लो-
ग अनुमान कर्ते हैं कि कोई लोक परमेश्वर ने व्यर्थ नहीं रचा है किन्तु
सब लोकों में अनेक विध मनुष्यादिक सृष्टि रची है क्योंकि परमेश्वर
का व्यर्थ कार्य कभी नहीं होता प्रश्न कितने लोक परमेश्वर ने रचे हैं
उत्तर सूर्य, चन्द्र और जितने तारे देख पड़ते हैं तथा बहुत भी नहीं
देख पड़ते ए सब लोक ही हैं सो असंख्यात हैं प्रश्न ये सब लोक स्थिर हैं
वा चलते हैं उत्तर सब लोक अपनी२ परिधि और अपने२ वेग से च-
लते हैं सो अनेक विध गति है स्थिर तो एक परमेश्वर ही है और कोई
नहीं प्रश्न जब परमेश्वर ने पहिले सृष्टि रची तब एक२ दो२ मनुष्या-
दिक जाति में रचे अथवा अनेक रचे थे उत्तर एक२ जाति में परमे-
श्वर ने अनेक२ रचे हैं एक२ वा दो२ नहीं क्योंकि चिंवटी आदिक जा-

ति एक द्वीप में एक२ टो२ रचते तो द्वीपान्तरमें वे कैसे जास-
क्तीं इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमे-
श्वरने सब पदार्थ शुद्ध२ रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है
उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अ-
शुद्ध कोई नहीं परन्तु विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मि-
लानेवाले अशुद्ध कहते हैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदू-
धऔरनोंनजबमिलते हैं तबवेदोनोंनष्टगुणहोजातेहैं क्योंकिदो-
नोंका स्वादविगड़जाताहै परन्तु उनोंदोनोंको पदार्थविद्याकी
युक्तिसे तृतीयपदार्थकोईरचले फिरभीवहउत्तमहोसक्ताहै जैसे
सर्पमक्खीवेभी अपनेस्थानमेंशुद्धहैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे
इनकीभीबहुत औषधियांबनतीहैं अनुकूलपदार्थोंमें मिलानेसे
परन्तुवेमनुष्यवाकिसीकोकाटैं अथवाभोजनमेंखालेनेसेदोषकर-
नेवालेहोजातेहैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब
इसजगत्का प्रलयहोताहै तोकिसप्रकारसे होताहै उत्तर जिस
प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थोंसे रचनास्थूलकीहोतीहै उसीप्रकारसेप्र-
लयभीजगत्का होताहै जिस्से जोउत्पन्नहोताहै वहसूक्ष्महोकेअ-
पनेकारणमेंमिलताहै जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके
परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनीहै इनपरमाणुकाजबवियोगहोता
है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजातीहै वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजा-
नना आकाशसेपृथिवीपञ्चगुणीहै जबएकगुणीघटेगी तबजलरू-
पहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटेंगे तबअग्निरूपहो
जांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटेंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे
भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकोजबसू-
क्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाश
कीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय
होतीहै तबएकपरमेश्वरऔरसबजगत्काकारण जोपरमेश्वरका
सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्य वालाएकअद्वि-

तीयपरमेश्वरहीरहेगा औरकोईनहीं सोयहसब आकाशादिक जगतपरमेश्वरकेसामनेकैसाहै किजैसाआकाशकेसामनेएकअणु भीनहीं इस्से किसीप्रकारकादोष उत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयमें परमेश्वरमेंनहीं आता इस्से सबसज्जनलोगोंको ऐसाहीमानना उचितहै प्रश्न जन्मऔरमरणादिककिसप्रकारसेहोतेहैं उत्तर लिंगशरीरऔरस्थूलशरीरका संयोगसेप्रकटकाजोहोना उसकानामजन्महै औरलिंगशरीर तथास्थूलशरीरकेवियोगहोनेसे अप्रकटकाजोहोना उसकानाममरणहै सोइसप्रकारसे होताहै कि जीवअपनेकर्मोंके संस्कारोंसेघूमताहुआ जलवाकोईऔषधिमें अथवावायुमेंमिलताहै फिरजैसाजिसके कर्मोंकासंस्कार अर्थात्सुखवादुःख जितनाजिसकोहोनाअवश्यहै परमेश्वरकी आज्ञाकेअनुकूल वैसेस्थानऔरवैसेहीशरीरमें मिलकेगर्भमें प्रविष्टहोताहै फिरजिसमें वहमिला उसकेअवयवोंको आकर्षणसे शरीरबनताहै जैसीकोपरमेश्वरने युक्तिरचीहै जिसकेशरीरका वीर्य्यहोगा उसवीर्य्य में उसकेसबअङ्गोंसेसूक्ष्मअवयवआतेहैं क्योंकिसबशरीरकेअवयवोंसे वीर्य्य कोउत्पत्तिहोतीहै फिरउसवीर्य्यकेअवयवोंमें उसशरीरके अवयवमिलतेजातेहैं उनसेशिर,नेत्र,नासिका,हस्त,पादादिक,अवयव बढ़तेचलेजातेहैं जबवहशरीर,नख औरसिखापर्यन्तपूर्णबनजाताहैं तबवहजीवशरीरमें सबअवयवों सेचेष्टाकरताभया शरीरसहितप्रकटहोताहै फिरभीअन्नपानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों कोवृद्धिहोतीहै सोछःविकारवालाशरीरहै अस्तिनामशरीरहै १ जायतेनामजन्मकाहोना २ वर्द्धतेनामबढ़ना ३ विपरिणमतेनामस्थूलकाहोना ४ अपक्षीयतेनामक्षीणहोना ५ विनश्यतेनाम नष्टकाहोना नाममृत्युकाहोना ६ एछःविकारशरीरकेहैं फिर जबमरणहोताहै तबस्थूलऔरलिंगशरीरकावियोगहोताहै सो स्थूलशरीरसेलिंगशरीरनिकलके बाहरकाजोवायुउसमें मिल-

ताहै फिरवायुकेसाथ जहांतहांघूमताहै कभीसूर्य्यकेकिरणोंके साथऊंचे औरचन्द्रकीकिरणोंकेसाथनीचेआजाताहै अथवावायु केसाथनीचेऊपर औरमध्यमेंरहताहै फिरउक्तप्रकारसे शरीर धारणकरलेताहै प्रश्न स्वर्गऔरनरकलोकहैंवानहीं उत्तर सब कुछहै क्योंकिपरमेश्वरकेरचेअसंख्यातलोकहैं उनमेंसेजिनलोकों मेंसुखअधिकहै औरदुःखथोड़ा उनकोस्वर्गकहतेहैं तथाजिनलो- कोंमेंदुःखअधिकऔरसुखथोड़ाहै उनकोनरककहतेहैं औरजिन लोकोंमेंसुखऔरदुःखतुल्यहैं उनकोमर्त्यलोककहतेहैं इसप्रकार केस्वर्ग,मर्त्य औरनर्कलोक बहुतहैं उनमेंभी अनेकप्रकारके स्था- नऔरपदार्थहैं किजिनमेंसुखवादुःखअधिकवान्यूनहै सोइसीहेतु परमेश्वरने सबप्रकारकेस्थानऔरपदार्थरचेहैं किपापीपुण्यात्मा औरमध्यस्थजीवोंकोयथावत्फलमिलै अन्यथानहोय जैसेकिरा- जाकेउत्तममध्यमऔरनीचस्थानहोतेहैं जिनमेंउत्तम मध्यमऔ- रनीचोंकोयथावत व्यवहारकोव्यवस्थाहोतीहै परमेश्वरकायथा- वत्अखण्डितसंपूर्णजगत्मेंराज्यहै औरयथावतन्यायसे जिसको व्यवस्थाहै फिरपरमेश्वरके राज्यमेंस्वर्गनर्क औरमर्त्यलोकादि- कोंकीव्यवस्थाकैसेनहोगी किन्तु अवश्यही होगी प्रश्न मरणसमय मेंयमराजकेदूतआतेहैं उसजीवकोजालमेंबांधलेतेहैं बांधकेमा- रते२यमराजकेपासलेजातेहैं औरयमराजयथावत्न्यायसे दण्ड देतेहैं यहबातसत्यहै वामिथ्याहै उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकि जीवअत्यन्तसूक्ष्महै जालसेबांधनेमें कभीनहींआता और गरुड़ पुराणादिकोंमेंलिखाहै किपिण्डदेनेसे जीवकाशरीरबनजाताहै औरवैतरणीनदीकेतरनेकेहेतु गोदानादिककरनाचाहिए और यमकेदूतोंकाकज्जलकेपर्वतकीनांई शरीरलिखाहै वेनगरकेमा- र्गऔरघरकेदरवाजेभीतर जीवकेपासकैसेआसकेंगे चिवँटीआ- दिकसूक्ष्मछिद्रमें एककालमें अनेकजीवमरतेहैं वहांकैसेजायेंगे तथावनवानगरादिकोंमें अग्निकेलगनेऔरयुद्धसे एकपलमें बहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकडनेकेहेतु बहुतदूतजाते हैं उतनेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहोनाकैसेबनसकै सोयहबात अत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज तथा धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्यकेभीहैं इससे क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमें परमेश्वरनेरचीहै वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजानाऔरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजोकर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाणहैं, उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछस्मृतिलिखदियाहै परन्तु फिरभीलिखतेहैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा॥ २ ॥ जन्माद्यस्ययतः ॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगतउत्पन्नहोताहै उत्पन्नहोकेउस परमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगतजीताहै औरप्रलयमेंउसीपरमेश्वरमें लीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजाननेकीइच्छाहै भृगोतूं करयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सवितारंप्रथमेऽहनि, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदकी संहितामेंलिखेहैं इनकायहअभिप्रायहै किजीवजब शरीरछोडताहै तबसूर्य्य वावायुमें मिलताहै फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहीजाताऔरआताहै सोसबबातवहां लिखीहै देखाचाहै सो देखले। अन्नेनसोम्यशुङ्गेनापोमूलमन्विच्छअद्भिः सोम्यशुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूलाःसोम्येमाःप्रजाः। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्यकीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसेउत्पत्तिजगतकीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभी होताहै शुङ्गनामकार्यकापृथिवीरूपजोकार्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल, अग्नि

मेंअग्निवायुमें वायुआकाशमें औरआकाशपरमेश्वरमें सोजिस प्रकारसे प्रलयकोलिखा उसीप्रकारसे होताहै औरहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेइति यहमन्त्रपहिलेलिखाहै औरइसकाअर्थभीलिख दियाहै सोपरमेश्वरहो सबजगत्काधारणकर्त्ताहै अन्यकोईनहीं इस्से ऐसासिद्धभयाउत्पत्तिधारण औरप्रलयपरमेश्वरहीकेआधी- नहैं यहसंक्षेपसे जगत्कीउत्पत्ति स्थिति औरप्रलयकेविषयमेंलि- खा औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें देख लेवैं इसकेआगे विद्या,अविद्याबन्ध औरमोक्षकेविषयमेंलिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ८ ॥

अथविद्याऽविद्याबन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः । वेत्तियनयाय- थार्थान्पदार्थान्साविद्या विद्याइसकानामहै किजोजैसापदार्थहै उसकोवैसाहीजानना नवेत्तिअनयायथार्थान्पदार्थान्साअविद्या जैसापदार्थहै उसको वैसा न जानना उसका नाम अविद्या है ज्ञानविवेकऔरविज्ञान इत्यादिक विद्याके नामहैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्याकेनाम हैं। अनित्याशुचि- दुःखानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ १ ॥ यहपतञ्ज- लिमुनिका योगशास्त्रमेंसूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किअनित्य अशुचिदुःख औरअनात्माये जैसेहैं वैसेनजानना किन्तु इनमेंनि- त्यशुचिसुखऔरआत्माकोबुद्धिहोतीहै जैसेकि,अमरानिर्जरादेवा इत्यादिकवचनोंसे नित्यनिश्चयकाजोकरना किस्वर्गादिलोकऔर ब्रह्मादिकदेवनित्यहैं ऐसाअज्ञान बहुतमनुष्योंकोहै परन्तुवेवि- चारकरकेदेखें किजिनकीउत्पत्ति होतीहै वेनित्यकैसेहोंगे कभी

नहीं क्योंकिमङ्गतपदार्थों केसंयोगसेजोपदार्थहोताहै सोउनपदा-
र्थों केवियोगसे वहजोसंयोगसे बनाथा सोअवश्यनष्ट होजायगा
ब्रह्मादिकोंकेशरीरऔरस्वर्गादिक सबलोकसंयोगसेबनेहैं उनका
वियोगसेअवश्यनाशहोताहीहै फिरजोइनअनित्यपदार्थोंमें नि-
त्यनिश्चयहोता औरनित्यजोपरमेश्वर तथापरमेश्वरके नित्यगुण
धर्मऔरविद्याउनकोनित्यनजानना कभीउनकेजाननेमें इच्छाभी
नहोनी यहअविद्याकाप्रथमभागहै औरअनित्यपदार्थोंकोअनित्य
जानना तथानित्यपदार्थोंकोनित्यजानना यहविद्याकाप्रथमभा-
गहै अशुचिअपवित्रनाम अशुद्धपदार्थोंमें शुद्धकानिश्चय होना
औरशुचिजोपवित्रअर्थात्शुद्धपदार्थमें अशुद्धकानिश्चयहोना जै-
सेकियहशरीरइसमें सबमार्गोंसे मलहीनिकलताहै कान,आंख,
नाक,मुखतथानीचेकेछिद्र औरलोमोंकेछिद्रोंसेभीदुर्गन्धही नि-
कलताहै परन्तुजिनकीबुद्धिविषयासक्तिहोतीहै वहशुद्धबुद्धिहीउ-
समेंकरताहै तथास्त्रीभीपुरुषके शरीरमेंशुद्धबुद्धि करतीहै ऊपर
केचामको देखकेमोहितहोजातेहैं फिरअपनाबल,बुद्धि,पराक्रम
तेज,विद्या,औरधनउसकेहेतुनाशकरदेतेहैं जोउनकीउसमें प्रष्ट-
त्तबुद्धिनहोती तोऐसेकाममेंप्रवृत्तनहोतेसोबड़े २राजाऔरबड़े२
धनाढ्यऔरमहात्मालोगतथामिथ्याविरक्तलोगजोहैं वेइसकाममें
नष्टहोजातेहैंकभीउनकेहृदयमेंइसबातकाविचारभीनहींहोताजैसे
अग्निमेंपतङ्गगिरकेनष्टहोजातेहैं वैसेवेभीऐश्वर्यसहितनष्टहोजा-
तेहैं औरपवित्रजोपरमेश्वरविद्या औरधर्मइनमें उनकीबुद्धिकभी
नहींआती यहअविद्याकादूसराभागहै औरजोशुद्धकोशुद्धजानना
औरअशुद्धकोयथावत्अशुद्धजानना यहविद्याकादूसराभागहै दुः-
खमेंसुखबुद्धिकाकरना औरसुखमेंदुःखबुद्धिकाहोना जैसेकिका-
म,क्रोध,लोभ,मोह, भय, शोक औरविषयोंकीसेवा इनमें जीव
कोशान्तिकभीनहींआती जैसेकिअग्निमें घीडालनेसे अग्निबढ़-
ताजाताहै वैसेउनकीभीतृष्णा बढ़तीजातीहै परन्तुउससे दुःखमें

बहुतजीवोंको सुखबुद्धिदेखनेमें आतीहै क्योंकिउनदुःखमें सुखबुद्धिनहोती तोवेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है औरजोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिका उपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमें इनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आती इनकेबिनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु विपरीतबुद्धि केहोनेसेदुःखहीमें फसरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्या कातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामें आत्मबुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमें यहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुबलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवान्हूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमेंदेखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमाण्वादिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमेंइनकीबुद्धिकभीनहीआती नित्यसुखजोमोक्ष इसकी इच्छाभीकभीनहींहोती इससे जन्म, मरण, क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्मा जानना यहविद्याकाचौथाभागहै इसमें क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथोन्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै विद्याअविद्याकीउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु चाहताहै तबमनकोबाहरकीओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहरकेपदार्थोंमें लगाकेप्रवृत्तकरदेताहै सोजैसेकोईपुरुष निशानेमेंतीरवागोलीलगायाचाहताहै तबवहभीतरसेबाहरको ओरध्यानकरताहै सोनेत्रकोवन्दूकके मुखसेलगाके निशानेमें लगादेताहै वैसेहीजोर व्यवहारजीवकियाचाहताहै तबउसीप्रकारका व्यवहारजीवमेंभीहोताहै फिरबाहरऔरभीतरके पदार्थों को यथावत् न जाननेसे जीवभ्रमयुक्तहोके अन्यथा जानलेता है उससे फिरदृढ़संस्कार अन्यथाहोनेसे अविद्याकेहातेहैं सोनअपने स्वरूपकाकभीध्यानकरताहै नपरमेश्वरका तथानविद्याका किन्तु जैसेवेमिथ्यासंस्कारउसकेहैं उसीमेंगिरारहताहै क्योंकिजसाजिसकाअभ्यासकरेगा वैसाहीउसजीवकोभासतारहेगा फिर जबतकयह अविद्याजीवमेंरहैगी तबतकउसको विद्याकभीनहीं होती परन्तु जबकभीअच्छासंग औरसद्विद्याकाअभ्यास तथाविचारऔरधर्मकाअनुष्ठान तथाअधर्मका त्यागकभीनहीं वहजीव करसक्ता औरयथार्थतत्त्वज्ञानपदार्थोंका उसकोकभीनहींहोता जबतकयहअविद्याजीवकोरहतीहै तबतकविद्याकासाधनऔरविद्याप्राप्तनहींहोती क्योंकिजबजीव सुविचार करताहै तबउसको कुछ२ विवेकउत्पन्नहोताहै किसत्यकोसत्यऔरअसत्यकोअसत्यजानना फिरअविद्याकेगुणऔरउनकेकार्य उनमेंवैराग्यहोताहै अर्थात् उनकोछोड़ताहैऔरविद्यादिकजोसत्यार्थउनमेंप्रीतिकरताहै इनमेंयहकारणहै किजबतकपदार्थोंकादोषनहीजानता तबतक उनकेत्यागकरनेकीबुद्धिजीवकोकभीनहींहोती क्योंकित्यागकाहेतु दोषोंकायथावत्देखनाहीहै तथापदार्थोंकेगुणकाजोज्ञानहोना सोईप्रीतिकाहेतुहै फिरवहजीवधर्माधर्म कायथावत्निश्चयकरके अधर्मकात्यागऔरधर्मकाग्रहणकरेगा फिरउसकामनभ्रान्तहोगा किविद्या, धर्म, सत्सङ्ग, सत्पुरुषोंकासंग, योगाभ्यास, जितेन्द्रियता, सत्पुरुषोंकाआचार, मोक्ष औरपरमेश्वर इन्हीमें मनप्रीतियुक्तहोकेस्थिरहोजायगा इनमेविरुद्धअविद्याअधर्मकुसंग किकुपु-

कर्षोंकासंगविषयोंकाअत्यन्तअभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषोंका आचार जिसमें नहोय औरपरमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकाकरना इनसेउसकोमनहटजायगा इसकानाम शमहै फिरसबइन्द्रियांस्थिरहोजायगी इसकानाम दमहै फिर अविद्यादिकजितनेदुष्टव्यवहार उनमेंउनकोनामिंष्टथकहोजायगा अर्थातउनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरतिहै फिरशीत, उष्ण,सुख,दुःख,हर्ष,शोच,औरक्षुधा,तृषादिकइनकासहनअर्थातइनमें हर्ष वाशोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षाहै फिरविद्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धाअर्थात् प्रीतिजीवकीहोतीहै अविद्यादिकदोषोंमेंसदाअप्रीतिइसकानामहै श्रद्धाफिरमनबुद्धिचित्त,अहङ्कार,इन्द्रियऔरप्राण एसबउसकेवशीभूतहोजायगे उनकोजहांस्थिरकरेगा वहींसबस्थिररहैंगे औरअविद्यादिक अनर्थमें कभीनजायगे इसकानाम समाधानहै एछः गुणजीवमें उत्पन्नहोगें फिरजैसेक्षुधातुर पुरुषकोइच्छा अन्नहीमें रहतीहै वैसे उसकामनमुक्तिहीमेंरहेगा किमेरीमुक्तिकबहोगी इससे भिन्नव्यवहारोंमेंउसकामनलगेहीगानहीं इसकानाममुमुक्षुत्वहै येनव विवेकादिकगुणजबजीवमें होतेहैं तबवहब्रह्मविद्याका अधिकारी होताहै फिरवहसबसत्यशास्त्रोंका जोसत्य२पदार्थ विद्यारूप विषयउसकोयथावतजानेगा फिरशास्त्रजिनपदार्थोंकेप्रतिपादनकरतेहैं उनपदार्थोंकेसाथशास्त्रोंकाप्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको वहजीवयथावत्जानलेगा इसकानामसम्बन्धहै फिरवहयथावत् विद्याओंकाश्रवणकरेगा श्रवणकरकेज्ञाननेचसेउनकायथावतविचारकरेगा इसकानाममननहै औरफिरउनपदार्थोंको यथावत् प्रत्यक्षज्ञाननेकेहेतु योगाभ्यास अर्थातपातञ्जलदर्शन की रीति से करेगा इसकानामनिदिध्यासनहै फिरपृथिवीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त सबपदार्थोंकाज्ञाननेचसेप्रत्यक्षज्ञानकरेगा उसीसमयइसकाजोप्रयोजन किसबदुःखोंकोनिवृत्ति औरपरमानन्द परमेश्वर

कीजोप्राप्ति इसकानामप्रयोजनहै सोजबयहविद्याहोगी तबअविद्यादिकसबदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारनष्ट होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी नांई परस्परविरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्यावान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अविद्यावान्गा उसकीनिश्चितबुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनलगेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वासबपीछेरचीगईहैं उत्तर चारवेदोंकोछोड़केरचीगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसबशास्त्ररचेगए हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक सनातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तकका सत्य वा असत्यनिश्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोतो तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य जोवलोगजानसके फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरचलेगा ऐसेदूसरेका करकेतीसरा ऐसेहीअनवस्थाआजायगी प्रश्न जैसेअन्यपुस्तकका प्रमाणवेदसेहोताहै वैसे वेदकाप्रमाण किसपुस्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसेभीअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिवेदकेप्रमाणकेहेतु कोइअन्यपुस्तकरक्खीजाय तोफिरउसपुस्तककेप्रमाणकेहेतु कोईतीसरीभी मानीजायगी ऐसेही२ आगे२ अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहिए जिससे किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्य२रहै सोवेदकेसनातनहोनेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीविचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमें बड़े२ विरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मऔरकर्महीपदार्थहैं इनसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन मेंपरमाणुसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासांख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें परमेश्वरसे सबजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परविरोधहै

सबशास्त्रोंमें इसकाक्याउत्तरहै उत्तर वेदान्तमें प्रथमसृष्टिका
व्याख्यानहै किउस्से पहिलेजगत्थाहोनहीं औरजबअत्यन्तसबका
प्रलयहोगा तबपरमेश्वरहोमें लयहोगा अन्यमें नहीं सोयहआ-
दिसृष्टिहै क्योंकिपहिलेनहींथो औरफिरउत्पन्नभई इस्से इसस्-
ष्टिकेआदिहोनेसे सादिकहातीहै औरमीमांसादिकशास्त्रोंमें अ-
नादिसृष्टिकाव्याख्यानहै क्योंकिप्रकृतिपरमाणुऔरधर्म धर्मी इ-
नकानाशप्रलयमें भोनहींहोता इसकानाममहाप्रलयहै इसमें
प्रकृतिपरमाण्वादिकोंकेमिलनेसे जितनास्थूलजगत्होताहै वह
सबपरमाण्वादिकोंके वियोगसेसबनष्टहोजाताहै परन्तुप्रकृतिऔ
रपरमाण्वादिकबनेरहतेहैं फिरभीजबईश्वरउनकोमिलाकेजग-
त्कोरचताहै तबयहस्थूलसबहोजाताहै फिरउनसेस्थूलजगत्उ-
त्पन्नहोताहै फिरजबनष्टहोताहै तबप्रकृतिऔरपरमाणु रूपहो-
ताहै फिरउनसेस्थूल जगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहोअनेकवारउत्प-
त्ति औरअनेकवार जगत्काप्रलयहोताहै परन्तु प्रकृतिऔरपर-
माणु इसस्थूलकाजोकारणसोनष्टनहीं इस्से महाप्रलयमें आदि
इसजगत्की नहींदेखपड़ती क्योंकिइसकाकारण प्रकृतिऔरपर-
माणुसदाबनेरहतेहैं इस्से जगत्अनादिकहाताहै कभोकारणरूप
होजाताहै कभीकारणसे स्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहोप्रवाह
रूपउत्पत्ति औरप्रलयकेहोनेसे अनादिजगत्कहाताहै सोयहज-
गत्कबउत्पन्नभया ऐसाकोईनहींकहसक्ता इस्से यहआयाकिपां-
चशास्त्रोंमें महाप्रलयकी व्याख्याहै इसमें भोअनेकभेदहैं किजब-
रेणुतकजबप्रलयहोताहै तबधर्मऔरधर्मी कुछ२प्रसिद्ध रहताहै
इसप्रलयकीव्याख्यामीमांसामेंहै औरजबअणुपर्यन्तकानाशहोता
है तबपरमाणुमात्रजगत्रहताहै सोभीमहाप्रलयभेदहै यहव्या-
ख्यावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शनमें है औरजबपरमाणुकोभीसू-
क्ष्मावस्था होतीहै तबअत्यन्तसूक्ष्मजोप्रकृतिसोरहजातीहै औरपर
माणुकाभीलयहोजाताहै क्योंकिशब्दादिकतन्मात्राओंकोभी सां-

ख्यशास्त्रमें उत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकीनहीं इस्से यहअनुमान्
सेजानाजाताहै किप्रकृतिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै सोयहव्याख्यानपा-
तंजलदर्शन औरसांख्यदर्शनमें कियाहै औरवेदान्तमें प्रकृत्यादि
कोंकीउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकालयभी परमेश्वरमें होताहै
इस्से उत्पत्तिकेविषयमें भिन्न२पदार्थोंकेव्याख्यानहोनेसे कुछवि-
रोधपरस्परइनमें नहीहै प्रश्न पूर्वमीमांसा औरसांख्यमें ईश्वर
कोनहीमाना है औरअन्यशास्त्रोंमें मानाहै इस्से विरोधआताहै
उत्तर इसमेंभीकुछविरोधनहीं क्योंकिमीमांसामें धर्म औरध-
र्मीदोपदार्थमानेहैं इस्से हीईश्वरधर्मी औरईश्वरके सर्वज्ञादिक
धर्मअवश्य मानलियाहै इसमें कुछ सन्देहनहीं औरवेदकोजै-
मिनीजीनित्यमानतेहैं सोवेदशब्दज्ञानरूपकेहोनेसेगुणहै सोगु-
णीकेबिनागुणकिसमेंरहैगा इस्से ईश्वरको उसनेअवश्यमानाहै
औरसांख्यमें ईश्वरासिद्धः ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्ततासिद्धिः ॥ २ ॥
सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥
मुक्तात्मनःप्रशंसाउपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ एपांचसांख्यशास्त्रमें क-
पिलजीकेकिएसूत्रहैं यहीअनीश्वरवादकाकारणहै इनकोयथाव-
त्नजानके चार्वाक औरबौद्धादिक बहुतअनीश्वरवादी होगएहैं
इनकेअभिप्रायनहीजाननेसे इनकायहअभिप्रायहै किईश्वर की
सिद्धिनहीहोती किन्तुएकपुरुष औरप्रकृतिदोनोंनित्यहैं अन्यत-
हीं ॥ १ ॥ क्योंकिप्रत्यक्षप्रमाणनहोनेसे ईश्वरसिद्धनहींहोता प्र-
त्यक्षप्रमाणसेजोसिद्धहोतातोईश्वरमानाजाता अन्यथानहीं २॥
लिंगऔरलिंगीअर्थातचिन्ह औरचिन्हवालेकानित्यसम्बन्ध होता
है सोलिंगकदेखनेसेलिंगीकाअनुमानहोताहै फिरईश्वरकालिं-
गनामचिन्हकोईजगतमें देखनहीपड़ता इस्से ईश्वरमेंअनुमान
भीनहींबनता ३ ॥ ईश्वरजोमोहितहोगा तोअसमर्थकेहोनेसेज-
गतकोकभीनहोरचसकेगा औरजोमुक्तहोगा तोउदासीनकेहोने
से जगत्केरचनेमें ईश्वरको इच्छाभी नहोहोगी इस्से ईश्वरमें

शब्दप्रमाणभीनहींबनता॥ ४॥ फिरवेदमें सईश्वर इत्यादिकश्रुति ईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीहैं उनकी क्यागतिहोगी कि सबश्रुति विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्मसेसिद्धजोजीवहोताहै किअणिमादिकऐश्वर्यवाला उसकीप्रशंसाऔरउपासनाकीवाचकहै इससे ईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहींहोती ऐसेअर्थकोविपरीतजानके मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तु कपिलजीकायहअभिप्रायहै किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभीपुरुषकेहैं उसपुरुषचेतनसेभिन्नकोईईश्वरनहींहै पुरुषकानामही ईश्वरहै इससेयहआयाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवादीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै औरविद्यातथाअविद्याकीपरीक्षा उनकेपढ़नेऔरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़नेवाले तथानहींपढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और ज्ञानादिकव्यवहारअच्छाहीदेखनेमें आता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़ना सोविद्याकोप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुविद्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मका ग्रहणकरै अन्यथापढ़नाऔरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अन्धन्तमःप्रविशन्तियेविद्यामुपासते ततोभूयइवतेतमोयउविद्यायारताः॥ १ ॥ विद्याञ्चाविद्यांचयस्तद्वेदोभयंसह अविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्ययाऽमृतमश्नुते॥ २ ॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्ययाः इतिशुश्रुम धीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३ ॥ यजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इनकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धकारअर्थातजन्म,मरण,हर्ष, औरशोकादिकदुःखसागरमें प्रविष्टरहतेहैं इससे पृथक नहींहोसके औरविद्याअर्थात् नानाप्रकारके *कर्मोंसे विषयभोगोंकीचाहनाकरना तथायोगाभ्यास,तप और संयमसे अणिमादिकसिद्धियोंमें फसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

भ्रमादिकदोषोंसेयुक्तहोनाइसमें जोरतरहतेहैंवेउनकर्मोंलोगों
सेभी अत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउससेबड़ु-
तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु विद्याऔरअविद्याकोएकसाथजान
लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालेदोनोंहैं इससे दोनोंकानाम अवि-
द्याहै जोकर्मधर्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान
सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्‌सन औरजीवहोके
शुद्धहोजातेहैंफिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकोजोप्रा-
प्ति इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर
मेंकभीनहींगिरता॥२॥ इससेविद्याजोनिर्भ्रमज्ञानइसकाफलभि-
न्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउ-
सकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोविद्याऔरअविद्याकाफलभि-
न्न२है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ
वक्ता उननेहमारेसाम्हनेयथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इ-
नमेंभ्रमनहीहै ॥ ३ ॥ सोसबमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषा
र्थसेविद्याकीइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअविद्याकोछोड़ैं क्यों-
किइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाविद्याकेबिनाइस
लोकवापरलोकमें कुछसुखनहीहोता औरअनेकजन्मधारणकर्ता
है उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती
इसकीप्राप्तिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकोनाम
मात्रयहांगणनाथोड़ीसीकरतेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्या-
श्रमजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोके यथावत्विद्या
ग्रहणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्जानैं फिरविवाहकरैं प-
रन्तुविद्याभ्यासकोनछोड़ैं औरनित्यगुणग्रहणकीइच्छारक्खैं अ-
त्यन्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलैं मिलकेउनको
सेवापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभीजितनीबुद्धि उतनानित्य२विचार
करैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको
छोड़ैं एकान्तसेवनसेअपनी इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

नुष्ठानमेंनिश्चितरक्खैं अधर्ममेंकभीनहीं। यथाखनन्खनित्रेण-नरोवार्यधिगच्छति तथागुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति॥ यह मनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजोपुरुष अभिमानादिक दोषरहित औरनम्रतादिकगुणयुक्तहोके सेवासेदूसरेकाचित्तप्रसन्नकरदेताहै सोईश्रेष्ठगुणोंकोप्राप्तहोताहै अन्यनहीं इसमेंयह दृष्टान्तहै किजैसेंभूमिकोखोदतारकुदालीसेनीचेचलाजाय फिर वहजलकोप्राप्तहोताहै वैसेहीशुश्रूषुअर्थातकपटादिकदोषरहित औरदूसरेपुरुषकोपरिज्ञाजानताहोय किइसमेंगुणहैंवा नहीं फिरयथावत्गुणोंकाबुद्धिसेनिश्चयकरले किइसमेंएसत्यगुणहैं पीछेजिसप्रकारसेवेगुणमिलें उनसेवादिकप्रकारोंसे गुणोंकोअवश्य ग्रहणकरैं ग्रहणकरकेगुणोंकोप्रकाशकरदे औरजोकोईउनगुणों कोग्रहणकियाचाहै उसकोप्रीतिसेनिष्कपटहोके यथावत्गुणोंको देदे क्योंकिगुणोंकोगुप्तकरना कोईमनुष्यकोउचितनहीं औरजो गुणोंकोगुप्तरखताहै वहबड़ामूर्खपुरुषहै औरधर्मतथापरमेश्वर काअत्यन्तविरोधीहै वहकभीसुखनपावैगा इत्यादिकविद्याकीप्राप्तिकेहेतुहैं औरयहीअविद्या नाशकेहेतुहैं अन्यभीअनेक प्रकारके हेतुहैं उनकोविचारलेना औरइसकेआगेबन्ध औरमुक्तिकाव्याख्यानकियाजाताहै। पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यतिनान्तरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्। यहकठवल्लीकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किपराञ्चिखानिअर्थातबहिर्मुख इन्द्रियजिसकीहोतीहैं वहजीवबाहरकेपदार्थोंहीकोदेखतारहताहै औरभीतरकेपदार्थोंकोवाअपने स्वरूपको कभीनहींविचारता अथवापरमसूक्ष्मजोपरमेश्वर उसकेविचारमें कभीजीवकाचित्तनहींजाता इस्से जीवकोपदार्थों कायथार्थज्ञानतोनहीहोता किन्तुअत्यन्तदृढ़ भ्रमहोताहै उस्से आपसेआपहीबद्धहोताहै फिरऐसामोह उसकोहोताहै किजिसकाछूटनाबहुतकठिनहै उस्से फिरमिथ्याज्ञानहोताहै किजोपुरु

धन,राज्यादिकोंहीमें सुखमानलेताहै फिरउनकेसुधरनेमेंअत्यन्तहर्षितहोताहै औरबिगड़नेसे शोकयुक्तहोताहै इसजालमेंगिरके अनेकजन्ममरणजीवकेहोतेहैं औरअत्यन्त दुःखपाताहै प्रश्न जन्मएक होताहै अथवाअनेक उत्तर अनेक जन्महोतेहैं प्रश्न जो अनेकजन्महोतेहैं तोपूर्वजन्मोंकाहमकोस्मरणक्योंनहींहोता उत्तर पूर्वजन्मोंकास्मरणनहींहोसक्ता क्योंकिपूर्वजन्मज्ञानकेजोनिमित्तहैं वेसबनष्टहोजातेहैं इस्से पूर्वजन्मका स्मरणनहीं होसक्ता प्रश्न कौनवेनिमित्तहैं औरनिमित्तकिसकोकहतेहैं उत्तर निमित्तइसकानामहै किजोदूसरेकेसंयोगसे उत्पन्नहोताहै जैसेकिजल शीतलहै औरअग्निउष्णहै जबअग्निकासंयोगजलमेंहोताहै तब जलउष्णहोजाताहै परन्तुजबअग्निसे जलपृथक्‌कियाजाताहै तब फिरभीवहशीतल होजाताहै इसकानाम नैमित्तिकगुणहै जोकि जबतकउसकानिमित्तरहताहै तबतकवहरहताहै औरजबनिमित्तनहींरहता तबउसकानिमित्तसे उत्पन्नभयाजोकिगुणसोभीनष्ट होजाताहै जैसेसूर्य्य औरनेत्रसे रूपकाग्रहणहोताहै जबसूर्यऔर नेत्रनहींरहतेतबरूपकाभीग्रहणनहींहोता क्योंकिनिमित्तकेबिना नैमित्तिकगुणनहींहोताइस्सेक्याआयाकिपूर्वजन्मजिसदेशजिसकालमें औरजोशरीर तथाउसशरीरकेसम्बन्धीसबपदार्थनष्टअर्थात उनकावियोगहोनेसे वहांकाजोउनकोज्ञानथासोभीनष्टहोजाताहैऔर इसीजन्ममेंजो२बाल्यावस्थामें व्यवहारकियाथाउस्से सुखवा दुःखपायाथा उसकाभीयथावतस्मरण वृद्धावस्थामेंनहींरहताऔर जिससमयकिसीसेकिसीकीबातहोतीहै तबउसबातमेंअनेकअक्षर, पद,वाक्य,सम्बन्धकहेऔरसुनेजातेहैं परन्तु उसके उत्तर कालमें स्मरणकहनावासुनना यथावत्‌नहींबनता औरकोईबात कण्ठस्थ करलेताहै फिरकालान्तरमें उसकोभीभूलजाताहै एकबातमेंजब जीवकाचित्तहोता तबदूसरेमेंनहींजाता दूसरेमेंजबजाताहै तब पहिलेकोभूलजाताहै जबऐसीबातहैतोजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंका

जोकहतेहैंउनकीशंकाव्यर्थहीहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मका ज्ञानक्योंनहींहोता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसोनहींहोता इससे पूर्वजन्मनहींहैं उत्तर इसकाउ-त्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासलेकेवृ-द्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहैवासुने व्यवहारों में अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहींहो ता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्पर बातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुतर बातोंके सुनने वाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहींरहता फिरजन्मान्तरके स्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहीहै औरदेखनाचाहिए किजागृतावस्था मेंवेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकरतेहैं यहमेरावर,द्वार,पि-ता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावत स्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयवि-स्मरणहोजाताहै फिरजबसुषुप्तिहोतीहै तबदोनोंकाव्यवहारविस्मृ-तहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित २ देश औरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै फिरपूर्व जन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूटजातेहैं फिरउनके स्मरणकीशंकाजोकरतेहैं सोविचारवाननहींहैं प्रश्न यहजन्मजोहो ताहैसोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहीं क्योंकियहदूसराजीवहै सोनया२उत्पन्नहोजाताहैऔरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिले शरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमि-थ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहीं दे-खपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआता है फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृ-त्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढ़े औरकोईअंगरेजीकोजोजि-सकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तेहैं साक्षातदेखने औरसुननेसे अन्यज्ञानहीं फिरकालान्तरमें
कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोपूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कार
सेस्मृतिहोतीहै है कियहप्रकार वायकारहै औरइसका यहअर्थ
है क्योंकिमैंनेपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा विनासंस्कारके
स्मृतिकभीनहींहोती औरविनास्मृतिसेयहऐसाहीहै वानहीं ऐ-
सीप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहींहोती सोएकहीजन्महोता तोजन्म
समयसेलेके बालकोंकेअनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे
क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर
दुग्धपीनेकीयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रा
दिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फि-
रउससे रोदनादिककीप्रवृत्तिऔरप्रीतिवाला उनसेहासऔरप्रस-
न्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहारविनापूर्व-
जन्मकेसंस्कारसेकभीनहींहै।सक्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचा-
हिए प्रश्न एसवव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता
है औरजलनीचेकोवैसेहीवेसवजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे हो-
तेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोंगेतोपूर्वकहे अनुभव संस्कारऔर
स्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़देओ औरजोछोड़ोगेतोको-
ईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीवातों
केछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीवातोंकाउपदेशक्योंकरते औरक-
रातेहोऔरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकोनिवृत्तिकभींनहींहोगी
जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकोनिवृत्तिनहींहोती वैसेप्रवृत्तिको
स्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहीहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभाव
सेमानोगेतोप्रवृत्ति कभींनहीहोगी औरजोदोनोंको मानोगेतो
क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मतादोष आ-
जायगा क्योंकिअग्निकीनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहीहोती तथा
जलकीस्थूलकहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहीहोती वैसेहीस्वभा-
वसवजानों प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहीहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहारोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ईश्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहींरक्खी औरईश्वरअन्यायकारीभीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔरकिसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमेंजन्म तथाएककोबुद्धि बहुतअच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदेताहै तथाएकरूपवान्औरएककुरूपतथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔरदूसरामूर्खहोताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअपराधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपातकेआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्यागमश्च। एदोदोष आजांयगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है उसको हानि होजायगी फिर जन्मके नहो होने से जो शरीर, इन्द्रियां, प्राण, और मन के नही होने से पाप पुण्यों का फल कभींनहीं भोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो बिनाकिए सुखऔरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें आजांयगे किबिनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख यहबिषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृणानामदयानहींआतीइससेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा औरजोपूर्वतथा उत्तर जन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहींआवेगा क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्रहेगाइससेपूर्वऔरपरजन्म अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंकी संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरतेर चलेआतेहैं और जबतकमुक्तिनहोहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्यहीदेखपड़ताहै क्योंकिजोराजाको सुखवःदुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखैं तोसुख

वा दुःखसबको तुल्य होके खपडता है उत्तर ऐसा कहना योग्य नहीं क्योंकि इच्छाके अनुकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना सुख कहाता है और इच्छाके प्रतिकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना दुःख कहाता है सो हर्ष और प्रसन्नता सुखके पर्याय हैं और शोक तथा अप्रसन्नता दुःखके पर्याय हैं जबराजादिक धनाढ्योंके गर्भवासमें जीव आता है उसी दिनसे अनुकूल पदार्थोंका सेवन होता है फिर जन्म जब होता है तब अनेक ओषधादिक व्यवहारोंकी प्राप्ति होती है और विना इच्छाके भी अनेक पदार्थ अनुकूल प्राप्त होते हैं वह जब दूध पीनेकी इच्छा करता है तब विना इच्छासे भी मिश्री और सुगन्धादिकसे युक्त दूध यथेष्ट मिलता है और जब वह कुछ अप्रसन्नता रोने लगता है तब अनेक सेवक परिचारक लोग मधुर वचन और खिलौनेसे शीघ्र ही प्रसन्न कर देते हैं और फिर जब वह बड़ा होता है तब जिसके ऊपर दृष्टि करता है वह हाथ जोड़के अनुकूल वचन तथा अनुकूल व्यवहार करता है सदा प्रसन्न उसको सब लोग रखते हैं और वह रहता है फिर जब कभी दुःखी भी होता है तब अनुकूल वचन और ओषधादिकोंसे उसको प्रसन्न कर देते हैं और जो विद्यावानोंके गर्भवासमें आता है उसको भी अधिक सुख होता है परन्तु कोई कभी उनमेंसे नष्टबुद्धिके होनेसे दुःखी हो जाता है सो पूर्वजन्मके पापोंसे और इस जन्मके दुष्टव्यवहारोंसे पीड़ित होता है और जो मूर्ख वा दरिद्रके गर्भवासमें जीव आता है उसी समयसे उसको दुःख होने लगते हैं जब वह स्त्री घास वा लकड़ीको काटने लगती है तब गर्भमें प्रहारके होनेसे जीव पीड़ित होता है और कभी क्षुधातुर रहती है कभी बहुत कुत्सित अन्नको खा लेती है उससे भी उस जीवको अत्यन्त पीड़ा होती है फिर जब जन्म होता है तब कोई प्रकारका ओषध वा सुनियम तथा कोई परिचारक उस समय नहीं रहता किन्तु मार्ग वन वा खेतमें प्रायः पाषाणकी नांई गर्भसे बालक गिर पड़ता है फिर वह स्त्री उसको पोंछ पांछके वस्त्रमें बांधके पीठमें बांध लेती है फिर कभी उस स्त्रीको घास वा लकड़ी बिचनेको शीघ्रता

होती है उससमय बालक दूधपीनेके हेतु रोता है सो दूध तो उसको नहीं मिलता परन्तु वह स्त्री उस बालककोथपेड़ा मारती है फिर अधिक२ जब रोता है तब अधिक२ मारती है फिर रोता रहता है परन्तु दूध नहीं पिलाती फिर वह जब कुछ बड़ा होता है तब उसको यथावत् खानेको भी समयके ऊपर नहीं रहता फिर वह मजूरी करता है तो भी उसको यथावत् इच्छा के अनुकूल नहीं मिलता और सदा उसको सुखकी तथा उत्तम पदार्थों की प्राप्तिकी इच्छा होती है परन्तु प्राप्ति कभी नहीं होनेसे सदा दुःखी रहता है जो ऐसा कहता है कि सुख वा दुःख सबको तुल्य है सो पुरुष विचारवान नहीं है क्योंकि सुख वा दुःख प्रत्यक्ष ही अधिक वा न्यून देख पड़ते हैं प्रश्न जब पहिले२ ही सृष्टि भई थी तब उससे पूर्व जन्म तो किसीका नहीं था फिर उससमय अधिक वा न्यून राजा अथवा दरिद्रादिक क्यों भए थे इससे जाना जाता है कि जैसे पहिले जन्ममें भये थे इससे आजकाल पहिला ही जन्म है सो अधिक न्यून जानो परन्तु एक२ जन्म ही विचारमें आता है बहुत जन्म नहीं उत्तर आदिसृष्टिमें सब मनुष्य उत्पन्न भए थे न कोई राजा न कोई प्रजा न मूर्ख न पण्डित इत्यादिक भेद नहीं थे इससे आदिसृष्टिमें दोष नहीं आया प्रश्न जैसे आदिसृष्टिमें दुग्धपानादिक व्यवहार सुख और दुःख आदिक प्रवृत्ति वा निवृत्ति भई थी वैसे आजकाल भी होती है फिर वह जो आपने कहा कि अनुभवादिकोंसे विना प्रवृत्ति वा निवृत्ति नहीं होती सो बात विरुद्ध होगई उत्तर विरुद्ध नहीं होती क्योंकि आदिसृष्टिमें गर्भवाससे उत्पत्ति नहीं भई थी और किसीको बाल्यावस्था भी न थी किन्तु सब स्त्री और पुरुषोंकी युवावस्था ही ईश्वरने रची थी फिर वे उससमय अच्छा वा बुरा कुछ नहीं जानते थे जहां जिसका नेत्र अथवा बुद्ध्यादिक जिस बाह्यपदार्थमें युक्त भए उसको टक२ देखते थे परन्तु यह अच्छा वा बुरा ऐसा नहीं जानते थे परन्तु प्राण, शरीर अथवा इन्द्रिय इनमें चेष्टा गुण था ऐसा नहीं जानते थे कि ऐसी चेष्टा करनी वा न करनी फिर चेष्टा होने लगी बाह्यपदार्थों के साथ स्प-

शारीरिकव्यवहारहोनेलगे उनमेंसेकिसीनेकुछपत्तावाफूलवाघास स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादांतोंसे चबानेलगे उसमें सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी ऐसाकरनेलगा फिरकर्तै२ व्यवहारबढ़ताचला तथासंस्कारभीहोतेचले होते२ मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस समयकिसीकोपापवापुण्यनहींलगताथा वैसेहीआजकालभी पांच वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहींलगता फिरव्यवहारकर्तै२ अच्छा बुराभीकुछ२जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनेभीउक्तपुरुषोंकेद्वाराबेदविद्या काप्रकाशकिया वेदद्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेविचारा औरकिसीनेनविचारा परन्तुबहुतमनुष्य कुछ२ अच्छाबुरा जाननेलगे फिरआगे२मैथुनीसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको भीउपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपुण्योंसेव्यवहारभिन्न२होतेआएहैं सोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं इससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजोसंस्कारों सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे

प्रश्न परमेश्वरमें विषमतादोषतोआता है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको पश्वादिकशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वादिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनहींकिया भिन्न२कर्मकरनेसेभीयहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकेदेने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं इससे ईश्वरपक्षपातीनहींहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहींहै इससे जैसीउसकोइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा हीकरताहै परन्तुहमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमें नहींआता

उत्तर अपने२स्थानमें सबशरीरअच्छे हैंकोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रानहींरचा परन्तुउनकेपरस्परमिलनेसेकहींगुणहोजाताहै कहींदोषहोताहै सोजिससमयआदिसृष्टिभईथी उससमयमनुष्यों औरपशुआदिकोंमें कुछविशेष नहींथा विशेषतो पीछेसेभयाहै सो जितनेशरीररचेहैं वेसबजीवोंकेकर्म भोगकरनेकेहेतुरचेहैं सोईश्वरनरचतातो वेशरीर कैसेहोते इससेप्रथमजो ईश्वरने सबव्यवस्थाकररक्खीहै किजैसाजोकर्मकरै सोवैसाहीजन्मसुखव दुःखकोप्राप्तहोवै औरएक२बारबिनासंस्कारोंसेभीमनुष्यकाशरीरमिलेगा क्योंकिसबशरीरोंसेमनुष्यकाशरीरउत्तमहै औरमनुष्यहीकेशरीरमेंपापऔरपुण्यलगताहै अन्यशरीरमेंनहीं औरजोयहमनुष्यकाशरीरहैसबजीवोंकेलिएहै क्योंकिसबकोप्राप्तहोताहैवैसेही सबकीटपतंगादिकोंकेशरीरभीहैंजबमनुष्यशरीरमेंजीवअधिकपापकरताहै औरपुण्यथोड़ातबनरकादिकलोकऔरपशुआदिकोंकेशरीरोंकोप्राप्तहोताहै जबउसकापापऔरपुण्यतुल्यहोतेहैं तबमनुष्यका शरीरप्राप्तहोताहै औरजबपुण्य अधिककरताहै औरपाप थोड़ा तबदेवलोकऔरदेवादिकोंकाशरीर उसजीवकोमिलताहै उसमेंजितनाअधिकपुण्यउसकाफलजोसुख उसकोभोगकेजबपाप पुण्यतुल्यरहजातेहैं तबफिरमनुष्यका शरीरधारणकरताहै इन कर्मोंमें तीनभेदहैं एकमनसे दूसरावाणीसे औरतीसराशरीरसेकर्मकरताहै इनतीनोंमेंसेएक२केतीनभेदहैं सत्वरजऔरतमोगुणकेभेदसे सोजबमनसेसत्त्वगुणकिशान्त्यादिकगुणोंसेयुक्तहोके उत्तमकर्मकरताहै तबदेवमनुष्यऔरपशुआदिकोंमें वहजीवरहता है परन्तुमनमेंप्रसन्नताहीउसकोरहतीहै औररजोगुणसेयुक्तहोकेमनसेजबपुण्यवापापकरताहै तबदेवमनुष्यपशुआदिकोंमेंमध्यमहीवहहोताहै उत्तमनहीं किन्तुउत्तमतो सत्वगुणवालाहोताहै क्योंकिरजोगुणकेकार्यलोभद्वेषादिकहोतेहैं तमोगुणप्रधानजिसपुरुषकोहोताहै उसकोमोह,आलस्य,प्रमाद,क्रोधऔरविषादादिकदोषहोतेहैं वहप्रायःपापवापुण्यअधमहीकरेगा इससेदेवम-

नुष्य और पश्वादिकों में नीच शरीर में प्राप्त होगा और जो वचन से पाप करेगा तो मृगादिक योनि को प्राप्त हो जायगा फिर सदा व कष्टों से चाहे मित न छोर होगा क्योंकि जो जिस से पाप करता है वह उसी से भोग करता है जब शरीर से जीव पाप करते हैं वे वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होते हैं इस में मनु भगवान के श्लोक लिखते हैं सो जानलेना॥ मानसं मनसैवायमुपभुङ्क्ते शुभाशुभम्। वाचा वाचा कृतं कर्म कायेनैव च कायिकम्॥ १॥ भ० यह जीव मन वाणी और शरीर से शुभ नाम पुण्य अशुभ नाम पाप करता है सो जिस से करता है उसी से भोग भी करता है॥ १॥ शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः। वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम्॥ २॥ भ० जब शरीर से पाप करता है तब वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होता है वचन में किए पापों से पक्षि और मृगादिक योनि को प्राप्त होता है और मन से किए पापों से नीच चाण्डालादिक योनि को प्राप्त होता है॥ २॥ यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते। स तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरीरिणम्॥ ३॥ भ० जो गुण जिस के शरीर में प्रधान होता है उस से युक्त हो के जीव उस गुण के योग्य कर्म को करता है और गुण भी उस को कराता है॥ ३॥ सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतम्। एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितं वपुः॥ ४॥ भ० सत्वगुण का कार्य ज्ञान है तमोगुण का कार्य अज्ञान और रजोगुण का कार्य राग और द्वेष है ए तीन गुण और इन के तीन कार्य सब भूतों में व्याप्त हैं क्योंकि इसी का नाम प्रकृति और कारण शरीर है॥ ४॥ तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनि लक्षयेत्। प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत्॥ ५॥ भ० जिस पुरुष का चित्त जब प्रसन्नतायुक्त रहै तथा प्रशान्त की नाईं और शुद्ध की नाईं तब उस को सत्वगुण और सत्वप्रधान पुरुष को जानना॥ ५॥ यत्तु दुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोऽप्रतिघं विद्यात्सततं हारि देहिनाम्॥ ६॥ भ० जिस का चित्त दुःखयुक्त रहै हृदय में प्रसन्नता भी न होवै सदा चित्त चंचल होय विषयों के ओर

टौड़नेलगे औरवशीभूत नहोवहरजोगुणप्रधानपुरुषहोता है ॥ ६ ॥
यत्तुस्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्यमविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत् ॥ ७ ॥ भ० जोचित्तमोहसंयुक्तरहै हृदयमेंकुछ विचारभीसत्यासत्यकानहोय विषयकीसेवामेंफसारहै ऊहापोह जिसमेंनहोय औरजैसाअन्धकारमेंपदार्थ वैसाकुछज्ञाननेमेंभी नआवै उसजीवकोतमोगुण प्रधानऔरतमोगुणजानना ॥ ७ ॥
त्रयाणामपिचैतेषां गुणानांयःफलोदयः। अग्र्योमध्योजघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ भ० इनतीनगुणोंका उत्तममध्यम और नीचजोफलोदयउसकेआगेकहतेहैं यथावत् ॥ ८ ॥ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्विकंगुणलक्षणम् ॥ ९ ॥ भ० वेदाभ्यास,तपनाम योगाभ्यास,ज्ञान,सत्यासत्यविचार,जितेन्द्रियता, धर्मकाअनुष्ठान,आत्माका विचार तथापरमेश्वरकाभ जिसमेंगुणहोवें उत्तमसात्विकपुरुषऔरसत्व गुणकालक्षणहै ॥ ९ ॥ आरम्भरुचिताधैर्य्यमसत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवाचाजस्रं राजसंगुणलक्षणम् ॥ १० ॥ भ० कार्योंकेआरम्भमेंअत्यन्तरुचिअधैर्य असत्कार्यों कास्वीकार औरनिरन्तर विषयसेवामेंफसारहै यहरजोगुणअधिकपुरुषवालेकालक्षणहै १० ॥
लोभःस्वप्नोधृतिःक्रौर्य्यंनास्तिक्यंभिन्नवृत्तिता। याचिष्णुताप्रमादश्च तामसंगुणलक्षणम् ॥ ११ ॥ भ० अत्यन्तलोभअत्यन्तनिद्राधैर्य कालेमेंनहीं क्रूरतानामदयारहित नास्तिक्यनामविद्याधर्मऔर ईश्वरकोनहींमाननाभिन्नवृत्तितानामछिन्नभिन्नजिसकीबुद्धिनित्यदानदक्षिणाऔरभिक्षाग्रहणमेंप्रीति औरप्रमादनामनानाप्रकारकाउपद्रवकरना यहतमोगुण औरतमोगुणपुरुषवालेकालक्षणहै औरसंक्षेपसेआगेतीनोंगुणोंके लक्षणकहेजातेहैं ॥ ११ ॥
यत्कर्मकृत्वाकुर्वंश्च करिष्यंश्चैवलज्जति। तज्ज्ञेयंविदुषासर्वं तामसंगुणलक्षणम् ॥ १२ ॥ भ० जिसकर्मकोकरकेकरताभया और करनेकीइच्छामें लज्जाऔरभयहोताहै वहपुरुषऔरकर्मतमोगु-

णीहैं क्योंकि पापही में रहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलाम् । न च शोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तु राजसम् ॥ १३ ॥ म० लोक में कीर्ति के हेतु इच्छा से भाट आदिक पुरुषों को पदार्थ देना और ऐसा काम मैं करूं जिस से कि मेरी इस लोक में प्रशंसा होय सो मिथ्या प्रशंसा को चाहना अन्याय से और उस में धन तथा पदार्थ के नाश होने में कुछ सोच विचार न करना यह रजोगुणी पुरुष है यह घोर दुःख में सदा पड़ा रहता है ॥ १३ ॥ यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्न लज्जति चाचरन् । येन तुष्यति चात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥ १४ ॥ म० जो पुरुष सब प्रकारों से और उत्तम पुरुषों से जानने को चाहता है तथा धर्म के आचरण में कोई हानि वा निन्दा होय तो भी जिस को लज्जा वा भय न होय और जिस कर्म में अपना आत्मा प्रसन्न होय अर्थात धर्माचरण से उस को कभी न छोड़ै यह सात्विक पुरुष का लक्षण है ॥ १४ ॥ तमसो लक्षणं कामो रजसस्त्वर्थ उच्यते । सत्त्वस्य लक्षणं धर्मः श्रैष्ठ्यमेषां यथोत्तरम् ॥ १५ ॥ म० जो काम में फंसा रहता है वह तमोगुणी पुरुष है तथा धनादिक अर्थ ही को परमपदार्थ मानता है वह रजोगुणी है और जो धार्मिक अर्थात धर्मात्माओं में जिसकी निष्ठा है वह सत्वगुणी पुरुष है तमोगुणी से रजोगुणी रजोगुणी से सत्वगुणवाला पुरुष श्रेष्ठ है ॥ १५ ॥ इन में सत्वगुणवाला धार्मिक है के पुण्य ही करेगा रजोगुणवाला पापपुण्य दोनों करेगा तथा तमोगुणवाला पाप ही करेगा इनको जैसे २ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता है ॥ देवत्वं सात्विका यान्ति मनुष्यत्वं च राजसाः । तिर्यक्त्वं तामसा नित्य मित्येषा त्रिविधा गतिः ॥ १६ ॥ म० जो सात्विक पुरुष होते हैं वे देवभाव को प्राप्त होते हैं अर्थात विद्वान धार्मिक और बुद्धिमान होते हैं तथा उत्तम पदार्थ और उत्तम लोकों को भी प्राप्त होते हैं तथा जो रजोगुणी होते हैं वे मध्यम लोक मनुष्य व तथा बुद्ध्यादिक पदार्थों को प्राप्त होके मध्यम रहते हैं उत्तम नहीं और जो तमोगुणी होते हैं वे नीचता पश्वादिक शरीर तथा बुद्ध्यादिक में भी नीच भाव र-

हताहै इनतीनोंकेतीन गुणोंसे उत्तममध्यमश्रौरनीचतासे एक२ गुणकातीन२भेदहोतेहैं श्रौर वैसेही उनकोफलमिलतेहैं सोश्रागे२लिखाजाताहै ॥ १६ ॥ स्थावराःकृमिकीटाश्च मत्स्याःसर्पाश्चकच्छपाः। पशवश्चमृगाश्चैवजघन्यातामसीगतिः ॥१७॥ भ० स्थावर, वृक्षादिक, कृमि, कीट, मत्स्य, तथाकच्छपादिक, जलजन्तु, गायश्रादिकपशु तथामृगादिकवनकेपशु जिसकोअत्यन्ततमोगुण होताहै वहऐसेशरीरोंकोप्राप्तहोताहै ॥ १७ ॥ हस्तिनश्चतुरंगाश्च शूद्राम्लेच्छाश्चगर्हिताः। सिंहाव्याघ्रावराहाश्च मध्यमातामसीगतिः ॥ १८ ॥ भ० हाथीघोड़ेशूद्रकोमूर्ख म्लेच्छनामकसाईश्रादिक गर्हितनामजोनिन्दितकर्मकरनेवाले सिंहउनसेकुछजोनीच होतेहैं वेव्याघ्रवराहनामसूवर जोपुरुषमध्यतमोगुणवालाहोता है वह ऐसे जन्मोंकोपाताहै ॥ १८ ॥ चारणाश्चसुपर्णाश्च पुरुषाश्चैवदांभिकाः। रक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीषूत्तमागतिः ॥१९॥ भ० चारणनामदूतदूती श्रौरगानेवाले जोकिवेश्याश्रोंकेपासरहतेहैं सुपर्णजोहंसादिकअच्छेउत्तमपक्षी दांभिकपुरुषअर्थात्सम्प्रदायवाले मिथ्याउपदेशकरनेवाले तथाअहंकारअभिमानादिकगुणयुक्त राक्षसनाम छल,कपट करनेवाले पिशाचनाम सदा मलिनरहैं ऐसे जन्मोंकोप्राप्तहोतेहैं जिनमेंकिथोड़ातमोगुण रहताहै ॥ १९ ॥ झल्लामल्लानटाश्चैवपुरुषाशस्त्रवृत्तयः। द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्याराजसीगतिः ॥ २० ॥ भ० झल्लानामतड़ाग कूप श्रादिकखोदनेवाले मल्लानाममलाह श्रौरकुश्ती करनेवाले शस्त्रवृत्तिपुरुष जोकिशस्त्रोंकोबनाने श्रौरसुधारनेवाले जुश्रारीलोग श्रौरभांग, गांजा, अफीम तथामद्यपीनेमेंजोफसेरहतेहैं जिनको अत्यन्तरजोगुणहै वेइसप्रकारकेहोतेहैं ॥ २० ॥ राजानःक्षत्रियाश्चैवराज्ञांचैवपुरोहिताः। वादयुद्धप्रधानाश्चमध्यमाराजसीगतिः ॥ २१ ॥ भ० जिनपुरुषोंमेंमध्यरजोगुणहोताहै वेराजाहोतेहैं तथा क्षत्रियहोतेहैं अर्थात्शूरवीरादिकगुणवालेहोतेहैं राजाश्रोंकेपु-

रोहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील आदिकयुद्धमेंप्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैंयहरजोगुणियोंकीमध्य-मगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये। तथैवाप्सरसः सर्वाराजसीषूत्तमागतिः। २२॥ म० गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामसेबड़े धननाढ्यतथाविबुधनामउक्तदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔर अप्सराअर्थातरूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ारजोगुणहोताहै उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवैमानिकागणाः। नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३॥ म० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेबिना कृच्छ्चांद्रायणादिक व्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमेंप्रवीण विप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरकरनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितविद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलोकतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और शूरवीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवें उनमेंऐसेगुण होतेहैं॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवित्सराः। पितरश्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः॥ २४ म० यज्ञकरनेमेंजिनकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंवेदज्योतिष शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्यलोक पितर जोपिताकीनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंरहनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरविद्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरविष्णु आदिक देवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेहैं जोमध्य सत्वगुणसे ऐसे कर्मकरतेहैं उनकोऐसीगतिहोतीहै॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्यक्तमेवच। उत्तमांसात्विकीमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः॥ २५ ॥

भा० ब्रह्मा ब्रह्मज्ञानपर्यन्त विद्या का जाननेवाला अथवा ब्रह्मलोक का अधिष्ठाता और उस लोक को प्राप्त होनेवाले प्रजापति और विश्वसृज जो कि धर्म और विद्या से सब के पालन करनेवाले वा सिद्ध जो कि परमाणु के संयोग वा वियोग करनेवाले और उस विद्यावाले अथवा प्रजापतिलोक के अधिष्ठाता वा उन को प्राप्त होनेवाले धर्म महान् बुद्धि अव्यक्त नाम प्रकृति यह सत्वगुण की उत्तम गति है यहां से आगे कर्म और उपासना का कोई फलभोग नहीं है सिवाय परमेश्वर के॥२५॥ इन्द्रियाणां प्रसंगेन धर्मस्यासेवनेन च। पापान्संयान्ति संसारानविद्वांसो नराधमाः॥२६॥ भा० इन्द्रियों का प्रसंग अर्थात् अत्यन्त विषयसेवा में फसने और धर्म के त्याग से जो जीव अधम और विद्याहीन हैं अत्यन्त दुःखों को पाते हैं दुष्ट २ शरीरों को प्राप्त होते भये इन प्रकारों से दुष्ट वा श्रेष्ठ कर्मों के करने में सुख वा दुःख जीवों को होते हैं यही ईश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा भोगै इस से ईश्वर में कुछ पक्षपात दोष नहीं आता क्योंकि जैसा जो कर्म करता है उस को वैसा ही फल मिलता है और ईश्वर न्यायकारी है सो सदा न्याय ही करता है अन्याय कभी नहीं इस से जैसा चाहै ऐसा करना नहीं आता ईश्वर में क्योंकि वह सत्य संकल्प है और निर्भ्रम उस का ज्ञान है इस से जैसी व्यवस्था न्याय से करनी उचित थी वैसे ही किया है अन्यथा नहीं ए दोष सब जीवों में हैं कि पहिले कुछ और व्यवस्था करैं पीछे और क्योंकि जीवों में भ्रमादिक दोष होते हैं और कोई व्यवहार में निर्भ्रम भी होते हैं सर्वत्र नहीं और सर्वत्र निर्भ्रम तब जीव होता है कि जब परब्रह्म का साक्षात् विज्ञान होता है और उसी का नित्य योग अन्यथा नहीं सर्वत्र निर्भ्रम तो सनातन एक ईश्वर ही है इस से क्या आया कि एक जीव अनेक जन्म धारण करता है यह सिद्ध भया प्रश्न ईश्वर एक जीव को अनेक जन्म की व्यवस्था क्यों करता है क्योंकि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है नित्य नए २ जीवों को उत्पन्न क्यों नहीं कर सक्ता उत्तर ईश्वर अवश्य सर्वशक्तिमान् है परंतु अन्याय कभी नहीं करता जो जीव दूसरा शरीर धारण न हीं करेगा

तोएकजन्ममें किएपापवापुण्यइनकाभोगनहींहोसकेगाफिरउस-
कान्यायभीनहीहोगा किपापकरनेवालेकोदुःखऔरपुण्यकरनेवा-
लेकोसुखहोनाचाहिए सोबिनाशरीरसेभोगहोनहींहोसक्ता इससे
अनेकजन्मअवश्यमाननाचाहिए प्रश्नपापवापुण्यकाभोगबिनाशरी-
रसेभीहोसक्ताहै पश्चात्तापकरनेसेसोजीवमनसेजितनेपापकिएहोंगे
उनकाभोगमनसेशोककरकेभोगकरलेगा उत्तर ऐसानकहनाचा-
हिए क्योंकिपश्चात्तापजोहोताहै सोभविष्यत्याओंकानिवर्तकहोता
है किएभएपापोंकानहीं जैसेकोईपुरुष नित्यकूपकोदौड़२के डांक
जाय फिरकभीकूपकेपारकेकिनारेपरनहींपहुंचे किन्तुकूपमेंगिर
जायउससेउसकाहाथवागोडटूटजाय फिरउसकोकोईबाहरनि-
कालले फिरवहबहुतशोचकरै किमैंऐसाकामनकरतातोमेरीयह
बुरीदशाक्योंहोती सोमैंबड़ामूर्खहूं इससे क्याआताहैकिआगेको
वहऐसाकर्मनकरेगा परन्तु जोकरचुकाउसकीनिवृत्तिकभीनहीं
होगी सोपश्चात्तापजोहोताहै सोकृतपापकानिवर्त्तकनहींहोता
औरजैसेकोईमनुष्य आंखसेअन्धाऔरकानसेबहिराहोय उसके
पाससर्पवाव्याघ्रआजाय अथवाकोईगालीदे वाउसकीनिन्दाकरै
तोभीउसकोकुछदुःखनहींहोता ऐसेहीबिनाशरीरधारणसेजीव
सुखवादुःखनहीभोगसक्ता क्योंकिजबमूर्त्तिमानपदार्थहोताहै तब
वहशीतउष्णादिक व्यवहारोंकोभोगकरसक्ताहै अन्यथानहीं इ-
ससेक्याआयाकिपश्चात्तापसे कृतपापोंकीनिवृत्तिनहीहोसक्ती प्रश्न
जीवजिनकर्मोंसेसुखहोवै वैसाकर्मक्योंनहींकरता उत्तर बिना
बिद्यादिकसुगुणोंसेकुछनहींयथावत्ज्ञानसक्ता बिद्यादिकगुणबिना
परीश्रमसेनहीहोते एकव्यवहारऐसाहै किजिसमेंप्रथमसुखहो-
य औरपीछेदुःखसोविषयोंमेंफसकेजीवदुःखितहोताहैक्योंकिअ-
त्यन्तविषयसेवासेबलबुद्धि औरधनादिकनष्टहोतेहैं औरज्वरादि-
कअनेकरोगोंसेयुक्तहोकेफिरदुःखहीपाताहै दूसराऐसाव्यवहार
है किप्रथमतोदुःखहोय औरपीछेसुखसोव्यवहारयहहै किजिते-

न्द्रियता,ब्रह्मचर्याश्रम,विद्याकीप्राप्ति,सत्पुरुषोंकासंग, औरधर्म काअनुष्ठान,इत्यादिकजानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम दुःखहोताहैऔरजबएप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउसकोसुखहोता है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै किजिसमें सदादुःखहीरहै सो मोहहै जोधन पुत्रऔरस्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्यादिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह व्यवहारहै किजिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति है विद्यादिकगुणोंकेनहोहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं फिरकैसे करसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहहमकोदृढनिश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहीकरता इतनाहमलोगबुद्धिसेयथावत्जानतेहैं ईश्वरजैसाचाहै वैसानहींकरता जोकरताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया किअनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंसे युक्तहोकेविषयमें फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहीहोनेसे बन्धनभी इसकानष्टनहीहोता जबयथावत्परमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहोतीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप कहचुकेहैं किविनाशरीरसेसुखवादुःखभोगनहीहोसक्ता सोमुक्तिमेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहैंकिनहीरहतातोमुक्तिकाभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमनमें पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेताहै यहबातमेरी सत्यहोयगी उत्तर जीवहीमुक्तिमेंरहताहै औरशरीरनहीं क्योंकि जिसको लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै औरसबपदार्थोंसेउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निसेलोहातप्तहोताहै उसमेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चेतनपरमेश्वरसर्वत्रव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारहताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकावियोगकभीनहीहोता जैसेआकाश

अविद्यातोप्रथमदोषहै एपांचदोषऔरइनसेउत्पन्नभए असंख्यात दोषजीवोंमेंरहतेहैं इससेजीवोंकीमुक्तिभीनहीहोसक्ती परन्तु बिबेकादिगुणोंसेजबमिथ्याज्ञाननष्टहोजाताहै तबअविद्यादिकदोष भीनष्टहोजातेहैं । प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भइति ६॥ गोत्तम० बचनबुद्धिऔरशरीरइन्होंसेजोवआरम्भकरताहैसोप्रवृत्तिकहातीहै परन्तु जिसकेअविद्यादिकदोषनष्टहोजातेहैं वहउनमेंप्रवृत्तनहीं होता किन्तुविद्यादिकगुणोंमेंप्रवृत्तहोताहै इससेउसकोमिथ्याप्रवृत्तिकिपरमेश्वरसेभिन्नपदार्थकोजोइच्छासोनष्टहोजातीहै फिर वहयोगाभ्यासविचार औरपुरुषार्थसेयुक्तअत्यन्तहोताहै उससे अनेकपरमाणुपर्यन्तसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञानतत्त्वयथावत्साक्षात्कारहोताहै फिरअत्यन्तजबबिचारऔरयोगाभ्यासकरताहै तबपरमानन्दसर्वव्यापकसर्वाधार जोपरमेश्वरउसकोअपनेहोमें व्याप्त देखताहै फिरउसकोस्थूलशरीर धारणकरनेका आवश्यकनहीं किन्तुएकपरमाणुकोभी शरीरबनाकेरहसक्ताहै तबइसका जन्ममरणादिककारण जोअविद्यादिकदोषउनसेकिएगएथ जोकर्मकेभोगसबनष्टहोजातेहैं औरआगजोकर्मकिएजातेहैं एसबज्ञानहोकेवास्ते करताहै सोअधर्मकभीनहीं करता किन्तुधर्महीकरताहै उससे ज्ञानफलहीरहचाहताहै अन्यनहीं फिरउनके जन्ममरणकाजोमूल अविद्यासोज्ञान सेनष्टहोजातीहै फिरवह जन्म धारणनहींकरता औरउसकीबुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण, औरइन्द्रियएसबदिव्यशुद्धपदार्थजीवकसामर्थ्यरूपरहजातेहैं औरदिव्यज्ञानादिकगुण नित्यउसमेंरहतेहैं औरआपदिव्यशुद्धनिर्विकाररहजाताहै । बाधनालक्षणंदुःखम् ॥ ७ ॥ गोत्तम० जितनीबाधना अर्थातइच्छाभिघात वहसबदुःख कहाताहै ॥ ७ ॥ तदत्यन्तविमोक्षोपवर्गः ॥ ८ ॥ गोत्तम० दुःखोंकीअत्यन्तजो निवृत्तिउसकोमोक्षकहतेहैं किसबदुःखोंसछूटजाना औरसदाआनन्दपरमेश्वरको प्राप्तहोकेरहना फिरलेशमात्रभी दुःखकासम्बन्ध

कभीनहींहोता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजीवरहता
है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगसेउसजीव
मेंसर्वज्ञताकालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषद्रव्यका सत्य२
बोधभीसदारहताहै इससेजिसदुःखसागरसंसारसे बडेभाग्यसेछू
टकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावतजानताहै किप-
रमेश्वरकेयोगसेअन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइसदुःख
मेंकभीनहींगिरता जैसेचिवटी अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह
नानाप्रकारकेकणोंकोलेर्के अपनेबिलमें संचयकरती जातीहै
उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरु-
षार्थसेमिश्रीकेढेलेकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेके आनन्दितहोजा
तीहै फिरवहअपने घरऔरसंचयकोछोडके उसीमेंनिवासकर-
तीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोडभीनहीस-
क्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें
सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेवसहोके परन्तु जवपरमेश्वरका उ-
सकोयोगहोताहै तवसवतृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैं फि-
रपूर्णकामऔरस्थिरहोके परमेश्वरहीमेंरहताहै सोमुक्तिमें पर-
मेश्वरकाआधार उसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभो-
गताहै औरनिराधारसेविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभो
नहीभोगसक्ता इससे क्याआयाकिविनास्थूलशरीरधारणसे पापवा
पुण्यसंसारमें फलकभीनहीभोगसक्ताऔरपरमेश्वरकेआधारके
विनामुक्तिसुखभीनहीभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहीसेपाप
वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याज्ञा-
नकी प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजीवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहो
जाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजवसृष्टिरचीहै
किजवसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तवभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंर-
हेंगे औरजवअत्यन्त प्रलयहोगा तवकोईनरहेगा ब्रह्मका साम-
र्थ्यरूपऔरएकपरमेश्वरकेविना सोअत्यन्तप्रलयतवहोगा किजव

सबजीवमुक्त होजायगे बीचमें नहीं सो अत्यन्तप्रलयबहुतदूर है संभवमात्र होताहै कि अत्यन्तप्रलयभीहोगा बीचमें अनेकबार महाप्रलयहोगा और उत्पत्तिभीहोगी इससे सबसज्जनोंको अत्यन्तमुक्तिकोइच्छाकरनीचाहिए क्योंकिअन्यथाकुछसुखनहोहोगा जबतकमुक्तिजीवकोनहींहोती तबतकजन्ममरणादिकदुःखसागरमेंडूबाहीरहेगा औरजोजल्दोमुक्तिकरलेगा सोअतुलआनन्दकोपावेगा प्रश्न मुक्तिएक जन्ममेंहोतीहै वाअनेकजन्ममें उत्तर इसकानियमनहीं क्योंकिजबमुक्तिहोनेकाकर्मकरताहै तभीउसकोमुक्तिहोतीहै अन्यथानहीं प्रथमसृष्टिमेंभीकोईजीव पहिलेहीजन्ममेंमुक्तहोगयाहोय इसमेंकुछआश्चर्यनहीं उसकेपीछेजोकोईमुक्तभयाहोगा वाहोताहै औरहोवेगा सोबहुत जन्महीमेंहोगा मुक्तमोक्षअत्यन्त पुरुषार्थसेहोताहै अन्यथानहीं। भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः। क्षीयन्तेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे॥ यहमुण्डककीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिहृदयग्रन्थिनामअविद्यादिकदोषजबजिसजीवकेनष्टहोजातेहैं तबविज्ञानकेहोनेसेसबसंशयनष्टहोजातेहैंऔरजबसंशयनष्टहोजातेहैंतबकर्मभीजीवकेनष्टहोजातेहैं किजीवकोफिरकर्तव्य कुछनहींरहता मुक्तिहोनेकेपीछेसोकर्मतीनप्रकारकाहोताहै एकक्रियमाणजोकिनित्यकियाजाताहै दूसरासञ्चितजोकिबुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्मरहताहै तीसराप्रारब्धजोनित्य भोगकियाजाताहै इसकेतीनभेदहैं। सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः॥ ८॥ पा० इसकायहअभिप्रायहै किकर्मोंकेफलतीनहोतेहैं जन्मआयु औरभोग परन्तु जबतक कर्मोंकामूलअविद्यादिकरहतेहैं तबतककर्मफल भोगभी रहताहै सो भीजैसाकर्म वैसाजन्मआयु औरभोगउसके अनुसारहोतेहैं जब जीवपुरुषार्थसे विद्या,धर्मऔरपातञ्जलशास्त्रकीरीतिसे योगाभ्यासकरताहै तबउसकोयथोक्तविज्ञानहोताहै तबमूलसहितकर्मछूटजाताहै क्योंकिउसनेमुक्तिकेवास्ते सबकर्मकिएथे जबमुक्तिहोतीहै

तबउसकोफिरकर्तव्यकुछनहींरहता प्रश्न मुक्तिसमयमें जीवपरमेश्वरमेंमिलजाताहै जैसेजलमेंजलवानहीं उत्तर जोजीवमिलजातातोउसकोमुक्तिकासुखकुछनहींहोता औरमुक्तिकेवास्तेजितनेसाधन किएजातेहैं वेसबनिष्फलहोजांयगे औरमुक्ति क्याभई किन्तुउसकानाशहोगया इससे यहबात मिथ्याहै किजीवब्रह्ममें मिलजाताहै वहब्रह्मअर्थात्सबसेओपरहै औरजोकिअपनेस्वरूपमें व्याप्तहै जितनाउसकोयथावत्साक्षात्जाननेसे सबदुःखोंसेछूटजाताहै जोभागोप्रारब्धऔरदैवकेभरोसेरहताहै औरआलस्यसे कुछकर्मअच्छानहींकरता वहीजीवनष्टहै औरजोअत्यन्तपुरुषार्थ केऊपरनिश्चयकरकेउद्यमकरताहै सोईजीवभाग्यशालीहै क्योंकि पुरुषार्थहीसे मुक्तिहोतीहै औरयथावत विवेककेहोनेसे हानिवा लाभमें शोकवाहर्षरहितहोताहै वहपुरुषार्थी सर्वत्रसुखीरहता है क्योंकिवहविद्यासेसबपदार्थोंकोयथावत्जानताहै सोसबसज्जनोंकोयहीउचितहै किसदा पुरुषार्थहीकरना आलस्यकभीनहीं पुरुषार्थइसकानामहै किजितेन्द्रियता,धर्मयुक्त व्यवहार,विद्या, औरमुक्तिजिससे होय औरअन्यपुरुषार्थ नहीं क्योंकिपुरुषकेअर्थ जो करताहै सोईपुरुषार्थकहाताहै औरजोअन्याययुक्त व्यवहारकर्ते हैं उसकानामपुरुषार्थ नहीं औरपरमेश्वरअत्यन्तदयालुहै जोजीवउसकोप्राप्तिकेहेतु तन,मनऔरधनसे श्रद्धापूर्वकपुरुषार्थ करता है उसकोशीघ्रहीप्राप्तहोताहै कृपासेविद्यादिकपदार्थोंका उसके पुरुषार्थकेअनुसारप्रकाशहोताहै फिरसदाआनन्दितमुक्तिमेंरहतेहैं सोसबपुरुषार्थोंकाफलमुक्तिहै इससे मुक्तिकोचाहना उक्तप्रकार से अवश्य सब कों करनी चाहिए यह विद्या अविद्याबन्ध और मुक्ति के विषय में संक्षेप से लिखा और जो विस्तारसे देखा चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवैं इसके आगे आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ९॥

अथआचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयंव्याख्यास्यामः॥ श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यक् निबद्धंस्वेषुकर्मसु। धर्ममूलंनिषेवेत सदाचारमतन्द्रितः॥१॥ म॰ श्रुतिजोवेदस्मृतिजोक्तःशास्त्रादिक सत्यशास्त्र औरमनुस्मृति उनमेंजोसदाचारउसकोसदासेवनकरैं औरजितनाअपनाआचारहोसबयुक्तिपूर्वककरै सत्पुरुषोंकेआचरणसेविरुद्धनहीं सोसत्यभाषणादिकआचारधर्मकामूलहै इसकोसदाचारप्रमाणोंसेनिश्चयकरकेसदासेवनकरै सबपदार्थशुद्धरक्खै अशुद्धएकभीनहीं जितनेश्रेष्ठगुणउनकेग्रहणकासदाआचाररक्खै सत्पुरुषोंकेसंगमेंसदाप्रीति उनसेविनयादिक व्यवहारोंकोग्रहण करै जितेन्द्रियता सदारक्खै इनसेविपरीतजोअनाचार उसको छोडदे जिससे ज्ञानवाधर्म तथाविद्याप्राप्तहोय उसकोसदामानैं उक्तप्रकारसेउसकोप्रसन्नरक्खैं औरअधर्मीपाखण्डी उसकोकभी नमानैं औरजितनीसत्क्रिया उनकोयथावत्करैं सबप्रयत्नोंसेब्रह्मचर्याश्रमसे विद्याग्रहणकरैं बाल्यावस्थामें विवाहकभीनकरैं और नानाप्रकारकेयन्त्रऔरपदार्थगुणोंसेरसायन विद्याद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमण उनमनुष्योंकेअच्छे बुरेआचरणोंकीपरीक्षा औरअच्छे आचरणोंकाग्रहणकरैं औरबुरेकानहीं प्रश्न आर्यावर्तवासीलोग इसदेशकोछोडके अन्यदेशमेंजानेमेंपापगिनतेहैं औरकहतेहैंकि पतितहोजातेहैं उत्तर यहबातमिथ्याहैक्योंकिमनुस्मृतिमें जहां जिसकेऊपर राजाकाकरलिखाहै सोजोसमुद्रपार द्वीपद्वीपान्तर में नजातेहोतेतोक्योंलिखते। समुद्रे नास्तिलक्षणम्। इत्यादिकवचनमनुस्मृतिमेंलिखेहैं सोमहासमुद्रमें जबजहाजजाय तबकुछ

औरवेश्यादिकोंमेंनहींछूतमानना यहकेवलयुक्तिशून्यबातहैऔर जोउनसेछूतहोमानतेहैं किइनसेशरीरनलगे नवस्त्रस्पर्शहोय इसीबातसेतोआर्य्यावर्त्तदेशकानाशभयाहै क्योंकिएतोआर्य्यावर्त्तवासी उनकेछूतकेडरसे दूर२भागतेरहतेहैं औरवेसुखसे राज्यसब लेलेतेहैं औरहृदयमेंसदाद्वेषहोनेसेअन्यथाबुद्धिरखतेहैं इसीपरस्परसबदुःखपातेहैं यहसबअनाचारहै आचारइसकोनामहै कि राग,द्वेषादिकदोषोंकोहृदयसेछोड़देना औरसज्जनताप्रीत्यादिकोंकोधारणकरलेना यहीआचारपहिलेमनुष्योंकाथा किअमरिकाकीकन्याअर्जुनसेविवाहीगईथी जोकिनागकन्याकरकेलिखीहै फिरऐसीबातजोकहतेहैं किद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसे जातिपतित औरनष्टधर्महोजाय यहबातमिथ्याहै क्योंकिछूतऔरदेशदेशान्तरमेंनजाना यहबातआर्य्यावर्त्तमें जैनोंकेराज्यसेचलीहै पहिलेनथी क्योंकिजैनबड़ेभीरुहोतेहैं औरछोटे२जीवोंकेऊपर दयारखतेहैं इसीसे मुखकेऊपर कपड़ाबांधलेतेहैं सोचलने फिरनेमें भी दोषगिनतेहैं फिरजहाजोंमेंबैठकेद्वीपद्वीपान्तरमेंजानाइसमें हिंसाक्योंनहीगिनेंगेऔरब्राह्मणतथासम्प्रदायीलोगइन्होंनेअपनेमतलबकेहेतुसबजालफैलारक्खेहैंक्योंकिअपनाचेलावायजमानद्वीपद्वीपान्तरमेंजायगा तोजीविकाकीहानि होजायगी देशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसेकोईबुद्धिमानकाअवश्यसमागमहोगा उससे सत्यअसत्यकाउसकोबोधभीहोगा फिरउसकेसामनेहमारा जालनहींचलेगा औरनित्यशनैश्चरादिग्रहकेनामसे तथाभूतप्रेतादिकनामसे तथामन्दिरादिकोंमेंआनेजानेसे शिवनारायण दुर्गादिकेनामसुनानेसे उनकोडराकेलाखहांरूपएछल,कपटसेनित्यलियाकरतेहैं सोवहद्वीपद्वीपान्तरमेंचलाजायगा बहुतकालमें आनाहोगा तबतकउनकी आजीविकाबन्दहोजातीहै क्योंकिवह उनकेसामनेहीनहीरहेगाफिरउसकोकोईक्यालेगाफिरभीएकप्रायश्चितकाडरलगादियाहैजोकोईजाकेआवैउसकेऊपरबड़ेबखेड़े

लगाटेतेहैं क्योंकिउसकोदुर्दशादेखके कोईजानेकोइच्छा करता
होय वहभीडरकेनजाय इसहेतुकिहमारीआजीविकामटावनीरः
है यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यवाराजाभी दरिद्र
बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खबनजांयगे फिरउनसे
आजीविकाभीकिसीकीनहोगीपरन्तुवेऐसाविचारनहीकरतेक्यों-
किअपनेमतलबमेंफसेहैं औरविद्याभीनहीं इस्से कुछनहीं जानस-
क्ते परन्तु सज्जनलोग इसबातको मिथ्याहीजानैं औरकभी देश
देशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमें भ्रमनकरैंक्योंकि जबमनुष्यमि-
थ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और
जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी
नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहानाऔरहाथोंकोम-
लना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच
करनाउचितहै किजितनेसेहस्त,पाद,शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन
रहैं इस्से अधिककरनासोअनाचारहै किन्तु जिस्से सबपदार्थगृह
पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अ-
धिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमें सदारक्खैं औरविद्याकेप्र-
चारकाआचारसदारक्खै इसकानामआचार है सोईमनुस्मृत्या-
दिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैद्यक
शास्त्रकीरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यक शास्त्रकी
रीतिसे देश,काल,वस्तु औरअपनेशरीरकीप्रकृति उनसेअनुकूल
विचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिस्से बल,बुद्धि,
पराक्रमऔरशरीरमें नैरोग्यबढ़ैवैसापदार्थभक्ष्यहै सोई उक्तवैद्य-
कसुश्रुत शास्त्रमें लिखाहै । औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्रा-
म्यकुक्कुटः । इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि
सूअरगांवकाऔरमुर्गाप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममां-
सहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उस्से रोगोत्पत्तिकासं-
भवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकी रीति

सेमद्यअभक्ष्य तथाजितनेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअभक्ष्यतथाविनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं औरजीवकोपीड़ादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमें क्याकुछ पापहोता है प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको मारनेमेंपीड़ाहोतीहै सोसबव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्योंकिनेत्रकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपीड़ा अवश्य होतीहै औरतुम्हारेघरमेंकोईमनुष्यचोरीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउसकोपीड़ादे ओगेऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ातेहो इसमें भीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफिरतेऔरबैठतेहो इसव्यवहारसेभीबहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इससे तुम्हाराकहनाव्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनैं तोहमाराव्यवहारनबनैं उत्तर ऐसेहीआपलोगजानैं किजहांअपनामतलबहोय वहांतोपापनहींगिनतेहो यहबातयुक्तिसेविरुद्धहै औरकोईभीमांसनखाय तो जानवर,पक्षी,मत्स्यऔरजलजन्तुइतनेहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगें औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै फिरसबमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सबमनुष्य नष्टहोजांय औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय बैल,भैंसी,छेड़ी,भेंड औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारैं क्योंकिइन्होंसे सबमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक पदार्थहोतेहैं वेसबउत्तमहीहोतेहैं औरएकपशुसेबहुतआजीविकामनुष्योंकीहोतीहै मारनेसजहांसौमनुष्यतृप्तहोतेहैं उसगाय आदिकपशुओंकेबीचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंको

रक्षा होसक्ती है इससे इनपशुओंको कभी नमारना चाहिए प्रश्न इन पशुओंके नहींमारनेसे इनके बहुत होनेसे सब पृथिवी भरजायगी फिर भीतो मनुष्योंकी हानि होनेलगैगी उत्तर ऐसा नकहना चाहिए क्योंकि व्याघ्रादिक जीव उनको मारैंगे और कितने रोगोंसे भी मरेंगे इससे अत्यन्त नहीं होनेपावैंगे और मनुष्योंके मारनेसे घृतादिक पदार्थ और पशुओंकी उत्पत्ति भी नष्ट होजाती है इससे जहां२ गोमेधादिक लिखे हैं वहां२ पशुओंमें नरोंका मारना लिखा है इससे इस अभिप्रायसे नरमेध लिखा है मनुष्य नरको मारना कहीं नहीं क्योंकि जैसी पुष्टि बैलादिक नरोंमें है वैसी स्त्रियोंमें नहीं है और एक बैलसे हजारहां गैया गर्भवती होतीहैं इससे हानि भी नहीं होती सोई लिखा है ॥ गौरनुबन्ध्योऽग्नीषोमीयः । यह ब्राह्मणकी श्रुति है इसमें पुल्लिङ्ग निर्देशसे यह जाना जाता है कि बैल आदिकको मारना गैयाको नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि बैल आदिसे भी मनुष्योंका बहुत उपकार होता है इससे इनकी भी रक्षा करनी चाहिए और जो बन्ध्या गाय होती है उसका भी गोमध में मारना लिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमालभेत । यह ब्राह्मणकी श्रुति है इसमें स्त्रीलिंग और स्थूलपृषती विशेषणसे बन्ध्या गाय लीजाती है क्योंकि बन्ध्यामें दुग्ध और बत्सादिकोंकी उत्पत्ति होतीनहीं और जो मांस नखाय सो घृत दुग्धादिकोंसे निर्वाह करे क्योंकि घृत दुग्धादिकोंसे भी बहुत पुष्टि होती है सो जो मांस खाय अथवा घृतादिकोंसे निर्वाह करे वे भी मन्त्र अग्निमें होमके बिना नखांय क्योंकि जीवको मारनेके समय पीड़ा होती है उससे कुछ पाप भी होता है फिर जब अग्निमें वे होम करेंगे तब परमाणुमें उत्तम प्रकार सब जीवोंको सुख पहुंचेगा एक जीवको पीडासे पाप भया था सोभी थोड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं प्रश्न सखरी निखरी अर्थात कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इसके हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

भीहै उत्तर इसका यह विचार है भ्रष्टाचार से बनावै अन्नादिकोंका यथावत् संस्कार नजानै तथाविधिनजाने उसका भक्षण नकरनाचाहिए क्योंकि इससे रोगहोतेहैं औरबुद्धिभी मलिनहोजातीहै सखरा औरनिखरा यहमनुष्योंकी मिथ्याकल्पनाहै क्योंकि जोअग्निसेपकायाजाताहै वहसबपक्काहोगिनाजाताहै औरशूद्रहीपाककरनेवालाहोनाचाहिए परन्तु वहशूद्र अपने जिसद्विजके घरमेंरहे उसीकेघरकेअन्न औरउसीकेघरकेपात्रोंसे पवित्रहोके बनावे उस के हाथसे बनेंहुएको सबखांय तोभीकुछ दोषनहीं ॥ नित्यंशुद्धःकारुहस्तःसमेवार्थमुत्पन्नः। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनसूयया इत्यादिकमनुस्मृतिमेंलिखाहै सेवामेंबड़ीसेवारसोईकाबनानाहै क्योंकिरसोईके बनानेमेंबड़ापरीश्रमहोताहै और कालभीबहुतजाताहै इससे रसोईआदिकसेवाका शूद्रहीकोअधिकारहै जोब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्यहैं वेतोविद्यादिकप्रचार प्रजाकाधर्मसेरक्षणव्यापार औरनानाप्रकारकेशिल्प इनकीउन्नतिहीमेंपुरुषार्थकरैं क्योंकिजोबुद्धि औरविद्यायुक्तहैं उनकोसेवाकरनाउचितनहीं रसोईआदिक जोसेवासो मूर्खपुरुष जोशूद्र उसीका अधिकारहै क्योंकिअग्निकेसामनेबैठना लीपनामांजना अन्नकोशुद्धिकरना नानाप्रकारकेपदार्थबनाना इसमेंबड़ापरिश्रमऔरकालजाताहै इसकामकेकरनेसविद्वानकोविद्यानष्टहोजाय इससे यह कामशूद्रोंकाहै सोमहाभारतमेंलिखाहै किजबराजसूयऔरअश्वमेध युधिष्टिरादिकराजालोगोंकेयज्ञभएथे उनमेंसबद्वीपद्वीपान्तरऔरदेशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथाशूद्रराजाऔरप्रजाआएथेउनकोएकहीपंक्तिहोतीथी औरशूद्रनामशूद्रहीपाक करनेवाले औरपरोसनेवालेथे एकपंक्तिमेंसबकेसाथ सबभोजन कर्तैथे तथाकुरुक्षेत्रकेयुद्धमें जूते,वस्त्र,शस्त्र, औररथकेऊपर बैठे भएभोजनकर्तेथे औरयुद्धभीकर्तेजातेथे कुछशंकाउनकोनथी तभी उनकाविजयहोताथा औरआनन्दसेराज्यकर्तैथे औरजोभोजन

मेंबडे२ बखेडे करते हैं वे भूख के मारे मर जायगे युद्ध क्या कर सकेंगे अब
भी पञ्जाबादिकों में क्षत्रियलोग नापितादिकों के हाथ का भोजन क-
रते हैं सो बात सनातन है और बहुत अच्छी है तथा सारस्वत और
खत्री लोगों का एक ही भोजन है सो अच्छी बात है और गौड तथा अग-
रवाले बनियों का भी एक भोजन प्रायः है सो भी अच्छी बात है और गु-
जराती, महाराष्ट्र, तैलंग, द्राविड तथा करनाटक इनमें भोजन के ब-
डे बखेडे हैं इन पांचों में से गुजराती लोगों के भोजन का बडा पाखण्ड
है क्योंकि महाराष्ट्रादिक चार द्राविडों का तो एक भोजन है और गुज-
राती लोगों का आपस में बडा भेद है सब से भोजन में पाखण्ड कान्या
कुब्जों का अधिक है क्योंकि वे जल भी पीते हैं तो जूते उतार के हाथ, पैर
धोके पीते हैं, तब चौका दे के चना चबाते हैं सो बडे दुःख पाते हैं और
चौका बरतन ही हाथ में रह गए और कुछ नहीं और सरजूपारों में भी
बहुत भोजन में पाखण्ड है यह केवल मिथ्या पाखण्ड शहर से चलाते
हैं और सब में पाखण्ड भोजन चक्रांकितादिक बैरागिओं का अत्यन्त
है ऐसा कोई का नहीं क्योंकि जब जगन्नाथ के दर्शन को जाते हैं तब चा-
ण्डालादिकों का जूठ खा लेते हैं फिर अपनी पंक्ति में मिल जाते हैं उनका
मिथ्या पाखण्ड भी न हो रहा और हलवाई के दुकान का दूध दही और
मिष्ठान्नादिक खाते हैं वह सब का उच्छिष्ट जानो और मलिन क्रिया से
भी होते हैं तथा घोसी लोग मुसल्मान और अभीरादिक होते हैं वे
अपने घडे का जूठा जल मिलाते हैं फिर उसको सब खाते पीते हैं और
जानते भी हैं सो सत्य बात हो आनिशीह होता है झूंठ का कभी नहीं रा-
जादिक धनाढ्य वेश्यादिकों को घर में रख लेते हैं उनमें कुछ भेद नहीं
रहता उनको कोई नहीं कहता क्योंकि कहते हैं तब जब कि वे निर्दोष होय
सो परस्पर दोषों को छिपाते जाते हैं और गुणों को छोडते जाते हैं यह
सब अनाचार है और सत्यभाषणादिकों का आचरण करना उसी
का नाम आचार, युधिष्ठिर के साथ बहुत ऋषि, मुनि, ब्राह्मण लोग थे
वे सब सूदनाम शूद्र पाक करते थे और द्रौपद्यादिक परोसते थे वे सब

खातेथे सोखानेपीनेसे किसीकाधर्मभ्रष्टनहींहोताहै औरनकोई
पतितहोताहै क्योंकिखानापीना औरधर्मकाकुछसम्बन्धनहीं धर्म
जोअहिंसादिकलक्षणसोबुद्धिस्थहै खानापीनाव्यवहारसबबाह्यहै
परन्तु शुद्धपदार्थकाखाना पीनाचाहिए किजिस्से शरीरमेंरोगा-
दिकनहोंय औरजगत्काअनुपकार भीनहोय मद्य,भांग,गांजा,
अफीम,औरजितनेनसेहैं वेसबअभक्ष्यहैं क्योंकिजितनेनशेहैं वेस-
बबुद्ध्यादिकोंकेनाशकरनेवालेहैं इस्सेइनकाग्रहणकभीनकरनाचा-
हिए क्योंकिजितनेनशेहैं वेबिनागरमीसे नहीहोते फिरग-
र्मीसेसबधातुऔरप्राणतप्तहोजातेहैं औरविषमउनकेसंगसे बुद्धि
तप्तऔरविषमहोजातीहै इस्से नशाकाकरनासबकोवर्जितहै पर-
न्तुऔषधकेहेतु किरोगनिवृत्तिहोताहोय तोचौगुणाजलऔरएक
गुणमद्यग्रहणलिखाहै सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रमें क्योंकिरोगनि-
वृत्तिकेहेतुअभक्ष्यभीभक्ष्यहोजाताहै औरजिनपशुओंके बछड़ेको
दूधनहींदेते औरसबअपनेहीदुहलेतेहैं यहभीअनाचारहै क्योंकि
पशुपुष्टकभीनहींहोते फिरपुष्टकेबिना दुग्धादिकथोड़े होतेहैं
औरपशुभीबलहीनहोतेहैं सोएकमासभरजितनाबहपीए उतना
देनाचाहिए फिरएकस्तनकादूधदुहले औरसबबछड़ापीए फिर
दोमासकेपीछे जबबहबछिया घास,पात,खानेलगे तबआधादूध
सबदिनछोड़दे औरआधादुहले तोपशुभीपुष्टहोवैं औरदुग्धादि-
कभीबहुतहोवैं फिरउनदुग्धादिकोंसे मनुष्यादिकोंकोपुष्टिभीहु-
आकरै इस्से खानेऔरपीनेमें धर्ममानतेहैं वाधर्मकानाशवेबुद्धि
हीनमनुष्यहैं ऐसातोहैकिसत्यधर्म व्यवहारसेपदार्थोंकोप्राप्तहोय
उनसेखानापीनाकरैतोपुण्यहै औरचोरीतथाछल,कपट,व्यवहा-
रसेखानापीनाकरै तोअवश्यपापहोताहै सोखानपीनेमें जितने
भेदहैं वेविरोधदुःखऔरमूर्खताकेकारणहैं इनबखेड़ोंसेआर्यावर्त
मेंपुरुषऔरस्त्रीलोग विद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम,हीनहोगएहैं प्रथम
देशदेशान्तरोंमेंसबवर्णोंमें विवाहआदीहोतोथीपूर्वोक्तपर्णोंउक्त-

मसे फिरभोजनमें कैसेभेदहोगा यहभेदथोड़े दिनसेचलाहै कि
जबसे नानाप्रकारके मतमतान्तर चले और मनुष्यकी बुद्धिमें परस्पर
विरोधहोनेसे प्रीतिनष्टहोगई वैरहोगया इससे कोईकिसीके उप
कारमें चितनहींदेता और अपने देशके मनुष्योंके उपकारके हेतु
कोईप्रयत्ननहींहोता किन्तु अपने२ मतवाले रहते हैं सो सबका नाश
होताजाता है यह बड़ाअनाचार है और तथा विचारसे शुद्धपदार्थके
खानेसे किसीका परलोक वा धर्म बिगड़ता नहीं परन्तु विद्या और
विचारके नहीं होनेसे इन बखेड़ोंमें मनुष्यलोग पड़के सदा दुःखी रह-
ते हैं और जो परस्पर गुणग्रहण करैं तो सुखी होजांय और देखना चा-
हिए कि समयके ऊपर भोजन नहीं प्राप्त होता है भोजनके पात्रोंको
उठाके लादे फिरते हैं बैलोंकी नाईं दरिद्र लोग और धनाढ्य लोग ब-
हुत रसोईदार आदिके साथमें रहते हैं उससे मिथ्या धन बहुत खर्च
होजाता है इत्यादिक सब व्यवहार बुद्धिमान लोग बिचार लें युक्त
व्यवहार करैं अयुक्त कभी नहीं एदशसमुल्लास सिद्धान्तके विषयमें लि-
खे इसके आगे आर्यावर्त्तवासी मनुष्य जैन मुसल्मान और अंगरेजों
के आचार अनाचार सत्यासत्य मतमतान्तरके खण्डन और मण्डन
के विषयमें लिखेंगे इनमेंसे प्रथम समुल्लासमें आर्यावर्त्तवासी मनु-
ष्योंके मतमतान्तरके खण्डन और मण्डनके विषयमें लिखा जायगा
दूसरे समुल्लासमें जैनमतके खण्डन और मण्डनके विषयमें लिखा
जायगा तीसरेमें मुसल्मानोंके मतके विषयमें खण्डन और मण्डन
लिखेंगे और चौथेमें अंगरेजोंके मतमें खण्डन और मण्डनके विषय
में लिखा जायगा सो जो देखा चाहै खण्डन और मण्डनको युक्ति उन
चारों समुल्लासोंमें देखले दशसमुल्लासतक खण्डन वा मण्डन नहीं
लिखा क्योंकि जबतक बुद्धि मनुष्योंकी सत्यासत्य विवेकयुक्त नहीं हो-
ती तबतक सत्यके ग्रहण और असत्यके त्याग करनेमें समर्थ नहीं
होते इस हेतु ग्रन्थके पूर्वभागमें सत्य२ मनुष्योंके हितके हेतु शिक्षा लि-
खी और इस ग्रन्थके उत्तरभागमें सत्यमतका मण्डन और असत्यम-

तकाखण्डनलिखेंगे संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्यों के सम-झमें नहींआता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्‌विचारेंगा उसकोसत्य२पदार्थों केप्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा औरअन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहैकिंइस-कायथावतअभिप्रायविचारकेभूषणवादूषणकरैं अन्यथानहीं और मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते दसमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्यावर्तवासिमतखण्डनमण्डनेविध्यास्यामः ॥ सरस्वतीदृ-षद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तंदेवनिर्मितंदेश मार्य्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १ ॥ म० सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी है उससेलेकेनैपालके पूर्वभागकीनदीसेलेके समुद्रतकइनदोनोंके बीचमेंजोदेशहै सोआर्यावर्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अ-र्थातदिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदे वनदीइनका नामहै सोदेश देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलके बीचमें ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठपदार्थहोतेहैं और छःऋतुयथावत्‌ वर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं इसदेशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसंपूर्णहो जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्यावर्त्तहै आर्य्य नामश्रेष्ठमनुष्य औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्तहै इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्त कहते हैं ॥१॥ एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं
स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ २ ॥ म० इस देशमें अ-
ग्रजन्मा नाम सबसे श्रेष्ठ गुणोंसे सम्पन्न जो पुरुष उत्पन्न होवे उससे सब
भूगोलकी पृथिवीके मनुष्य शिक्षा अर्थात विद्या तथा संसारके सब व्य-
वहारोंका यथावत विज्ञान करैं इससे क्या जाना जाता है कि प्रथम इस
में मनुष्योंकी सृष्टि भई थी पीछे सब द्वीप द्वीपान्तरमें सब मनुष्य फैल गए
क्योंकि पृथिवीमें जितने मनुष्य हैं वे इस देशवालोंसे विद्यादिक शिक्षा
ग्रहण करैं और सब देशभाषाओंका मूल जो संस्कृत सो आर्यावर्त ही
में सदासे चला आता है आजकाल भी कुछ २ देखनेमें आता है परन्तु
फिर भी सब देशोंसे संस्कृतका प्रचार अधिक है जर्मनी और विलायत
आदिक देशोंमें संस्कृतके पुस्तक इतने नहीं मिलते जितने कि आर्यावर्त
देशमें मिलते हैं और जो किसी देशमें संस्कृतके हस्तपुस्तक होंगे
सो आर्यावर्त्त हीसे लिए होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं सो इस देशसे
मिश्र देशवालोंने पहिले विद्याग्रहण की थी उससे यूनान देश, उससे
रूम फिर रूमसे फिरंगस्थान आदिमें विद्या फैली है परन्तु संस्कृत
के बिगड़नेसे ग्रीक लाटीन अंगरेज और अरबदेशवालोंकी भाषा
बन गई हैं सो इनमें अधिक लिखना कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि इति-
हासोंके पढ़नेवाले सब जानते हैं और पता भी ऐसा ही मिलता है एक
गोलडस्टैकर साहेबने पहिले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी वि
द्या वा मत फैले हैं भूगोलमें वे सब आर्यावर्त्त हीसे लिए हैं और का-
शीमें वालेंटैन साहेबने यही निश्चय किया है कि संस्कृत सब भाषाओं
की माता है तथा दाराशिकोह बादशाहने भी यह निश्चय किया है कि
जो विद्या है सो संस्कृत ही है क्योंकि मैंने सब देशोंकी भाषाओंकी पु-
स्तक देखा तो भी मुझको बहुत सन्देह रह गए परन्तु जब मैंने संस्कृत
देखा तब मेरे सब सन्देह निवृत्त हो गए और अत्यन्त प्रसन्नता मुझको
भई और काशीमें मानमन्दिर जो रचा है उसमें महाराज सवाई मा-
नसिंहजीने खगोलके कला और यन्त्र ऐसे रचे थे कि जिससे खगोल

कासबहालदेखपड़ताथा परन्तु आजकालउसको मरम्मतनहोने से बहुतकलायन्त्रबिगड़गए हैं तोभीकुछ२देखपड़ताहै फिरआज कालमहाराज सवाईरामसिंहजीनेकुछमरम्मतस्थानकीकराईहै जोउसयन्त्रकोभीकरावेंगेतोकुछरोजबनारहेगाअन्यथानहींजबसे महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्तकोबुरीदशाआईहै सोनि-त्य२बुरीहीदशाहोतीजातीहै क्योंकिउसयुद्धमें अच्छे२विद्यावान राजाऔरब्राह्मणलोगप्रायःमारेगए फिरकोईराजापूर्णविद्यावा-ला इसदेशमें नहींभया जबराजाविद्वान औरधर्मात्मानहींभया तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें लड़नेलगे क्योंकिजबविद्यानहींहोती तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमारा फिर प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिसने जितनापाया उसकावह राजाबाजमींदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी विद्याकापरिश्र-मछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगविद्या-हीनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीविद्याहीनहोतेचले केवल दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छेका-महोतेथेवेसबबन्धहोतेचले वेदादिकविद्याकाप्रचारभीबहुतथो-ड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीबिचारकिया किब्रा-ह्मणवर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहैसबकापूज्यहै क्योंकिपूर्ण विद्यासे ब्राह्मणवर्णहोताहै यहवर्णाश्रमकीसनातनरीतिहै सोई ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखीहै सोविद्यादिकगुणोंसेतोवर्णव्य-वस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेवर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया है फिरजन्महीसेब्राह्मणादिकवर्णोंकाअभिमानकरनेलगे फिरबि-द्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्रायःराजाऔरप्र-जामेंमूर्खताअधिक२होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोगअपने चर णऔरघरोंरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

आलस्यमें होनेलगा उनविद्याहीनराजाओंको और प्रजास्थपुरु-
षोंकोवशीभूत ब्राह्मणोंनेकरलिए यहांतककि सोना, उठना और
कोईटोकोईतकजाना बहुभीब्राह्मणोंकीआज्ञाकेबिनानहींकरना
और जोकोईकरेगा सोपापीहोजायगा फिर इन्होंनेयक्षादिकग्रहऔ-
रनानाप्रकारके भूतप्रेतादिकोंकाजाल उनकेऊपर फैलानेलगे
और वेमूर्खताकेहोनेसे माननेभीलगे फिर राजा लोगोंको ऐसा
निश्चयसबलोगोंनेमिलकेकराया किब्राह्मणलोगकुछभीकरें परन्तु
इनकोदण्डनदेनाचाहिए जबदण्डनहोनेलगा तबब्राह्मणलोग
अत्यन्तप्रमादकरनेलगे और व्यभिचारादिकभी फिर बड़े२ ऋषिमु-
निऔरब्रह्मादिकके नामोंसे श्लोकऔरग्रन्थरचनेलगे उनमें प्रायः
यहीबातलिखी किब्राह्मणसबकापूज्यऔरसदाअदण्ड्यहै फिर अ-
त्यन्तप्रमादऔरविषयासक्तिसे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और शूर
वीरतानष्टहोगई औरपरस्पर ईर्ष्याअत्यन्तहोगई किसीको कोई
देखनसके औरकोई२कसहायकारीनरहे परस्परलड़नेलगे यह
बातचीनआदिकदेशोंमेंरहनेवाले जैनोंनेसुनीऔरव्यापारादि-
ककरनेके हेतुइसदेशमें आतेथे सोप्रत्यक्षभी देखोफिर जैनोंने
विचारकिया किइससमयआर्यावर्त्त देशमें राज्यसुगमतासेहोस-
क्ता है फिरवेआएऔरराज्यभी आर्यावर्त्त में करनेलगे फिरधी-
रे२ बोधगयामें राज्यजमाके औरदेशदेशान्तरमेंफैलानेलगे सो
वेदादिकसंस्कृत पुस्तकोंकीनिन्दा करनेलगे औरअपनेपुस्तकोंके
पठनपाठनकाप्रचार तथाअपनेमतकाउपदेशभीकरनेलगे सोइ-
सदेशमेंविद्याकेनहींहोनेसे बहुतमनुष्योंनेउनके मतकास्वीकार
करलिया परन्तु कनौज काशी पर्वत दक्षिणऔरपश्चिमदेशकेपुरुषों
नेस्वीकारनहींकियाथा परन्तु वेबहुतथोड़े हैं थेवेही वेदादिकपु-
स्तकोंका पठनऔरपाठनकर्ते औरकरातेथे फिर इन्होंनेवर्णाश्रम
व्यवस्थाऔरवेदोक्तकर्मोंकोमिथ्या२ दोषलगाके अश्रद्धाऔरअ-
प्रवृत्तिबहुतकरादिया फिरयज्ञोपवीतादिककर्मभीप्रायःनष्टहोग-

या और जो २ वेदादिकों की पुस्तक पाया और पूर्व के इतिहासों का उनका प्रायः नाश कर दिया जिस्से कि इनको पूर्व अवस्था का स्मरण भी न रहै फिर जैनों का राज्य इस देश में अत्यन्त जम गया तब जैन भी बड़े अभिमान में होगए और कुकर्म, अन्याय भी करने लगे क्योंकि सब राजा और प्रजा उनके मत में हीं होगए फिर उनको डर बाधं के किसी को न रही अपने मत वालों को अच्छे २ अधिकार और प्रतिष्ठा करने लगे और वेदादिकों को पढ़ैं तथा उनमें कहे कर्मों को करैं उनको अप्रतिष्ठा करने लगे अन्याय से भी उनके ऊपर शासन करने लगे अपने मत के पण्डित वा साधु उनकी बड़ी प्रतिष्ठा करने लगे सो आज तक भी ऐसा ही करते हैं और बहुत स्थान २ में बड़े २ मन्दिर रच लिए और उनमें अपने आचार्यों की मूर्त्ति स्थापन कर दिया तथा उनकी पूजा भी अत्यन्त करने लगे सो जैनों के राज्य ही में मूर्त्ति पूजन चली इस के आगे न थी क्योंकि जितने ऋषि मुनियों के किए प्राचीन ग्रन्थ हैं महाभारत युद्ध के पहिले जो कि रचे गए हैं उनमें मूर्त्ति पूजन का लेश मात्र भी कथन नहीं है इस्से दृढ़ निश्चय से जाना जाता है कि इस आर्य्यावर्त्त देश में मूर्त्ति पूजन नहीं थी किन्तु जैनों के राज्य ही से चला है एक द्रविड़ देश के ब्राह्मण काशी में आके एक गौड़पाद पण्डित थे उनके पास व्याकरण पूर्वक वेद पर्यन्त विद्या पढ़ी थी जिसका नाम शङ्कराचार्य्य था वे बड़े पण्डित भए थे उनने बिचार किया कि यह बड़ा अनर्थ भया नास्तिकों का मत आर्य्यावर्त्त देश में फैल गया है और वेदादिक संस्कृत विद्या का प्रायः नाश ही हो गया है सो नास्तिक मत का खण्डन और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्या का विचार वे अपने मन में ऐसा बिचार करके सुधन्वा नाम राजा था उसके पास चले गए क्योंकि बिना राजाओं के सहाय से यह बात नहीं हो सकेगी सो सुधन्वा राजा भी संस्कृत में पण्डित था और जैनों के भी संस्कृत सब ग्रन्थ पढ़ा था सुधन्वा जैन के मत में था परन्तु बुद्धि और विद्या के होने से अत्यन्त विश्वास नहीं था क्योंकि वह संस्कृत भी पढ़ा था और उसके पास जैनमत के पण्डित

भीबहुतथे फिरशंकराचार्यने राजासे कहाकि आप सभाकरावैं औरउनसेमेराशास्त्रार्थहोय औरआपसुनैं फिरजोसत्यहोय उसकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उसमेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमतकेबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्डितोंनेऐसीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उस शास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंका पराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचार्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा उसकोजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरसभाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंविचारभया कि आर्यावर्त्तमेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इस्से वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्यनेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहींहै इस्से शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तु कोईउपाधिकरै अथवाशास्त्रार्थहोनेकरैं तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृत्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरैं सोराजानेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तु हमारेछ:राजासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबहुतअच्छीबातहै फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैनमतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछ:भीसुधन्वासेमिलेऔर सबकीसम्मतिमेंसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो आर्यावर्त्तमेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामक सन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिस्से बहुतजैन

लोगोंकेपण्डितपराजितहोगए फिरउनसातराजाओंनेशङ्कराचा-
र्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया औ-
रभवनकहाकिआपसर्वत्रआर्यावर्त्त मेंभ्रमणकरैंऔरजैनोंकाख-
ण्डनकरैं इसमेंकोईजविघ्नकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगस-
मझालेंगे फिरशंकराचार्यजीने जहां२ जैनोंकेपण्डितऔरअत्यन्त
प्रचारथा वहां२भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया पर-
न्तु जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया क्योंकिदोतीनदोषउ-
नकेबड़े भारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसरावेदादिकसत्य
शास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसेहोताहै इ-
सकारचनेवालाकोईनहीं इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं वेजैनमत
केखण्डनमण्डनमेंविस्तारसेलिखेंगे फिरजितनेजैनोंके मन्दिर
मेंमूर्त्तिथीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवा
वापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्ति जैनोंनेबिनाटूटीभी भयसेज-
मीनमेंगाड़दिया सोआजतकवेटूटीऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकी
पृथिवीखोदनेसे निकलतीहैं परन्तु मन्दिरनहींतोड़ेगए क्योंकि
शंकराचार्य औरराजालोगोंने बिचारकिया मन्दिरोंकोतोड़ना
उचितनहीं इनमेंवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे
क्योंकिलाखहांकरोड़हांरुपैएकोइमारतहै इसकोतोड़नाउचित
नहीं औरकुछ२गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदे-
खनेमेंआर्यावर्त्त देशमेंआतेहैं इसकेपोछेसर्वत्र वेदादिकोंकेपढ़ने
औरपढ़ानेकीइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई शंकराचार्यऔरसुधन्वा
दिकराजा तथाऔरआर्यावर्त्तवासीश्रेष्ठलोगोंने बिचारकियाकि
बिद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें
३२,वा,३३,बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया उनके
मरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया यहभीआर्यावर्त देशवालों
केबड़ेअभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभीजीतेतोबिद्याका
प्रचार यथावत्होजाता फिरआर्यावर्त्तकोऐसीदुर्दशा कभीनहीं

होती क्योंकि जैनोंका खण्डनतो होगया परन्तु विद्याप्रचार यथावत् नहीं भया इससे मनुष्योंको यथावत् कर्त्तव्य और अकर्त्तव्यका निश्चय नहीं होनेसे मनमें सन्देह होरहा कुछतो जैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रोंकाभी यह बात एकईसवा वा इससे वरसकी है इसके पीछे २०० वा ३०० वरसतक साधारणप्र-ढ़ना और पढ़ानारहा फिर उज्जयनमें विक्रमादित्य राजा कुछ अ-च्छा भया उसने राजधर्मको कुछ२ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्यायसे होनेलगे थे उसके राज्यमें प्रजाको सुखभी भयाथा क्योंकि विक्रमा-दित्य तेजस्वी बुद्धिमान और शूरवीर तथा धर्मात्मा इससे कोई और अन्याय नहीं करने पाताथा परन्तु वेदादिक विद्याका प्रचार उसके राज्यमें भी यथावत् नहीं भयाथा उसके पीछे ऐसा राजा नहीं भया किन्तु साधारण होते गए फिर विक्रमादित्यसे ५०० वर्षके पीछे राजा भोज भए उसने संस्कृतका प्रचार किया सो नवीन ग्रन्थोंका रचना और प्रचार कियाथा वेदादिकोंका नहीं परन्तु कुछ२ संस्कृतका प्रचार भोजराजाने ऐसा कराया कि चाण्डाल और हल जोतनेवालेभी कुछ२ लिखना पढ़ना और संस्कृत बोलते भी थे देखना चाहिए कि कालि-दास गडरिया था परन्तु श्लोकादिक रचलेताथा और राजा भोजभी नए२ श्लोक रचनेमें कुशलथा कोई एक श्लोकभी रचके लेजाताथा उ-नके पास उसका प्रसन्नतासे सत्कार करतेथे और जो कोई ग्रन्थ बनाता था तो उसका बड़ा भारी सत्कार करतेथे फिर लोभसे बहुत संसारमें मनुष्य लोग नए ग्रन्थ रचनेलगे उससे वेदादिक सनातन पुस्तकोंकी अप्रवृत्ति प्रायः होगई और संजीवनी नाम राजाभोजने इतिहास ग्रन्थ बनायाहै उसमें बहुत पण्डितोंको सम्मतिहै और यह बात उसमें लिखीहै कि तीन ब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण पण्डितोंमें रचेथे उनसे राजा भोजने कहाकि और के नामसे तुमको ग्रन्थ रच-ना उचित नहींथा और महाभारत की बात लिखीहै कि कितने हज़ार श्लोक २० वरसके बीचमें व्यासजीका नाम करके लोगोंने मिला

दिएहैं ऐसेहीपुस्तकबढ़ेगा तोएकऊंटकाभारहोजायगा औरऐ-
सेहीलोगदूसरेकेनामसेग्रन्थरचेंगे तोबहुतभ्रमलोगोंकोहोजा-
यगा सोउससंजीवनीग्रन्थमें राजाभोजनेअनेकप्रकारकीबातें पु-
स्तकोंकेविषय औरदेशके वर्त्तमानकेविषयमें इतिहासलिखेहैं
सोवहसंजीवनीग्रंथ बटेश्वरकेपास होलीपुराएकगांवहै उसमें
चौबेलोगरहतेहैंवेजानतेहैंजिसकेपासवहग्रंथहैपरन्तु लिखनेवा
देखनेकोवहपण्डितकिसीकोनहींदेता क्योंकिउसमें सत्य२बात
लिखीहै उसकेप्रसिद्धहोनेसेपण्डितोंकीआजीविकानष्टहोजातीहै
इसभयसेवहउसग्रंथकोप्रसिद्धनहींकरता ऐसेहीआर्य्यावर्त्तबासी
मनुष्योंकीबुद्धिक्षुद्रहोगईहै किअच्छापुस्तकवाकोईइतिहास उस-
कोछिपातेचलेजातेहैं यहइनकीबड़ीमूर्खताहै क्योंकिअच्छीबात
जोलोगोंकेउपकारकी उसकोकभीनछिपानाचाहिए फिरराजा
भोजकेपीछेकोईअच्छाराजानहींभयाउससमयमें जैनलोगोंनेज-
हांतहांमूर्त्तिमन्दिरोंमेंप्रसिद्धकियाऔरवेकुछ२प्रसिद्धभीहोनेलगे
तबब्राह्मणोंनेबिचारकिया किइनकेमन्दिरोंमें नहींजानाचाहिए
किन्तुऐसीयुक्तिरचैं किहमलोगोंकोआजीविकाजिससेहोयफिरउ-
ननेऐसाप्रपञ्चरचाकि हमकोस्वप्नआयाहै उसमेंमहादेव,ना-
रायण,पार्वती,लक्ष्मी,गणेश,हनुमान्,राम,कृष्ण,नृसिंह,इनोंने
स्वप्नमेंकहाहै किहमारीमूर्त्ति स्थापनकरके पूजाकरैं तोपुत्र,धन
नैरोग्यादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोगी जिस२पदार्थकीइच्छाकरेगा
उस२पदार्थकीप्राप्ति उसकोहोगी फिरबहुतमूर्खोंने मानलिया
औरमूर्त्ति स्थापनकरनेकोई२लगा फिरपूजाऔरआजीविकाभी
उनकोहोनेलगी एककीआजीविकादेखकेदूसराभीऐसाकरनेलगा
औरकोईमहाधूर्त्त नेऐसाकियाकिमूर्त्तिकोजमीनमेंगाड़केप्रातः
कालउठके कहामुझको स्वप्नभयाहै फिरउनसे बहुतलोगपूछने
लगे किकैसास्वप्नभयाहै तबउनसेउसनेकहाकि देवकहताहै मैं
जमीनमें गड़ाहूं औरदुःखपाताहूं मुझकोनिकालकेमन्दिरमें

स्थापनकरै औरतू हीपुजारीमेराहो तोमैंसबकाम सबमनुष्योंकासिद्धकरूंगा फिरवेबिद्याहीनमनुष्य उस्से पूछतेभए किवहमूर्त्ति कहांहै जोतुम्हारास्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां उसनेमूर्तिगाडीथी वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सबदेखकेबडाआश्चर्य किया औरसबनेउस्से कहाकि तूं बडाभाग्यवान्है औरतेरेपरदेवताकी बडीकृपाहै सोहमलोग धनदेतेहैं इस्से मन्दिरबनाओ इसमूर्त्तिकाउसमें स्थापनकरो तुमइसके पुजारीबनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेगें तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही किया औरउसकोआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीविकाकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्त्तताकरनेलगे औरबिद्याहीन पुरुषउसकोमानताकरनेलगे फिरप्राय:मूर्त्ति पूजन आर्याबर्तमें फैला एकमहम्मूदगजनवीइसदेशमेंआया औरबहुतसीमूर्त्तियां सोनेऔरचांदियोंकीलूटिलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको पकडलिए औररातको पिसानपिसावै औरदिनमें जाजरूरआदि कोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदिया, ऐसेवहआर्याबर्त्तमें बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्यन्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबडी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर बालककोभीपकडकेदु:खदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउन्ने बडाअन्यायकियासोजिसदेशमेंईश्वरकीउपासनाकोछोडकेकाष्ठ पाषाण वृक्ष,घास,कुत्ते,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाही फलहोगा उत्तमकहांसे होगा फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेकी पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदियाहै किहमारा आपलोगमन्दिर रचैं तोकैलाशकोछोडके आर्याबर्त्त देशमेंमैंवासकरूं औरसब कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलोगोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचु-

बकपत्यररक्खे जबमन्दिरपूराभया तबसबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया किउसदिनमध्यरात्रिमेंकैलाशसेमहादेवमन्दिरमेंआवेंगे जोदर्शनकरेगा उसकाबड़ाभाग्यऔरमरनेकेपीछेकैलाशकोवहचलाजायगा फिरउससमयमें राजा,बाबू,स्त्री,पुरुष औरलड़केबाले उसस्थानमेंजुटेफिरउनचारोंधूर्त्तोंनेमूर्त्ति मन्दिरमेंकहींगुप्तरखदिईथी औरमेलामेंऐसाप्रसिद्धकरदिया किमहादेव देवहै सोभूमिको पगसेस्पर्शनकरेंगे किन्तु आकाशहीमेंखड़े रहेंगे ऐसाहमको स्वप्नमेंकहाहै सोजबउसदिनपहररात्रिगई तबसबकोमन्दिरकेबाहरनिकालदिएऔरकिवाड़बन्दकरकेवेचारोंभीतररहे फिरउस मूर्त्तिकोउठाकेमन्दिरमेंलेगए औरबीचमें चुम्बकपाषाणकेआकर्षणोंसेअधरआकाशमेंवहमूर्त्तिखड़ीरही औरउन्होंनेखूबमन्दिरमेंदीपजोड़दिए फिरघण्टा,झल्लरी,शंख,रणसिंघाऔरनगारा बजाए तबतोबड़ामेलामेंउत्साहभयाऔरउननेदरवाजेखोलदिए फिरमनुष्योंकेऊपरमनुष्यगिरे औरमूर्त्तिकोआकाशमेंअधरखड़ीदेखके बड़े आश्चर्ययुक्तभए औरलाखहांरुपैयोंकीपूजाचढ़ी अनेकपदार्थपूजामेंआए फिरवेचारोंधूर्त्तब्राह्मणबड़ेमस्तहोगएऔरमहन्तहोगए फिरनित्यमेलाहोनेलगा करोड़हांरुपैयोंकामाल होगया सोवहमन्दिरद्वारकाकेपास प्रभाक्षेत्रस्थानमेंथा औरउस मूर्त्तिकानाम सोमनाथरक्खाथा फिरमहमूदगजनवीने सुनाकि उसमन्दिरमेंबड़ामालहै ऐसासुनके अपनेदेशसेसेनालेके चढ़ा सो जबपंजाबमेंआया तबहल्ला होगया और सोमनाथ कीओरचला तबलोगोंनेजाना किसोमनाथके मन्दिरकोतोड़ेगा औरलूटेगा ऐसासुनकेबहुतराजापण्डितऔरपुजारी सेनाले२केसोमनाथकी रक्षाकेहेतुइकट्ठे भए सोमनाथकेपास जबवहडेढ़सै दोसैकोस दूर रहा तबपण्डितोंसेराजाओंने पूछाकिमुहूर्त्त देखनाचाहिए हम लोगआगेजाकेउनसेलड़ें फिरपण्डितलोगइकट्ठे होके मुहूर्त्त देखा परन्तु मुहूर्त्त बनानहीं फिरनित्यमुहूर्त्त होदेखतेरहे परन्तु

कोई दिन चन्द्र कोई दिन और ग्रह नहीं बने कोई दिन दिक्शूल सन्मुख आया कोई दिन योगिनी और कोई दिन काल नहीं बना सो पण्डितों की बुद्धि को कालादिकों के भ्रमों ने खा लिया और राजा लोग बिना पण्डितों की आज्ञा से कुछ करते न होंथे सो प्राय: पण्डित और राजा लोग मूर्ख होथे जो मूर्ख न होते तो पाषाणादि की मूर्त्ति क्यों पूजते और मुहूर्त्तादिकों के भ्रमों में क्यों होते ऐसे विचार करते हीरहे उसको सेना दूसरों में जंगल पर पहुंचो तब राजा लोगों ने पण्डितों से कहा कि अब तो जल्दी मुहूर्त्त देखो तब पण्डितों ने कहा कि आज मुहूर्त्त अच्छा नहीं है जो यात्रा करोगे तो तुमारा पराजय ही हो जायगा तब वे बाह्मणों से डरके बैठे रहे तब महमूद गजनवी धीरे २ पांच छः कोश के ऊपर आके ठहरा और दूतों से खबर मंगवाई कि वे क्या करते हैं दूतों ने कहा कि आपस में मुहूर्त्त विचारा करते हैं महमूद गजनवी के पास २० हजार सेना थी अधिक नहीं और उनके पास दो, तीन लाख फौज थी फिर उसके दूसरे दिन प्रात:काल राजा पण्डित पुजारी मिलके मुहूर्त्त विचारने लगे सो सब पण्डितों ने कहा कि आज चन्द्रमा अच्छा नहीं और भी ग्रह क्रूर हैं पुजारी लोग और पण्डित मूर्त्ति के आगे जाके गिर पड़े और अत्यन्त रोदन किया हे महाराज इस दुष्ट को खा लेओ और अपने सेवकों का सहाय करो परन्तु वह लोहा क्या कर सक्ता है और सब से कहने लगे कि आप लोग कुछ चिन्ता मत करो महादेव उस दुष्ट को ऐसे ही मार डालेंगे वा वह महादेव के भय से वहां ही से भाग जायगा उसका क्या सामर्थ्य है कि साक्षात् महादेव के पास आके और सन्मुख दृष्टि कर सके ऐसे सब परस्पर बकरहे थे फिर कुछ लड़ाई भई और मुसल्मान भी डरे कि जय होगा वा पराजय उस समय में और पुस्तक फैला २ के बहुत से मन्त्रों का जप और पाठ करते थे और कहते थे कि अब देवता और मन्त्र हमारा पाठ सिद्ध होता है सो वह वहां ही अन्धा हो जायगा सो बड़ी मण्डली को मण्डली जप, पाठ और पूजा कर रही थी और मूर्त्ति के साम्हने औंधे गिरके पुकार

तेथे एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितबिचारतेथे मुहूर्त्त को उससमयमें उसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहारोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपनेर स्थानोंसेभागउठी औरवहमहमूदगजनवी सेनासहितधावाकरके उसस्थान पर झटपहुंचा उसकोदेखके सबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसीमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरबहुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिर केवैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्शनसेधर्मजाताहै ऐसीमिथ्याबातसुनकेभागउठ फिरमन्दिरकेचारोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास पहुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनसे पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहें उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्ति कोनतोड़िए क्योंकिइससे हमलोगोंकी बड़ीआजीविकाहै ऐसासुनके महमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तु उनको तोड़नेवालेहैं तबतोवेडरे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तु इसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतीनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमेंगयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेबतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापीटा तबउनने सबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसी धूर्त्तताकरकेठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंओरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै महादेव यहतुमनेबड़ीधूर्त्तताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडाली सब चुम्बककेनिकलनेसे मूर्त्ति जमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्तिकोम- हमूदगजनवीने अपनेहाथसेलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्तिकेपेटमें मारा उससे मूर्त्तिफटगई उसमें बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि हीराआदिकअच्छे २ रत्नवेपातेथे तबमूर्त्तिहीमेंरखदेतेथे फिर उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुसलायाभी फिर उननेभयसेसबबतलादिया उनसेकहाकिजोतुम सबसच२ बतला- देओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना, चांदीकेपात्रोंको भीबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह क- रोड़कामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔ रमजूरउसकेपासथें औरभीबहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमा- लकोलादकेअपनेदेशकोओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत औरपुजारीतथाक्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदशा हजारतकपकड़केसंगलेलिएथे उनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें थूकदिया औरथोड़े २सूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर सफाकरवावै पिसनावै घासछिलवावै औरघोड़ोंकोलीदउठवावै औरमुसल्मानोंकेजूठेबरतनमंजवावै औरसबप्रकारकीनीचसेवा उनसेलेऐसेकराता२ जबमक्काकेपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरीद- शासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरान्में लिखाहै किकाफरोंकोलूट ले उनकीबीबीछीनले झूठफरेबसे उनकासबमालले२ औरउनको मारडाले तोभीकुछदोषनहीं किन्तुउसमुसल्मानको बिहिश्तअ- र्थातउसकोस्वर्गवासमिलताहै वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़ै और

कुरानकेऊपरविश्वासनलेश्रावै उसकोबिगाड़नेऔरमारनेमेंकु-
छदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इससे उनको अन्याय
करनेमेंकुछभयनहीहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतोबाशब्दसे
छूटजाताहै इससे वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगे ऐसेसोवारहदफेवह
आयाहै औरदोतीनवारमथुराकोभीदुर्दशाऐसीकिईथीऔरजहां
२वहगयाथा,वहां२ऐसीही उसदेशकीदुर्दशाकिईथी औरडांकू
कीनांईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाता
था उसदिनसेमुसल्मानलोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्यावर्त
प्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त्त देशअपनेहीं
दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश
औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशबाल्यावस्थामेंविवाहवि-
द्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकोप्रवृत्ति नानाप्रकार के
मिथ्यामजहबोंकाप्रचार विषयासक्तिऔरवेदविद्याकालोपजबतक
एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त्त देशवालोंकी अधिक२दुर्दशाहीहो-
गी औरजोसत्यविद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वर
कीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदुःखनष्ट होजांय
औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैंफिरचारब्राह्मणोंनेविचारकियाकिकोई
क्षत्रियराजाइसदेशमें अच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचा-
हिए वेब्राह्मणचारोंअच्छे थे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके
अच्छीबातबिचारी यहअच्छे पुरुषोंकाकामहै नीचकानहीं फिर
उनने क्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छे बालकछांटलिए औरउन
क्षत्रियोंसेकहांकि तुमलोग खानेपीनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना
उननेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजप-
र्वतकेऊपरजाकेरहेऔरउनबालकोंको अक्षराभ्यासऔरअच्छे व्य-
वहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाविधि संस्कारभीउनने
किया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा
उननेकिया फिरव्याकरणछःदर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोभी यथावत्पदार्थविद्या उनको पढ़ाई फिर वैद्यकशास्त्र तथा गान
विद्या, शिल्पविद्या, और धनुर्विद्या अर्थात् युद्धविद्या भी उनको अ-
च्छीप्रकारसे पढ़ाई फिर राजधर्म जैसा कि प्रजासे वर्तमान करना औ-
र न्याय करना दुष्टोंको दण्ड देना श्रेष्ठोंका पालन करना यह भी सब
पढ़ाया ऐसे पच्चीस २५ बरसकी उमर उनकी भई और उनप-
ण्डितोंके स्त्रियोंने ऐसेही चार कन्या रूपगुणसम्पन्न उनको अपने पास
रखके व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यक, गानविद्या, तथा नानाप्रकारके
शिल्पकर्म उनको पढ़ाए और व्यवहारकी शिक्षाभी किया तथा युद्ध
विद्याकी शिक्षा गर्भमें बालकोंका पालन और पतिसेवा का उपदेश
भी यथावत् किया फिर उन पुरुषोंको परस्पर चारोंका युद्ध करना औ-
र करानेका यथावत् अभ्यास कराया ऐसे चालीस २ वर्ष के वे पुरुष भए
बीस २ वर्षकी वे कन्या भई तब उनको प्रसन्नता और गुणपरीक्षा से एक
से एकका विवाह कराया जबतक विवाह नहीं भया था तबतक उन पु-
रुषोंकी और कन्याओंकी यथावत् रक्षा किई गई थी इससे उनको विद्या
बल, बुद्धि, तथा पराक्रमादिक गुणभी उनके शरीरमें यथावत् भए थे
फिर उनसे ब्राह्मणोंने कहा कि तुमलोग हमारी आज्ञा करो तब उन
सबोंने कहा कि जो आपकी आज्ञा होगी सोई हम करेंगे तब उनने
उनसे कहा कि हमने तुम्हारे ऊपर परिश्रम किया है सो केवल जगत्
के उपकारके हेतु किया है सो आपलोग देखो कि आर्यावर्त्त में गदर
मच रहा है सो मुसल्मान् लोग इस देशमें आके बड़ी दुर्दशा करते हैं
और धनादिक लूटके ले जाते हैं सो इस देशकी नित्य दुर्दशा होती जा-
ती है सो आपलोग यथावत् राजधर्म से पालन करो और दुष्टोंको य-
थावत् दण्ड देओ परन्तु एक उपदेश सदा हृदय में रखना कि जबतक
वीर्यकी रक्षा और जितेन्द्रिय रहोगे तबतक तुमारा सब कार्य सिद्ध
होता जायगा और हमने तुम्हारा विवाह अब जो कराया है सो केवल
परस्पर रक्षाके हेतु किया है कि तुम और तुमारी स्त्रियां संग २ रहोगे
तो बिगड़ोगे नहीं और केवल सन्तानोत्पत्तिमात्र विवाहका प्रयोजन

जानना औरमनसेभीपरपुरुष वापरस्त्रीकाचिन्तनभीनहींकरना औरविद्यातथापरमेश्वरकीउपासना औरसत्यधर्ममें सदास्थित रहना जबतककुमारराज्यनजमैं तबतकस्त्रीपुरुषदोनोंब्रह्मचर्याश्रममेंरहो क्योंकिजोक्रीडासक्तहोगे तोबलादिकतुम्हारेशरीरसेन्यूनहोजांयगे तोयुद्धादिकोंमेंउत्साहभीन्यूनहोजायगा औरहमभीएक२केसाथएक२रहेंगे सोहमऔरआपलोगचलैं औरचलकेयथावत्राज्यकाप्रबन्धकरैं फिरवेवहांसेचले वेचारइननामोंसेप्रख्यातथे चौहानपवांरसोलंकीइत्यादिकउनने दिल्लीआदिकमें राज्यकियाथाकुछ२प्रबन्धभीभयाथाजबराज्यकरनेलगे कुछकालकेपीछेसहाबुद्दीन गोरीएकमुसल्मानथा सोभीउसीप्रकारइसदेशमेंआयाथा कनोजआदिकमें उससमयकनोजका बड़ाभारीराजथा सोइसकेभयकेमारे अपनेहीराजाकोउनकोमिला औरयुद्धकुछभीनहींकिया फिरअन्यत्रवहयुद्ध जहांतहांकिया सोउसकाविजयभया औरआर्यावर्तवालोंका पराजयभया फिरदिल्लीवालोंसेकोईवक्तउसकायुद्धभया उसयुद्धमेंपृथिराजमारागया औरउसनेअपनासेनाध्यक्षदिल्लीमेंरखाकेहेतुरखदिया उसकानामकुतुबुद्दीनथा वहजबवहांरहा तबकुछदिनकेपीछेउनराजाओंकोनिकालके आपराजाभयाउसदिनसे मुसल्मानलोग यहांराज्यकरनेलगे औरसबनेकुछ२जुलुमकिया परन्तुउनकेबीचमेंसे अकबरबादशाहअच्छाभया औरन्यायभी संसारमेंहोनेलगा सोअपनीबहादुरीसेऔरबुद्धिसेसबगदरमिटादिया उससमयराजाऔरप्रजा सबसुखीथेपरन्तुआर्यावर्त्तकेराजा औरधनाढ्यलोगविक्रमादित्यकेपीछेसबविषयसुखमें फसरहेथे उससे उनकेशरीरमें बल,बुद्धि,पराक्रम औरशूरवीरताप्रायःनष्टहोगईथीं क्योंकिसदास्त्रियोंकासंग गाना बजाना,नृत्यदेखना,सोना अच्छे कपड़े औरआभूषण कोधारण करना नानाप्रकारकेअतरऔरअञ्जननेत्रमेंलगाना इससे उनके शरीरबड़े कोमलहोगएथे किथोड़े सेताप वा शीत अथवावायुका

सहनहीहोसक्ताथा फिरवेयुद्धक्याकरसकेंगे क्योंकिजोनित्यस्त्रि-
योंकासंगकरेंगे औरविषयभोगउनकाभीप्रायःस्त्रियोंकीनां-
ईहोजाताहै वेकभीयुद्धनहींकरसक्ते क्योंकिजिनकेशरीर इढ़रोग
रहित बल;बुद्धिऔरपराक्रम तथावीर्यकीरक्षा औरविषयभोगमें
नहींफसना नानाप्रकारकीविद्याकापढ़ना इत्यादिककेहोनेसेसब
कार्यसिद्धहोसक्तेहैं अन्यथानहीं फिरदिल्लीमें औरंगजेबएकबा-
दशाहभयाथा उननेमथुरा,काशी,अयोध्याऔरअन्यस्थानमेंभी
जा२के मन्दिरऔरमूर्त्तियोंको तोड़डाला औरजहां२बड़े२म-
न्दिरथे उस२स्थानपरअपनी मसजिदबनादिया जबवहकाशीमें
मन्दिरतोड़नेकोआया तबविश्वनाथकुएमेंगिरपड़े औरमाधव
एकब्राह्मणकेघरमें भागगए ऐसाबहुतमनुष्यकहतेहैं,परन्तुहम-
कोयहबातझूठमालूमपड़तीहै क्योंकिवहपाषाणवाधातुजड़पदार्थ
केसेभागसक्ताहै कभीनहीं सोऐसाभयाकि जबऔरंगजेबआया
तबपुजारियोंनेभयसेमूर्त्ति उठाकेऔरकूएमें डालदिया औरमा-
धवकीमूर्त्ति उठाकेदूसरेकेघरमें छिपादिया किवहनतोड़सके सो
आजतकउसकूएकाबड़ादुर्गन्धजलउसकोपीतेहैं औरउसीब्राह्म-
णकेघरमें माधवकीमूर्त्तिकोआजतकपूजाकरतेहैं देखनाचाहिए
किपहिलेतोसोना,चांदीकीमूर्त्तियांबनातेथे तथाहीराऔरमा-
णिककी आंख बनातेथे सो मुसल्मानों के भयसे और दरिद्र-
तासे पाषाण,मिट्टी,पीतल,लोहा, और काष्ठादिकोंकी मूर्त्ति-
यांबनातेहैं सोअबतकभीइनसत्यानाशकरनेवाले,कर्मकोनहींछो-
ड़देते क्योंकिछोड़ेंतो तबजोइनकीअच्छीदशाआवै,इनकीतोइन
कर्मोंसेदुर्दशाहीहोनेवालीहै जबतककीइनकोनहींछोड़ते और
महाभारतयुद्धकेपहिलेआर्यावर्त्तदेशमेंअच्छे२राजाहोतेथे उ-
नकीविद्या,बुद्धि,बल;पराक्रम तथाधर्मनिष्ठा औरशूरवीरादिक
गुणअच्छे२थे इससेउनकाराज्य यथावत्होताथा सोइक्ष्वाकु,सग-
र,रघु,दिलीपआदिकचक्रवर्त्तीहुएथे औरकिसीप्रकारकापाखण्ड

उनमेंनहींथा सदाविद्याकीउन्नति औरअच्छे२कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहींहोताथा तथा अधर्मसेकभीनहींयुद्धकरतेथेऔरयुद्धसेनिवृत्तनहींहोतेथे उससमय मेलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसीदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेनहीं सोजैनोंने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहै क्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्तरकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छीप्रकाररक्षाकरतेहैं औरजिसपुस्तकके सौरुपैएलगतेथे उस पुस्तकका छापाहोनेसेपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तु अङ्गरेजोंमें भीएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपरवतमहाराजअमृतरायजीकापुस्तकालयकोजलादियाउसमेंकरोड़हांरुपैएके लाखहांअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तवासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्ते हैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगे तोअधिक२ हीनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाऔरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याकेप्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरवेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागकरें तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमूर्त्तिपूजन वैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्य औरकथाकहनेवालोंकेजालों सेछूटें तबउनकाअच्छाहोसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजनादिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकरतेहो उत्तर यह मूर्त्तिपूजनसनातनसेनहीं किन्तुजैनोंकेराज्यहोनेसेआर्यावर्त्तमें चलाहै जैनोंनेपरशनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०कपिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खेथें उनकेबहुत२चेलेभयेथेंऔरउनमेंउनकीअत्यन्तप्रीतिभीथी इससे उनचेलोंनेअपनेगुरुओंकी मूर्त्तिबनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्य नेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्तियांरची

औरउनकानाम महादेवआदिकरखदिए उनमूर्त्तियोंसेकुछवि-
लक्षणबनानेलगे औरपुजारीलोगजैन तथामुसल्मानोंकेमन्दिरों
कीनिन्दाकरनेलगे । नवदेद्यावनीभाषांप्राणैःकण्ठगतैरपि। ह-
स्तिनाताड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमन्दिरम् ॥१॥ इत्यादिकश्लोक
बनाएहैं किमुसल्मानोंकीभाषाबोलनीऔरसुननीभीनहीचाहिए
औरमत्तहस्ती अर्थात्पागलपीछेमारनेकोदौड़े सोजैनकेमन्दिर
मेंजानेसेबचसक्ताभीहोय तोभीजैनकेमन्दिरमेंनजाय किन्तु हाथी
केसन्मुखमरजाना उससे अच्छाऐसे२ निन्दाकेश्लोकबनाएहैं सो
पुजारीपण्डितऔरसम्प्रदायीलोगोंनेचाहाकि इनकेखण्डनकेबि-
ना हमारीआजीविकानबनेगी यहकेवलउनकामिथ्याचारहै कि
मुसल्मानकीभाषापढ़नेमें अथवाकोईदेशकीभाषापढ़नेमें कुछदो-
षनहीहोता किन्तु कुछगुणहीहोताहै । अपशब्दज्ञानपूर्वकेशब्द-
ज्ञानेधर्मः । यहव्याकरण महाभाष्यकावचनहै इसकायहअभि-
प्रायहै किअपशब्दज्ञानअवश्यकरनाचाहिए अर्थात्सबदेशदेशा-
न्तरकीभाषाकोपढ़नाचाहिए क्योंकिउनकेपढ़नेसेबहुतव्यवहारों
काउपकारहोताहै औरसंस्कृतशब्दकेज्ञानकाभीउनकोयथावत्
बोधहोताहै जितनेदेशोंकीभाषाजानैं उतनाहीपुरुषकोअधिक
ज्ञानहोताहै क्योंकिसंस्कृतकेशब्द बिगड़केदेशभाषा सबहोतीहै
इससेइन के ज्ञानोंसे परस्परसंस्कृतऔरभाषाके ज्ञानमें उपकारही
होताहै इसीहेतुमहाभाष्यमेंलिखाकिअपशब्दज्ञानपूर्वकशब्दज्ञा-
नमें धर्महोताहै अन्यथानहीं क्योंकिजिसपदार्थका संस्कृतशब्द
जानेगा औरउसके भाषा शब्दकोनजानेगा तोउसके यथावत्प-
दार्थकाबोध औरव्यवहारभी नहींचलसकेगा तथामहाभारतमें
लिखाहै कियुधिष्ठिरऔरबिदुरादिकअरबीआदिक देशभाषाको
जानतेथे सोईजबयुधिष्ठिरादिकलाक्षागृहकोओरचले तबबिदुर
जीनेयुधिष्ठिरजीकोअरबीभाषामेंसमझायाऔरयुधिष्ठिरजीने अ-
बीभाषासेप्रत्युत्तरदिया यथावत्उसकोसमझलिया तथाराजसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा औरप्रजास्थआएथे उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथे औरवेइसदेशमेंआतेथे फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इससे क्याआयाकि देशदेशान्तरको भाषाकेपढनें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तु बडाउपकारहीहोताहै और जितनेपाषाणमूर्त्तिके मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्तियांहै वैसीआर्यावर्त्तवासिओंकेमन्दिरोंमें भी जड़मूर्त्तियांहैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछविशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमेंनजाना औरअपनेमन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिधुबनालियाहै आजीविकाकेहेतु प्रश्न वेदशास्त्रमेंमूर्त्तिपूजनलिखाहै. औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहोतीहै उसमेंदेवकोशक्तिभीआजातीहै फिरआपखण्डनक्योंकरतेहैं उत्तर वेदशास्त्रमेंमूर्त्तिपूजनकहींनहीलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमेंशक्तिआतीहै प्रश्न सहस्रशीर्षापुरुषः०इहप्यस्वाग्ने प्राणदाअपानदा० ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभीहोतीहै तथाप्रतिष्टा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मेहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ इत्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै उत्तर इनमन्त्रोंकेअर्थनहीजाननेसेआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णईश्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषकेविशेषणहैं सोपुरुषकेनिराकारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहीबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः। इत्यादि-

कनिरुक्तमेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै।सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षीणितथा सहस्राणिपादाः असंख्याताःयस्मिन्पूर्णेपुरुषेसः सहस्रशीर्षासहस्राक्षः सहस्रपात्पुरुषः॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और जितनेपग, असंख्यात वेसबपूर्णजो परमेश्वरउसीमें बासकरते हैं क्योंकिसबजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुव्रीहि समासहो अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने मे बहुव्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके उत्तरार्द्ध मेंस्पष्टहै। सभूमिꣳसर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। पुरुषएवेदꣳसर्वं वेदाहमेतम्पुरुषम्॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंसेयहीअर्थनिश्चितहोताहै औरसबजगतकीउत्पत्तिभीपुरुषसेलिखीहै बिनापरमेश्वरके किसीमेंनहोघटसक्तो इस्से जोकोईकहेकिइनमन्त्रोंसे षोडशोपचारपूजाहोतीहै उसकीबातमिथ्याजाननी और प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकीस्थिति औरस्थापन का होना जोमूर्त्तिमें प्राणआते तोमूर्त्ति चेतनहीहोजाती सोजैसी पहिलेजडथी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना, पीना,बैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नही करती इस्से जोकोईकहेकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहबातउसकीमिथ्याजाननी औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछिद्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहेंकि हमप्राणप्रतिष्ठाकरतेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुरदेके शरीरमेंक्योंनहीप्राणप्रतिष्ठाकरतेहैं किसोराजा,बाबू औरसबजगत्के मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो तुमलोगोंकोबहुतधनमिलेगा औरबडीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंनहीं ऐसीबातकरतेहो जोवेकहेंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदियाहैं वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिला सक्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राण और चेतनता रहित जड़ बना ए हैं उन को तुम चेतन और प्राण सहित कैसे बना सकोगे कभी नहीं और जो कहैं कि देव और सिद्धपुरुष मृतक को जिला देते हैं उन से पूछा जाता है कि वे देव और सिद्ध क्यों मर जाते हैं इस से प्राणप्रतिष्ठा की सब बात झूठी है प्राणदा अपानदा इन का अर्थ पूर्वोद्ध में कर दिया है वहीं देख लेना और उद्बुध्यस्वाग्ने। इस का भी अभिप्राय वहीं देख लेना। आत्मे हागच्छतु चिरं सुखं तिष्ठतु स्वाहा । इत्यादि संस्कृत मिथ्या हो लोगों ने रच लिया कोई सत्य शास्त्र में नहीं है देखना चाहिए कि । शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतए शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ १ ॥ अग्निर्मूर्द्धा० उद्बुध्यस्वाग्ने० इत्यादि मन्त्रों में कहीं शनैश्चर, मङ्गल और बुधादिक ग्रहों का नाम भी नहीं है परन्तु विद्याहीनों ने मे आजीविका के लोभ से ब्राह्मणों ने जाल रच रक्खा है कि ए ग्रहों को कार्ड हैं सो कि सो ने ऐसा विचारा कि ग्रहों का मन्त्र पृथक् निकालना चाहिए सो मन्त्रों का अर्थ तो नहीं जानता किन्तु अटकल से उस ने युक्ति रची कि शनैश्चर शब्द के आदि में तालव्य शकार है । और शन्नो देवी इस मन्त्र के आदि में भी तालव्य शकार है इस से यही शनैश्चर का मन्त्र है तथा पृथिव्या अयम् । इस से परमेश्वर का ग्रहण होता है इस शब्द से मङ्गल को लिया और उद्बुध्यस्व क्रिया से बुध को लिया देखना चाहिए कि शङ्के सुख का नाम उद्बुध्यस्व बुध अवगमने धातु की क्रिया है इस से बुध को लिया इत्यादिक भ्रम से ग्रहों को ग्रहण किया है सो यह कथा केवल लाल बुझक्कड़ की नाई है जैसे कि किसी गांव में एक मूर्ख पुरुष रहता था उस का नाम लाल बुझक्कड़ था कभी किसी राजा का हाथी उस गांव के पास से चला गया था और किसी ने देखा नहीं था फिर जब प्रातःकाल लोग उठ के बाहर चले तब खेत और मार्ग में हाथी के पग के चिन्ह देख के बड़े आश्चर्य भए और लाल बुझक्कड़ को बुला के पूछा कि ए ह क्या है तब वह बड़ा रोने लगा फिर रो के हसा तब सब ने उस से पूछा कि तुम रो के क्यों हसे तब उस ने उन से कहा कि जब मैं मर जाऊंगा तब ऐसी २ बातों का उत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैंरोया औरहंसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा
सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैंहंसा तबउन्नेपूछा कि
इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुझक्कड़बुझिया औरनबू-
झाकोइ। पगसेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ॥ हिरनाअपनेपग
में चक्कीकेपाट बांधके कूदतार चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह
हैं तबतोवेसुनके बड़ेप्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुझक्कड़
बड़े पण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनविषय औ-
रवेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल कररक्खाहै बेदोंमें ऐ-
क्खाहै इससे बेदकोनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोंमें ऐ-
सोर२झूठबातहोती तोवेदहीसच्चनहोसक्ते इस यहीनिश्चयकरना
किअपनेर२मतलबकेहेतु मिथ्यार२कल्पना लोगोंनेकरदियाहै और
वेदमें सच्चबातहीहै इनबातोंका लेशभीनहींहै प्रश्न वेदअनन्तहैं
क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१
औरअथर्ववेदकी ९ शाखाहैं सोबहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें
पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो। अनन्ता वै वे-
दाः यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं
अर्थात्अनन्तशाखहैं उत्तर शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीय हो-
तीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फ-
ल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसोहो जोर२शाखाप्रसिद्ध हैं उनर२शा-
खाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगी किजैसाइनमें सत्यर२अर्थप्रति-
पादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इससे जाना जाताहै किइनप्रसिद्ध
शाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं
होगा ऐसाजोकोईकहै किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप
लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तसाखाओंमें लिखाहोगा औरआप
लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी
प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा
नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकतेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी, मिथ्याभाषण, विश्वासघातक, कन्या, माता, भगिनी, इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानें उनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचांडालका नामब्राह्मणहोय इस्सेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरैं और इनशाखाओंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इस्से जोवेद पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकोनांई ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिए हैं। जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य: ।ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमें है और तैत्तिरीय शाखामें । मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य । ऐसापाठहै । जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योतिः । पदसेस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परविरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इस्से विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरविरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानैं किसकोमिथ्या इस्से वेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इस्से ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोवेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढ़ना वा देखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहेगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढ़निश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किवेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढ़सकेंगे इस्से सबलोगोंको भ्रमहोबनारहेगा इस्से वेदशब्द कायहअर्थहै जिस्सेजानाजायपदार्थ उसकानामवेदहै और वेत्तिसोयवेदः । जोजाननेवालाहै उसकानामभीवेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेंकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तियैस्ते वेदाः । जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामवेदहै । सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणहै वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इससे उनका नामवेदहै इससे
अनन्तावैवेदाः। ऐसाब्राह्मणग्रन्थ, तिसमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै। प्र०
पाषाणादिक मूर्त्ति पूजन वेदादिकोंमेंनहींहैं फिरकैसेयहपरंप-
रा चलीआई औरइतनी बड़ोप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नहो
खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकर्तेहैं उत्तर आपलोग सर्वज्ञन-
हीहै वाचिकालदर्शीजोकि परम्पराकाठीक२निश्चयकरें देखना
चाहिए किसत्यनारायणशीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनए२स्तोत्र नवी-
न२तीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहोजातेहैं औरइनकोपरंपरा
मानलेतेहैं औरवेअबकेबनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकर-
ताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक
अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायमेडरताभीहैसोलो
कोपरंपराआपलोगमानेगें तोबहुतदोषआजांयगे औरकभीन
होसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवे और उसकेकुलमेंपुत्रा-
दिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोड़ते
हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहींनिकाल
डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमू-
र्खवापण्डितनियमसेक्योंनहींहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय
औरजहलखानेकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजहलखानेको क्योंन-
हींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभीक्योंनहींमर
जाय प्रथमअंगरेजीइसदेशमें पढ़ाईनहींजातीथी अबक्यों पढ़ी
जातीहै रेलपरपहिलेचढ़नानहींहोताथा औरतारपरखबरन-
हींआतीजातीथी फिररेलपरचढ़ते औरतारपरखबर भेजतभे-
जातेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपरा
कानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै
अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनकी मिथ्याप्रवृत्तिबड़ीभई
है सोकेवलविद्या,धर्म.विचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठरा-
जाओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहोहो-

तौ तबअनेकभ्रमोंमेंबुद्धिनष्टहोतीहै तबबहुतमूर्ख, अधर्मी,पाखण्डी तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिरबडे भ्रमजालमेंपड़के वेवृत्त जैसाउपदेशकरतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और लोगोंकोबुद्धि विपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै। उनकोबुद्धिसेकुछनहींसूझता गतानुगतिकालोका नलोका:पारमार्थिका:। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम् ॥ इसमेंयह दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्बेकाअर्घालेकेतर्पणऔरस्नानके हेतुगया उसघाटमें अन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डितकोशौचकीइच्छाभई तबताम्बेकाअर्घाबालूमें गाड़दिया औरउसकेऊपरगीलीबालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरचलागया अन्यस्नानकरनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डितसेतोकिसीनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितनेपिण्डबनाकेरक्खाथा वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनके हृदयमें ऐसाविचारआयाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपुण्यकेवास्ते हीकियाहोगा इसहेतुहमभीऐसाहीकरें तबतकपण्डितभी शौचहोकेआया औरउननेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसेधरेहैं औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसे पूछाकि आपयहकामक्योंकरतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोदेखकेहमलोगभीकरतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्या प्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमाराभीहै पण्डितनेविचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितनेकहाकिअपना२पिण्डमतबिगाड़डारो नहींतोतुमकोबड़ापापहोगा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभयाहोगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्डबिगाड़डारो तबमैंभीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबपण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअर्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेपूछाभीनहीं औरपिण्डधरनेलगगए तबउननेकहाकि आप काकामदेखके हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्ति पूजन एककादेखकेदूसरेभीकरनेलगे ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकीनांई लोगग-तानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेड़आगेचले उसकेपीछे सबभेड़चलने लगतीहैं और जैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनेवाभूकनेलगे उ-सकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं वैसीहीविद्याहीन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े २ आग्रहकरकेनष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थविचारसत्य२कोई नहोकती इस्से हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकरतेहैं पक्ष-पातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंमे औरवेदादिक सत्यशास्त्रों सेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वासबव्यवहारसुखके हेतुपरमेश्वरहीकीदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मू-र्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपढ़िलेभए औरब-हुतपण्डितभीहैं फिरखण्डननहीकोईकरता और मूर्त्तियोंकापू-जननहीकरतेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकरतेहैं सो आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैं आपसेपूछताहूं कि पण्डितकौनहोताहैजोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्त चि-न्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह, मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक,पुराणमन्त्र,महोदध्यादिक,तंत्रग्रंथ औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै किन्तु अविवेकीहोबनजाताहै क्योंकि सदसद्विवेककर्त्रीबुद्धिःपण्डा पण्डासंजाताअस्येतिसपण्डितः॥ जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवाली होय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामविवेकयुक्त बुद्धिजि-सकोहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगविचारकेदेखें किय-थावत्धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाविवेकइनपण्डितोंको हैवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआज कालकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तुपण्डितलोगप्रायःनहींडरते

किन्तु कोई पण्डित सैकड़ों में एक अच्छा भी है परन्तु उस एक की वे धूर्त्त लोग बात ही चलने नहीं देते और बहुत्व जानता भी है तो मन ही में सत्य बात रखता है क्योंकि वह सत्य कहै तो सब मिल के उसकी दुर्दशा कर देते हैं इस भय का मारा वह भी मौन कर लेता है परन्तु उन सत्य पण्डितों को मौन वा भय करना उचित नहीं क्योंकि मौन और भय करने से देश का अकल्याण धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि, और इन धूर्त्तों को बन पड़ेगी इस से कभी मौन वा भय सत्य करने वा कहने में नहीं करना चाहिए क्योंकि जो अच्छे पण्डित और बुद्धिमान् भय वा मौन करेंगे तो उस देश का नाश हो जायगा और वेद विद्यादिक न ही पढ़ने से बहुतों को सत्य २ निश्चय भी न होहै इस से वे खण्डन नहीं कते हैं लोक के भय के मारे कि हमारी आजीविका नष्ट हो जायगी जो हम खण्डन करेंगे तो हमारी निन्दा होगी और आजीविका भी नष्ट हो जायगी इस से ऐसा कहना वा करना न चाहिए जिस से कि संसार में विरोध हो जाय परन्तु मैं कहता हूं कि भय तो श्रेष्ठ पुरुषों को एक परमेश्वर और अधर्म के आचरण हो से करना चाहिए और जो मैं खण्डन कर्ता हूं सो प्रत्यक्षादिक प्रमाण और वेदादिक सत्य शास्त्रों ही से कर्ता हूं सो आज तक किसी ने वेदों का प्रमाण वा ठीक २ युक्ति नहीं दिया क्योंकि प्रमाण और युक्ति तो सत्य बात में हो सक्ती है असत्य में कभी नहीं और इस में प्रमाण वा युक्ति कोई दे भी नहीं सकेगा इस में कुछ सन्देह नहीं प्रश्न अनेक संन्यासी, उदासी वैरागी और गोसांई आदिक खण्डन नहीं कर्ते हैं और पूजा कर्ते हैं उत्तर वे भी वैसे ही संसार की निन्दा और आजीविका से डरते हैं इस से वे खण्डन नहीं कर्ते वा पूजा नहीं छोड़ते । प्रश्न उनको क्या आजीविका का भय है और संसार का जिस से कि वे डरते हैं क्योंकि उनको विवाह मरने में द्वादशाह करना हो नहीं कि समें धन को चाहना हो और माता, पिता, स्त्री, पुत्रादिक, कुटुम्ब, और घर को छोड़ के स्वतन्त्र हैं इस से उनको भय नहीं है परन्तु वे भी खण्डन नहीं करते और पूजा कर्ते हैं फिर आप ही बड़े विरक्त आगए

किइनबातोंका खण्डनकरतेहैं। उत्तर यहबाततोसत्यहै किउनको
सत्यभाषणादिकाछोड़ना औरपाषाणादिकमूर्त्तिकापूजनकर-
ना उचितनहीं परन्तुवेभोसैकड़ोंमें कोईएकधर्मात्मा औरपण्डित
है अन्यजैसेगृहाश्रममेथें वैसेहीबनेरहतेहैं औरकितनेकगृहस्थों
सेभोनीचकर्मकरतेहैं क्योंकिउननेकेवलखानेपोने औरविषयभोग
केहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ
नहीमालूमपड़ती क्योंकिधर्मकीरक्षाऔरमुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त
नहोहोनेहैं किन्तु अपनेशरीर औरइन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंकी
नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय औरइनकोयथावत्परीक्षा
करै तोहजारोंमेंएकविरक्तताकेयोग्यनिकलगा बहुतमजूरीऔर
हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकिजबपूर्णविद्या,जितेन्द्रिय-
ता,छल,कपटादिकदोषरहितहों वें सत्य२उपदेश तथासबकेऊपर
कृपाकरके वैराग्य,ज्ञान,और परमेश्वरकाध्यानकरैं तथाकाम,
क्रोध,लोभ,मोहादिकदोषोंकोछोड़ैं औरसत्यधर्म,सत्यविद्या,स-
त्यउपदेशकीसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना
चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिककैसेधूर्त्ततासे धनहरणकरके
धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेलें औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसम-
र्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर,धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण
करो सोबड़े२मन्दिरउनोनेबनाएहैंऔरनानाप्रकारकीमूर्त्तियां
रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलाबत्तू, सच्चे झूठे आभूषणोंसे
ऐसाजालरच्चाहै किदेखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रा-
यःस्त्रोलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री
औरव्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर
स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिस्से जोचाहै उस्से समागमबिना
परीश्रमसेकरले उसमेंशयनआर्ती औरमङ्गलातीबहुधाव्यभिचा-
रकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रोहीरहतीहै इस्से आनन्दपू-
र्वकनिर्भयहोकेक्रीड़ाकरतेहैं परस्परमिलकेऔरउसमें पापभोन-

हीं गिनते क्योंकि एकश्लोक बनारक्खा है॥ अहंकृष्णस्त्वं राधाह्या-वयोरस्तु संगमः॥ परस्त्री और परपुरुष जब परस्पर गमन कराचाहैं तो इसको पढ़ले तो कुछ परस्त्रीगमन वा परपुरुषगमन में कुछ पाप नहीं होता है जब वे परस्पर रत्नमुख होवें तब पुरुष कहै कि मैं कृष्ण हूं तू राधा है तब स्त्री बोली कि मैं राधा हूं आप कृष्ण हैं ऐसा कहके कुकर्म करने को लग जाते हैं उनके दो मन्त्र हैं श्रीकृष्णःशरणंमम। यह उनोंने मिथ्या संस्कृत बना लिया है इसका यह अभिप्राय है कि जो कृष्ण सोई मेरा शरण अर्थात् इष्ट है फिर भागवत की कथा में राधा मण्डल की लीला सुनके ऐसा निश्चय करते हैं कि हम लोग कृष्ण ने जैसी लीला किया है वैसी हम भी करैं कुछ दोष नहीं और इसका ऐसा भी अर्थ बन सक्ता है कि जो श्रीकृष्ण है सो मेरी शरण को प्राप्त हो। अर्थात् मेरा सेवक श्रीकृष्ण बनजाय ऐसा अनर्थ भी भ्रष्ट संस्कृत से हो सक्ता है सो यह मन्त्र गोसांई लोग दरिद्र, कङ्गाल और साधारण पुरुषों को देते हैं और जो बड़ा आदमी है उसके हेतु दूसरा मन्त्र बनाया है वही समर्पण का मन्त्र है॥ क्लीं कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा॥ इस मन्त्र को उसको देते हैं कि जो शरीर, मन, और धन गोसांई जी के अर्पण करदे और गोसांई लोग अपने को कृष्ण मानते हैं और अपनी चेलियां वा जगत् की सब स्त्रियां राधा है सो जिस स्त्री से चाहै उस स्त्री से समागम करलें उनको पाप नहीं लगता और उनके समर्पणी जो चेले होते हैं वे अपनी प्रसन्नता से गोसांई जी को प्रसादी करा लेते हैं अर्थात् स्त्री वा पुत्र की स्त्री तथा कन्या उनको गोसांई जी की खास सेवा में एकान्त में भेजते हैं जब गोसांई जी एकबार अपनी सेवा में प्रथम रखलेते हैं तब वह स्त्री पवित्र होजाती है और वह स्त्री अपने को धन्य मानती हैं तथा उनके सेवक भी अपने को धन्य मानते हैं जिनका गुरु इस प्रकार का व्यभिचारी होगा उनका शिष्यवर्ग व्यभिचारी क्यों न हो होगा सो बड़े २ अनर्थ होते हैं अब के सम्प्रदाय में सो कहने योग्य नहीं वे पान बीड़ा खाके पात्र में पीक डालदेते हैं सो उसको उनके चेले बड़ी प्रसन्नता से खालेते हैं और अ-

पनेकोबड़ाधन्यमानलेतेहैं किहमकोगोसांईजीमहाराजकीप्रसा-
दीमिलगई जबकोईधनाढ्यउनकोअपनेघरमेंलेजाताहैउसकाना-
म पधरावनीकहतेहैं जबवेवहांजातेहैं तबबड़ा एकपात्रताम्बे वा
लोहेकारखलेतेहैं उसकेबीचमेंस्नानकेहेतुएकचौकीरखदेतेहैं फि
रगोसांईजी एकधोतीसहित उसपात्रकेबीचमें चौकीपैबैठजातेहैं
फिरअनेकसुगन्धकेसरादिकपदार्थोंसे उनकेशरीरकोखौऔरघु-
षमलतेहैं फिरअच्छे२श्रेष्ठ२जलसेउनकोस्नानकरातेहैं फिर
जबस्नानहोजाताहै तबसूखापीताम्बरको धारलेतेहैं औरगीली
धोतीउसकड़ाहीकेजलमेंछोड़देतेहैं फिरगोसांईजी निकलआते
हैं तबउनकेसेवकलोगउसजलकोपीतेहैं औरअपनेकोधन्यमानते
हैं फिरगोसांईजी,बहूजी,बेटीजी,लालजी,ठाकुरजी, पुजारी,म-
वैयाजी, इनसातजालोंसेउसगृहकाबहुतधनहरलेतेहैं इससेउनके
पासखूबधनहोगयाहै उससे रातदिनविषयसेवाऔरप्रमादमेंरह-
तेहैं उनकेचेलेजानतेहैंकिहममुक्तिकोप्राप्तहोंगे परन्तुइनकर्मों
से मुक्तितोनहींहोनी किन्तु नरकहीहोना क्योंकि इनप्रमादोंमें
जिनकाधनजाताहैउनकाभलाकभीनहोगा औरउनगुरुओंकाभी
औरउनने एककथारचरक्खीहै किलक्ष्मणभट्टएकब्राह्मणतैलंगथा
उसनेकाशीमेंआके संन्यासलेनेचाहा तबउससे पूछाकिआपकेमा-
तापिता वाविवाहितस्त्रीतोघरमेंनहींहै तबउननेकहामिथ्या कि
मेरेघरमेंकोईनहींहै मुझकोसंन्यासदेदीजिए फिरउननेसंन्यास
देदिया कुछदिनकेपीछेउनकीस्त्री काशीमेंखोजती२आई औरवह
कहींमार्गमेंमिला सोउसकेपीछे२ चलीगई वहअपनेगुरुकेपास
जाकेबैठे स्त्रीभीबैठी औरउसकेगुरुसेस्त्रीनेकहा किमहाराजमुझ-
कोभीआपसंन्यासदेदीजिए क्योंकिमेरेपतिकोतो आपनेसंन्यासदे
दिया अबमैंक्याकरूंगी तबतोउससंन्यासीनेबहुतक्रोधकरकेउ
सकादण्डऔरकाषायवस्त्रलेलिए औरउससे कहाकितूंझूठक्योंबो
ला तैनेबड़ाअनर्थकिया अबतुमयज्ञोपवीतपहरलेओ औरअपने

स्त्रीकेसाथरहा औरउनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रव-
ड़ाश्रेष्ठहोगा सोउनकेभाषा-ग्रन्थमेंऐसीबात लिखीहै, सोमुझको
अनुमानसेमालूमपड़ताहै किजबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर
खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीसे फसगए फिर
जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए
परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मणनेपंक्तिमेंनहीलिया सोआजतक
तैलंगब्राह्मणोंकीऔरगोकुलस्थोंकीएकपंक्तिवाएकबिबाहनहीहो-
ताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबा
ह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक
पुत्रभया उसकानामबल्लभरक्खा इसबिषयमें वलोगऐसाकहतेंहैं
किजन्मसमयमेंही उसबालककोबनमेंछोड़के चलेगए सोउसबा-
लककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था। इससे उस बालक
कोकोईजानवरनहींमारसका जबवेपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय
करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर-
षकीउमरमें सोयहबातहमको झूटमालुमदेतीहै क्योंकिवे बनमें
बालककोकभीनहींछोडेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेंगा औरपांच
वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहीहोसक्ती फिरवेक्या पराजयकरेंगे
यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्यारचलिईहैक्योंकिसुबो
धिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमेंआतेहैंउन
मेंउनकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इससेवेक्यापंडितों
कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे
कहाकिहमारे जितनेदैवीजीवहै उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्ल
भजीफिरतेघूमतेमथुरामें आकेरहेऔरवहांसंप्रदायका जालफै-
लायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेबिवाहकिया उससे
सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीबजतीहै फिरऐ-
सी२कथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांई जीकाचेलाहोगावह
हीवैष्णवऔरदैवीजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहीहोतावह-

आसुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीवहै ऐसीप्रसिद्धहोनेसे
बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु
चेलेहोतेहैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें र-
हतेथेतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूंदहीमेरेलिये बाजारसेले
आवहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेंगया वहांएकदहीलेके बूढीस्त्री
बैठीथी उस्सेउसनेकहाकी इसदहीकाक्यातूं मुल्यलेगी तबबुढियाने
जानाकियह वल्लभजीका चेलाहै उस्सेबोलीकिमें इसदहीकेबदले
मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढियासे कहाकितुझको
मैंनेमुक्तिदेदी सोउसबुढियाकोमुक्तिहोहोगई औरवल्लभजीकाना
मरक्खाहैमहाप्रभुसोऐसी२झूठकथाबनाकेजगत्कोठगलेतेहैं एक
घासकीकण्ठीदेदेतेहैं उसकानामरक्खाहै पवित्राऔररोरीकीदो
रेखाश्रृङ्गकेतुल्य ललाटमेबनवादेतेहैं फिरकहतेहैंकितुमगोसांई
जीकेसमर्पणहोजा औरइस्से तुमारासबपापछुटजायगा तुमलोग
दैवीजीवऔरवैष्णवकहाओगे इसलोकमेआनन्दसेभोगकरोऔर
मरनेकेपीछेतुमलोगगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी
औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग कर्तेहैं वैसेतुम
भीअनेकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री
औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेंहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा
रचीहैं किविट्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलो-
गसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुत२ धनदेदे२के धनाढ्यकीस्त्रीयां
एकरात्रीं गोसांई जीकेसेजामे रहआतीहैं तबउनकेचेले औरचे-
लियांउसस्त्रीसेकहतीहैं कितूं बड़ीसौभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेंतु
झकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसां
ई जीशरीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरैं उनचेलें औरचे-
लियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं
क्योंकीपहिलेहो समर्पणकियागयाथाबडेआनन्दकासंप्रदायउन
काहै किचेलचेलोनोकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेंसमुद्रमेंडूब

केमग्नहोजातेहैं औरगोंसाईलोगखूबशृङ्गारमेंबनेठनेसदारहते हैंजिसेदेखकेस्त्रीलोगमोहितहोजांय सोरातदिनस्त्रीलोगघेरकेरहतीहैं औरस्त्रीयोंके अर्थातचेलियोंकेभुण्डकेभुण्ड२ क्रीडाकरते रहतेहैं क्योंकिगोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरउनकीचेलियांअपनेकोराधारूपसखीमानतीहैंखूबस्त्रीलोगधनदेतीहैंऔर अपनीइच्छापूर्वकक्रीड़ाकरतीहैं केवलवेबड़ेपामरहोजातेहैं इससे पशुकीनांई अर्थात्लालमुखकेबांदरजैसेक्रीड़ाकरतेहैं वैसेवेभी पशुहैं इसमेंकुछसन्देहनहीं जितनेमन्दिरधारी,वैरागीहैं उनकाभीप्रायःऐसाहीव्यवहारहै एकचक्रांकितलोग जोकिआचारी कहातेहैं उनकाऐसामतहैकि।तापःपुंड्रं तथानाम मालामन्त्रस्तथैवच। अमीहिपञ्चसंस्काराः परमैकान्तहेतवः॥ यह उनका श्लोकहै शंख,चक्र,गदाऔरपद्मलोहेचांदीवासोनेके चारचिन्हबनारखतेहैं जोकोईउनकाचेला वाचेलीहोतीहै जबवेस्नानकरके आतेहैं तबबराबर पंक्तिउनकीबैठजातीहै औरउनचिन्होंकोअग्नि मेंतपाके उनकेहाथकेमूलमेंतप्त२लगादेतेहैं उससमयजिसअग्नि मेंतपायाजाताहै उसकानामवेदीरक्खाहै जबउनकेहाथमेंतप्त२ वेलगातेहैं तबबड़ादुःखउनकोहोताहै क्योंकिचमड़े,लोम और मांसकेजलनेसे उनकोबड़ीपीड़ाहोतीहै औरदुर्गन्धभीउठताहै फिरउनकेहाथमेंलगाके चमड़ा,मांस,उसमें कुछ२लगरहताहै औरएकपात्रमेंजलवादूधरखदेतेहैं उसमें उनचिन्होंकोबुझादेते हैं फिरकोई२उसजल वा दूधकोपीलेतेहैं देखनाचाहिएयहबात कौनधर्म औरकिसयुक्तिकोहोगी केवलमिथ्याहीजानना क्योंकि जीतेशरीरकोजलानेसे एकप्रथमसंस्कारमानतेहैं औरजितनसंप्रदायवालेहैं वे उर्द्ध पुंड्रवात्रिपुण्ड्रका संस्कारसबमानतेहैं उनसे जोशैव,वैष्णवादिक अपनेहृदयमें अभिमानकरतेहैं उर्द्ध पुण्ड्रवाले नारायणकेपगकीआकृतितिलककोमानतेहैं तथाशैवशाक्तादिक महादेवकेललाटमेंजोचन्द्रहै उसकीआकृतिमानतेहैं फिरचक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकरतेहैं उसकानामश्रीरखलियाहै इसमें विचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी औरचन्द्रमाकाचिन्हहोवै तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगउनकोक्यों होवैं फिर वेकहतेहैं किविनातिलकसेचाण्डालकेतुल्यवह मनुष्यहोताहै उनसेपूछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहींजोवेकहेंकिहोसक्ताहै तो गधावाकुत्तेकेललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै वानहींसोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहैकिऔरकाऔर होजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें विराजमानतोभीउदर कापालननहोना कठिनदेखपड़ताहै इस्से ऐसा निश्चयहोताहै कि यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहींहै किन्तुदरिद्रऔरउष्णताजाननी चाहिए फिरवेतिलकके विषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया वृक्षकेऊपरएककौआबैठाथाउसनेविष्टाकियासोगिरीउसकेललाट केऊपर सोतिलककीनांईचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदूतोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेस्वामीकीआज्ञासेहमइसको नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोलेकि हमारेस्वामीकीआज्ञा है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धे होगए इसकेललाट मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींचली औरउसकोबैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीप्रीतिसेप्रतिष्ठाकिया औरउस्से कहातूआनन्दकर बैकुण्ठमें ऐसे२प्रमाणोंसेतिलक कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके बीचमेंदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णबैठाहोय ऐसामानतेहैं तथामाधवार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकर्ते

हैं उसकोभीऐसामानतेहैं तथाचैतन्यसंप्रदायमेंजोहैं वेकटारके ऐसाचिन्हको हरिपदाकृतिमानतेहैं औरराधावल्लभीभीबिन्दुको राधावत्मानतेंहैं कबीरकेसम्प्रदायवाले दीपकीशिखावत् तिलककोमानतेंहैं औरपण्डितलोगपिप्पलकेपत्तेकीनांई कोईर तिलककर्तेंहैं सोकेवलमिथ्याकल्पनालोगोंनेबनाईहै जोतिलककेबिना चाण्डालहोताहोतो वेभीचाण्डालहोजांय क्योंकिजबस्नान और मुख्यप्रक्षालनकर्तेहैं तबतोउनकेभीललाटमें तिलकनहीरहनेपाता फिरवेचाण्डाल क्योंनबनजांय औरजोफिरतिलकके करनेसे उत्तमबनजांय तोचाण्डालउत्तमबननेमेंक्यादेर परन्तु चक्रांकितोंकेग्रन्थमन्त्रार्थदिव्यसूर्य्य,रत्न,प्रभाऔरनाभानेबनाई भक्तमालादिकोंमेंयहप्रसिद्धलिखाहै किजोचक्रांकितोंकामूलआचार्यषठकोपजीसोकंजरऔरहावडाकेकुलमेंउत्पन्नभएथें सोईउनग्रंथोंमेंलिखाहैकि। विक्रीयशूर्पं विचचारयोगो । यहबचनहैइसकाइस्मे यहअभिप्रायहैकिसूपकोबेचकेयोगीजोषठकोपसोविचरतेभएइस्से क्याआयाकिवहसूपबनानेवालेकेकुलमेंउत्पन्नभयाथाउनहीनेचक्रांकितसंप्रदायकाप्रारम्भकियाइस्से उसकाटोपचक्रांकितआजतकपूजतेंहैंउनकेपीछेदूसराउनकाआचार्यमुनिवाहनभयाउसकोऐसोकथाउनग्रंथोंमेंहै किदक्षिणमेंएकतोतादरीऔररङ्गजोदोस्थानहैं उनमेंबहुतसेउनकेसंप्रदायकेसाधूआजतकरहतेंहैं वहांएकचांडालथाउसकोऐसोइच्छाथीकिमैंभीकुछठाकुरजीकापरिचर्याकरूं परन्तुमन्दिरमेंझाडूबहारूदेनेकेहेतुपुजारीलोगउसकोनहींआनेदेतेथे सोजबप्रातःकालकुछरात्रिरहैतबपुजारीलोगस्नानकोदरवाजाखोलकेचलेंजांय तबवहचांडालछिपके मन्दिरमेंझाडूदेके निकलजाय कोईउसकोदेखेनहीं परन्तु पुजारियोंने बिचारकिया किझाडूकौनदेजाताहै रातमेंछिपके दोचारपुजारीबैठेरहे किउसको पकडनाचाहिए जबप्रातःकाल औरपुजारी स्नान को चलेगयेतबवह चांडालमन्दिरमे घुसकेझाडूदेनेलगा जबउननेदे

खातथपकडके ऐसामाराकि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोंनेप कडकेमंदिरकेबाहरउसको डालदियाजबस्नानकरकेपुजारीलो-गआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगे सोनखुलाक्योंकिठाकुरजी नेउसकोमारनेमे बडाक्रोधकिया तबवडेआश्चर्यभये सबकिकिवा-डक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक वैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि किवाडोतबखुलेगो आपसबलोग उसचांडालको पालकीमे बैठाके अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिराओऔरपा लकीसहितमं-दिरकोपरिक्रमाकरो फिरउस कोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपू-जाकरै औरइस मंदिरका अधिष्टाताऔर सबकागुरू बनैजबवह किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐ-साहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमु-निवाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेवाहननामपा-लकोउठाई इसेउसकानाम मुनिवाहनपडा उनका चेलाएकमु-सलमानभया उसकानाम यावनाचार्यइसकोअब चक्रांकितोंने-तिकयामुनुचार्य्य नामरक्खाहै उनके चेला रामानुजभये वहब्रा-ह्मणथेरामानुजके विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजी काअवतार-हैशंकराचार्य शिवका निबार्कमाधव रामानन्द औरनित्यानन्द येचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहै कबीरब्रम्हका यहबातसब उनकोमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदाय केहेतुमिथ्याकथा लोगोनेरचलिईहैं तोसरासंस्कारमालाधार-णकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी वासकमलगट्ट इत्यादिकजानलेना इसविषयमेंसंप्रदायो लोगकहते हैंकिविनामाला कण्ठोऔररुद्रा क्षकेधारणसेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांस-केतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्योंनहीहोताऔरमांसका स्वादक्यों नहीआता इसेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहे-तुलोगोनेरचलिईहैं इनमेंश्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरु द्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः ।। तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण औरदेवीभागवतादिक ग्रन्थोंमेंशैवऔरशाक्तोंमें अपनेसंप्रदायोंकेबढनेकेहेतु लिखेहैं औरवैष्णवादिकोंकेखंडनकेहेतु व्यासादिकों केनामसे बहुतश्लोक रचरक्खेहैंकाष्ठमालाधरस्यैवसद्यश्चांडालउच्यतेऊर्द्ध्वपुंड्रधरस्यैव विनाशंव्रजतिध्रुवम् इनकेविरुद्धइत्यादिक वैष्णवोंनेबनायाहैरुद्राक्षधारणेनैवनरकंप्राप्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणांशिवलिंग शतस्यच द्वादशकोटिविप्राणांतत्फलंश्वपचवैष्णवे ॥ विप्राद्द्विषड्गुण युतादरविंदनाभपादारविंदविमुखाच्छ्वपच । वरिष्ठम्अभाग्यतस्य देशस्यतुलसीयत्रनास्तिवै ।। अभाग्यंतच्छरीरस्यतुलसीयत्रनास्तिहि ।। दोनोंकविरोधीवाममार्गीओंएप्रवृत्तेभैरवीचक्रे सर्वेवर्णा द्विजातयः। निवृत्तेभैरवीचक्रेसर्वेवर्णाः पृथक्पृथक्॥ मद्यंमांसंचमीनंचमुद्रामैथुनमेवच। एतेपंचमकाराश्चमोक्षदाहियुगेयुगे । पीत्वापीत्वापुनःपीत्वायावत्पतति भूतले।उत्थायचपुनः पीत्वापुनर्जन्मनविद्यते ।सहस्रभगदर्शनान्मुक्तिर्नात्रकार्याविचारणा ।मातृयोनिंपरित्यज्यविहरेत्सर्वयोनिषुकाश्यांहिमरणान्मुक्तिः नात्रकार्याविचारणा । काश्यांमरणान्मुक्तिःयहश्रुतिशैवोंनेबनालीईहैसहस्रभगदर्शनान्मुक्तियहशाक्तोंनेश्रुतिबनालीईहै गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि।मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति।। अश्वमेधसहस्राणांवाजपेयशतस्यच । कन्याकोटिसहस्राणां फलंप्राप्नोतिमानवः।।यहएकादश्यादिकव्रतोंकामाहात्म्य बनालियाहैऐसेहीशालिग्रामनर्मदालिंगआदिकामहात्म्यबनालियाहैसोइसप्रकारकेमिथ्या२जालअपनेमतलबकेहेतुलोगोंनेबनालियेहैंऔरपरस्परएककोएकदेखकेजलतेहैंतथाअत्यन्तविरोधऔर परस्परनिन्दाहोताहैक्योंकिजोमिथ्या२कल्पनाहै उनकोएकतोकभी नहीं होतीजो सत्यबातहैसोसबकेबीचमेंएकहोतीहै चक्रांकितादिकोंने अपनेसंप्रदायकेमन्त्रबनालिएहैं।ओन्नमोनारायणाय ओम्श्रीमन्नारायण चरणंशरणंप्रपद्येश्रीमतेनारायणायनमः येदोनोंचक्रांकितोंकेमन्त्रहैंओम्नमोभग

स्से भीअधिकपूजाकर्त्ते हैं यहभीएकमूर्त्ति पूजनहीहै पुस्तकभीज-
डहोताहैक्योंकिजैसी पाषाणादिकोंकी पूजावैसी पुस्तकोंकीभीपू-
जाजाननीइसमे कुछभेदनहींयहकेवलपरपदार्थ हरनेकेवास्ते ही
लोगोनेयुक्तिरचलिईहै अपने२संप्रदायमें ऐसाआग्रहहैउनकोकि
वेदादिकसत्यपुस्तकोंको ऐसीपूजा वाउनमेंप्रीति कभीनहीकर्तेजै
सीकीअपने भाषापुस्तकों मेंप्रीतिकरतेहैं औरसंन्यासियोंनेएकशं
करदिग्विजयरचलियाहै उसमेंबहुत २मिथ्याकथारक्खीहैउसमें
दण्डीलोगऔर गिरीपुरी आदिकगोसांईलोग अत्यन्तप्रीतिकरते
हैंअर्थात्रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विज-
यवल्लभदिग्विजयकबीर दिग्विजयऔरनानक दिग्विजयादिकअप-
नो२बडाईकेवास्ते लोगोने मिथ्या२जाल रचलियहैं शंकराचार्य
कोईसंप्रदायकेपुरुष नहोथेकिन्तु वेदोक्तचार आश्रमोंकेबीचसंन्या
साश्रममेंथेपरन्तु उनकेविषयमेंलोगोंनें संप्रदायकोनांई व्यवहार
कररक्खाहै दशनामलोगोंनें पीछेमेंकल्पित करलियहैं जैसेकि
किसीकानामदेवदत्तहोय इसकेअन्तमेंदश प्रकारके शब्दरखतेहैं
किदेवदत्ताश्रमएक १ देवदत्तार्थतीर्थ २देवदत्तानन्दसरस्वतीऔ-
रइसीकाभेददूसरा किदेवत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४देवद-
त्तपुरी ५ देवदत्तपर्वतदेवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवद-
त्तवन ९ देवदत्तभारती १० यदशनामरचलियेहैं फिरइनमेंशृं-
गेरीशारदाभूगोवर्द्धन औरज्योतिमठये चारप्रकारकेमठमानते-
हैंऔरदण्डियोने दामोदरनृसंह नारायणइत्यादि कदण्डोंकेना-
मरखलियेहैं उसमेंयज्ञोपवीतबांधतेहैं उसकानामशंखमुद्रादीक
रक्खाहैऐसो२बहुत कल्पनादण्डियोंनेभीकिईहै किन्तु जोबाल्या
वस्थामेंनामरहताथा सोईसबआश्रमोंमेरहताथा जैसीकिजैगीष
व्यआसुरिपंचशिखाऔरबोध्यऐसे २ नाम संन्यासियोंकेमहाभा
रतमेंलिखेहैंइस्से जानाजाताहै कियहपीछेसे मिथ्याकल्पनादण्डी
लोगोनेकरलियाहैपरन्तुदण्डी लोगसनातनसंन्यासाश्रमीहैंक्यों-

किमनुस्मृत्यादिकमेंइनका व्याख्यानदेखनेंमेंआताहै औरगोसांई
लोगोंने श्रीदुर्गानाथ इत्यादिकमहाे शब्दकल्पित करलियाहैजैसे
किवैरागीआदिकोंने नारायणदासइससे बड़ा भारीबिगाड़भयाकि
नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनहींहोती क्योंकिसब काएकसा-
हीनामदेख पड़ताहैतापः पुंड्नाममाला औरमन्त्रयपंचसंस्का-
रचक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भी इनसेमानतेहैंपर-
न्तु इसमेंबिचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो
पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहैएकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइ-
नमेंसे मनकीपवित्र ताहोनेसे बाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका
मनअधर्मकरने मेंरहताहैउनकीबाह्यपवित्र तासबव्यर्थहैसोउन-
संस्कारोंसेमनकोपवित्रताकुछनहींहोसकीदेखनाचाहिएकिगो-
कुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटोऔरदालतकलोगबेचतेहैं औरबाहर
सेप्रसिद्धरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने
नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहींदेतेकिन्तु
इसकेबदलेपक्वाअन्न रोटोदालतकदेतेहैं उनकेहाथगोसांईजीअ-
न्नबेचतेहैं औरवेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकी दुकानमें
बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी
किजिससे कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब
जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवालेउनकाबड़ासत्कारक-
रतेहैं अन्यकानहींइनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपका-
रहोताहैक्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैंछलऔरहृ-
दयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैंदेखनाचा-
हिएकिबड़े२मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकरतेहैंऔरनामर
खतेहैंवैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसाईंजटाजूटबने रहते
हैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधारणरखतेहैं औरउनकाहृदयका
व्यवहारहमलोगदेखतेहैंबिद्याकालेशनहींबातभीयथावत्कहना
वासुननानहींजानैं इससे सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मबिद्यादिकगु-

ग्रहणकरनाचाहिए औरइननष्टव्यवहारोंको छोड़ना चाहिए
तभीसबमनुष्योंका परस्परउपकारहोसक्ताहै अन्यथानहीं वाम-
मार्गीलोग एकभैरवीचक्ररचतेहैं उसमेंएकनङ्गीस्त्री करकेउसके
हाथमेंछूरीवातलवारदेदेतेहैं औरबीचमेंएकआसन केऊपरबैठा
देतेहैं फिरउसस्त्रीकी पूजाकर्तेहैं यहांतकगुप्तअंगकीभीफिरउस
जलको सबलोगपीतेहैं औरउसस्त्रीकोमानतेहैं कियहसाक्षातदे-
वीहै औरब्राह्मणसेलेकेऔरचमारतक उसस्थानमेंसबबैठतेहैं फि
रएकपात्रमेंमद्यकोपूजाकरके मद्यरखतेहैं उसीएकपात्रसेवहस्त्री
पीतीहै फिरउसीजूठेपात्रसे सबलोगमद्यपीतेहैं औरमांसभीखा-
तेजातेहैं रोटीऔरबरेखातेजातेहैं फिरजबमद्यपीकेमस्तहोजाते
हैं तबउसोस्त्रीसेभोगकरतेहैं जिसको किपहिलेदेवीमानीथी और
नमस्कारकियाथा औरमनुष्यकाबलिदानभीकरतेहैं कोई२उस-
काभीमांसखातेहैंमुरदेकेऊपरबैठके जपकरतेहैं औरस्त्रीकेसमाग-
मकेसमयजपकरतेहैं । योन्यांलिंगंसमा स्थाप्यजपेनमन्त्रमतन्द्रि-
तः।औरयहभीउनकामन्त्रहै किएकमाताकोछोड़केकोईस्त्रीअगम्य
नहीं फिरउनमेंसेएकमातङ्गीविद्यावालाहै वहऐसाकहताहै कि
मातरमपिनत्यजेत्‌ माताकोभीनहींछोड़नाचाहिए क्योंकिमा-
तङ्गहस्तीकानामहै सोमाताकोभी नहींछोड़ता वैसेवेभीमानते
हैं ऐसीदशमहाविद्याउनलोगोंनेबनारक्खीहैं उनमेंसेएकचोली
मार्गहै उसकाऐसामतहै किस्त्रीऔरपुरुष सबएकस्थानमें रात्रि
कोइकट्ठे होतेहैं एकबड़ाभारीमृत्तिकाकाघड़ावहांरखतेहैं उसमें
सबस्त्रीलोगअपनेहृदयकावस्त्रअर्थातजिसकानामचोलीहै उसकोउ-
सघड़े मेंडालदेतीहैंफिरउनवस्त्रोंकोघड़ेकेबीचमेंमिलादेतेहैं फिर
खूबमद्यपीतेहैंऔरमांसखातेहैं जबवेबड़ेउन्मत्तहोजातेहैंफिरउ-
सघड़े मेंहाथडालतेहैं जिसकेहाथमें जिसकावस्त्रआवेवहउसकी
स्त्रीहोतीहैवहमाता,कन्या,भगिनीवापुत्रकीभीस्त्रीहोयऐसे २ मि-
थ्याव्यवहारकर्तेहैं औरमानतेहैंकिमुक्तिहोययहबड़ाआश्चर्यहै ऐ-

अथवा शत्रुलोगों ने विषदान देके कभी मारडाले होंगे सो माहात्म्य
की ऐसी बात लोगों ने मिथ्या बना लिया है तीसरा चमत्कार यह कहते
हैं कि आपसे आपही रथ चलता है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-
कि हजारहां मनुष्य मिलके रथको खींचते हैं और कारीगर लोगों ने
इस रथ में कला बना लिई हैं उनके उलट घुमाने से वह रथ खड़ा होजा
ता होगा और सूध घुमाने से कुछ चलता होगा जैसे कि घड़ी आदिक
के यन्त्र घूमते हैं ऐसे बहुत पदार्थविद्या से होते हैं चौथा चमत्कार य-
ह कहते हैं कि एक चुल्हे के ऊपर सात पात्र धर देते हैं उनमें से ऊपर के
पात्रों का चावल पहिले चुर जाते हैं यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-
कि उन पात्रों में चावल पहिले चुरा लेते हैं फिर उसके पेंदे को मांज दे-
ते हैं फिर ऊपर २ पात्र रखदेते हैं और नीचे के चूल्हे में थोड़ी सी आंच
लगा देते हैं फिर दरवाजा खोल देते हैं और अच्छे २ धनाढ्य तथा रा-
जा लोगों को दूर से करछुल से निकाल के दिखा देते हैं और कहते हैं कि
देखिए महाराज कैसा चमत्कार है कि नीचे का अबतक चावल कच्चा
है क्योंकि उस पात्र में चावल अग्निपर पीछे धरे हैं उसको देखके वि
चाररहित पुरुष मोहित होके बड़ा आश्चर्य गिनते हैं और हजारहां
रुपैया देदेते हैं यह केवल उन मनुष्यों की धूर्त्तता है और चमत्कार कु-
छ नहीं है पांचवा चमत्कार यह कहते हैं कि जो पापी होय उसको उस
मूर्त्ति का दर्शन नहीं होता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि किसी के
नेत्र में दोष होने से आंख के सामने तिमिर आजाते हैं और वे पुजारी लो-
ग ऐसी युक्ति रचते हैं कि वस्त्र के अन्यथा रूप करके परदे बना रक्खे हैं
उनके दोनों ओर पुजारी लोग खड़े रहते हैं और फिरते भी रहते हैं
सो किसी प्रकार से उस मूर्त्ति का आड़ कर देते हैं फिर नहीं देख पड़ती उ-
स वक्त ऐसा वे कहते हैं कि तुम लोग पापी हो जब तुम्हारा पाप घट जाय
गा तब तुमको दर्श होगा तब वे बुद्धिहीन पुरुष झट २ रुपैये धर देते हैं फि
र उनको दर्शन करा देते हैं यह सब मनुष्यों की धूर्त्तता है चमत्कार कुछ
नहीं है छठवां यह चमत्कार कहते हैं कि अन्धा वा कुष्ठी होजाता है जो कि

ऊपरहाथकरताहैतबमूर्त्तिसेलेकरहाथतक गंगाजीकीएकधाराब-
नजातीहै उसधारामेंचारोंदीपकेप्रकाशकेपडनेसे जलबिजलीको
नांईचमकताहैतबउनयात्रियोंकोपुजारीलोग कहतेहैंकितुमलो-
गों केऊपर महादेवकीबडीकृपाहै देखोमहादेव कालिंगबढगया
सोतुमरूपैयेचढाओ ऐसेबहकार के खूबधन हरण करतेहैं और क-
हतेहैं किरामनेयहमूर्तिस्थापनकिईहै सोयहबातमिथ्याही है क्यों-
किवाल्मीकीयरामायणमेंउसकानामभीन हीहै केवलतुलसीदासके
झूठलिखनेसेलोगकहतेहैं क्योंकि तुलसीदास कीमिथ्या २ बातबि-
चारनाचाहिये नारीनामस्त्रीकारूपदेख के सबमोहितहोहोतो
फिरसीताकेस्वयंबरमें लिखाहै किजबस्वयंबर मेंसीताजीआईतब
नरऔरनारीसब मोहितहोगये सीताजीकोदेखके यहबात पूर्वा-
परउसकीबिरुद्धहै औरअपनेग्रंथमेंउननेलिखाहै किअठारहपद्म
यूथपबानरथे सोएक२ काचार२कोसकाशरीरलिखा तथाकुंभक-
र्णकोमोंछचार २ कोसकीलंबीलिखीहै १६ सोलहकोसकीनाक
६४कोसकाहाथलम्बा८६ कोसकाउदरऐसाजोकुंभकर्णहोता तो-
लंकामें एकभीनहीसमाता औरअठारहपद्मबानर पृथिवी भरमेंन-
हीसमाते तथा बांदरमनुष्यकीभाषानहीबोलसके फिरसुग्रीवादि-
करामसेकैसेबोलसकेंगे राज्यकाकरनाऔरबिवाहपशुओंमेंकभी
नहीहोसक्ता ऐसी २ बहुत तुलसीकृतरामायण में झूठबातलि-
खीहै सोइसके कहनेकाक्या प्रमाण फिरपाषाणकेऊपररामना-
मलिखदिये उस्सेपाषाणसमुद्रकेऊपरतरे हैं यहबातउसकी मिथ्या-
है क्योंकिऐसाहोता तोहमलोगभीपाषाणकेऊपररामनामलि-
खके उसकातर नादेखते सोनहीदेखनेमेंआता इस्सेझूठबातको
माननानचाहिये जैसीयहबातझूंठहैउसकोवैसीरामेश्वरकोलिखी
भीझूठहैकिसीदक्षिणकेधनाढ्यनेमंदिरबनायाहै उसकानामहैरा-
मेश्वर उसकोचार४००बरसभयेहोगें औरएकदक्षिणमेंकालिया-
कंतकामंदिरहै इसविषयमेंलोगोंनेऐसीबातबनालिईहै किवहमू-

मेंकंपहोजाताहै सोवहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवा-
स्ते मिथ्याबनालिईहै एकउत्तराखण्डमें केदारऔरबद्रीनारायणये
दोस्थानप्रसिद्धहैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैंकिबद्रीनारायणकी
मूर्तिपारसपत्थरकीहै औरशङ्कराचार्यनेस्थापितकिईहै सोयहबा
तमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगद-
रिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलो
हाकुआनेसेसोनाबनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनहीं सुनतेसु
नातेचलेआतेहैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्ति-
योंकेतोडनेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबात-
लोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहा
देवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहींदिया क्योंकि-
वेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरुषोंकोमारकेयुद्धमेंआयेथे सोमहादे-
वपार्वती औरसबउनकेगणोंने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सो-
नारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेंभैंसाकारूपधारणकरलियाहै
तुमकोबहकानेकेवास्तेइसकोयहपरीक्षाहैकिमहादेवकिसीकोटां-
गकेनीचेसेनहीनिकलतेसोभीमनेतीनकोसकेछोटेदोपर्वतथेउनके
ऊपरदोटांगरखदिईं एक२ के ऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसे-
निकलगये परन्तुएकभैंसानहींनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलिया
कियहीभैंसाहैउसकोपकडनेकोभीमदौडा तबवहभैंसापृथिवीमेंगु-
प्तहोगया उसकासिरनैपालमेंनिकलाजिसका नामपशुपतिरक्खा
है तथाउसकापगकाश्मीरमेंनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा
औरचूतडवहींनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिक
लीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलि
येहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनैपालमेंभैंसेकाशृंगनांककानकुछ
भीहोदेखपडताहै तथाकाश्मीरमेंखुरभीनहींदेखपडते ऐसेअन्यत्र
कुछभीनहींभैंसेका चिन्हदेखपडताकिन्तु सर्वत्र पाषाणहीदेखप-
डताहैपरन्तु ऐसी २ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वलअविद्याऔर मूर्खताकागुणहै क्योंकिभी मइतना लंबाचौड़ा
होतातो उसकाघरकितनालंबा चौड़ाहोताऔर नगरमे ग्रामा-
र्ग मेकैसेचलसक्तातथा द्रौपद्यादिकउनकी स्त्रीकैसेवनसक्तीऔरम
हादेवकोक्याडरपड़ाथा किभैंसाहोजाय फिरइतना लंबाचौड़ा
क्योंवनजाता औरक्याअपराध वा पापमहादेवनेकियाथा किचि-
तनेसेउड़वनजाय इससेयहबातसब मिथ्याहैएकक्रमाख्यास्थानह-
चरक्खाहै उसमेंएककुंडवनारक्खाहै उसकानाम योनिरक्खाहै
औरवहरजस्वला होतीहै यहसबबात उनपुजारियोंने आजीवि-
काकेहेतुमिथ्यावनालिईहै एकबौद्धगयास्थानहै उसमेंबौद्धकीमूर्ति
बनारक्खीहै उसकीपूजा और दर्शनआज तककरतेहैं वहमूर्ति
केवलजैनोंकीहै सोऐसाजाननाचाहियेकिजितनापाषाणपूज-
नहै औरजोजड़पदार्थोंकापूजन सोसबजैनोंकाहीहै एकगयास्था
नबनारक्खाहै उसमेंबड़ासंसारका धनलूटाजाताहैगयाकेपण्डा-
ओंकोमुफ्तकाबहुतधनमिलताहैसोवेश्यागमनमद्यपानऔरमां-
साहारमेंहोजाताहै केवलप्रमादमें अच्छेकाममेंकुछनहीफिरय-
जमानलोगमानतेहैंकिगयाकेश्राद्धसेहीपितरोंकाउद्धार होजाता
है सोऐसेकर्मोंमे उद्धारतोकिसीकाहोतानहीं परन्तुनरकहोनेका
संभवहोताहै फिरइसविषयमे ऐसाकहतेहैं किरामचन्द्रनेगयामे
श्राद्धकियाथा सोसाक्षातदशरथजी उनकेपिताउननेहाथनिकाल
केगयामेपिण्डलेलियाथा उसदिनसेगयाकामाहात्म्यचलाहैऔ-
रवहस्थानगयासुरकाथासोयहबातसबमिथ्याहैक्योंकि वेलोगआ-
जकालभीहाथनिकालके क्योंनहीपिण्डलेलेते किसीसमयकोईपु
रुष फल्गूनदीमे भूमिमेगुहा बनाकेभीतर बैठरहाहोगा और-
उनोंनसंकेतबनारक्खाथा ऐसेहीउसनेभूमिमेंसे हाथनिकालके-
पिण्डलेलियाहोगा फिरझूठबात प्रसिद्धकरदिई किसाक्षातपिता
लोगहाथनिकालकेपिण्डलेलेतेहैं उसस्थान कापण्डितोंनेमाहा-
त्म्यबनालिया फिरप्रसिद्धहोगई औरसबमाननेलगे सोगयाना-

मजिसस्थानमेंश्राद्धकरें औरअपनेपुत्रपौत्र तथाराज्यजिसदेशमें-
अपनेरहताहोयउनका नामगयाबेदीकेनिवरटुमें लिखाहैउस-
काअर्थ अभिप्राय तोजानानहो फिरयहपाखण्डरचलियाकाशि-
राजनेमहाभारतमेंलिखाहै किउसनेनगरबसायाथा इसेउसका
नामकाशीपड़ा औरवरुणा तथा असीनालाकेबीचमेंहोनेसे वा-
राणसीनामरक्खागया इसकाऐसा झूंठ माहात्म्य बनालिया है-
किसाक्षात महादेव कीपुरीहैऔर महादेव नेमुक्तिका सदाव्रत
बांधरक्खा हैतथाऊसरभूमिहैइसमेपापपुण्यलगताहोनहींसबदेव-
तापंदरह२कलासेकाशीमेंरहतेहैं औरएक२कलासेअपने२स्थान
मेंरहतेहैं एकमणिकर्णिकाकुंडरच रक्खाहैकियहांपार्वतीकेकान
कामणिगिरपड़ाथा तथाकालभैरव यहांकाकोटपालहै सोसबको
दण्डदेताहैपापपुण्य कीव्यवस्थासेइसकाशीका महाप्रलयमें भीप्र-
लयनहीहोताक्योंकिकालभैरव त्रिशूलकेउपरकाशीकोरखलेताहै
औरभूचालमेंहलतीभीनहींपंच काशीकेबीचमें जोकोईकीटपतंग
तकभीमरैतोउसको महादेव मुक्तिदेतेहैं अन्नपूर्णा सबकोअन्न
देतीहैअन्तगृहीऔरपंचक्रोशीके करनेसेसबपापछूटजातेहैंइत्या-
दिकमिथ्या२जालरचकेकाशीरहस्य औरकाशीखण्डादिकग्रंथब-
नालियेहैं औरकहतेहैंकिबारहज्योतिर्लिंगहोतेहैंउनमेंसेएकयह
विश्वनाथहैउनसेपूछना चाहियेकिज्योति लिंगहोतेतोमंदिरमें
कभीअन्धकारनहोता औरवहपाषाणमुक्तिवाबन्धकभी नहोकर
सक्ताक्योंकिउसीको कारीगरोंने मंदिरकेबीच गढ़ेमेंचिपकाकेबं-
धकररक्खाहैफिर अपनेहीबंधने सेनहींछूटसक्ता फिरअन्यकोमु-
क्तिक्याकरसकेगा सोयहकेवलपण्डितोंने बातबनालिईहै किका-
शीमेंमरनेसे मुक्तिहोतीहैक्योंकिइसबातको सुनकेसबलोगकाशी
मेंमरनेकेहेतुआवेंगे उनसेहमारी आजीविका सदाहुआकरेगी
इससे ऐसी २ जाल रचाकरतेहैंप्रयागमें गंगायमुनाके संगममेंए-
कतीसरीभूंठसरस्वती मानलेतेहैंकि तीसरीसरस्वती भीयहांहै

और दूर स्थान में मुंडानेसे सिद्ध होजाता है सो ऐसा अनुमान किया
जाता है कि पहिले कोई नौवा था उसने अपने कुलको आजीविकाकर
लिई है और संगममें स्नान करनेसे मुक्ति होजाती है यह केवल आजी-
विकाके वास्ते झूठ२ बात और झूठ२ पुस्तक लोगोंने बना लिए हैं कि
प्रयागतीर्थ राज है ऐसे ही अयोध्या में हनुमानजीको रामजी गद्दी दे-
गये हैं और अयोध्यामें निवाससे भी मुक्ति होती है यह भी उनकी बात
मिथ्या ही है तथा मथुरा और वृन्दावनमें बड़ी२ मिथ्या बात बना लि-
ई है कि यम द्वितीयाके स्नानसे यमके बंधनसे जीव छूट जाता है क्यों-
कि यमुना यमराजकी बहिन है और वृन्दावनके विषयमें मुक्ति भी रो-
ती है कि मेरी मुक्ति कैसे होयगी मुक्ति मुक्तिके वास्ते वृन्दावनकी गलि
यों में झाड़ू देती है और मंदिरोंमें नाना प्रकारके प्रमादोंसे व्यभिचा-
रादिक कर्त्ते हैं तथा अनेक प्रकारके जालोंसे लोगोंका धन हरणके-
र लेते हैं एक चक्रांकितोंने मंदिर रचवाया है उसके दरवाजोंका ना-
म वैकुंठद्वार इत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगव सब मनुष्य मिलके
इकट्ठे खाते हैं सकलपुंगव उसका नाम है कि कच्चे पक्के सब प्रकारका
पक्का कच्चा अन्न बनता है फिर ब्राह्मणसे लेके अंत्यजपर्यन्त उनके जितने
शिष्य हैं उनकी पंक्ति लग जाती है उनके हाथके बीचमें थोड़ा२ सब प-
दार्थ सबको दे देते हैं और वे खा लेते हैं उनमेंसे कोई जलसे हाथ धो-
डालता है और कोई वस्त्रसे पोंछ लेता है और ठाकुरजीको झुलाव दे-
ते हैं उसमें भी बड़े२ अनर्थ सुननेमें आते हैं और एक राचवेश्याके घर
ठाकुरजी जाते हैं फिर उनको प्रायश्चित्त कराते हैं और यमुनाजीमें
डुबाके स्नान कराते हैं यह केवल उनका मिथ्या प्रपंच है परधन हरने
के वास्ते और मूर्खोंको बहकानेके वास्ते फिर उस मंदिरमें बहुत लो-
गोंको शंखचक्रादिक तपाके दाग देदेते हैं ऐसे२ मिथ्या छलप्रपंचसे
अपनी आजीविका कर्त्ते हैं इनमें कुछ सत्य वा चमत्कार नहीं तथा गं-
गादिक तीर्थोंके विषयमें सब पापका छूटना वैकुंठमें जाना मुक्तिका
होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात भगवती का मानना यह बात मि-

थ्या है क्योंकि हिमवतः प्रभवति गङ्गा यह व्याकरण महाभाष्य का व-
चन है इस का यह अभिप्राय है कि हिमालय से गंगा उत्पन्न होती है
तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालय से उत्पन्न भई हैं और वि-
न्ध्याचल से तथा तड़ागों से भी बहुत नदियां उत्पन्न होती हैं केवल जल
सब में है उस जल में उत्तम मध्यम और नीचता भूमि के संयोग गुण से
है इस से अधिक कुछ नहीं सो जल होता है वह जल क्या पाप को छोड़ा स-
केगा और मुक्ति को भी दे सकेगा कुछ भी नहीं जैसा जिस जल में गुण है
शीत उष्ण मिष्ट निर्मलता वैसा ही उस में होता है इन से अधिक गुण
नहीं वे चार मिष्टादिक गुण सब भूमि के संयोग से हैं अन्यथा नहीं गंगे-
त्वद्दर्शनान्मुक्तिर्न जाने स्नानजं फलम् इत्यादिक नारदादिकों के
नामों से मिथ्या २ श्लोक लोगों ने बना लिए हैं जो दर्शन से मुक्ति हो-
ती तो सब संसार की ही मुक्ति हो जाती और मुक्ति में कोई अधिक फ-
ल नहीं है कि संसार में स्नान से कुछ अधिक होवे यह केवल मिथ्या क-
ल्पना उन की है कि काश्यां मरणान्मुक्तिः गंगे त्वद्दर्शनान्मुक्तिः सह-
स्रभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः ॥ इत्यादिक मिथ्या श्रुति
लोगों ने बना लिई हैं किन्तु ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः यह सत्य श्रुति है कि
बिना ज्ञान से किसी को मुक्ति नहीं होती क्योंकि सत्यासत्य विवेक के बिना
असत्य के दोषों का ज्ञान नहीं होता दोष ज्ञान के बिना मिथ्या व्यवहार
और मिथ्या पदार्थों से कभी नहीं जीव छूटता इस से मुक्ति के वास्ते सत्या
सत्य का विवेक परमेश्वर में प्रीति धर्म का अनुष्ठान अधर्म का त्याग स-
त्सङ्ग सद्विद्या जितेन्द्रियतादिक गुण इन से अत्यन्त पुरुषार्थ से मुक्ति
हो सक्ती है अन्यथा नहीं और जिस को इस बात का निश्चय करना होवै
वह इस बात को करै कि जितने तीर्थों के पुरोहित और मंदिरस्थान के
पुरोहित उन के प्राचीन पुस्तकों के देखने से सत्य २ निश्चय होता है
क्योंकि वह यजमान देश गांव जाति दिन मास और संवत्सर इन का
यथावत् पुस्तक जो बही खाता उस में लिखे रखते हैं उन को देखने से ठी
क २ दिन मास और संवत्सर का निश्चय होता है कि इस तीर्थ वा इस मं-

तुच्छगिनेहैं एकभीमऔरधृतराष्ट्रको कथालिखीहै किधृतराष्ट्रकेश-रीरमें ६००० हाथीकाबलथा तथाभीमकेशरीरमे दसहजारहा-थीकाबलथा औरएकगरुड़पक्षीकाबल ऐसावर्णनकियाकि जिस-कातोलन नहीहोसक्ता उसगरुड़काबलविष्णुकेआगेतुच्छगिना-तथाउसविष्णुकाबल वीरभद्रकेआगे तुच्छकरदियाहै वीरभद्रका रुद्रकेआगे औररुद्रकाविष्णुके विष्णुका वीरभद्रकेआगेऐसोप-रस्परमिथ्याकथा व्यासजीकी बनाई महाभारत मेंनहीबनसक्ती-औरभीऐसी २ कथालिखीहैं किभीमकोदुर्योधननेविषदानदिया-जबवहमूर्छितहोगया तबउसकोबांधकेगंगा जोगिरादियासोव-हपातालकोचलागया वहांसर्पोंनेबहुतकाटा फिरजबउसकावि-षउतरगया तबसर्पोंकोमारनेलगा उसेसर्पभागगयेवासुकीराजा सेजाकेफिरकहा किएकमनुष्यका लड़काआयाहै सोबड़ा पराक्र-मीहै तबवासुकी भीमकेपासगया औरपूंछाकि तूंकौनहै कहांसे-आयाहै तबभीमनेकहा किमैंपाण्डुकापुत्रहूं औरयुधिष्ठिरकाभाई-तबतोवासुकी बड़ेप्रसन्नभये औरभीमसेकहा किजितनातुझमेंइ-नकुण्डोंमेंसेजल पीयाजाय उतनापी क्योंकियेनवकुण्डअमृतसेभ-रेहैंऐसासुनकेउठा औरनवकुण्डोंका सबजलपीगया सोनवहजा-रहाथीकाबलबढ़गया इसमेंबिचारनाचाहियेकि विषकेदेनेसे वह भीम मरक्योंनगया औरजलमें एकघड़ीभरनहीजीसक्ता औरपा-तालकामार्ग वहांकहांहोसक्ताहै औरजोहो सक्तातोगंगाकाजल सब पातालमें चलाजाता ऐसी २ मिथ्याकथा व्यासजीकी कभी नहीहोसक्ती औरजितनी सत्यकथाहै वहसबमहा भारतमें व्यास जीकीहीकहीहैं औरजितने पुराणहैं उनमेंव्यास जीकाकिथएक श्लोकभीनही क्योंकिशिव पुराणादिक सबशैव लोगोंके बनायेहैं उनमेंकेवल शिवकोही ईश्वरवर्णन कियाहै औरनारायणादिक शिवकेदासहैं फिर रुद्राक्षभस्म नर्मदाकालिंग औरमृत्तिका का लिंग बनाकेपूजने बिनाकिसीकी मुक्तिनही होतीयहवेदल शै-

कहींगणेशसे कहीस्कंदसे ऐसेभूंठ २ कथापुराणोंमेंबनारक्खीहै
प्रश्न इसमेंविरोधनहीं क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकीहैंउत्त-
र यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत्
जैसेसूर्यादिकसृष्टिपुर्वकल्पमेंभईथींवैसीसबकल्पमेंहोतीहै ऐसा
जोकहोगेतोकिसीकल्पमें पगसेभीखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहों-
गेनेत्रसेबोलतेहोंगे जोभसनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबजानलेना
लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खा
हैसप्तशती उसमेंऐसे २ भूंठकथ लिखाहै किरुधिरौघमहानद्यः
सद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ न-
दियांचलीं इनसेपूंछना चाहिएकि रुधिरवायुकें स्पर्शसेजमजा-
ताहै उसकीनदीकभीनहीचलसक्ती रक्तबीजइतनेबढेकिसबजग-
त्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइतनेनगरगां-
व पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांखडेथेयस्याःप्रभावमतुलंभ-
गवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चंडिकाखिलजगत्प-
रिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा वि-
ष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव
और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहींभयेचंडिकोपेइसधा
तुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरू-
पहीहै विष्णुःशरीरग्रहणमहमीशानएवच कारितास्तेयतोऽत-
स्त्वांकः स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतैंनेहीश-
रीरधारणवालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोस-
क्ताहै ऐसाकहकें त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरने
भीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषेधकरैउसी
कोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः
मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयः पुछनाचाहियेउसभगवती
कोप्रतिज्ञाहैकिमेराइसस्तोत्रका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगाअर्था-
त्सबदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहोताहैसो यह

प्रतिज्ञा निजानकहांगई किइसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक दुःखोंमेपीडित देखनेमेंआतेहैं धनधान्यपुत्रोंकी इच्छाभी अत्यन्त होतीहैऔरमिलताकुछनहीं यहांतककिपटभीनहीभरताऐसी२ मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको विश्वासहोजाताहै यहबडा एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णुपुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्याकथा लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१०० बरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्याबातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका शरीरहीनहीथाऔर ऋषिकाआपथा कियमलोककोपरीक्षितजा य फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगया यहउनकी बातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामू लमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्मानेनारदसेनारदनेव्यासजी से व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेचल निकला सो यहबडाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मे य-द्विज्ञानसमन्वितम्, सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्यये दोनोंज्ञानकेविशे-षणहोनेसे वही विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेसरह-स्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहीहैप-रमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहीहोता-हैजैसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजय-विजयकी कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारवैकुंठकोगयेथे उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजयये दोनोंवैकुंठ केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभयाऔरशापज-

यविजयको दिया कि तुम जाओ भूमि में गिर पड़ो तब तो उनको बड़ा भय भया और उनको प्रार्थना किई कि महाराज मेरे शाप का उद्धार के मे होगा तब सनकादिकों ने कहा कि जो तुम प्रीति से नारायण की भक्ति करोगे तो सातवें जन्म तुम्हारा उद्धार होगा और जो वैर से भक्ति करोगे तो तीसरे जन्म तुम्हारा उद्धार होगा इसमें विचारना चाहिये कि सनकादिक मिक्षुये वे वायुवत् आकाश मार्ग से जहां चाहे वहां जाते थे उनका निरोध कैसे हो सक्ता है तथा जय विजय ने वा न करूप थे चारों को क्यों रोका क्योंकि वे क्या दोनों मूर्ख थे और वे साक्षात ब्रह्मज्ञानी थे उनको क्रोध क्यों होता और कोई किसी को प्रीति से सेवा करै और दूसरा उसको दण्ड से मारै उनमें से किस के ऊपर वह प्रसन्न होगा जो किसेवा कर्त्ता है और जो दण्ड मारता है उसके ऊपर कभी किसी को प्रसन्नता नहीं होसक्ती फिर वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप दोनों भये एक को वराह ने मारा और दूसरे को नृसिंह ने उसका पुत्र था प्रल्हाद उसके विषय में बहुत झूठ कथा भागवत में लिखी है कि उसको कूए में गिराया और पर्वत से गिराया परन्तु वह न मरा फिर तो है का खंभ अग्नि से तपाया और प्रल्हाद से कहा कि तू इसको पकड़ नहीं तो तेरा सिर मैं काट डालूंगा फिर प्रल्हाद खंभ के सामने चला और चित्त में डरा भी कुछ कि मैं जलन जाऊं सो नारायण ने चिवटी उसके ऊपर चलाई उनको देख के प्रल्हाद निडर होके खंबे को पकड़ा तब खंभा फट गया और बीच में से नृसिंह निकले सो उसके पिता को पकड़ के पेट चीर डाला और नृसिंह को बड़ा क्रोध आया सो ब्रह्मा महादेव लक्ष्मी तथा इन्द्रादिक देवों से नृसिंह के कोप की शांति नहीं भई फिर प्रल्हाद से सबने कहा कि तूही शान्ति कर सो प्रल्हाद नृसिंह के पास गया और नृसिंह शांत होगया सो प्रल्हाद को जीभ से चाटने लगा और कहा कि वर मांग तब प्रल्हाद ने कहा कि मेरे पिता का मोक्ष होय तब नृसिंह बोले कि मेरे बर से २१ पुरुषों का मोक्ष होगया तेरे पितादिकों का इनसे पूछना चाहिये कि नारायण ने शूकर और पशु का शरीर क्यों धारण कि-

या औरकैसेशरणकरके हिरण्याक्षपृथिवीको चटाईकीनाईं ध
रकेसिराने सोगया तोकिसकेऊपर सोआ औरपृथिवीको उठाई
तोकिसकेऊपर खडारहोके और पृथिवीको कोईउठाभीसक्ताहै
औरकोई नारायणकेभक्तहो पर्वतसेगिरादेवाकूएमेंडालदेवेंतो म
रजायगा अथवाहाथियोंसेडटूटजायगा रक्षाकोईनहींकरेगा खंभेमें
सेनृसिंहकानिकलना यहबातबडीमिथ्याहै औरनृसिंहजोनारा-
यणकाअवतार औरसर्वज्ञहोतातो पहिलीबातकोक्योंभूलजाता
जोसनकादिकोंने मारावातोजन्ममेंसद्गतिकहीथी उननेपहिलेही
जन्ममेंसद्गतिक्योंदेदिई औरप्रथमही उनकाजन्मथा उसकी २१ पी
ढीनहींबनसक्ती औरजोकश्यप मरीचिब्रह्मातकविचारें तोभीचा-
रपीढीहोसक्तीहैं २१ तककभीनहीं फिरउसनेलिखाकि हिरण्या-
क्षहिरण्यकश्यपही रावणकुंभकर्ण शिशुपाल औरदन्तवक्रहोतेभ
ये फिरसद्गतिकिनकोभई यहबडीमिथ्याकथाहै अजामीलकीकथा
मेंलिखाहै किअपनेपुत्रको मरणसमयमें बोलायाउसकाभीनाम-
नारायणथा सोनारायणने इतनाजानाभीनहीं किमेरेकोपुकार-
ताहै वाअपनेपुत्रको औरवहबडापापीथा परन्तुएकसमयनारायण
केनामसे उसकोवैकुंठकावासदेदिया सोबडाभारीअन्यायकिपा-
पकरै औरदण्डनहोय ऐसीकथासुनके लोगोंकीभ्रष्टबुद्धिहोजाती
है क्योंकिएकबारनारायणके नामसे सबपापछुटजातेहैं फिरकोई
पापकरनेमेंभयकभीनहींकरेगा व्यासजीनेसबवेदवेदांग विद्याओं
कोपढलिया औरपरमेश्वर पर्यन्तयथावत्पदार्थोंकासाक्षात्कार-
कियाथा तथाअणिमादिकसिद्धिभीभईथी फिरभी सरस्वतीनदीके
तटमें एकवृक्षकेनीचे शोकातुरहोके जैसेरोताहोवै वैसेवैठेथे उ-
ससमयमेंवहांनारदआये औरव्यासजीसेपूंछा किआपऐसीव्यव
स्थामेंक्योंवैठेहैं तबव्यासजीबोले किमैंनेसबविद्यापढी औरसबप्र
कारकाज्ञानभी मुझकोभया परन्तुमेरेचित्तको शांतिनहीभई तब
नारदजीबोले कितुमने भगवतकथानहीकिई औरऐसाग्रन्थभीको

ईनहीबनायाजिसमें भगवतकथाहोवै सोआपभागवतबनावेंकथा जोकेगुणयुक्त तबआपकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहि-येकिव्यासजी जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोअज्ञानशो-क औरमोह क्योंहोता और जोउनकोअज्ञानादिकथेतोअज्ञानी-के बनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहींहोसक्ता फिरइसकथामे वेदादिकोंकोकेवलनिन्दाआतीहै क्योंकिवेदादिकोंके पढनेसव्या-सजीकोशांति नहीभया तोहमलोगोंको कैसेहोगा फिरभीनिग-मकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंसे केवलवेदोंकीनिन्दाही-किईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंका यहनिन्दानकरतातोइसम-हामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थउसकी प्रवृत्तिहीनहींहोतीफि-रउसनेनृगराजकोकथालिखी कि यावत्यः सिकताभूमौयावन्तोदि-वितारकाः यावत्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः॥ नृगराजाने इ-तनीगायदिईकिजितनेभूमिमेंकणिकाहैं इससे पूछनाचाहिये कि इ-तनीगायकहां खडीरहतीथीं क्योंकिएकगायतोनवाचारहाथके जगहमेंखडीरहतीहैं उस भूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरो-डहांलाखहां वर्षतकगिनें तोभीपारावार नहीहोवै फिरभीउस मिथ्यावादीको संतोषनहीभया मिथ्याकहनेसे कि जितनेआकाश मेंतारे औरजितने वृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकिये फि-रभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एक ब्राह्मणकोपहिले दिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलगे-किएक कहैयहमेरीगायहै दूसराकहेकिमेरी तबनृगराजनेकहा किदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेओ दूसराएककबद-लेमें सौहजारलाख करोडऔर सबराज्य लेलेओ परन्तुलडोमत वेदोनोंऐसे मूर्खकिलडतेहीरहे किन्तुशान्तनभये और फिर राजा कोआपदेदियाकितूदुर्गतिकोजा इसमेंविचारनाचाहिये किएक-तोइससे कर्मकांडकीनिन्दाकिईकीथोडीसीभीभूलपडजायतोदुर्ग-तिकोजाय इससे कर्मकांडमेंकुछफलनहीं ऐसाउसकीमिथ्याबुद्धि

थोकिइसप्रकारकी मिथ्याकथाउसनेलिखी औरब्राह्मणोंकीनिन्दा
लिखीकिसदाहठीहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहींदिया
ऐसेपुरुषोंको दण्डदेनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन
करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोश्रापलगा एक
गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवहगया औरअसंख्यातगोदानका
पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकीकिइतने उसने
गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बहुतगोदानोंकेपुन्यनेकु-
छसहायनहींकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथेनवायुवेगेन
जगामगोकुलंप्रतिजबकंसनेअक्रूरजीकोश्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा
तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें वायुवेगरथकेऊपरबैठकेचलेदो-
कोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल
कोआपहुंचे इस्सेपूछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया
जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरसेपहुंचेपरन्तु घोड़े-
कोऔरसहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका वायुवेग उसने
क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाको श्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा
केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछ:कोसतकउसशरीरकी-
स्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी
गई बानहीं जोछ:कोसकी स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे
समाताकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथु-
राके पारकोस२ तकशरीरगिरतासो ऐसी२ झूठकथा लिखीहैं
परन्तु कथाकरनेऔरकरानेवाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगये-
हैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर
दियाकि । भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित् जबतकसृष्टि
है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहे उसकानामहैवि-
कल्पसोनरायणने ब्रह्माजीसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगाफि-
रवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़ेकोह-
रलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजन्म लीजियेफिर कैसीगाढी भांगपीलिईकिझटभू लगयेकि यह गोपहैवाविष्णुकाअवतारहै श्रौरभागवतबनानेवालेने ऐसानमा कियाहै किवड़ाअंधकारइसकेहृदयमेंहैकि ऐसावड़ापूर्वापरविरुद्ध लिखताहै श्रौरजानताभीनहींप्रिय व्रतकोकथाउसनेलिखीकिसा- तदिनतक सूर्योदयनहींभया तबप्रियव्रत रथपैबैठकेसूर्यकीनांईप्र- काशितहोकेघूमनेलगासोउसकेरथकेपहियेकेलीकसेसातदिनतक घूमनेसेसातसमुद्रसप्तद्वीपवनगये इससेपूंछनाचाहियेकिरथकेचक्र कोइतनोबड़ी स्थूललीकभईतो उसरथ केचक्रका क्याप्रमाणरथ अश्वश्रौर प्रियव्रतकेशरीरका क्याप्रमाणहोगा एकरथइसकथासे इतनास्थूलहोगाकि पृथ्वीकेऊपर अवकाश नहींहोसक्ता श्रौरसूर्य आकाशमेंभ्रमणकर्त्ताहै प्रियव्रतनेपृथ्वीकेऊपर भ्रमणकियाफिर जितनासूर्यकाप्रकाश उतनाउससे कभीनहीं होसक्ता श्रौरसूर्य लोककेइतनास्थूलभी कभीनहींहोसक्ता भूगोलकेविषयमें जैसा उननेलिखाहै वैसा उन्मत्तभी नलिखतथा सुमेरुपर्वतकेविषयमें जैसालिखाहैवैसाबालकभीनहींलिखेगा सोऐसीअसंभवश्रौरमि- थ्याकथाभागवतका करनेवालालिखताहै श्रीकृष्णविद्वानधर्मात्मा श्रौरजितेन्द्रियथे ऐसामहाभारतकी कथासे यथावत् निश्चयहोता हैसो श्रीकृष्णकी जैसीनिन्दा इसनेकराई ऐसीकिसीकीनहोगो क्योंकि उसनेरासमंडलकीकथालिखो उसमेंऐसी २ बातलिखो जिस्से यथावत् श्रीकृष्णकीनिन्दाहोय जैसेकिवृन्दावनसे महावन छः कोसहै वृन्दावनमें वंसोवजाई उसकाशब्दनिकट २ गांवश्रौर मथुरामेंकिसीनेनहींसुनाकिन्तुजैसाबांदर उड़केजायवैसाशब्दउ- ड़केमहावनमें कैसेगयाहोगा फिरउसशब्द कोसुनके महावनकी स्त्रियांव्याकुलहोगई फिरउनकेपतियोंनेनिरोधभीकियातोभीकि- सीनेनमानाफिरउलटाआभूषणश्रौरवस्त्रधारणकरकेवहांसेचली सोछःकोसवृन्दावनमेंनजानेपवनकीनांईउड़गईहोंगीपगकाश्रा- भूषणनाकमेंनाककाआभूषणपगमें कैसेधारणकरलेगीफिरश्रीकृ-

ष्णाने गोपियोंसेकहाकितुमनेबडाबुराकामकियाइस्से तुमअपने२घ
रकोचलीजाओ औरअपने२ पतिकोसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा
भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियझूठपतिहैं सत्यपतितोआ-
पहीहैं हमउनकेपासक्यों जांय आपकोछोडकेतवतोश्रीकृष्णभीप्र-
सन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकडकेझटक्रीडा करनेलगेसो छः
मासकीरात्रिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथीफि-
रश्रीकृष्णनेभीबिचाराकि इतनेथोडेकालमें टृप्तिनहोगीइस्सेछः
मासकाक्रीडाकेवास्ते कालबनायाफिर क्रीडाकरते२ अन्तर्ध्यान
होगए फिरगोपियांबहुतव्याकुलहोनेलगींऔररोनेलगीं तबश्री
कृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगईं फिरभीसबमि-
लके क्रीडाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपोकोश्रीकृष्णकंधेपरले-
केबनमेंभागगए उसस्त्रीकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंबिचारनाचाहि-
एकि श्रीकृष्णकभीऐसी बातनकरेंगेइस्से बहुतजगत्काअनुपका-
रहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोँका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी
होजांयगीतथापुरुषभीश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजा-
यगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरी-
क्षितनेप्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका
शुकनेउत्तरदिया ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम्‌तेजी-
यसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोई-
श्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताहीहै किन्तु जैसाचाहैवैसा
करे परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनहीं जैसे
तेजस्वीपुरुष जोचाहैसोकरले जैसेतोअग्निसबकोजलादेताहै औ-
रदोषनहीलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थथेउनकोभी दोषन-
हीलगताइनमेंबिचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाका-
मकभीनहीकरेंगे औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्ततो कुंभीपाकसेकभी
ननिकलतेइस्से श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे
बडेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यं तथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्रायहै किईश्वरकावचनकहीं २ जैसेसत्यहोताहै वैसेआचरणभीसत्यकहीं२होताहैसर्वथाईश्वर असत्यबोलताहैऔरअधर्मकोहीकरतेहैंकिन्तु कदाचित् सत्यवचनबोलताहै ईश्वरऔरसत्यआचरणइनसेपूंछनाचाहिये कोयहईश्वरकोबातहै वाउन्मत्तकोजैकहतेहैंकि जिसकेकण्ठमेंरुद्राच वातुलसोकीमालानहोय वाललाटमेंतिलकउनकेमुख देखनेसेपापहोताहै उनमेंकहोकि उनकीपोठ देखनेसेतोपुण्यहोताहोगा औरवेकहेंकिउनकेहाथसे जललेनेमें पापहोताहै तोउनसेकहोकी वहपगसेजलदेदे फिरतोकुछपाप नहीहोगा ऐसी २ बातेंलोगोंनेमिथ्या बनालिईहैं औरभागवत केविषयमेंहमनेथोड़ेसे दोषदेखाहै परन्तु भागवतसबदोषरूपही है वैसेहीअठारहपुराण अठारहउपपुराण औरसबतन्त्रग्रन्थवेनष्टहीहैं इनसेकुछजगत् काउपकार नहीहोताकिन्तु अनुपकारके प्रश्नब्रह्माविष्णु महादेवादिक देवउनकानिवासस्थानकहांहैउत्तरमहाभारतकोरीतिसे औरयुक्तिसेभीयहनिश्चयहोताहैकिब्रह्मादिकसबहिमालयमें रहतेथेक्योंकि इसभूमिमें उनकेचिन्हपाये जातेहैंखाण्डवबन इन्द्रका बागथा पुष्करमेंब्रह्माने यज्ञकियाकुरुक्षेत्रमेंदेवोंने यज्ञकियाअर्जुन और श्रीकृष्णसे इन्द्रादिकोंकायुद्ध होनातथापाण्डवोंसेगान्धर्वोंका युद्धहोनादमयन्तीकेस्वयंवरमेंइन्द्रादिकोंकाआना अर्जुनकामहादेवसे पाशुपतास्त्रकासीखनातथादेवलोकमें जाकेविद्या कापढना भीमका कुबेर पुरीमे जाना तथादशरथऔर केकैयीका रथकेऊपरचढके देवासुरसंग्राम में जानासर्वत्रयुद्धदेखनेकेवास्ते विमानोंपरचढकेदेवोंका आनाइस देशवासियोंका अनेकबार समागमका होनामहोदधि औरगंगा काब्रह्मलोकसे आनास्वर्गारोहिणीका कैलाससेनिकलनाअलकनन्दाकाकुबेरपुरीसेआना वसुधाराकावसुपुरीसे गिरनारऔर नारायणकाबदरिकाश्रममेंतपकाकरना युधिष्ठिरकाशरीर सहितस्वर्गमेंजाना नारदका देवलोकसे इसलोकमें आना यज्ञोंमें

देवोंकोनिमन्त्रणदेना औरउनोंका यज्ञोंमेंआना नहुषकेइन्द्रका
होना युधिष्ठिरऔरयमराजका समागमकाहोना इसवक्ततकब्र-
ह्मलोककैलासबैकुंठ इन्द्रवरुणकुबेर वसुअग्न्यादिक आठवसुपुरि
योंकाइनसबकेआजतक उत्तरखण्डमेंप्रसिद्धविद्यमानोंका होना
महभारतऔर केदारखण्डादिकोंमें सबकेजो२ चिन्हलिखेहैं उन
केप्रत्यक्षकाहोनाहिमालयकीकन्यापार्वतीसेमहादेवकाविवाहहो
नावरुणकी कन्यासे नारायणका विवाहहोना इत्यादिकहेतुओंसे
हिमालयमेंहोदेसलोक निश्चित था इसमेंकुछसंदेहनहीसोप्रथम
जबसृष्टिभईथी इसमेंक्याआयाकि प्रथमसृष्टिमनुष्योंकी हिमालय
में भईथीफिरधीरे२ बढतेचलेवैसे २ सबभूगोलमेंमनुष्यवासकरते
चले औरफैलतेभीचले सोजितनेपुरुषहैं मनुष्यसृष्टिमें वेसबहि-
मालयउत्तराखण्ड सेहीबढेहैं सोउत्तराखण्डमें ३३ करोडमनु-
ष्यप्रथमथे सबपर्वतोंमें मिलके फिरजबबहुतबढे तबचारोंओरम-
नुष्यफैलगएउनमेंसविद्याबल बुद्धिपराक्रमादिक गुणोंसेजोयुक्तथे
वेब्रह्मादिकदेव कहातेथेऔर उनकीगद्दीपर जोबैठताथा उनका
नामब्रह्मापडताथा वैसेहीमहादेवविष्णु इन्द्रकुबेरऔरवरुणादि-
कनामपडतेथे जैसेमिथिलापुरीमें जोगद्दीपरबैठताथाउसकाना-
मजनकपडताथा तथाजोकोईराज्याभिषेकहोके राजपर बैठे हैंउ-
सकानाम पदवीकेयोग्य अवतकपडताजाताहै जैसेअमात्योंकाना-
मदीवानलाटजजकलकटरइत्यादिकनामप्रत्यक्ष पडतेहीहैं परन्तु
वेहिमालयवासीदेव पदार्थविद्याकोहस्तक्रियासहितअच्छीप्रका-
रसेजानतेथे उनमेंसेविश्वकर्मा बडेपदार्थविद्यायुक्तथे अनेकप्रकार
केयन्त्रअग्नि जलवायु इत्यादिककेयोगसे विमानादिकरथचलतेथे
धर्मात्मातथा जितेन्द्रियादिकश्रेष्ठगुणवालेहोतेथेऔर बडेशूरवी-
रथेनाना प्रकारके आकाशपृथिवी औरजलमेंफिर नेकेवास्तेबना
लेतेथेआकाशमें जोयानरचतेथे उसकानामविमान रखतेथे सो
उनमनुष्योंमेंसे बहुतदुष्टकर्मकरनेवालेथे उनको हिमालयसेनि-

कालदिएथे सोहिमालयमे दक्षिणदेशमें आकरतेथेफिरबडेकु-
कर्मकरनेको लगगएथे उनकानाम राक्षसपडाथा और कुछउन
डाकुओंमेसेअच्छेथे उनकानामदैत्यपडगयाथा इनदैत्यऔररा-
क्षसोंसेहिमालयवासी देवोंका वैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल
होताथातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्या
दिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतेभी-
थेएकशुक्राचार्यदैत्योंका गुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकाथादोनोंअ-
पने२ चेलोंकोविद्यापढातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढता
थाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे
औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलन-
हीचलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहीहै किन्तु
सबजोपर्वतबासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्य्यावर्त्तादिक देशोंमें
जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैंऔरजित-
नेहवशीआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे
राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंसेस्पष्ट-
निश्चयहोताहै इसमेंकुछसंन्देहनहीं एकजयपुरमेंनाभाडोमजा-
तिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा
उसकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔ-
रजहांबैरागीलोक मुखहातधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरा-
गियोंकेजूंठअन्न औरजूंठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाण
सेआजतकवैरागीलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसेनाभासिद्ध
होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तु आजतककोईजूंठके
खानेऔरपीनेसे सिद्धनहीभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभा
भीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खा
हैउसमें वैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकीकथाउसनेलि-
है उसकीस्त्रीकानाम सीताथाभोउनकेपास बैरागीदसपांचआए
उनकेखानेपीनेकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहीथासोउसकी स्त्रीके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये
क्योंकिउसकोकोई उधारवामांगनेमे नहीदेताथा औरउसकोसो
सीताकूपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगईऔरकहाकिइसको
अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूएकरातभर
मेरेपासरहेतो तुझकोमैंदेऊं तबसोतानेकहाकि कुछचिन्तान-
हीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदि-
यऔरउनवैरागियोंको भोजनउनन करायाफिरजब पहररात्रि
गईतबपोपासेकहाकोऐसोबातकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपो-
पानेधन्यशाददिया कितूंबडोसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसवक्तकु-
छ २ दृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासप-
हुंचादियातब बनियेनेकहाकि दृष्टिहोतीहैदृष्टिमेंतेरापगभोनही
भीजाफिरतूं कैसेआईतबसीताने कहाकितुझको इसबातकाक्या
प्रयोजनहै तुझकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंस-
चबोलसीताने कहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपैंपहुं-
चादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं
औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोकेवास्ते अपनाशरीरभोवि-
चडालायहसब बातउनकीअधर्मयुक्त औरझूंठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ
पुरुषोंकाकामनही जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरै ऐसेहीधु-
न्नाभगतकाविनाबीजसे खेतजसगयानामदेवको पाषाणकीमूर्त्ति
नेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कोमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभग-
तकेवासस्नेनारायण कुत्ताबनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विष
पीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातझूंठहैऔरएकप-
रिकालउनसाधुओंकोसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीच-
क्रांकितथा परन्तुवहैंपरिकाल डांकूपनेसेधनहरणकरकेसाधुओं
कोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहीपायाफिरबं-
डाव्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोना-
रायणएकधनाढ्यके वेषसेरथपैंबैठके परिकालकोमिले सोझूटप-

रिकालने उनकोघेरलिया औरकहाकितुमको मारडालूंगानहीं
तोतुमसबकुछरखदेओ परन्तुउनकेरखनेमें कुछदेरभईसोझटउ-
तरकेनारायणकेअंगुलीमें सोनेकीअंगुठियांथीं सोअंगूठीसहित
अंगुलीकोकाटलिईतबनारायण बडेप्रसन्नभये औरदर्शनदियाकि
तूंबडाभक्तहै देखनाचाहियेकिनारायणभीकैसेअन्यायकारीहैंडां-
कूओंके ऊपर कृपाकर देतेहैं अर्थात् डांकूऔर चोरोंके संगीहैं
फिरवेचक्रांकितलोगनित्य उपदेशसबकर्त्तेहैं किचोरीकरकेभोप-
दार्थलेआवै औरनारायण तथावैष्णवोंकी सेवामेंलगावैतोभीव-
हबडाभक्तहोताहै औरबैकुंठकोजाताहै फिरवहपरीकालकोईब-
नियेकेजहाजपर बैठकेसमुन्द्रपार बनियोंकेसाथ चलागया.वहां
बनियोंनेजहाजमें सुपारीभरीसो एकसुपारीका आधाखण्डपरि-
कालनेजहाजमेंधरदिया औरवैश्योंसे कहदिया किमैंआधीसुपा-
रीपारजाकेलेलेऊंगा तबवैश्योंने कहाकिएकक्या दशतुमलेलेना
तबपरीकालने कहाकिनहीं मैंतोआधीहीलेऊंगाफिरजहाजपा-
रकोआगया जबसुपारीजहाजसे उतारनेलगे तबपरिकालनेक-
हाकिआधीसुपारी हमकोदेदेओ तबवैश्यलोग सुपारीका आधा
खण्डदेनेलगेसोपरीकाल बडाक्रोधकरके सबसेकहनेलगाकियेवै-
श्यमिथ्यावादीहैं क्योंकिदेखोइसपत्रमें आधीसुपारीमेरीलिखीहै
सोयेदेतेनहीं सोअत्यन्तधूर्त्तता करनेलगाऔर लडनेकोतैयार
भया।फिरजालसाजी करके आधीसुपारी नांवमेंसे बटवालिई उ-
नवैरागियोंकेसेवामें सबधनलगादिया सोऐसेपरीकालकोच-
क्रांकितके संप्रदायमें बडी प्रतिष्ठाहैसोचक्रांकितके मन्त्रार्थग्रंथ
मे ऐसीबातलिखीहै सोजितनेसंप्रदाईहैं वेअपनेचेलका ऐसे २
उपदेशकरकेऔर ऐसेग्रन्थोंको सुनाकेपापोंमें लगादेतेहैंफिरभ-
गतमालामें एक कथालिखीहै किएकसाधूएक ब्राह्मण केघरमें
ठहराथा।और ब्राह्मणउसकी सेवाकरताथा। उसकोएककुमारीक-
न्याथीउससे वहसाधू मोहितहोगया सोउसकन्याको लेकेरात्रिमें

कुकर्मकियाऔरखटियाकेऊपरदोनोंनंगेसोगयेथे सोजबउसकन्या
कापिताप्रातःकालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचादरदोनों
परओढादीई औरसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फि-
रवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवस्त्रकिननेडा-
लासोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवह-
कन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके
जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतड-
रा तबतक कन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसा
ष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्या-
काग्रहणकिया इससेमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमे
रेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआपकोसमर्पण करदिया त
बसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोवि
चारना चाहिये किबडे अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुन
केसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनही फि
रभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमेंसाधूपा
हुनेआये फिरउनकी सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेके-
वास्तेगये सोएकबनियेकीदुकान कीभींतमें सुरंगदेकेपुत्रभीतर
घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचीनीअन्ननिका-
लकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा त
बतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतोभीतरथे औरसिरबा-
हरनिकलाथा तबतकउसनेउसके पग पकडलिये औरसिरपकड
लियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने विचारकि-
याकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्र
कासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकरा
जपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलेगये औरखोजहोने-
लगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधु-
ओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधु

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालडका उसकोजलदीबोलाओ तबउसकेमाता और पिता जोचोर उन्नेकहाकि कहींचलागयाहोगा आजायगा आपतबतकभोजनकोजिये तबसाधुओंनेकहाकि वहजबआवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकीमातानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसेमारागया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इससे वेदोनोंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवहमारागया तबसाधुओंनेकहाकि उसकाशरीरकहांहै तबउन्नेकहाकि सिरहमारेघरमेहैऔरशरीर राजघरमेंहै वेसाधुलोग राजघरमेंजाके शरीरलेआयेशरीरऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचनेकूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनेआनन्दसेभोजनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबडेभक्तहो और स्वर्गमेंतुह्मारावासहोगा इसमेंबिचारनाचाहिये किसाधुओंकोआज्ञाहोनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजाना यहबडोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहोजातेहैं ऐसीर कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखीहैं फिरभीलोगोंकोऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकर्तेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्रदोषव्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजांयगे तन्त्र औरदेवीभागवतादिकोंमेंलिखाहै नवरात्र काव्रत नकरैंवेनरकमेंजांयगे तथापद्मपुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिग्पालोंका एकादशी विष्णुका द्वादशीवामनका चतुर्दशीन्टसिंह औरअनन्तका अमावस्यापितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका सो मतमतान्तरोंसे औरपुराणतथा उपपुराणोंसे यहआयाकिकिसीतिथिमेंभोजननकरना औरजलभीनपोना औरजोकोईखाया वा पोयावहनरककोजायगा इसमेंवकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इससे ऐसीकथामेंविरोधनहोआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाबिवाह होताहै उसकेगीतगायेजातेहैं परन्तु पहिलेजिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवालेहैं उनका खण्डनतोनहीहोता कियही उत्तमहै वापत्ति
ले जिस्के बिवाह भये और जिनके होंगे उनको मीमतो नही
बनाते इस्से ऐसे२ मूर्खताकेदृष्टान्तसे कुछनहीहोता ऐसे२ स्लोक
लोगोंनबनालियहैं कि शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिताशी
तलेत्वंजगद्धात्री शीतलायैनमोनमः एक विस्फोटरोगहै उसका
नामशीतलारक्खा यादृशीशीतलादेवी तादृशोवाहनःखरः शीत
लाअष्टमोकोगधेकोपूजाकर्तेहैं औरहनुमान्‌कारूपमानके बानर
कोपूजाकर्त्तेहैं भैरवकावाहनकुत्ताकोमानकेपूजाकर्त्तेहैं तथापाषा-
णपिप्पलादिक वृक्षतुलस्यादिक औषधीदूब और कुशादिक घास-
पित्तलादिक धातु चन्दनादिककाष्ठ,पृथिवी,जल,अग्नि,वायु,जूता,
औरविष्ठातकआर्यावर्त्त देशवालेपूजाकर्त्तेहैं इनकोसुखवाकल्याण
कभीनहीहोसक्ता जबतकइन पाखण्डोंको आर्यावर्त्त बासीलोग न
छोडेंगे तबतकइनकाअच्छा कुछनहीहोसक्ता फिरएकशालिग्राम
पाषाण औरतुलसीघास दोनोंका बिवाहकरतेहैं तथा तडागबाग
कूपादिकोंका बिवाहकरतेहैं औरनानाप्रकारकीमूर्तियांबनाकेमं-
दिरमेंरखतेहैं उनकेनाम शिवऔरपार्वती नारायणऔर लक्ष्मी
दुर्गा,कालीभैरव,बटुक ऋषिमुनि राधा औरकृष्णसीता औरराम
मजगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धिसिद्धि इत्यादिक रखलिये
हैं फिरइनकेपुजारीबहुतदरिद्र देखनेमेंआतेहैं और सबसंसारसे
धनलेनेकेहेतु उपदेशकरतेहैं किआओ यजमान धनचढाओ दे
वताओंको नहीतोतुमको दर्शनका फलनहोगा आमनियालेआ
ठाकुरजीकेहेतु बालभोगलेआओ तथाराजभोगके वास्ते देओऔ
रगहनाचढाओ तथावस्त्र औरनारायण तथा महादेवके वास्ते
मंदिरबनवाओ औरखूबआजीविका लगवाओ हमकहतेहैंकि ऐ
सेदरिद्रदेवता औरमहंत तथापुजारीलोग आर्यावर्त्त के नाशके
वास्ते कहांसेआगये औरकौनसा इसदेशकाअभाग्य औरपापथ
किऐसे२ पाखण्डइसदेशमेंचलगये फिरइनकोलज्जाभीनहीआ

तीकिअपनेपुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कियहसीतारामहैं इत्यादि कनामलेलेकेदर्शनकरातेहैं इसमेंबड़ाउपहासहै परन्तुसमझते नही देखनाचाहियेकि कृष्णतोधर्मात्माथे उनकेऊपर झूठजाल भागवतमेंलिखाहैं फिरउसीलीला कोरासमण्डल बनाकेकहते हैं उससेकिसीलड़केको कृष्णबनातेहैं किसीकोराधाऔर गोपियां बनालेतेहैं तथासीतारामऔर रावणादिक लड़कोंकोबनाकेलीलाकरतेहैं सोकेवलबड़े लोगोंकाउपहासइसमेहोताहै और कुछ नहीक्योंकि श्रीकृष्णऔररामादिकोंकेजोसत्यभाषणादिकव्यवहार तथाराजनीतिका यथावत्पालना औरजितेन्द्रियादिक सबविद्याओंकापढना इनसत्यव्यवहारोंका आचरणतोकुछ नही करते किन्तुकेवलउपहासकीबातें तथापापोंकोप्रसिद्धकर्त्ते हैं अपनेकुगतिकेवास्ते दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवेषो दशवेषसमोनृपः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै कि सूना नामहत्यासोदशहत्याकेतुल्य जीवोंकोपीड़ा औरहननचक्रसेहोताहैं सो तेलीवाकुह्मारकेव्यवहारसेजीवोंकोदशगुणपीडा वा हननहोताहै इससे दशगुणधोबी वामद्यकेनिकालनेवाले केव्यवहारमे सौगुणहत्याहोतीहै तथाइससे दशगुणहत्यावेषमेंहोतीहैअर्थात् वेषकिसकोकहतेहैंकिकिसीकास्वरूपबनाना औरनकलकरना अर्थात् मूर्तिपूजन रामलीलाऔररास मण्डलादिकजितनेव्यवहार हैंवेसबवेषमेंहोगिनेजातेहैंक्योंकिउनकावेषधारणहीकियाजाताहै इससेवेषमेंहजारहत्या काअपराधहैतथा जोराजान्यायसेपालननहीकरता औरअन्यायकर्त्ताहै वहदसहजार हत्याका स्वरूपहै इससे वेषबनानाबावनवाना तथादेखनाभीसज्जनोंकोन चाहिये औरइनसबव्यवहारोंकोछोडनाचाहियेऔर अच्छेव्यवहारोंकोकरनाचाहिये ऐसीइसदेशमें नष्टप्रवृत्तिभई हैकिकोईऐसा कहताहै मारणमोहनउच्चाटन वशीकरणऔर विद्वेषणादिक मैंजानताहूं इनसेपूंछनाचाहिये कितूंजीवन मरेभयकाभी करा-

सत्ताहै वानही सोकोई दैवयोगसेमर जाताहै वाकपटछलसे वि-
षादिकके मारडालतेहैं फिरकहतेहैं किमेरा पुरश्चरण सिद्ध हो
गया यहबातसबझूंठहै कोईरोगीहोताहै उसको बतलाताहै कि
भूतचढगयाहै फिरदूसरा बतलाताहै किइसकेऊपर शनैश्चरा-
दिकग्रहचढेहैं तीसराकहताहैकिसीदेवताकीखोरहै चौथा कह-
ताहैकिकिसीकाशापलगाहै येसबबातमिथ्याहैं कोईकहताहैकि
मैंरसायनबनाताहूं औरदूसराकहताहै किमैंपारेकोभस्मबना
ताहूं उसकोकोईखालेतो बुड्ढेकाजवान होजाताहै यहभीमि-
थ्याहीजानना औरबहुत सेपाखण्डीलोग बहुतपुरुषऔरस्त्रियों
सेकहतेहैं किजाओतुमकोपुत्र होजायगा सोसबतोबन्ध्याहोतीही
नहीहैं जोकिसीकोपुत्रहोजाताहै तबवहपाखण्डीकहता हैकिदे-
खमेरेवरसे पुत्रहोगया औरवैसेभी कहताहै किमेरेवरसे पुत्रहो-
गया वहस्त्रीऔर उसका पतिभी बकतेरहतेहैं किबाबाजीके वरसे
मुझको पुत्रभया उनकीबातसुनके बहुतमूर्खलोग मोहित होके
बाबाजीकीपूजामें लगजातेहैं फिरवहपाखण्डी धनपाकेबडे२ अ-
नर्थकरतेहैं यहसबबातझूंठहै मुद्दालेऔरमुद्दई इनदोनोंसेधूर्त्त
लोगकहदेतेहैं कितुम्हाराविजयहोगा सोदोनोंकापराजयतोहो-
तानही जिसकाविजयहोताहै उससे खूबधनलेतेहैं किहमारेपुर-
श्चरणऔरवरसे तेराविजयभयाहै अन्यथाकभीनहोता फिरबहुत
बुद्धिहीनपुरुष इसबातमेभी धननाशकरतेहैं कोईकहताहैकिजो
कुछहोताहैसो ईश्वरकीइच्छासेहीहोताहै जैसाचाहता है वैसा
करालेताहै औरकिसीकेकुछकरनेसेहोतानहीसबकोनचावैराम
गोसांई ऐसे २ झूंठवचनबनालियेहैं इनसेपूछना चाहियेकिजो
वहमिथ्याभाषण चोरीपरस्त्रीगमनादिक कराताहैतो वहबहुतबु
राहैवहकभीईश्वर वाश्रेष्ठनहीहो सक्ता कोईकहताहै कि जोकुछ
होताहैसोप्रारब्धसेही होताहै इनसेपूछनाचाहिये कितुमव्यवहा
रचेष्टाक्यौंकरतेहो सोपुरुषार्थमेंही सदाचित्तदेनाचाहियेअन्य-

चनहोवहुतऐसे २ बालकोंको और स्त्रियोंकोबहकातेहैंकिवे जन्म
तकनहो सुधरसक्ते ऐसाकहतेहैंकि वहमातापिता तोझूंठहैतुम
आज्ञाश्रीनारायणके शरणऔरएक२साधूहजार२कोमूडलेताहै
औरबहकाके पतितकरदेतेहैंउनकामरणतक कुछमुकर्मनहीहो-
ताक्योंकिमुधरतेतो तबजोकुछ विद्यापढे औरबुद्धि होती फिरएक
घरकोछोडदेतेहैं औरमातापिताकी सेवाभीछोडदेतेहैंफिरकुटी
मठऔर मंदिरोंकोबनाके हजारहांप्रकारके जालमेंफसजातेहैं
उनसेपूंछनाचाहियेकि तुमलोगोंनेघर औरमातापितादिकक्यों
छोडेथेतबवेकहतेहैं किऐसासुखघरमेंनहीहै ठीकहै किघरमेंछ-
प्परकेनीचेरहनापडताथा मजूरोमेंहनतसेचना औरजवकाआ-
टाभीपेटभरनही मिलताथा सोआर्यावर्त्तमेंअन्धकारपूर्णहै नित्य
मोहनभोगमिलताहै औरनित्यनयेभोग ऐसासुखतोकाभी गृहा-
श्रममेंहोहोता इससे गृहाश्रममेंकुछहै नहीदेखियेकिएकरुपैया
कोईमंदिरमेंचढाताहै उसकोएकआनेका प्रसाददेतेहैं कभीनही
देतेहैंपरन्तुहमलोगोंने इसकोविचारलियाहैकिसोलहपचाससौ
औरहजारगुनातकभी इसमंदिरकेदुकानदारोंमें तथातीर्थमें हो
ताहै अन्यत्र कैसोहीदुकानदारीकरो तोभीऐसा लाभनहीहोता
क्योंकिखाना नित्यनयीस्त्रियां औरनित्यनानाप्रकार केपदार्थोंकी
प्राप्ति अन्यत्रकहीं नहीहोती सिवायमंदिर पुराणादिकोंकीकथा
और चेलोंकेमूंडनेमें इससेआपहजारकहो हमलोगइस आनन्द-
कोछोडनेवालेहैं नहीअच्छा हमनेभीजानलियाहैकिजबतकयज-
मानविद्या औरबुद्धियुक्तनहोहोंगे तबतकतुम लोगकभीनहीछो-
डोगे परन्तुकभीदैवयोगसेविद्या औरबुद्धिआर्यावर्त्त मेंहोगी फि
रतुमको औरतुमारे पाखण्डोंकोवे सेवकऔरयजमान हीछोडें
गे तबपीछेझकमारकेतुमलोग भीछोडदेओगे ऐसे२ मिथ्या मत
चलगयेहैं किकानकोफाडके मुद्राकोपहिरनेसे योगीऔर मुक्ति
होतीहै सोइनकेमतमेंमत्स्येन्द्रनाथ औरगोरक्षनाथ दोआचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमा-
नतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै औरअपनेमतकादिग्विजयभीब-
नालियाहै औरजलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षपतकादिक
बनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअना-
चारवाममार्गियोंकीनांईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमें
पुरश्चरणकर्त्तेहैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं त-
थारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैं इससे अपनेको
धन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलास्त्रिपुष्क-
रंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुङ्गास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षे-
त्रं यमुनाचर्मकारिणी इत्यादिकवचनोंसे वेऐसामानतेहैं किइ-
नस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थोंकाफलप्राप्त होताहै
फिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किशालांप्रविशतिशौण्डिकस्यमंदिरेसुरां
मिशायांगणिका गृहेषु दिच्छितनाम रक्खाहै मद्यबेचनेवालेकाउ-
सकेघरमें जोपुरुष निर्भयऔर निर्लज्ज होके मद्यपीताहै फिरवे-
श्याकेघरमेंजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसकाना-
मसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछो-
डदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवे-
ज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्म
हैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनि-
र्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचा-
हियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामती-
र्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानाम-
चतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमी जबवेआपसमेंबातकर्त्तेहैं किलेआ-
ओतीर्थऔरपीयो इसवास्ते इननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔ-
रनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलऔर भैरवआदिऔ-
रगणयेपांच नामरखलियेहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाका-
ली इत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहींहैं उनकानामप-

शु कण्टकशुष्क औरविमुखादिक नामरखलियेहैं सोकेवलमिथ्या
जालउनकाहै इसकोसज्जनलोग कभीनमानै वैसहोकानफटेना
थोंकाव्यवहारहै क्योंकिवभीस्मशान मेंरहतेहैं मनुष्योंका कपाल
रखतेहैं वाममार्गियोंसेवमिलतेहैं इत्यादिकबहुत नष्टव्यवहार-
आर्यावर्त्त मेचलजानेसें देशकाश्रेष्ठ व्यवहार नष्टहोगया औरसब
देशखराबहोगया परन्तुआजकालअंगरेजके राज्यसेकुछ२ सुध-
रना औरसुखभयाहै जोअबअच्छे २ ब्रह्मचर्याश्रमादिकव्यवहार-
वेदादिक विद्याऔरपाखण्ड पाषाणपूजनादिकोंका त्यागकरैं तो
इनकोबहुतसुखहोजाय क्योंकिराज्यका आजकालबहुतसुखहैध-
र्मविषयमे जोजैसाचाहै वैसाकरैऔर नानाप्रकारके पुस्तकभीय-
न्त्रालयोंकेस्थापनेसेसुगम तासेमिलतीहैंअच्छे २ मार्गशुद्धबनग-
येहैं तथाराजाऔरदरिद्रकीभी बातराजघरमेसुनीजातीहै कोई
किसीकाजबरदस्तीसेपदार्थनहीछीनसक्ता अनेकप्रकारकीपाठशा
लाविद्यापढनेकेवास्ते राजप्रबन्धसेबनतीहैं औरबनीभीहैं उन
मेबालकोंकी यथावतशिक्षाहोतीहै औरपढनेसे आजीविका भी-
राजघरमे पढनेवालेकोहोतीहै किसीकाबन्धनवादण्डराजघरमे
नहीहोता जिसमेजिसकोखुशीहोय उसकोवहकरै अपनीप्रसन्न
तासें अत्यन्तदेशमेमनुष्योंकी वृद्धिभईहै औरपृथिवीभी खेतआदि
कोंसेबहुतहोगईहै वनादिकनहीरहेहैं लडाईबखेडा गदरकुछइ
सवक्तनहीहोतेहैं औरव्यवस्था राजप्रबन्धसे सबप्रकारसे अच्छीब
नीहै परन्तुकितनीबात हमको अपनीबुद्धिसेअच्छीमालूमनहीदे-
तीहैं उनकोप्रकाशकर्त्ता हैं नजानेवबडेबुद्धिमानहैं उननेइनबातों
मेगुणसमझाहोगा परन्तुमेरीबुद्धिमे गुणइनबातोंमे नहीदेखप
डतेहैं इससे इनबातोंकोमैंलिखताहूं एकतोयहबातहै किनोनऔ
रपौंनरोटीमे जोकरलियाजाताहै वहमुझको अच्छानहीमालू-
मदेता क्योंकिनोनकेबिना दरिद्रकाभीनिर्वाह नहीहोता किन्तु-
सबकोनोनका आवश्यकहोता है औरवेमजूरी मेहनतसेजैसेतैसे

निर्वाहकरतेहैं उनकेऊपरभीयहनोन कादण्डतुल्यरहताहै इससे
दरिद्रोंको क्लेशपहुंचताहै इससेऐसाहोय किमद्य अफीम गांजा
भांग इनकेऊपर चौगुना करस्थापनहोय तोअच्छीबातहै क्योंकि
नशादिकों काछूटनाहीअच्छाहै औरजोमद्यादिक बिलकुल छूट
जांय तोमनुष्योंका बडाभाग्यहै क्योंकिनशासेकिसीकोकुछउपका
रनहींहोता परन्तु रोगनिवृत्तिकेवास्ते औषधार्थतो मद्यादिकों
कीप्रवृत्तिरहनाचाहिये क्योंकिबहुतसे ऐसेरोगहैंकिजिनकेमद्या
दिकही निवृत्तिकारक औषधहैं सोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे उनरो
गोंकीनिवृत्तिहोसक्तीहै तोउनकोग्रहणकरैंजबतकरोगनछूटै फि
र रोगकेछूटनेसेपीछे मद्यादिकोंकोकभीग्रहणनकरैं क्योंकि जित
नेनशाकरनेवालेपदार्थहैं वेसबबुद्ध्यादिकों केनाशकहैं इससेइनके
ऊपरही करलगानाचाहिये औरलवणादिकों केऊपरनचाहिये
पौनरोटीमेंभी गरीबलोगोंकोबहुतक्लेशहोताहै क्योंकिगरीबलो
गकहींसे घासछेदन करकेलेआये वालकडीकाभार उनकेऊपर
कौडियोंके लगनेसे उनकोअवश्यक्लेशहोताहोगा इससे पौनरोटी
काजो करस्थापनकरना सोभीहमारेसमझसे अच्छानहीं तथा
चोरडाकू परस्त्रीगामी औरजूआकेकरनेवालेइनकेऊपरऐसादं
डहोना चाहिये किजिसकोदेख वासुनकेसबलोगोंको भयहो
जायऔर उनकामोंकोछोडदें क्योंकिजितनेअनर्थहोतेहैं वेसबउ
नसेहीहोतेहैं सोजैसामनुस्मृति राजधर्ममें दण्डलिखाहैवैसाही
करनाचाहिये जबकोई चोरीकरैतबयथावत् निश्चयकरकेकिइस
नेअवश्यचोरीकिईहै कुत्तेकेपंजेकीनांई लोहेकाचिन्ह राजाबना
रखे उसकोअग्निमें तपाकेललाटके भौंकेबीचमेंलगादे कुछबेत
भीउसकोमारदे औरगधेपैंचढाके नगरकेबीचमें बजारमेंजूतियां
भीलगतीजांय औरदुगायाकरै फिरउसको कुछधनदण्डदे अथवा
थोडेदिन जहलखानेमेंरक्खे वहांसूखेचनेपावभरतक खानेकोदे
औररातभर पिसवावै नसोवैतोवहांभी उसकोजूतेबैठें औरदिव-

समेंभीकठिनकाम उस्से करावे जबतकवह निर्बलनहोजाय परन्तु ऐसाबहुतदिनतकरक्खे जिस्से किमरनजायफिरउसको दोनोंनदिनतक शिक्षाकरै किसुनभाई तैंनेमनुष्यहोके ऐसाबुराकामकिया कितेरेऊपर ऐसादण्डहुआ हमकोभीतेरा दण्डदेखकेबड़ाहृदयमेंदुःखभया औरआपभलेआदमी होकेव्यवहारकरना फिरऐसाकाम कभीनकरनाचाहिये अच्छे२कामकरनाचाहिये जिस्से राजघरमें औरसभामें तथाप्रजामें तुमलोगोंकी प्रतिष्ठाहोय और आपलोगोंके ऊपरऐसाकठिन जोदण्ड दियागया सोकेवलआपलोगोंकेऊपरनहीं किन्तुसबसंसारकेऊपर यहदण्डभयाहै जिस्से इसदण्डकोदेखवासुनके सबलोगभयकरैं औरफिर ऐसा काम कोईनकरै ऐसे शिक्षःजितनेबुरे कर्मकरनेवालेहैं उनको दण्डके पीछेअवश्यकरनीचाहिये क्योंकि दण्डकातोसदाउसकोस्मरणरहै औरहठी वाबिराधीनबनजाय इसवास्ते शिक्षा अवश्यकरनाचाहिये केवलशिक्षा वाकेवलअत्यन्तदण्डमें दोनोंसुधरनहीं सक्ते किन्तुदोनोंसे मनुष्यसुधरसक्ते हैं फिरभीवहीचोरीकरै तोउसकाहाथकाटडालनाचाहिये फिरभी वहनमानेतोउसको बुरीहवालसे मारडालना चाहिये किसीदिनउसकी आंखनिकालडाले किसीदिनकान किसीदिननाक औरसबजगह घुमानाचाहिये किजिसकोसबदेखैं फिरबहुतमनुष्योंके सामनेउसकोकुत्तोंसेचिथवाडाले ऐसादण्ड एकपुरुषकाहोयतो उसके राजभरमें कोई चोरीकीइच्छाभीनकरेगा और राजाकोभी इनकेप्रबन्धमेंबड़ाआनन्दहोगा नहींतो बड़ेप्रबन्धमेंक्लेश होतेहैं साधारण दण्डसे वेकभीसुधरेंगे नहीं डाकुओंकोभी चोरकीनांई दण्ड देनाचाहियेऔर जुआकरनेवालोंको एकबारकरनेसेही बुरीहवालसे जैसाकोचोरोंकालिखा गधेपरचढ़ानादिकसब करकेफिरकुत्तेसेचिथवाडालनाचाहिये क्योंकि चोरीपरस्त्रीगमन औरजितनेबुरेकर्महैं वजुआरीसेहीहोतेहैं इस्से उनकेसहाय करनेवालेकोभी ऐसादण्ड देनाचा-

हिये क्योंकि जितने लड़ाई दंगा चोरी परस्त्रीगमनादिक इनसेही उ-
त्पन्न होते हैं इससे इनके ऊपर राजा दण्ड देवे और कुछ थोड़ा भी आल-
स्य न करै सदा तत्पर रहै महाभारत में एक दृष्टान्त लिखा है कि सो-
ने चांदी और अच्छे २ पदार्थ धरे रहैं उनको कोई न स्पर्श करै तब जा-
नना कि राजा है और धनाढ्य लोग लाखहां रुपैयों को दुकान का कि-
वाड़ कभी न ढांक लगावै और रात दिन कोई किसी का पदार्थ न उठावै
तब जानना कि राजा है धर्मात्मा इसवास्ते ऐसा उग्र दण्ड चाहिये कि
सब मनुष्य न्याय में चलैं अन्याय में कोई न हो जब स्त्री पुरुष व्यभिचार
करैं अर्थात परपुरुष से स्त्री गमन करै परस्त्री से पुरुष जब उनका ठी-
क २ निश्चय हो जाय तब स्त्री के ललाट में अर्थात भौं के बीच में पुरुष के
लिंगेन्द्रिय का चिन्ह लोहे का अग्नि में तपा के लगा दे तथा पुरुष के ल-
लाट में स्त्री के इन्द्रिय का चिन्ह लगा दे फिर जिसको सब देखा करैं फि-
र उनको भी खूब फजीहत करैं और कुछ धन दण्ड भी करैं पीछे उसी प्र-
कार से शिक्षा भी करैं सब को फिर भी न मानैं और ऐसा काम करैं त-
ब बहुत स्त्रियों के सामने उस स्त्री को कुत्तों से चिथवा डाले और पुरुष को
बहुत पुरुषों के सामने लोहे के तख्त को अग्नि में तपा के सोवा दे उसके
ऊपर फिर उसके ऊपर घुमावै उसी पर्यंक के ऊपर उसका मरण हो
जाय फिर कोई पुरुष व्यभिचार कभी न करेगा ऐसा दण्ड देखके वा सु-
न के और सर्कार कागज को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन
बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है सो यह बात
राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग
दुःख पाके बैठे रहते हैं कचहरी में बिना धन से कुछ बात होती नहीं इ-
स से कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझको अच्छा मालू-
म नहीं देता इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है क्योंकि था-
ने से लेके आगे २ धन का ही खर्च देख पड़ता है न्याय होना तो पीछे फि-
र नाना प्रकार के लोग साक्षी झूंठ रच बना लेते हैं यहां तक कि सत्तू
खाने को देदेओ और झूंठ गवाही हजार बक्ता देवा देओ जो जैसा मनु

मेंदण्डलिखाहै वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेझूंठोसाक्षीदे-
नेको कोई तैयारनहीं होय अर्वाङ्नरकमध्येति प्रेत्यस्वर्गोचहोय-
त इसकायहअभिप्रायहैकि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेझूंठसा-
क्षीदिई तबउसकोजीभ कचहरीकेबीचमें काटलेवंहीअर्वाक् नाम
जीभरहित जोनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोयं क्योंकिराजा प्रत्यक्ष-
न्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जि-
तने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवेंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्य-
वस्था रखनीचाहिये क्योंकिवेभीअत्यन्तसच झूंठकेविचारमें तत्पर
होके न्यायहीकरनेलगे देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपड़दि-
याउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून
कोरीतिसे एककोजीतदिई और दूसरेकापराजय जिसकापराज-
यभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसकेपासफिरअपी-
लकरी सोप्रायःजिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें
पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर
ऐसेही जबतकबननहीचूकता दोनोंका तबतकविलायततकलड़ते
हीचलेजातेहैं प्रायःरहीसलोग इसबातमेंहठकेमारे बिगड़जाते
हैं इससे क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यव-
स्थाहोनीचाहिये जिससेवे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहीकरैं ऐसा
आलस्यनकरैं किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको
इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेविचारपति
भीआलस्यमेंआजातेहैं औरविचारपतिको अत्यन्तपरीक्षा करनी
चाहिये किअधर्मसेडरतेहोंय औरविद्याबुद्धिसे युक्तहोयकामक्रो-
ध लोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोयऔर अन्तर्यामीजो
सबका परमेश्वर उससे हीजिनकोभयहोय औरमेनहींसोपक्षपात
कभीनकरैं किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ताहै
अन्यथानहीं और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरुषों
कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहै इससेही आगे

प्रायः वादविवादके व्यवहार चलतेहैं इसस्थानमें जो पक्षपातसे अ-
नर्थ लिखा पढ़ाजायगा सो आगेभी अन्यथा प्रायः लिखापढ़ाजायगा
और अन्यथा व्यवहारभी प्रायः होजायगा इसमें पुलीसमें अत्यन्तश्रे-
ष्ठपुरुषोंको रखनाचाहिये अथवा पहिले जैसे चौकीदारमहल्ले २
में एक२ रहताथा उससे बहुधा अन्याय नहीं होताथा जबसे पुलिस
का प्रबन्धभयाहै तबसे बहुधा अन्यथा व्यवहारको सुननेमें आताहै
और गाय बैल भैंसो छेरी और भेंडो आदिक मारे जातेहैं इससे प्र-
जाको बहुतसी अप्राप्त होताहै और अनेकपदार्थोंकी हानिभी होती
हैक्योंकि एकगैया दस १० सेरदूधदेतीहै कोई ८ सेर छः ६ सेर पांच ५ से-
र और दो २ सेरतक उन के मध्य छः ६ सेर नित्य दूध गिनाजाय कोई
दस १० मासतक दूधदेतीहै कोई छः ६ मासतक उसका मध्यस्थ आ-
ठमासतक गिनाजाताहै सो एकमासभरमें सवाचारमन दूधहो-
ताहै उसमें चावलडालके चीनीभी डालदेंतो से पुरुषतृप्त होसक्ते
हैं जो ऐसेही पीये तो ८० पुरुषतृप्त होजायगे और ८०० वा ६४०
पुरुषतृप्त होसक्ते हैं कोईगाय १५ दफे बियातीहै कोई दसदफे उस
का इसने १२ वक्त रखलिये सो ९६०० सै पुरुषतृप्त होसक्ते हैं फिर
उसके बछडे और बछियां भईंगी उनसे बहुत बैल और गाय बढ़गोए-
कगायसे लाख मनुष्योंका पालन होसक्ताहै उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुषतृप्त होसक्ते हैं फिर दूध और पशुओंकी उत्पत्तिका मूल
ही नष्ट होजाताहै जो बैल आर्यावर्त्त में पांचरुपैयोंसे आताथा सो अब
३० सेभी नहीं आता और कुछ गांव और नगरके पास पशुओंके चर-
नेके वास्ते उसकी सीमा में भूमि रखनी चाहिये जिससे कि वे पशु चरें जै-
सी दुग्धादिकसे मनुष्यके शरीरकी पुष्टि होतीहै वैसी मूख अन्नादि-
कोंसे नहीं होती और बुद्धिभी नहीं बढ़ती इससे राजाको यह बात अव-
श्य करनी चाहिये कि जिन पशुओंसे मनुष्यके व्यवहार सिद्ध होतेहैं
और उपकार होताहै वे कभी न मारे जांय ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये
जिससे सब मनुष्योंको सुख होय वैसाही प्रजास्थ पुरुषोंकोभी करना उ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिससे प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्न
रहै यहीबातकरनी सबकोउचितहै देखनाचाहियेकि महाभार-
तमेंसगरराजाकी एककथालिखीहै उसका एकपुत्र असमंजानाम
थाउसको अत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसनेअच्छाआचारवावि-
द्याग्रहणनहीं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकोयुवाव-
स्थाभोहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरु-
षोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहीभई फिरउसका विवाहभीकरादि-
याएकदिनसर्जूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाकेबाल-
कआठ २ दश २ बरसकेजलमेंस्नानकरतेथे औरक्रीडाभीकरतेथे
सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेग-
हिरेजलमे फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपु-
रुषने बालकको पकडलिया उसकेशरीरमें जलप्रविष्टहोनेसे वह
मूर्छितहोगया उसकीदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औ-
रइसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और
कहाकितुमारे बालककोयहदशाहै राजाकेपुत्रने करदिई सुनके
उसकीमातापिता औरसब कुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके
फिरउसबालकको उठाकेजहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको
चलेराजासभाकेबीचमें सिंहासनपैंबैठेथेसोउनकोआतेदूरसेदेख
केझटउठकेउनकेपासचलेगयेऔरपूंछाकिइसबालकको क्याभया
तबउनकीमातारोनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकोधैर्यदियाकि
तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि
हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेख
केप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूंछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका
भाग्यहैइसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूंछाकितुमअपनीबा-
तकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापु-
त्रहै जोकिअपनेहाथसेहीप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावै-
सासत्य २ हालराजासेकहदियातबराजानेवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलगाडाला और औषधीसे उसीवक्त स्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालकउसकोमातपिता और जिसनेबालकनि-
कालाथावहभीवहांथा फिरराजानेसिपाहियोंकोआज्ञादिई कअ-
समंजाकिसुसकेचढाकेलेआओ सिपाईलोगगयेऔरवैसहीउसको
बांधकेलेआयेअसमंजाकीस्त्रीभी संग२ चलीआई औरसभामेंखडे
करदियेराजानेपुत्रकीस्त्रीसे पूछाकितूइसकेसाथजानेमेंप्रसन्नहैवा-
नहींतबउसनेकहाकिअबजोदुःखवासुखहोसोहोयपरन्तु मेरेअभा-
ग्यसेऐसापतिमिलासोमैंसाथजोरहूंगीपृथकनहीं तबराजानेअस-
मंजासेकहाकितेराकुछभाग्यअच्छाथा कियहबालकमरानहींजो
यहमरजातातोतुझकोबुरेहवालसेचोरकीनाईंमैंमारडालताप-
रन्तुतुझको मैंमरणातकदण्डनहींदेताहूं सोतूइसीगांवसेवानगरमें
अथवा मनुष्योंकेपासखडारहावा गयातोतुझको चोरकीनाईं
मारडालेंगे इसलिएनिरन्तरजाकेरहकिजहांमनुष्यकादर्शनभीन
होय सिपाहियोंसेहुकुमदेदिया किजाओतुमघोरवनमेंइनदोनों
कोछोड़आओ उसकोनवस्त्रदिये अच्छे२ नखानेकोदिई नधनदिये
किन्तुजैसेसभामेंदोनोंखडेथेवैसेही छोड़आये फिरवेवनमेंरहे
और उनदोनोंसे वनमेंहीपुत्रभया उसकीस्त्रीअच्छीथी सोअपनेपा-
सहीबालककोरक्खा और शिक्षाभीकिई जबपांचवर्षकाभया तब
ऋषियोंकेपास पुत्रकोवहस्त्रीरखआई औरऋषियोंसेकहाकिम-
हाराज यहआपकाहीबालकहै जैसेयहअच्छाबने वैसाकीजियेत-
बऋषिलोग बहुतप्रसन्नहोके उसकोरक्खा किइसकोअच्छीप्रका-
रसेशिक्षाकिईजायगी क्योंकियहसगरकापौत्रहै फिरस्त्रीचलीगई
अपनेस्थानपर औरऋषिलोगोंने उसबालकके यथावत्संस्कारकि-
येविद्यापढाई औरसबप्रकारकी शिक्षाभीकिई औरउसनेयथावत्
ग्रहणकिई जबवह२१ बरसकाहोगया तबउसकोलेकेसगरराजा
केपासऋषिलोगगये औरकहाकियह आपकापौत्रहै इसकीपरी-
क्षाकीजियेसोराजानेउसकीपरीक्षाकिई औरप्रजास्थश्रेष्ठपुरु-

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यहोठहरा तबप्रजास्थपुरुषोंनेंराजासेकहा किअसमंजा नजो आपकापौत्र सोराजाहोनेंकेंयोग्यहै तबराजानेंकहाकि सबबुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिईऔर उसकाराज्याभिषेकभीहोगयाक्योंकिसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयथे राज्यकार्यमें बहुतपरीश्रमपडताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनेभी जितना होसकाथा उतनाकर्त्तेथें राजाऐसाहीहोनाचाहिये किएकभरत राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागयाहैउसकेभीनवपुत्रथे सो२५ वर्षकेऊपरसब होगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्रमादीथे राजानेंऔरप्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसेएक भीराजाहोनेकेयोग्यनहीसो भरतराजानें इश्तिहार करकेपुरुषऔरस्त्रीलोगोंकोबोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोंएक मैदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदिया सोजबसबलोगएकदिनइकट्ठे भये परन्तु किसीकोंविदितनभयाकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानकेऊपरराजा चढकेसबसे कहाकिजिनराजा अथवाप्रजास्थ रहीसलोगोंका पुत्र इसप्रकारकादुष्टहोय उसकोऐसाही दण्डदेनाउचितहैजोकिइसबखतहम अपनेपुत्रोंकोदेंगे सोसदा सबसज्जनलोगइस नीतिको मानैं औरकरैं फिरमंचानसेउतरे, औरनवपुत्रभीबीचमेंखडेंथे सब समाजवालेंदेखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसामनेंखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानकेऊपरबांधदिये फिरभीसबसेकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा हीदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनकासिर नकाटतेतोयेहमारेपीछेआपसमें लडते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकीमर्यादाकोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उनकोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यधन औरधर्मसबनष्टहो-

जायगे इसमें कुछ सन्देह नहीं देखना चाहिये कि आर्यावर्त्त देशमें ऐसे २ राजा और प्रजा श्रेष्ठ पुरुष होते थे सो इस वक्त आर्यावर्त्त देशमें ऐसे भ्रष्टाचार होगये हैं कि जिनकी संख्या भी नहीं हो सक्ती ऐसा सर्वत्र भूगोलमें देश कोई नहीं ऐसा श्रेष्ठ आचार भी किसी देशमें नहीं था परन्तु इस वक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डों शैव चक्राङ्कितादिक सम्प्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम और विद्याके छोड़नेसे ऐसा देश बिगड़ा है कि भूगोलमें किसी देशको न हो जैसी कि दुर्दशा महाभारतके युद्धके पीछे आर्यावर्त्त देशकी भई है सो आजकाल अंगरेजके राज्यमें कुछ २ सुख आर्यावर्त्त देशमें भया है जो इस वक्त वेदादिक पढ़ने लगें ब्रह्मचर्याश्रम चालीस वर्ष तक करें कन्या और बालक सब श्रेष्ठ शिक्षा और विद्या वाले होवें इन मत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको छोड़ें सत्यधर्म और परमेश्वरकी उपासनामें तत्पर होवें तो इस देशकी उन्नति और सुख हो सक्ता है अन्यथा नहीं क्योंकि बिना श्रेष्ठ व्यवहार विद्यादिक गुणोंसे सुख नहीं होता आजकाल जो कोई राजा जमींदार वा धनाढ्य होता है उनके पास मतमतान्तरके पुरुष और खुशामदी लोग बहुत रहते हैं वे बुद्धि धन और धर्म नष्ट करदेते हैं इससे सज्जन लोग इन बातोंको विचारके समझलें और करनेके व्यवहारोंको करें अन्यथा नहीं एक ब्रह्मसमाज मत चला है वे ऐसा मानते हैं नित्य परमेश्वर सृष्टिकर्त्ता है अर्थात् जीवादिक नये २ नित्य उत्पन्न कर्त्ता है जीव पदार्थ ऐसा है कि जड़ और चेतन मिलाके उत्पन्न ईश्वर कर्त्ता है जब वह शरीर धारण कर्त्ता है तब जड़ांशसे शरीर बनता है और चेतनांश जो है सो आत्मा रहता है जब शरीर छूटता है तब केवल चेतन और मन आदिक पदार्थ रहते हैं फिर जन्म दूसरा नहीं होता किन्तु पापोंका भोग पश्चात्तापसे करलेता है ऐसे होके मरके अनन्त उन्नतिको प्राप्त होता है यह बात उनकी युक्ति और विचारसे विरुद्ध है क्योंकि जो नित्य २ नई सृष्टि ईश्वर करता तो सूर्य चन्द्र पृथिव्या-

दिकपदार्थों की भी सृष्टि नहीं देखने में आती जो पृथिव्यादिक की सृ-
ष्टि नई २ देखने में नहीं आती ऐसे जो जगत को सृष्टि भी ईश्वर ने एक बे-
र किई है सो केवल कल्पना मात्र से ऐसा कथन वे लोग कहते हैं किन्तु
सिद्धान्त बात यह नहीं है इससे ईश्वर में नित्य उत्पत्ति का विच्छेद दोष
आवेगा और सर्वशक्तिमत्वादिक गुण भी ईश्वर में नहीं रहेंगे क्योंकि
जैसे जीव क्रम से शिल्पविद्या से पदार्थों को रचना करता है वैसा ईश्वर
भी हो जायगा इससे यह बात सज्जनों को मानने के योग्य नहीं और
एक जन्म मानते हैं सो भी विचार विरुद्ध है क्योंकि अनेक जन्म होते हैं
सो प्रथम पूर्वार्द्ध में विचार किया है देख लेना और पश्चात्ताप से पा-
पों को निवृत्ति मानना यह भी युक्ति विरुद्ध है सो प्रथम लिख दिया है कि
पश्चात्ताप जो होता है सो किये भये पापों का निवर्त्तक नहीं होता कि-
न्तु आगे कर्त्तव्य पापों का निवर्त्तक होता है बिना शरीर से पाप पुण्यों
का फल भोग कभी नहीं हो सकता और बिना शरीर के जीव रहता ही
नहीं जो मन में पश्चात्ताप से पापों का फल जीव भोक्ता तो जिस २ दे-
श काल और जिन जीवों के साथ पाप और पुण्य किये थे उनका भी म-
रने से स्मरण होता और जो स्मरण होता तो फिर भी जीव मोह के हो-
ने से वहीं अपने पुत्र स्त्रियादिक संबन्धियों के पास आ जाता सो कोई
आता नहीं इससे यह बात भी उनको प्रमाण विरुद्ध है और वर्णाश्रम
को जो सत्य व्यवस्था शास्त्रोक्त रीति से उसका छेदन करते हैं सो सब म-
नुष्यों के अनुपकार का कर्म है यह तो ४ समुल्लास में विस्तार से लिख
दिया है वहां देख लेना यज्ञोपवीत केवल विद्यादिक गुणों का और
अधिकार का चिन्ह है उसका तोड़ना साहस से इससे भी अत्यन्त मनु-
ष्यों का उपकार नहीं होता किन्तु विद्यादिक गुणों से वर्णाश्रम का
स्थापन करना शास्त्रोक्त रीति से इससे मनुष्यों का उपकार हो सकता
है संस्कार आचार की रीति से नहीं ब्राह्मणादिक वर्णवाचक जो शब्द
हैं उनको जातिवाचक मान के निषेध करते हैं सो केवल उन-
को भ्रम है किन्तु शास्त्रोक्त रीति से मनुष्यादिक जातिवाचक शब्द हैं

सोमनुष्यप्रमुहम्मदादिकको एकताकोई नहीकरसका सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहैऔरखानेपीनेसे
धर्मकिसीका बढ़तानहीं औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरनाकिसबके साथखानाअथवाकिसीकेसाथनहींखानाव
हीधर्ममाननेनायहभी अनुचितबातहै किन्तुनष्टभ्रष्टसंस्कारही
नपदार्थोंकखाने औरपीनेसे मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यत
नहीऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेंमिलाकरनाइसमेंभीइमकोअत्यन्त
श्रेष्ठगुणमालूमनहींदेता क्योंकिइसमें मनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तखर्चहोताहै केवलअगरजोपढ़नेसेसं
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकीनहीहै किन्तुसबप्रकारकीपु
स्तकपढनाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातनसत्यसंस्कृतपु-
स्तकोंकोनपढेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहींजानेंगेइससे सबपुरुषार्थसेइन वेदादि-
कोंकोपढनाऔरपढानाचाहियेइससेसबविघ्ननष्टहोजायगेअन्यथा
नहींऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोडेहीदिनोंमें ब्राह्मस-
माजकेलोगोंमेंभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्नन-
हीहै किन्तुईर्षाहीएकसेदूसरेकोहोतीहै सोजैसेवैराग्यादिकों-
मेंअनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्धव्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेहीविरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहींसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढ़तोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहींतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मसामहम्मदनानकचैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना औरजै-
गीषव्यपचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनहीं गिननायेह
भीउनकीभूलहै अन्यबातजोपरमेश्वरकीउपासनादिकसोसबउन-
कोअच्छीहै इसकेआगे जैनमतकेविषयमेंलिखाजायगा ॥

इतिश्रीमद्दयानन्दसरस्वतिस्वामिकृतेस

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशःसमुल्लासःसंपूर्णः ॥ ११ ॥

अथ जैनमतविषयंव्याख्यास्यामः ॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत प्रथमचलाहै उसकोसाढेतीनहजार वर्षअनुमानसेभयेहैं सोउनके २४ तिर्थङ्कर अर्थात् आचार्य भयेहैं जैनेन्द्र पारसनाथ ऋषभदेव गौतमऔर बौधादिक उनके नामहैं उन्ने अहिंसाधर्मपरममानाहै इसविषयमेंवेऐसा कहतेहैं किएकबिन्दुजलमें अथवा एकअन्नकेकणमें असंख्यातजीवहैं उनजीवोंकी पांखआजायतो एकबिन्दुऔर एककणकेजन्तु ब्रह्माण्डमें नसमावें इतनेहैं इससेमुखके ऊपर कपडबांधरखतेहैं जलकोबहुतछानतेहैं औरसबपदार्थोंको शुद्धरखतेहैं और ईश्वरकोनहींमानते ऐसाकहतेहैं किजगत् स्वभावसेसनातनहै इसकाकर्त्ताकोईनहीं जबजीवकर्मबन्धनसेकूटजाताहै औरसिद्धहोताहै तबउसकानाम केवलीरखतेहैं और उसीको ईश्वरमानतेहैं अनादिईश्वर कोईनहींहै किन्तुतपोबलसे जीवईश्वररूपहोजाताहै जगत्‌काकर्त्ताकोईनहीं जगत्अनादिहैजैसेवारूवृक्ष पाषाणादिक पर्वत वनादिकोंसे आपसे आपहीहोजातेहैं ऐसेपृथिव्यादिक भूतभीआपसे आपबनजातेहैं परमाणुकानाम पुद्गलरक्खाहै सोपृथिव्यादिकोंके पुद्गल मानतेहैं जबप्रलय होताहै तब पुद्गलजुदे २ होजातेहैं औरजबवे मिलतेहैं तबपृथिव्यादिक स्थूलभूतबनजातेहैं औरजीवकर्मयोगसे अपना २ शरीरधारणकरलेतेहैं जैसाजोकर्म करताहै उसकोवैसाफलमिलताहै आकाशमें चौदहराज्यमानतेहैं उनकेऊपर शापद्मशिला उसकोमोक्ष स्थानमानतेहैं जबशुभकर्मजीवकरताहै तब उनकर्मोंकेवेगसेचौदहराज्योंकोउल्लंघन करके पद्मशिलाके ऊपर विराजमानहोतेहैं चराचरकोअपनी ज्ञानदृष्टिसेदेखतेहैं फिर संसार दुःखजन्ममरणमेंनहींआते वहीआनन्दकरतेहैं ऐसीमुक्तिजैनलोगमानतेहैं और ऐसाभीकहतेहैं किधर्मजोहैसोजैनकाहीहैऔर

सब हिंसक हैं तथा अधर्मी क्योंकि जो हिंसा करते हैं वे अधर्मी क्या न हों
जे यज्ञमें पशु मारते हैं और ऐसी २ बातें कहते हैं कि यज्ञमें जो पशु
मारा जाता है सो स्वर्ग को जाता होय तो अपना पुत्र वा पिता को
न मार डालें स्वर्ग को जाने के वास्ते ऐसे २ श्लोक उनने बना रक्खे हैं
त्रयो वेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचराः इसका यह अभिप्राय है
कि ईश्वर विषय कि जितनी बातें वेद में हैं वह धूर्तों की बनाई है जित-
नी फलस्तुति अर्थात् इस यज्ञ को करै तो स्वर्ग में जाय यह बात भा-
ण्डों ने बना रक्खी है और जितना मांसभक्षण पशु मारने का विधि
है वेद में सो राक्षसों ने बनालिया है क्योंकि मांसभोजन राक्षसों का बड़ा
प्रिय है सब बात अपने खाने पीने और जीविका के वास्ते लोगों ने बना-
ई है और जैन मत है सो सनातन है और यही धर्म है इसके विना कि-
सी को मुक्ति वा सुख कभी न हो सक्ता ऐसी २ वे बातें कहते हैं इन
से पूछना चाहिये कि हिंसा तुम लोग किसको कहते हो जो वे कहें कि
किसी जीव को पीड़ा देना सो तो विना पीड़ा के किसी प्राणी का कुछ व्य-
वहार सिद्ध नहीं होता क्योंकि आप लोगों के मत में ही लिखा है कि ए-
क बिन्दु में असंख्यात जीव हैं उसको लाख बेर छाने तो भी वे जीव पृथ-
क नहीं हो सक्ते फिर जलपान अवश्य किया जाता है तथा भोजनादि-
क व्यवहार और नेत्रादिकों की चेष्टा अवश्य की जाती है फिर तुम्हा-
रा अहिंसा धर्म तो न हो बना प्रश्न जितने जीव बचाये जाते हैं उतने ब-
चाते हैं जिसको हम लोग देखते हैं नहीं उनको पीड़ा में हम लोगों
को अपराध नहीं उत्तर ऐसा व्यवहार सब मनुष्यों का है जो मांसाहा-
री हैं वे भी अश्वादिक पशुओं को बचा लेते हैं वैसे तुम लोग भी जिन जी-
वों से कुछ व्यवहार का प्रयोजन नहीं है जहां अपना प्रयोजन है वहां म-
नुष्यादिकों को नहीं बचाते हो फिर तुम्हारी अहिंसा न हो रही प्रश्न
मनुष्यादिकों को ज्ञान है ज्ञान से वे अपराध करते हैं इससे उनको पीड़ा
देने में कुछ अपराध नहीं और पश्वादिक जीव बिना अपराध हैं उनको पी-
ड़ा देना उचित नहीं उत्तर यह बात तुम लोगों की मिथ्या है क्योंकि आ-

नवालोंको पीडा देना और ज्ञानहीन पशुओंको पीडा न देना यह बा-
त विचारशून्य पुरुषोंकी है क्योंकि जितने प्राणी देहधारी हैं उनमें
मनुष्य अत्यन्त श्रेष्ठ है सो मनुष्योंका उपकार करना और पीडाका
न करना सबको आवश्यक है हिंसा नाम वैरका सो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमें लिखा है सर्वथा सर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा यह अहिंसाधर्मका लक्षण है इसका यह अभिप्राय है कि सबप्र-
कारसे सब कालमें सब भूतोंमें अनभिद्रोह अर्थात् वैरका जो त्याग
सो कहाता है अहिंसा सो आपलोग अपने संप्रदायमें तो प्रीत करते
हो और अन्यमें सम्प्रदायोंमें द्वेष तथा वेदादिक सत्यशास्त्र तथा ईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैर और द्वेष है फिर अहिंसाधर्म आपलोगों
का कहने मात्र है अपने सम्प्रदायोंके पुस्तक तथा बात भी अन्यपुरुषोंके
पास प्रकाशित नहीं करते हो यह भी आपलोगोंमें हिंसा सिद्ध है ईश्वर
को आप लोग नहीं मानते हैं यह आपलोगोंकी बडी भूल है और स्व
भावसे जगत्की उत्पत्तिका मानना यह भी तुमलोगोंकी झूठ बात है इ-
सका उत्तर ईश्वर और जगत्की उत्पत्तिके विषयमें देखलेना प्रथम
जीवका होना और साधनोंका करना पश्चात् वह सिद्ध होगा जब जे-
वादिक जगत् विना कर्त्तासे उत्पन्न ही नहीं होता और प्रत्यक्ष जगत्में
नियमोंके जगत्में देखनेसे सनातन जगत्का नियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिर उसको ईश्वर नहीं मानना और साधनोंसे सिद्ध जो भया उ-
सीको ईश्वर मानना यह बात आपलोगोंकी बडी भूल है जो ऐसे आ
प जीव शरीर धारण करलेते हैं तो शरीर धारणमें जीव स्वतन्त्र ठह-
रे फिर छोड क्यों देते हैं क्योंकि स्वाधीनतासे शरीर धारण करलेते
हैं फिर कभी उस शरीरको जीव छोडेगा ही नहीं जो आप कहें कि क-
र्मोंके प्रभावसे शरीरका होना और छोडना भी होता है तो पापोंका
फल जीव कभी नहीं ग्रहण कर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छा किसीको नहीं
होती सदा सुखकी इच्छा होरहती है जब सनातन न्यायकारी ईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाका करनेवाला न होगा तो यह बात कभी न बनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा सिद्धशिला मुक्तिका स्थान मानते हैं यह
बात प्रमाण और युक्तिसे विरुद्ध है केवल कपोलकल्पनामात्र है और
उसके ऊपर बैठके चराचर को देखना और कर्म्मों का सब हाल [illegible]
ना यह भी बात अयुक्त और असत्य है क्योंकि विषयोंमें आप कुतर्क
कर्त्ते हैं सो पदार्थविद्याके नहीं होनेसे क्योंकि दूध और मांसादि
कोंके यथावत् गुण जानते और यज्ञका उपकार कि पशुओं को मार
नेमें थोड़ासा दुःख होता है परन्तु यज्ञमें सदाचार का अनन्त उपका
र होता है इनको जो जानते तो कभी यज्ञ विषयमें तर्क कर्त्ते वेदोंका
यथावत् अर्थ के नहीं जाननेसे ऐसी बात तुम लोग करते हो किन्तु
भाण्ड और निशाचरोंने लिखा है यह बात केवल अपने अज्ञान औ
र संप्रदायोंके दुराग्रह से कहते हो और वेद जो हैं सो सबके अर्थ हित
कारी हैं किसी संप्रदायका ग्रन्थ वेद नहीं है किन्तु केवल पदार्थविद्या
और सब मनुष्यों के हितके वास्ते वेद पुस्तक हैं पक्षपात उसमें कुछ
नहीं इन बातोंको जानते तो वेदोंका त्याग और खंडन कभी न करते
सो वेद विषयमें सब लिख दिया है वहीं देख लेना और यज्ञमें पशुको
मारनेसे स्वर्गमें जाता है यह बात भी मूर्खके मुखसे सुनते हैं जो
ऐसी बात वह सबके हितका नहीं लिखी जीवों के विषयमें वे ऐसा कहते हैं कि
जीव जितने शरीरधारी हैं उनके पांच भेद हैं एकइन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्री
न्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय इनमें एकइन्द्रिय मानते हैं अर्थात्
वृक्षादिकों में सो यह बात उनकी विचारशून्य है क्योंकि इन्द्रिय सू
क्ष्म है उसका भान नहीं देख पड़ता परन्तु इन्द्रियका काम देखने से अ
नुमान होता है कि इन्द्रिय अवश्य है सो जितने वृक्षादिकों के जीव हैं उ
नका पृथिवी में जब जाते हैं तब अङ्कुर ऊपर आता है और मूल नीचे
जाता है जो नेत्रेन्द्रिय उनको न होता तो ऊपर नीचे को कैसे देखता
इस काम से निश्चय जाना जाता है कि नेत्रेन्द्रिय उनके हैं कोई कोई भी
है तथा बहुत लता होती हैं सो वृक्ष और भित्तीके ऊपर चढ़ जाती है
[illegible] जाता तो उसको कैसे देखता तथा स्पर्शेन्द्रिय तो सबको [illegible]

मानते हैं जो भइन्द्रियभी वृक्षादिकोंमेंहैं क्योंकि मधुरजलमें ब
टिकोंमें जितने वृक्ष होते हैं उनमें खारा जल देने से सूखजाते हैं जो
इन्द्रिय नहोता तो खाद खारा वा मीठेका कैसे जानते तथा श्रो
त्रेन्द्रियभी वृक्षादिकोंमें है क्योंकि जैसे कोई मनुष्य सोता होय उस
अत्यन्त शब्द करने से सुनलेता है तथा तोपआदिक शब्दसे भी वृक्ष
कम्प होजाते हैं जो श्रोत्रेन्द्रिय न होता तो कम्प क्यों होता क्योंकि अ
कस्मात् भयङ्कर शब्दके सुननेसे मनुष्य पशु पक्षी अधिक कम्पजाते हैं
से वृक्षादिक भी कम्पजाते हैं जो ये कहैं कि वायु के धक्के से वृक्षमें चेष्टा
जाती है अच्छा तो मनुष्यादिकों को भी वायु की चेष्टासे शब्द सुनपड़
ता है इससे वृक्षादिकोंमें भी श्रोत्रेन्द्रिय है तथा नासिका इन्द्रिय भी
क्योंकि वृक्षोंको रोग भी कड़ेगन्ध से छूट जाता है जो नासिकेन्द्रिय न हो
ता तो गन्धका ग्रहण कैसे करता इससे नासिका इन्द्रियभी वृक्षादिकोंमें
है तथा त्वगिन्द्रियभी है क्योंकि कुमोदिनी कमल लज्जावती अर्था
त् छुईमुई औषधि और सूर्यमुखी आदिक पुष्पोंमें और शीत तथा उष्ण
वृक्षादिकोंमें भी जान पड़ते हैं क्योंकि शीत तथा अत्यन्त उष्णतासे वृ
क्षादिक कुम्हला जाते हैं और सूख भी जाते हैं इससे त्वगिन्द्रियों का
कर्म देखने से त्वग् इन्द्रिय वृक्षादिकोंमें अवश्य मानना चाहिये यह
भ्रम जैनमतसम्प्रदायवालों को स्थूल गोलक इन्द्रियों के नहीं देखने से हु
आ है सो इससे जैन लोग इन्द्रियों को नहीं जानते परन्तु कार्य द्वारा
सब बुद्धिमान लोग वृक्षादिकोंमें भी इन्द्रिय जानते हैं इसमें कुछ सन्दे
ह नहीं और जो जैन कहेंगे कि वहां इन्द्रिय अवश्य होंगी क्योंकि इनसे
वर्गणाओंका जो मिलाप इसीको जो निकलते हैं जहां जीव होगा वहां इ
न्द्रियं अवश्य होंगी जैनोंका ऐसा भी कहना है कि तालाब बावली कु
आ नहीं बनवाना क्योंकि उनमें बहुत जीव मरते हैं जैसे तालाब कर
वने से उसमें जो उसमें बैठेगा जो उसके ऊपर मछा बैठेगा उसको कौआ ले
जायगा और मार भी डालेगा उसका पाप तालाब बनाने वाले को हो
गा क्योंकि वह तालाब न बनाता तो बहुत्यान होता इसमें उनसे कुछ

नहीसमझा क्योंकिउसतालावकेजलसे असंख्यातजीवसुखी होंगे उसकापुण्य कहांजायगा सोपापके वास्तेतालावकोई नहीबनाता किन्तु जीवोंकेसुखके वास्तेबनातेहैं इससे पाप नहीहोसक्ता परन्तु जिस देशमेंजल नहीमिलताहोय उसदेशमें बनानेसपुण्यहोता है जिसदेशमें बहुत जल मिलताहोवे उसदेशमें तडागादिकोंका बनानाव्यर्थहै और वेबडे २ मंदिरऔरबडे २ घरबनातेहैं उनमें क्याजीवनहीमरतेहोंगे सोलाखहांरुपैये मन्दिरादिकोंमें मिथ्या लगादेतेहैं जिनसेकुछसंसारका उपकारनहीहोता और जोउपकारकीबातहै उसमेंदोषलगातेहैं फिरकहतेहैं किजैनकाधर्मश्रेष्ठहै औरइसकेबिनामुक्तिभी किसीकोनहीहोती सोयहबातउनकीमिथ्याहै क्योंकिकसीबात औरऐसेकर्मोंसेमुक्तिकभीनहीहोसक्ती मुक्तितो मुक्तिकेकर्मोंसेएवंहोतीहै अन्यथानही जितनामूर्तिपूजनचलाहै सोजैनोंसेहीचलाहै यहभीअनुपकारकाकर्महै इससे कुछउपकारनही संसारमेंबिनाअनुपकारके सोजैनोंको बडाभारीआग्रहहै जोकोईकुछपुण्य कियाचाहताहै धनाढ्य सोमन्दिरहीबनादेताहै औरप्रकारका दानपुण्यनहीकर्त्तेहैं उनने जैनगायत्रीभी एकबनालिईहै औरएकयतीहोतेहैं उनकोश्वेताम्बर कहतेहैं दूसराहोताहैदिगम्बर जिसकोमुनिऔर श्रावककहतेहैंउनमेंसेढूंढिये लोगमूर्तिपूजन कोनहीमानते औरलोग मानतेहैं उनमें एकश्रीपूज्यहोताहै उसका ऐसा नियमहोताहै किइतनाधन जबसेवकलोगदें तबउसकेघरमेंजावें और मुनिदिगम्बर होतेहैं वेभी उनकेघरमें जबजातेहैं तबआगे २ थानबिछातेचलेजातेहैं औरउनकेमतमें नहोय वह श्रेष्ठभीहो यतोभीउसकोसेवा अर्थात् जलतकभीनहीदेते यहउनका पक्षपातसे अनर्थहै किन्तु जो श्रेष्ठहोय उसीकी सेवा करनीचाहिये दुष्टकीकभीनही यहसब मनुष्योंकेवास्ते उचितहै ढूंढिये होतेहैं उनके केशमें जूआं पड जाय तोभीनहीनिकालते और हजामत नहीबनवाते किन्तु उ

साधुजब आताहै तबजैनीलोग उसकीदाढी मोछ और सिरकेबालसबनोंचलेतेहैं जोउसवक्त वहशरीरकम्पावै अथवा नेत्रसेजल गिरावै तब सबकहतेहैं कियहसाधुनहीभयाहै क्योंकि इसकोशरीर केऊपरमोहहै बिचारकरनाचाहिये किऐसो २ पीडाऔर साधुओंको दुःखदेना और उनकेहृदयमें दयाकालेशभीनहोआना यहउनकीबात बहुतमिथ्याहै क्योंकि बालोंके नोंचनेसे कुछ नहीहोता जबतक अकाम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोषहृदयसे नहीनोंचेजायगे यह ऊपरका सबढोंगहै उनमेजितने आचार्यभयेहैं उनकेबनाये ग्रन्थोंको वेदमानतेहैं सोअठारहग्रन्थवेहैं तथा महाभारत रामायणपुराण स्मृतियांभी उनलोगोंने अपने मतके अनुकूलग्रन्थबनालियेहैं अन्यभगवतीगीता ज्ञानचरित्रादिकभीग्रन्थ नानाप्रकारके बनालियेहैं बहुत संस्कृतमेंग्रन्थहैं औरबहुत प्राकृतभाषामें रचलियेहैं उनमें अपनेसंप्रदायकीपुष्टि और अन्यसंप्रदयोंका खण्डन कपोलकल्पनासे अनेक प्रकार लिखा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सबसंसार जैनमार्गमेंथा परन्तु कुछदिनोंसे जैनमार्गको छोडदियाहै लोगोंनेसो बडाअन्यायहै क्योंकिजैनमार्गछोडना किसीको उचित नहीऐसोर कथा अपनेग्रन्थोंमें जैनोंनेलिखीहैं सोसब संप्रदायवाले अपनीर कथा ऐसी हीलिखतेहैं और कहतेहैं इसमें प्रायः अपनेमतलबके लिये बातेंमिथ्या २ बनालिईहैं यावज्जीवसुखंजीवेन्नास्तिमृत्योरगोचरः। भस्मीभूतस्यदेहस्य पुनरागमनंकुतः॥ यावज्जीवेत्सुखंजीवे दृणंकृत्वाघृतंपिवेत्। अग्निहोत्रंत्रयोवेदा त्रिदण्डंभस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेतिबृहस्पतिः। अग्निरुष्णोजलंशीतं शीतस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदंचित्रितंतस्मात स्वभावात्तव्यवस्थितिः। नस्वर्गोनापवर्गोवा नैवान्यःपारलौकिकः। नैववर्णाश्रमादीनां क्रियाश्चफलदायकाः। अग्निहोत्रंत्रयोवेदा त्रिदण्डंभस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकाधातृनिर्मिता। पशुश्च

मं।

न्निहतःस्वर्गं ज्योतिष्टोमेगमिष्यति ॥ स्वपितायजमानेन तत्रक-
स्मान्नहिंस्यते । मृतानामपिजंतूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम्॥गच्छ
तामिहजंतूनां व्यर्थंपाथेयकल्पनम् । स्वर्गःस्थितायदातृप्तिं गच्छे
युस्तत्रदानतः॥ प्रासादस्योपरिस्थाना मत्रकस्मान्नदीयते। यदि
गच्छत्परंलोकं देहादेषविनिर्गतः॥ कस्माद्भूयोनचायाति बन्धुस्ने-
हसमाकुलः । मतश्चजीवनोपायो ब्राह्मणै र्विहितस्त्विह ॥ मृतानां
प्रेतकार्याणि नत्वन्यद्विद्यतेक्वचित । त्रयोवेदस्यकर्तारो भण्डधूर्त-
निशाचराः ॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वचःस्मृतम । अश्व-
स्यात्रहिशिश्नन्तु पत्नीग्राह्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ भण्डैस्तद्वत्परंचैव ग्रा-
ह्यजातिंप्रकीर्त्तितम । मांसानांखादनंतद्व न्निशाचरसमीरितम्॥
इत्यादिकश्लोक जैनोंनेबनारक्खे हैं और अर्थ तथा काम दोनोंप-
दार्थमानतेहैं लोकसिद्ध जोराजासोईपरमेश्वर औरईश्वरनहोंपृ-
थवी जल अग्नि वायु इन केसंयोगसे चेतनउत्पन्नहोके इन मेंलो
नहोजाताहै और चेतनपृथक्पदार्थनहो ऐसे २ प्राकृतदृष्टान्तदे
कनिर्बुद्धि पुरुषोंकोबहकादेतेहैं जोचारभूतोंकेयोगसे चेतनउत्प
न्नहोता तो अबभीकोई चारभूतोंकोमिलाके चेतनदेखलादे सो
कभीनहोदेखपडेगा इनस्वभावसे जगतकोउत्पत्तिआदिककाउ-
त्तर ईश्वर और सृष्टिकेविषयमें लिखदियाहै वहांदेखलेना भूत-
श्योमूर्त्युपादन वत्तदुपादनम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियेसू-
त्र नास्तिकोंकेमतदेखाने कवास्तेलिखेजातेहैं औरउनकाखण्ड-
नभी सोजानलेना जैसेपृथिव्यादिक भूतोंमेंबालु पाषाण गेरूअ-
ञ्जनादिक स्वभावसेकर्त्ताकेबिना उत्पन्नहोतेहैं वैसेमनुष्यादिक-
भीस्वभावसे उत्पन्नहोतेहैं नपूर्वापरजन्म नकर्म औरनउनकासं-
स्कार किन्तुजैसे जलमेंफेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे
उत्पन्नहोतेहैं वैसेभूतोंसे शरीरभीउत्पन्नहोताहै उसमें जीवभी
स्वभावसेउत्पन्नहोताहै उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसेशरी-
रकोउत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्धमानतेहो वैसेबालकादिक-

को उत्पत्ति सिद्ध करो वालुकादिकोंके पृथिव्यादिकप्रत्यक्ष निमित्त और कारण हैं वैसे पृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कारणभी सूक्ष्ममाननाहोगा ऐसेअनवस्थादोषभीआजायगा और साध्यसमहेत्वाभासकोनांई यहकथनहोगा औरइससे देहोत्पत्तिमें निमित्तान्तरअवश्यतुमको माननाचाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वान्माता पित्रो: ३ गो० यह नास्तिकका अपने पक्षकासमाधानहै किशरीरकी उत्पत्तिकानिमित्त माताऔर पिताहैं जिनमेंकि शरीरउत्पन्नहोता है और बालुकादिक निर्बीज उत्पन्नहोतेहैं इससे साध्यसम दोषहमारेपक्षमे नहीआता क्योंकि मातापिता खानापीनाकर्त्ते हैंउससे वीर्य बीजशरीरका होजायगा उत्तर प्राप्तौचानियमात् ४ गो० ऐसातुम मतकहो क्योंकि इसकानियमनहीं मातापिताका संयोगहोताहै और वीर्यभी होताहै तोभीसर्वत्र पुत्रोत्पत्तिनहीदेखनेमेआती इससे यहजोआपका कहानियमसो भङ्गहोगया इत्यादिकनास्तिक केखण्डनसें न्यायदर्शनमेंलिखाहै जोदेखाचाहै सो देखले दूसरेनास्तिकका ऐसामतहै किअभावाद्भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्यप्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात्असत्यसेजगत् कीउत्पत्ति होतीहै क्योंकि जैसेबीजका नाशकरके अङ्कुर उत्पन्नहोताहै वैसे जगत् कीउत्पत्तिहोतीहै उत्तर व्याघातादप्रयोग: ६ गो० यहतुमाराकहना अयुक्तहै क्योंकि व्याघातकेहोनेसे जिसकामर्द्दनहोताहै बीजकेऊपरभागका यहप्रकटनहीहोता औरजोअङ्कुरप्रकटहोताहै उसकामर्द्दननहीहोता इससे यहकहना आपकामिथ्या है तीसरानास्तिक कामत ऐसाहै ईश्वर:कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात् ७ गो० जीवजितना कर्मकर्ताहै उसकाफल ईश्वरदेता है जो ईश्वरकर्मफल नदेतातोकर्मकाफलकभीनहोता क्योंकिजिसकर्मकाफल ईश्वरदेताहै उसकातोहोताहै और जिसकानही देता उसकानहीहोता इससे ईश्वर कर्मकाफलदेनेमेंकारणहै उत्तर पुरुषकर्माभावेफलानिष्पत्ते: ८ गो० जोकर्मफलदेनेमेंईश्व-

र कारणहोता तो पुरुषकर्मकर्त्ता तोभोईश्वर फलदेता सो बि-
नाकर्म करनेसे जीवकोफलनहि देता इस्से क्याजानाजाता है कि
जोजीव कर्मजैसाकर्त्ता है वैसा फल आपहीप्राप्तहोता है इस्से ऐ-
साकहनाव्यर्थहै फिरभीवह अपनेपक्षको स्थापनकरनेकेवास्ते क-
हता है कि तत कारितत्वादहेतुः ६ गो ० ईश्वरही कर्मका फल
औरकर्मकरानेमें कारणहै जैसा कर्मकराता है वैसा जीवकर्त्ता है
अन्यथानहीं उत्तर जोईश्वकराता तोपापकोंकराता और ईश्व-
रके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसा चाहता वैसाहीहोजाता
और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभी
जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दुःखहै ईश्व
रकोभीहोनाचाहिये और केवल छली कपटी औरपापोंके करा-
नेसे पापीहोजाता इस्से ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर करा
ता है चौथे नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्प
त्तिः कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् १० गो ० निमित्तके विनापदार्थों
की उत्पत्तिहोती है क्योंकि वृक्षमें कांटहोते हैं वेभीनिमित्तकेबिना
ही तीक्ष्णहोते हैं कण्टकोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंको चित्रता
पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेआती है वैसेहीशरीरा
दिकसंसारको उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहोतो है इसका कर्त्ताकोईनहीं
उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्ना निमित्ततः ११ गो ० बिननि-
मित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता
है वहीउसका निमित्तहै वृक्ष पर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्त
जाननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमेश्व
रहीहै इस्से तुमारा कहनामिथ्या है पांचवे नास्तिकका ऐसाम
तहै कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति बिनाशधर्मकत्वात् १२ गो ० सबजगत्
अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और बिनाशदेखनेमें आता हैजो
उत्पत्ति धर्मवाला है सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवा
ला है सो बिनाशी कभीनहीहोता आकाशादिभूत शरीर पर्य्यन्-

स्थूलजितना जगतहै और बुद्ध्यादिसूक्ष्म जितनाजगहै सोसब अनित्यही माननाचाहिये उत्तर नानित्यता नित्यत्वात् १३ गो० सब अनित्यनहीं हैं क्योंकि सबकी अनित्यता जोनित्य होगी तो उसके नित्यहोनेसे सब अनित्यनहीं भया और जो अनित्यता अनित्यहोगी तो उसके अनित्यहोनेसे सब जगत नित्यभया इससे सब अनित्यहै ऐसाजो आपका कहनासो अयुक्तहै फिरभीवह अपने मतको स्थापन करनेलगा तदनित्यत्वमग्नेर्दाह्यं विनाश्यानु विनाशवत् १४ गो० वह जोहमने अनित्यता जगत्कीकही सोभी अनित्यहै क्योंकि जैसे अग्नि काष्ठादिक कानाशकरके अपनेभीनष्टहोजाता है वैसेजगत् को अनित्यकरके आपभी अनित्यतानष्टहोजातीहै उत्तर नित्यस्याप्रत्याख्यानंयथोपलब्धिव्यवस्थानात् १५ गो० नित्य काप्रत्याख्यान अर्थात् निषेधकभीनहीं होसक्ता क्योंकि जिसकी उपलब्धिहोतीहै और जोव्यवस्थितपदार्थहै उसकी अनित्यतानहीं होसक्ती जोनित्यहै प्रमाणोंसे और जो अनित्य सोनित्य २ होता है और अनित्य २ होताहै क्योंकि परम सूक्ष्मकारण जोहै सोअनित्यकभीनहीं होसक्ता और नित्यकेगुणभीनित्यहैं तथा जो संयोगसे उत्पन्नहोताहै और संयुक्तकेगुण वहसबअनित्यहैं नित्यक भीनहीं होसक्ते क्योंकि पृथक्पदार्थोंका संयोग होताहै वेफिरभी पृथक्होजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनहीं छःटहानास्तिकयहहैकि सर्वंनित्यंपंचभूतनित्यत्वात् १६ गो० जितना आकाशादिक यहजगतहै जोकुछइन्द्रियोंसे स्थूल वा सूक्ष्मजानपडताहै सोसबनित्यही है पांचभूतोंके नित्यहोनेसे क्योंकि पांचभूतनित्यहैं उनसे उत्पन्न भयाजो जगत्सोभीनित्यहीहोगा उत्तर नोत्पत्तिविनाशकारणोपलब्धेः १७ गो० जिसकाउत्पत्तिकारण देखपडताहै और विनाशकारण वह नित्यकभीनहीं होसक्ता इत्यादिक समाधान न्यायदर्शनमें लिखेहैं सोदेखलेना सातवांनास्तिक कामतयहहै कि सर्वंपृथक्भाव लक्षणपृथक्त्वात् १८ गो० सबपदार्थ जगतमें पृथ-

क् २ होहैं क्योंकि घटपटादिक पदार्थोंकेपृथक् २ चिह्न देखपड़ते हैं इस्से सबवस्तु पृथक् २ होहैं एकनहो उत्तर नास्तिकपक्ष ५ एक भावानिष्पतेः १९ गो० यहबात आपकीअयुक्त है क्योंकि घड़ेमें गंधादिक गुण हैं और सुखादिक घड़े के अवयव भी अनेक पदार्थों मे एक पदार्थ युक्त प्रत्यक्ष देख पड़ता है इस्से सबपदार्थ पृथक् २ हैं ऐसाजो कहनासो आपका व्यर्थहै अठवां नास्तिकका मतयहहै कि सर्वमभावाभाव स्थितरतराभवसिद्धेः २० गो० यावत् जगतहै सोसब अभावहोहै क्योंकि घड़ेमें वस्त्रकाअभाव और वस्त्रमें घड़ेकाअभाव तथा गायमें घोड़ेका और घोड़ेमें गायकाअभावहै इस्से सबअभावहोहै उत्तर नस्वभावसिद्धे र्भावानाम् २१ गो० सबअभाव नहीहै क्योंकि अपनेमें अपना अभाव कभीनहीं होता जैसे घड़ेमें घड़ेका और घोड़ेमें घोड़ेका अभाव नहींहोता है और जो अभावहोता तो उसकीप्राप्ति और उस्से व्यवहार कभी नहोहोतो इस्सेसबअभावहै ऐसाजोकहनासो व्यर्थ है क्योंकि आपहोअभावहो फिर आपकहते और सुनतेहो सो कैसेबनता सो कभीनहीबनता ऐसे २ वादविवाद मिथ्याजेकर्त्ते हैं वेनास्तिक गिनेजाते हैं सो जैनसंप्रदायमें अथवा किसीसंप्रदायमें ऐसा मतवाला पुरुषहोयउसको नास्तिकहीजाननाजैनलोगों मेंप्रायः इसप्रकारकेवादहैंवेसबमिथ्याहो सज्जनोंको जाननाचाहिये र तमानकोपत्नी अश्वकेशिश्नेको पकड़े यहबातमिथ्याहैतथा संसारःराजाजोहै सोईपरमेश्वरहै यहभीबात उनकोमिथ्याहैक्योंकिमनुष्यक्यापरमेश्वर कभीहोसक्ताहै धर्मकोवड़ानसमझनाऔरअर्थतथा कामकोहीउत्तमसमझनायहभीउनकोबातमिथ्याहैइत्यादि बहुत उनकेमनमेंमिथ्या २ कल्पनाहैउनकोसज्जन लोगक भीनमा

इतिश्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृतेसत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वादशःसमुल्लासः संपूर्णः ॥ १२ ॥